हिन्दी की तद्भव शब्दावली

(व्युत्पत्ति कोष)

डॉ० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'
एम.ए. (हिन्दी तथा संस्कृत), पीएच.डी., डी.लिट्.
रीडर, हिन्दी-विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

कालेज बुक डिपो, जयपुर

प्रतिफल यह हुआ कि हिन्दी ने एक नयी शैली को जन्म देकर अपनी सांस्कृतिक शक्ति को सुरक्षित रखा। राज और धर्म की भाषा के गुण-दोषों को पचाने के लिए हिन्दी की यह मोर्चाबन्दी बड़ी सफल सिद्ध हुई। हिन्दी ने अपनी इस शैली को रक्त से सींच कर पल्लवित और पुष्पित किया, किन्तु उसके फूलों से राजनीति और धर्म की तीव्र गंध आने लगी, अतएव वह हिन्दी जिसे बन्दा-नवाज और खुसरो का बल मिला, वह हिन्दी जिसे कबीर का बल मिला वही जायसी आदि सूफियों की धार्मिक स्थापनाओं में अपनी भूमिका को छोड़ने लगी।

इस स्थिति की कल्पना रामानंद, वल्लभाचार्य आदि धार्मिक मनीषी पहले ही कर चुके थे; परिणामतः एक धार्मिक अभियान का सूत्रपात हुआ और हिन्दी का भविष्य राम और कृष्ण की कथाओं और प्रसंगों के हाथों में जा पहुँचा। फिर भी संतों और सूफियों की अभिव्यंजनात्मक विशेषताओं से हिन्दी ने पूरा लाभ उठाया।

फारसी-अरबी की शृङ्गारपरक विलक्षणताओं ने मध्यकालीन हिन्दी के रूप को भी बदल दिया, किन्तु हिन्दी-भाषा युग-समाज का सम्पर्क छोड़ नहीं सकती थी; अतएव उसने अनुभावों और उद्दीपनों की अभिव्यंजनात्मक क्षमताओं को सांगोपांग योग प्रदान किया। हिन्दी की एक ही धारा में कहीं लौकिक शृङ्गार की लहरें उठती थीं तो कहीं अलौकिक शृङ्गार की, कहीं अलंकारों की तीव्र झंकृतियां थीं तो कहीं छन्दों का क्षिप्र नर्तन था। अलंकारों के नवीनतम प्रयोगों और कलात्मक चमत्कारों के नव्यतम अभिसंधानों से भाषा का कलेवर अपने वैभव के भार से बोझिल हो उठा। जिस भाषा ने सूर और तुलसी की छाया में शीतल उत्कर्ष की राह देखी, जिसने जायसी आदि के शिल्प को देखा उसी ने केशव और बिहारी, देव और भिखारीदास जैसे कलाकारों की कलाबाजियां भी देखीं तथा हिन्दी भाषा ने प्रौढ़ता और दृढ़ता के दिन देखे।

अब भाषा को अनिवार्य रूप से परिवर्तन की दिशा पकड़नी थी; अतएव घनानन्द, बोधा, ठाकुर आदि की वाणी में उस परिवर्तन को प्रोत्साहन मिला। भाषा ने स्वच्छन्दता को राजमार्ग पर पुरस्कृत किया। जो भाषा अब तक भावों को उछल-कूद सिखा रही थी, उसी ने घनानंद की वाणी में भाव-सेवा का व्रत लिया। शब्दों ने मेल-जोल सीखा, अभिव्यंजना ने बाहरी चमक-दमक को गंभीरता प्रदान की तथा अर्थ ने शब्द-संगति से गौरव प्राप्त किया। शब्द-प्रयोगों ने अनेक अर्थ परिपार्श्वों में घूमने का प्रशिक्षण लिया। कहने का आशय यह है कि अभिव्यंजना सार्थक क्षमताओं से सम्पन्न हो गयी।

कुछ लोग भाषा की इस क्षमता की शैली का प्रारंभिक स्थिति कह कर मूल्यांकन को औचित्य से वंचित कर सकते हैं, किन्तु मेरी दृष्टि में यह अभिव्यंजना की गौरवमयी स्थिति थी। इसी समय अंग्रेजी शासन की भूमिका प्रस्तुत हुई। जैसे-जैसे शासन की जड़ें जमती गयीं अंग्रेजी भाषा अपने पंख फैला कर भारतीय वातावरण में उड़ने लगी। इतर योरोपीय भाषाएँ अंग्रेजी के प्रभाव में विलीन हो गयीं और अंग्रेजी ने जिस प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं को प्रभावित किया उसी प्रकार हिन्दी को भी किया।

हिन्दी की शैली उर्दू को प्रोत्साहन मिला और अंग्रेजों की 'विभाजन और शासन' की नीति को भूमिका मिली। अंग्रेजी भी फारसी-अरबी की भांति विदेशी भाषा थी, किन्तु इसने देश-भाषाओं की जड़ें ढीली करने में जो चाल चली वह फारसी-अरबी ने नहीं चली। उससे देश की चिन्तन-क्षमता पर दासता छाने लगी और पहनने-ओढ़ने, खाने-पीने आदि के साथ-साथ अनेक भारतीयों का सोचना-विचारना भी अंग्रेजी में ही होने लगा। अंग्रेजी-पढ़े-बेपढ़े के बीच भेद-भाव बढ़ता गया और देश-भाषाओं के विकास पर अवरोध का सिक्का जमने लगा। अनेक शब्द, अनेक प्रयोग और अभिव्यंजना की विविध शैलियां अंग्रेजी के माध्यम से हिन्दी में भी उतरने लगीं। सुधारवाद के अथक प्रयत्न के बावजूद भी शृङ्गार अपना वेष बदल कर हिन्दी में अवतरित हुआ। शेली, कीथ आदि की रचनाओं के अध्ययन ने हिन्दी में छायावाद के लोक की स्थापना की और वह धीरे-धीरे प्रतीकों के आलोक से जगमगाने लगा। प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने 'छाया' में जिस 'माया' की सृष्टि की वह हिन्दी भाषा के गौरव की ऐतिहासिक भूमिका है। प्रतीकों में अपनी शक्ति और दीप्ति तो थी ही, कुछ अंग्रेजी प्रयोगों का आनुवादिक बल भी था। विदेशी शब्दों ने बड़े सहज भाव से छायावाद में प्रवेश किया।

इधर आर्य समाज, ब्रह्म समाज आदि सुधारवादी आंदोलनों और कांग्रेस के उद्‌बोधनात्मक प्रयत्नों से समाचार-पत्रों और मासिक पत्रिकाओं का बहुत प्रचार और प्रसार हुआ। गद्य की शक्ति बढ़ती गयी, शैली मार्जित और शब्द-कोष संवर्धित होता गया। अनेक मुद्रणयन्त्रों को प्रोत्साहन मिला और हिन्दी भाषा अपनी शैली के साथ विकसित होती गयी।

अरबी-फारसी के प्रभुतापूर्ण सम्पर्क से हिन्दी की जो शैली विकसित हुई उसे हिन्दी से विलग होने का कोई अवसर न मिला। शब्दों और भावों का आदान-प्रदान दोनों के विकास का प्रेरक बना, किन्तु अंग्रेजी ने शिक्षित और अशिक्षित के बीच खाई पैदा कर दी और 'नौकरशाही' के अनेक दोषों

को तथाकथित शिक्षितों की प्रवृत्ति में भर दिया। हिन्दी को अंग्रेजी के साथ घोर संघर्ष करना पड़ा, साथ ही उसे दासता के दुर्दिनों में दैन्य की परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ा। हिन्दी के पोषकों ने अंग्रेजी से जो कुछ लिया जा सकता था, वह लिया और उसे हिन्दी की थाती में समाविष्ट कर लिया। जिस प्रकार अरबी-फारसी से ऋण लेकर हिन्दी ने अपने भंडार को भरा उसी प्रकार अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं से भी ऋण लेकर हिन्दी ने अपनी सम्पन्नता की वृद्धि की। अंग्रेजी के नव्यतम आयामों में प्रवेश करके हिन्दी ने शैली को प्रयोग की भूमिका पर भी उतारा और शब्दों ने अर्थ-विकास एवं अर्थ-द्योतन की नयी दिशा पकड़ी। नये शब्दों का निर्माण भी हुआ और प्रचलित शब्दों को नया अर्थ भी मिला। प्रतीक-योजना ने भाषा की समृद्धि में अपना अभूतपूर्व योग दिया। इस धरा पर हिन्दी ने अंग्रेजी से कुछ लेकर भी अपनी मौलिक पहल का परिचय दिया।

आज देश स्वतन्त्र है, किन्तु अंग्रेजी के प्रति मोह आज भी बना हुआ है। यह सार्थकता की धरा पर कम और व्यर्थता की खोखली धरा पर अधिक है, अतएव उसके पतन के सभी लक्षण विद्यमान हैं। मोह की प्रेरणा के रूप में कुछ निहित स्वार्थ गतिशील हैं। राजनीति के दाव-पेचों में भ्रान्त स्वार्थ राष्ट्रीयता को निर्बल बनाने में जुटे हुए हैं। बोध को औचित्य का आश्रय न मिलने से ध्वंसक प्रवृत्तियाँ क्रियाशील हैं, फिर भी हिन्दी अपने पथ पर दृढ़ता से चल रही है।

आज हिन्दी की शब्दावली की बड़ी आलोचना की जा रही है। शिकायत यह है कि हिन्दी के पास वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का अभाव है, उच्च श्रेणी के ज्ञान का हिन्दी ग्रन्थों में अभाव है तथा विदेशों के अर्जित ज्ञान को देश में लाने में हिन्दी असमर्थ है। मेरी दृष्टि में ये सब तर्क निराधार और व्यर्थ हैं। हिन्दी के विकास को, उसके वैभव को चुनौती नहीं दी जा सकती। गत तीस-चालीस वर्ष में हिन्दी ने जो विकास किया है वह किसी भी भाषा की तुलनात्मक भूमिका पर अभूतपूर्व है। ग्रन्थों के अभाव की बात भी तर्कहीन है। फिर भी अभाव की परिधि में अनेक प्रयत्न भाषा की शक्ति को बढ़ाने के लिए किये जा रहे हैं।

हिन्दी के समक्ष आज एक प्रश्न यह उठता है कि उसे अरबी-फारसी और अंग्रेजी के शब्दों के साथ क्या व्यवहार करना चाहिये? इसका एक उत्तर है कि ये भाषाएँ हमारे देश की भाषाएं नहीं हैं, इनमें हमारी संस्कृति का आधार नहीं है, हमारे जीवन से इन्हें सहानुभूति नहीं है। इनमें बिल्कुल पृथक् वातावरण एवं पृथक् नैतिक आधार है। हमारे जीवन का

वास्तविक प्रतिनिधित्व करने में ये सर्वथा असमर्थ हैं। ये हमारे जन-जीवन से विलग हैं, अतएव इनमें हमारी राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतिफलन भी नहीं हो सकता है; फिर भी इनके जो शब्द हिन्दी ने पचा लिये हैं, वे हिन्दी के अपने हैं।

एक दूसरा प्रश्न यह है कि देश की इतर भाषाओं के प्रति, उनकी शब्दावली के प्रति, हिन्दी का क्या रवैया होना चाहिये ? उनके प्रति हिन्दी का वही रवैया होना चाहिये जो परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति एक कुटुम्बी का रवैया होता है। उन पर पड़े हुए प्रभाव से अप्रभावित रहना किसी कुटुम्बी के लिए सम्भव नहीं हैं। हिन्दी उनका पोषण करती हुई स्वयं उनसे पोषित होगी; अतएव शब्दावली का आदान-प्रदान भारतीय भाषाओं का, राष्ट्रीय ही नहीं, सांस्कृतिक धर्म भी है।

प्रस्तुत शब्दावली में ऐसे हजारों शब्द मिलेंगे जो देश की अनेक भाषाओं में सामान्य रूप से प्रचलित हैं और बहुत से ऐसे शब्द भी हैं जो थोड़े से हेर-फेर के साथ मिलते हैं। इस कृति में मूल शब्दों की खोज हिन्दी की शब्दावली को एक सामान्य स्रोत पर पहुँचा देती है, जहां हिन्दी, बंगला, पंजाबी, गुजराती, मराठी आदि भाषाएँ एकरूप हैं।

यद्यपि इस शब्दावली का कलेवर बहुत छोटा है, यह अपने आप में पूर्ण नहीं है, किन्तु इसका संचयन भावात्मक एकता को प्रेरित करने में अपना समुचित योग दे सकता है। समता की दृष्टि से ही एकता की प्रतिष्ठा हो सकती है; अतएव जो अध्ययनशील व्यक्ति सामान्यतम शब्दों के लिए लालायित हैं वे इस शब्दावली का सही उपयोग कर सकते हैं।

लेखक की दृष्टि में मूलत: हिन्दी शब्द रहे हैं; किन्तु उनकी जीवन-लीला का स्मरण रखते हुए उसने उनके निकटतम स्रोत को मूल के साथ जोड़ने का पूर्ण प्रयत्न किया है। चाहिये यह था कि हिन्दी-शब्दों को पहले प्रस्तुत करके प्राकृत शब्दों को उसके बाद में तथा तत्सम शब्दों को मूल स्रोत के रूप में दिखाया जाता, किन्तु यहाँ पहले तत्सम शब्द लेकर उसके विकारों को प्राकृत और हिन्दी में दिखाने का प्रयत्न किया गया है। इससे शब्द के परिवर्तन की दिशा को सक्रमता से देखा जा सका है।

यहां प्रमुखत: हिन्दी के कुछ महत्त्वपूर्ण तद्भव शब्दों की स्रोत-गवेषणा ही अभिप्रेत रही है क्योंकि समग्र शब्दावली की व्यौत्पत्तिक योजना का निर्वाह इस छोटी सी रचना में न तो संभव ही था और न अभिप्रेत ही;

फिर भी इसमें ऐसे सैकड़ों देशी शब्दों की खोज की गयी है जो हिन्दी में अपना समुचित योग दे रहे हैं। देशी शब्द भारतीय जन-जीवन की अमूल्य निधि हैं क्योंकि उनमें जीवन के सहज प्रवाह की उर्मिल अभिव्यक्ति है। यद्यपि वे तद्भव शब्दों की भांति अनुबन्ध, धातु और प्रत्यय—इन तीन प्रमुख भागों में विभक्त नहीं हो सकते, वे आर्य भाषा परिवार के औरस पुत्र नहीं है, किन्तु उनका जन्म इसी देश में हुआ है और उनका पालन-पोषण आर्य भाषाओं की प्राकृतिक गोद में हुआ है; अतएव वे इस परिवार के प्रिय सुजन हैं। उनके संपर्क से, उनकी प्रेरणा से अनेक शब्दों और प्रयोगों का जन्म हुआ है; इसलिए तद्भव शब्दों के साथ उनका अध्ययन भी आवश्यक समझा गया है।

नयी धुन के अध्येताओं, भावात्मक एकता के प्रवर्तको और भाषा-विज्ञान के विद्यार्थियों के अतिरिक्त यह ग्रन्थ अपने स्वल्प कलेवर में राजकाज से संबधित हिन्दी-प्रशिक्षकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

यह संकलन बड़े श्रम का प्रतिफल है। इस श्रम के साकार होने का अवसर ही न आया होता, यदि मेरे कुछ मित्र और छात्र मुझे व्युत्पत्ति की दिशा में आगे न ठेलते। इस ठेलापेल ने मेरा तेल तो अवश्य निकाल दिया, किन्तु उससे कितने ही मानसिक यन्त्र स्नेहिल गति प्राप्त करेंगे। ग्रन्थ का उपयोग ही इसकी सार्थकता और सफलता को प्रमाणित करेगा।

अन्त में मैं अपने उस शरीर के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिसने चार मास के रोग की अवस्था में भी लेखनी को प्रोत्साहित और श्रम को प्रस्फुरित किया। अपने लेखकीय वक्तव्य को समाप्त करता हुआ मैं इस कृति को अपने छात्रों के आग्रह को समर्पित करता हूँ।

—लेखक

अरुण-कुटीर,
जयपुर

भूमिका

हिन्दी-शब्द-समूह

आज जिस भाषा को हम हिन्दी कहते हैं वह सैकड़ों वर्षों की निर्माण-प्रक्रिया का परिणाम है। कितने ही शब्द आर्य भाषाओं की थाती के रूप में हिन्दी ने ग्रहण किये हैं और कितने ही अनार्य एवं विदेशी भाषाओं के हैं। अतएव शब्द-समूह की दृष्टि से प्रत्येक भाषा एक प्रकार से खिचड़ी होती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है जिसकी सहायता से दो व्यक्ति अथवा समुदाय अपने भाव या विचार एक-दूसरे पर प्रकट करते हैं; अतएव भाषा का मिश्रित होना स्वाभाविक ही है। कई बार 'भाषा' के साथ विशुद्ध या शुद्ध विशेषण का प्रयोग करके भाषा के किसी विशेष रूप को सामने लाने की चेष्टा की जाती है, किन्तु उससे केवल इतना ही अभिप्राय ग्रहण किया जा सकता है कि भाषा का विशिष्ट रूप किसी विशेष देश या काल में प्रचलित था। किसी दूसरे देश या काल में उसी भाषा का रूप परिवर्तित हो सकता है। फिर उस देश या काल में भाषा का परिवर्तित रूप ही 'शुद्ध' या 'विशुद्ध' अभिधा का अधिकारी हो जायेगा। यही कारण है कि अलीगढ़ के किसी गाँव में 'भैया, तू कब आयो हो ?' शुद्ध भाषा का रूप व्यक्त करता है तो ढूंढारी में 'भाया, तू कद आयो छो ?' शुद्ध भाषा का प्रतिनिधि है। यह बहुत संभव है कि दो भाषाओं के ये प्रतिनिधि वाक्य आज से पाँच सौ वर्ष बाद कुछ और ही हो जायें; न जाने इन भाषाओं में और कितने नये शब्द समाविष्ट हो जायें। भाषा की यह प्रगति-प्रक्रिया ही उसका जीवन है।

इस भूमिका का तात्पर्य यही है कि हिन्दी-शब्द-समूह गौर से देखने पर एक भानुमती का पिटारा है जिसके गर्भ में न जाने किन-किन मृत एवं जीवित भाषाओं के शब्द भरे पड़े हैं। आज हिन्दी में प्रचलित शब्द-संसार को हम तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) भारतीय आर्य भाषाओं के शब्द।

(२) भारतीय अनार्य भाषाओं के शब्द।

तथा (३) विदेशी भाषाओं के शब्द।

१. भारतीय आर्य भाषाओं के शब्द—हमें इन शब्दों के दो रूप मिलते हैं : एक तो वे शब्द जो प्राचीन काल से आज तक एक ही रूप में प्रचलित हैं और जिनमें किसी घिसावट के चिह्न व्यक्त नहीं होते, जैसे कमल, किशोर, भगिनी, पिता, माता, नारी, इष्ट, वीर, विक्रम, आक्रोश आदि। साहित्यिक हिन्दी में इन शब्दों की संख्या सदैव अधिक रही है, किन्तु आधुनिक साहित्यिक भाषा में यह संख्या कुछ अधिक दृढ़ता से बढ़ी है। इसका प्रमुख कारण राजनीतिक क्रान्ति के अतिरिक्त भाषा-प्रेम भी है। स्वतंत्रता से पूर्व ही, बल्कि भारतेन्दु काल से ही, स्वदेश, प्रेम के साथ-साथ भाषा-प्रेम उमड़ने लग गया था। उसने लेखकों और कवियों को शब्द-भण्डार बढ़ाने की दिशा में प्रेरित किया। ज्यों-ज्यों देश-प्रेम दृढ़ता पकड़ता गया त्यों-त्यों भाषा के विकास का प्रश्न भी अधिकाधिक निखरता गया। प्रचारकों और प्रसारकों का ध्यान तत्सम शब्दों की ओर खिंचता गया। परिणामत: संस्कृत-कोश ने हिन्दी-प्रेमियों को अनेक नवीन शब्द दिये।

कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा की नवीन एवं सामयिक आवश्यकताओं ने तत्समों के प्रयोग को जितनी प्रेरणा दी उससे कहीं अधिक प्रेरणा विद्वत्ता–प्रदर्शन की आकांक्षा ने दी। अधिकांश तत्सम शब्द हिन्दी में आधुनिक काल ही में आये हैं। कुछ तत्सम शब्द ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत प्राचीन हैं, किन्तु वे ध्वनि-दृष्टि से बहुत सरल हैं, इसलिए वे परिवर्तन के प्रहार से मुक्त रहे हैं।

कुछ शब्द हिन्दी में ऐसे भी प्रचलित हैं जिनको हम न तो तत्सम कह सकते हैं और न तद्भव ही। तत्सम तो हम इसलिए नहीं कह सकते कि उनका रूप अनाहत नहीं है, और तद्भव इसलिए नहीं कि वे तत्सम शब्दों से समता रखते हैं। किशन, संसकिरत आदि शब्द इसी प्रकार के हैं। इन्हें अर्द्धतत्सम अभिधा प्रदान की जाती है। ऐसे शब्दों का अधिक प्रचलन मध्य भारतीय आर्य भाषाओं की अपेक्षा आधुनिक भाषाओं में अधिक मिलता है। प्राकृतों में ऐसे शब्दों का प्रयोग अति विरल है।

भारतीय आर्य भाषाओं के शब्दों का दूसरा समूह 'तद्भव शब्दावली' के नाम से अभिहित किया जा सकता है। इन शब्दों ने भी भाषा-पथ पर बहुत लम्बी यात्रा की है। ये शब्द प्राचीन आर्य भाषाओं से मध्यकालीन भाषाओं में होते हुए चले आ रहे हैं। ये मूल शब्दों के ही बाल-बच्चे हैं। ये घिसते–पिटते ऐसे बन गये हैं। वैयाकरणों की पारिभाषिक शब्दावली में इन्हें 'तद्भव' नाम दिया गया है क्योंकि ये तत् (संस्कृत) से 'भव' (उत्पन्न) माने जाते हैं। वास्तव में ये सबके सब संस्कृत से उत्पन्न नहीं हैं। इनमें से बहुत–से शब्दों का सम्बन्ध तो संस्कृत-शब्दों से जोड़ा जा सकता है, किन्तु

अनेक शब्द ऐसे भी हैं जिनका सम्बन्ध संस्कृत से नहीं है। उनका आगम प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के ऐसे शब्दों से हुआ है जो साहित्यिक संस्कृत में अप्राप्य हैं। अतएव सभी तद्भव शब्दों के स्रोत को संस्कृत में खोजना संभव नहीं है।

इस कोटि के शब्द मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं से होकर 'हिन्दी' तक पहुँचे हैं। इसलिए इनमें से अधिकांश के रूपों में अत्यधिक परिवर्तन स्वाभाविक ही है। तद्भव शब्द जनता के कण्ठहार हैं। इनका प्रयोग बोलियों में अधिक होता है। साहित्यिक हिन्दी में इनकी संख्या कम हो गयी है। इनकी अवहेलना प्रदर्शन की भावना में संनिहित है। वास्तव में स्वाभाविक अभिव्यक्ति के सरल एवं सरस वाहन तद्भव शब्द ही हैं।

जो हो, तत्सम और तद्भव शब्दों का भी एक सहज सम्बन्ध हो सकता है, और है। जहाँ इस सम्बन्ध में बाधा आ गयी है, वहीं भाषा रस-भूमि से स्खलित हो गयी है।

२ भारतीय अनार्य भाषाओं के शब्द—आर्यों और अनार्यों का संबंध बहुत प्राचीन है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि दो जातियाँ, आपस में मिलने पर, एक-दूसरी की भाषा को प्रभावित करती हैं। आर्यों और अनार्यों के सम्पर्क का सहज परिणाम यह हुआ कि आर्यों की भाषा में अनेक अनार्य शब्द सम्मिलित हो गये। "हिन्दी के तत्सम और तद्भव शब्द-समूह में बहुत से ऐसे शब्द हैं जो प्राचीन काल में अनार्य भाषाओं से तत्कालीन आर्य भाषाओं में ले लिये गये थे। हिन्दी ने उन्हें उसी प्रकार स्वीकार कर लिया है जिस प्रकार तत्समों और तद्भवों को। प्राकृत वैयाकरण जिन प्राकृत शब्दों को संस्कृत शब्द-समूह में नहीं पाते थे उन्हें 'देशी' अर्थात् अनार्य भाषाओं से आये हुए शब्द मान लेते थे।"[1] परिणामतः बहुत से विशुद्ध तद्भव भी 'देशी' की गणना में आ गये।

यह ठीक है कि प्राचीन काल में अनार्य भाषाओं से बहुत से शब्द आर्य भाषा में आ गये, किन्तु यह भी ठीक है कि आधुनिक काल में अनार्य भाषाओं के शब्दों ने हिन्दी में बहुत कम प्रवेश किया। आज जिस नव राष्ट्र ने जन्म लिया है जिसका आधार चाहे राजनीति हो या सांस्कृतिक एकता, हिन्दी इतर भाषाओं के शब्दों से परिचय-लाभ नहीं है। संभावना है कि इस सम्पर्क का परिणाम उज्ज्वल एवं मधुर ही होगा।

हिन्दी में आये हुए अनार्य भाषाओं के शब्दों का इतिहास यह सूचित करता है कि उनको सदर्प में स्वीकार नहीं किया गया है। [illegible]

---

[1] धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दी शब्दसमूह।

से आये हुए शब्दों का प्रयोग हिन्दी में प्राय: बुरे अर्थों में होता है। द्राविड़ 'पिल्लै' शब्द का अर्थ पुत्र होता है, हिन्दी में यह शब्द 'पिल्ला' होकर कुत्ते के बच्चे का अर्थ देता है। मूर्द्धन्य वर्णों वाले शब्दों के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि उनका सम्बन्ध द्राविड़ भाषाओं से है। यह बात एकान्त सत्य नहीं है, किन्तु आंशिक सत्य को स्वीकार करना पड़ेगा। ऐसे अनेक शब्दों पर द्राविड़ भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। मूर्द्धन्य वर्ण द्राविड़ भाषाओं की विशेषता हैं, इस सम्बन्ध में कोई दो मत नहीं हैं। हिन्दी पर कोल भाषाओं के प्रभाव का ज़िक्र भी किया जाता है, किन्तु वह स्पष्ट नहीं है। डा० धीरेन्द्र वर्मा का अनुमान है कि हिन्दी में बीस-बीस करके गिनने की प्रणाली का उद्गम कोल भाषाएँ ही हैं। संभवत: 'कोड़ी' शब्द भी कोल भाषाओं से ही आया है। ऐसे कुछ और भी शब्द खोजे जा सकते हैं।[1]

३. विदेशी भाषाओं के शब्द—जिस प्रकार प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं पर अनार्य भाषाओं का प्रभाव पड़ा, उसी प्रकार नव्य भारतीय आर्य भाषाओं पर विदेशी भाषाओं का प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव के दो स्रोत हैं—मुसलमानी तथा यूरोपीय। जिस प्रकार अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया, उसी प्रकार मुसलमानों ने भी भारत पर शासन किया। इसलिए इन दोनों प्रभावों में बहुत-कुछ समानता है। विदेशी शब्दों की दो सरणियां हैं—

१. विदेशी संस्थाओं से संबंध रखने वाले शब्द, जैसे—कचहरी, फौज. स्कूल, धर्म आदि से संबधित शब्द।

२. विदेशी वस्तुओं से संबंध रखने वाले; जैसे—नये पहनावे, खाने, यंत्र, खेल आदि से संबंधित शब्द।

१. मुसलमानी स्रोत से आये हुए शब्द—इन शब्दों में फारसी, अरबी, तुर्की तथा पश्तो भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं। इतिहास से विदित होता है कि ईसा की सातवीं आठवीं शती में ही भारत पर मुसलमानों का आक्रमण होने लगा था। १००० ई० के आसपास फारसी बोलने वाले तुर्कों ने पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया था। उस समय हिन्दी ने चलना सीख लिया था। वह बोली के रूप में अच्छी तरह प्रचलित थी और इसी रूप में उसने तुर्की-प्रभाव को आकलित किया था। १२०० ई० के बाद करीब ६०० वर्षों तक हिन्दी भाषी प्रदेशों पर तुर्क, अफगान तथा मुगलों का शासन रहा; अत: इस समय अनेक विदेशी शब्द भाषाओं और बोलियों में घुस आये। जिस प्रकार 'रासो' कुरान (फारसी-अरबी) के प्रभाव से मुक्त नहीं है, उसी प्रकार सूर, तुलसी आदि वैष्णव कवि भी विदेशी शब्दों के प्रभाव से मुक्त नहीं हैं। हिन्दी में

---

[1]देखिये, चै० वे० लै, पृ० २६८–२७२

सब से अधिक संख्या फारसी शब्दों की है, क्योंकि फारसी प्रायः सभी मुसलमानी शासकों की दरबारी एवं साहित्यिक भाषा थी। हिन्दी में कुछ शब्द अरबी और तुर्की के भी मिलते हैं। उनमें से बहुत से तो फारसी में होकर आये हैं और बहुत से सम्पर्क द्वारा अर्जित हैं।

हमारी भाषा हिन्दी से तुर्की का संबंध भी बहुत गहन रहा है क्योंकि ग़ज़नी, गोर और गुलाम वंश के मुसलमान बादशाहों की भाषा मध्य एशिया की तुर्की भाषा ही थी। भारत में मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर की मातृभाषा भी तुर्की ही थी। टर्की की तुर्की भी इसी की एक शाखा है। अतएव जब मुसलमानों ने भारत में पदार्पण किया तो वे लूटपाट और शासन करने के साथ-साथ सम्पृक्त प्रदेशों में भाषा सीखने और सिखाने में भी प्रवृत्त हुए। इस्लाम धर्म और ईरानी सभ्यता के प्रभाव के कारण इन तुर्की बोलनेवाले बादशाहों के युग में भी उत्तर-भारत में इस्लामी साहित्य की भाषा फारसी और इस्लाम धर्म की भाषा अरबी थी, फिर भी भारत में अपनायी गयी फारसी और उसके माध्यम से नव्य भारतीय आर्य भाषाओं पर तुर्की-शब्द–समूह का प्रभाव पड़े बिना न रह सका। नीचे लिखे कुछ तुर्की शब्दों से हम हिन्दी में प्रयुक्त तुर्की शब्दावली का अनुमान कर सकते हैं :—

चाकू, चिक, चकमक (पत्थर), गलीचा, तगार, तुरुक, तोप, दरोग़ा, बख्शी, बावर्ची, बहादुर, बीबी, बेगम, बकचा, मुचलका, तमग़ा, लाश, सौगात, सुराकची, मशालची, खज़ांची, आक़ा, उजबक (बेवकूफ), उर्दू, कलगी, कैंची, काबू, .कुली, एलची, कोर्मा, खातून (स्त्री), खां आदि।

मुसलमानी शब्द स्रोतों में जहाँ अरबी, फारसी और तुर्की अविस्मरणीय है उसी प्रकार पश्तो भी अविस्मरणीय है। पश्तो हमारी प्रान्तरीय भाषा है। पड़ोसी-संबंधोंके अतिरिक्त उससे हमारा राजनीतिक संबंध भीरहा है; इसलिए हिन्दी में पश्तो के अनेक शब्द प्रचलित हैं। उत्तरी पश्चिमी हिन्दी में उनकी संख्या कुछ अधिक है। पठान, रोहिला (रोह=पहाड़) आदि शब्द हिन्दी शब्द–समूह पर पश्तो के प्रभाव के प्रतिनिधि हैं।

मुसलमानी स्रोतों से आये हुए शब्दों में तत्सम, तद्भव और मिश्रित तीन प्रकार के शब्द मिलते हैं। गुलाम, बदनसीब, खुदा, अल्लाह, तौबा, ज़र्रा आदि शब्द पहली कोटि के हैं। मंजूर, मजूर, आखिर सेहत, मंजिल आदि दूसरी कोटि के शब्द हैं। तीसरी कोटि में वे शब्द सम्मिलित हैं जिनका निर्माण हिन्दी और विदेशी (मुसलमानी स्रोत के) शब्दों के मेल से हुआ है जैसे चिड़ियाखाना, दलबन्दी, अजायबघर, मोटरगाड़ी आदि।

२. यूरोपीय स्रोत—हिन्दी-शब्दों का दूसरा स्रोत यूरोपीय है। वास्कोडेगामा ने यूरोप के लोगों के लिए भारत में आने-जाने का मार्ग खुलवा दिया था, किन्तु करीब तीन-साढ़े तीन सौ वर्ष तक हिन्दी-भाषी जनता इनके गहन सम्पर्क में नहीं आयी। इनकी भाषा का प्रभाव बहुत थोड़े लोगों पर रहा। प्रभाव-क्षेत्र प्रायः समुद्रतट के निकट रहा जिससे थोड़े से लोग ही सम्पर्क पाते थे। यही कारण है कि प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी में यूरोपीय शब्दों की संख्या प्रायः नहीं के बराबर है। हिन्दी-भाषी प्रदेश १८०० ई० के आस-पास मुग़लों के हाथ से अंग्रेज़ों के हाथ में आया। फिर तो क़रीब डेढ़ सौ वर्ष तक हिन्दी-भाषा अंग्रेज़ी आदि भाषाओं से प्रभावित होती रही। फ्रेंच, डच, पुर्तगीज़, इटालियन आदि भाषाओं का अधिकांश प्रभाव अंग्रेज़ी के माध्यम से ही आया, किन्तु हिन्दी पर इनका सम्पर्कजन्य (सीधा) प्रभाव भी आया, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हिन्दी के विदेशी शब्द-समूह में फ़ारसी के बाद अंग्रेज़ी शब्दों की संख्या सबसे अधिक है। अब भी नये अंग्रेज़ी शब्द आ रहे हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी अंग्रेज़ी शब्दावली हिन्दी को शिक्षित समाज के भाषार्जन के माध्यम से प्रभावित किये जा रही है। अंग्रेज़ी के बहुत से शब्द तो इतने अधिक लोकप्रिय हो गये हैं कि उनको ग्रामीण जनता ने भी अपना लिया है। कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो अंग्रेज़ी संस्थाओं या अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों से सम्पर्क में आने के कारण केवल शहरों के रहने वाले बेपढ़े-लिखे लोगों के मुँह से ही सुन पड़ते हैं। कई शब्दों के व्यवहार के अनेक रूप मिलते हैं, किन्तु उनका एक अधिक प्रचलित रूप भी है। हिन्दी में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दों के कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं:—

अंजन, अक्तूबर, अगस्त, अटेलियन, अपील, अप्रैल, अफसर, अलबम, अस्पताल, अर्दली, असम्बली, आफिस, आउट, आर्डर, आपरेशन, इन्सपेक्टर, इंच, इंटर, इनकमटैक्स, इस्कूल इस्टूल, इस्टीयर, इस्काउट, इस्पेशल, इस्क्रू, इस्प्रिंग, इस्टांप, इस्पीच, एजंट, एजंसी, एरन, एफ० ए०, एम० ए०, ऐक्ट, ऐक्टर, एक्टिंग, ऐक्सप्रेस, ऐक्सचेंज, ओवरकोट, ओवरसियर, कलक्टर, कमिश्नर, कमीशन, कम्पनी, कलेंडर, कम्पौंडर, कफ, कटपीस, कर्नल, कमेटी, कंटूनमेंट, कंसल्टेशन, कापी, कान्फ्रेंस, कालर, कॉग, कार्ड, कार्निस, कांग्रेस, कॉमा, कॉलेज, कांनिस्टबल, क्वाटर, क्लब, क्रिकेट, क्लास, क्लर्क, किलिप, किर्मिच, कुल्तार, कोइला, कूपन, कुनैन, कुली, कूलर, कोर्ट, कोट, कोरम, केक, केतली, कैंच, कोकोजम, कोको, कोचवान, कौंसिल, गजट, गर्डर, गाटर, गार्ड, गार्जियन, गिरमिट, गिलास, गिलेट, गिन्नी, गेट, गेटिस, गेम, गैस, चाक, चाकलेट, चिमनी, चिक, चुरट, चेयर, चेयरमैन, चेन, जंटल (र) मैन, जंट,

जंफर, जमनास्टिक, जज, जर्मनी, जर्नल, जनवरी, जर्नलमर्चेंट, जाकट, जार्ज, जुलाई, जून, जेल, जेलर, टन, टब, ट्रंक, ट्रॉली, ट्रांबे, टिकट, टिकस, टमाटर, टाई, टेंपरेचर, टिफन, टीम, टीन, ट्रस्ट, टूल, टूलबौक्स, टैम, टेनिस, टेबिल, ट्रे, टेसन (इस्टेशन), टेलीफून, ट्रेन, रेल, टायर, टैप, टैक्टर, टाइमटेबिल, टाउनहॉल, टैक्सी, ठेटर, डबल, डबलमार्च, डंबल, डाक्टर, ड्रामा, डायरी, डाउन, ड्रॉप, डिप्टी, डिस्ट्रिक्टबोर्ड, डिगरी, डिमाई, डेमरेज, डेक्स, डिप्लोमा, ड्यूटी, ड्रिल, डिपो, डेरी, ड्रैस, डैमनकाट, डौन, तारकोल, टैस्ट, थर्ड, थर्ममिटर, दर्जन, दराज, दिसम्बर, नर्स, नकटाई, नवम्बर, नाविल, नेकर, निब, नेकलस, नेट, नाइट, नोट, नोटिस, नोटबुक, नोटिसबोर्ड, नेम, पसेंजर, पल्टन, परेड, पलस्तर, पतलून, पंचर, पम्प, पाकट, पारक, पालिस, पार्टी, पापा, पाट, पार्सल, पास, प्राइमरी, प्लाट, पासबुक, प्लीडर, पेंशन, पेंसिल, पियानो, पेनीसिलिन, प्लेट, प्लेटफार्म, पेट्रोल, पिन, पैन, पिपरमेंट, प्लेग, पुल्टिस, प्रोफेसर, पुलिस, पोटीन, पेटीकोट, प्रेस, प्रेसीडेंट पाइप, पैंट, पैटमैन, पोलो, पोसकार्ड, पौंड, पौडर, फर्मा, फर्स्ट, फलालेन, फरवरी, फर्लांग, फारम, फिनैल, फिटन, फिराक, फीस, फुटवाल, फुलबूट, फुट, फेल, फ्रेम, फैर (फायर), फैसन (फैशन), फैशनेबिल, फोटो, फोटाग्राफी, फोनोग्राफ, वैंक, वम, वटालियन, वरांडी, वटन, वक्स, वग्घी, वंबूकाट, वाडिस, वैरक, वालिस्टर, वास्कट, विल्टी, ब्लाटिंग, विगुल, विरजिस, वी० ए०, वुकसेलर, वुलडॉग, वुरुस, बूट, बैंड, बैंडमास्टर, वैरंग, वाइस्कोप, वाइसिकिल, वैद, वैरा, बोट, बोर्डिंग, मशीन मजिस्ट्रेट, मनीवेग, मनीआर्डर, मई, मफलर, मलेरिया, मशीनगन, मैनेजर, माचिस, मास्टर, मार्च, मानीटर, मारकीन, मिस, मूनिसपेल्टी, मिनट, मिल, मिक्स्चर, मीटिंग, मेजर, मेंबर, मैम, मोटर, रंगरूट, रबड़, रसीद, रपट, रन, रेजीमेंट, रासन, रजिस्ट्री, रजिस्टर, रजिस्ट्रार, रिजल्ट, रिटायर, रिवाल्वर, रिकार्ड, रिविट, रीडर, रूल, रेजीडेंसी, रेस, रेल, रैकेट, राइफल, रोड, लंप, लपटट, लंवर, लवंडर, लंच, लाटरी, लाट, लाइब्रेरी, लालटेन, लान, लाउडस्पीकर, लॉट, लेट, लेटरवक्स, लेक्चर, लेविल, लाइन, लाइन-क्लीयर, लाइसेंस, लैस, लैमन, लेमनजूस, लैमनेड, लोकल, वार्निश, वास्कट, वाइल, वारंट, वालंटियर, वाइसराय, वी० पी०, वेटिंगरूम, वोट, वैसलीन, शटर, समन (सम्मन), सर्जन, सरज, सेंटर, संतरी, सरकस, सवजज, सर्विस, सर्टीफीकेट, साइंस, सिगरेट, सिल्क, सीमंट, सितम्बर, सिकत्तर, सिंगल, सिलीपर, सिलेट, सिट, सिविल सर्जन, सिविल लाइन्स, सूटर, सुपरीडेंट, सूट, सूटकेस, सेशन, सेफ्टीपिन, सेकिंड, सैंपिल, सोप, सोडावाटर, हरीकेन, हाईकोर्ट, हाईस्कूल, हाईकमांड, हारमोनियम, हाकी, हाल, हाल्ट, हापसाइड, हिट, हिस्टीरिया, ह्विस्की, हुड, हुक, हुर्रे, हैडमास्टर, हैट, होल्डर, होटल, होस्टल, होमोपैथी।

इन शब्दों के अतिरिक्त हिन्दी में कुछ अन्य यूरोपियन भाषाओं के शब्द भी सम्मिलित हो गये हैं। इनमें से डच, फ्रेंच तथा पुर्चगीज भाषाएं प्रमुख हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि भारत का सम्बन्ध, इनके बोलने वालों से भी रहा। नीचे की सूची से हिन्दी में प्रयुक्त इन भाषाओं के शब्दों के प्रयोग का कुछ अनुमान किया जा सकता है—

पुर्चगीज़ शब्द :—अचार, अलमारी, अनन्नास, आलपीन, आया, ईस्पात, इस्त्री, कमीज, कप्तान, कनिस्तर, कमरा, काज, काफी, काजू, काकातुआ, क्रिस्तान, किरच, गमला, गारद, गिर्जा, गोभी, गोदाम, चाबी, तम्बाकू, तौलिया, तौला, नीलाम, परात, परेक, पाउ, पाउरोटी, पादरी, पिस्तौल, पीपा, फ़र्मा, फ़ीता, फ्रांसीसी, बर्गा, बपतिस्मा, बालटी, बिसकुट, बुताम, बोतल, मस्तूल, मिस्त्री, मेज़, यीशु, लबादा, संतरा, साया सागू।

इन शब्दों को देखकर आश्चर्य होता है कि हिन्दी में पुर्तगाली भाषा के इतने शब्द कैसे आ गये क्योंकि पुर्तगाल के लोगों की अपेक्षा हिन्दुस्तानियों का सम्बन्ध फ्रांसीसियों से कुछ अधिक रहा है, किन्तु फ्रांसीसी शब्दों की संख्या हिन्दी में बहुत थोड़ी है। यही अवस्था डच भाषा के शब्दों की है। इन भाषाओं के नमूने ये हैं—

फ्रेंच—कार्तूस, कूपन, अंग्रेज।

डच—तुरुप, बम (गाड़ी या तांगे का)।

कुछ भूले-भटके शब्द अन्य यूरोपियन भाषाओं से भी हिन्दी में आ मिलने के लिए तरसते रहे होंगे, किन्तु उन बिचारों को न तो अधिक सम्पर्क का अवसर मिला और न सम्मान प्राप्त करने का। 'अल्पका' जैसे कुछ ही शब्द सम्भवत: स्पेनिश आदि भाषाओं से हिन्दी में भटक आये हैं। आजकल देश के लोगों का सम्पर्क अनेक विदेशों से बढता चला जा रहा है; परिणामत: उन देशों की भाषाओं के बहुत से शब्द भी भारतीय भाषा-भाषियों के शब्द-कोश में बढ़ते जा रहे हैं, किन्तु ऐसे शब्द पढ़े-लिखे लोगों से ही सम्बन्धित होने के कारण लोक-प्रचलित नहीं हैं। विदेशी शब्दों की वृद्धि में विज्ञान का बहुत योग है। राकेट, सल्फा, पेनीसिलिन आदि शब्द विज्ञान के प्रकाश में ही प्रचलित हुए हैं।

विदेशी शब्दों के समावेश से हिन्दी-भाषा ध्वनि-विकास की दिशा में भी प्रगतिशील दिखायी पड़ती है। जहां ज़मीन, फ़रीक, ज़ेवा, ग़र्क, ख़रीफ जैसे शब्दों से हिन्दी-ध्वनि-विकास हुआ वहां ऑफिस, कॉलेज आदि शब्दों से भी ध्वनि विकास को गति मिली है। इस कारण नये लिपि-संकेत बने हैं। आज राष्ट्रभाषा के रूप में अपने पद को दृढ़ बनाती हुई हिन्दी-भाषा को देश की अन्य भाषाओं से सम्पर्क स्थापित करने की भी आवश्यकता हुई है। प्रान्तीय भाषाओं को प्रगति-पथ पर प्रेरित करती हुई राष्ट्रभाषा हिन्दी स्वयं उनकी

निधि एवं शक्ति से समृद्ध हो, इस लक्ष्य में हिन्दी की आत्मनिर्भरता भी सुरक्षित है एवं देश की एकता भी।

अर्थ और ध्वनि-परिवर्तन की दृष्टि से जितना महत्त्व तद्भव शब्द-समूह का है उतना विदेशी शब्द-समूह का नहीं क्योंकि वह अनेक परिवर्तनों में गुजरता हुआ हम तक आया है। तद्भव शब्दों में से बहुत-से तो इतने घिस-पिट गये है कि उनके मूल की खोज कभी-कभी संदिग्ध हो जाती है। यों तो काल-चक्र पर चढ़कर बहुत-से आर्य भाषा के तत्सम शब्दों ने भी अपने अर्थ बदल लिये हैं, जैसे सुर, असुर, गवेषणा, गो आदि, किन्तु इनका सम्बन्ध ध्वनि-विकास से नहीं है। ध्वनि-विकास से सम्बन्धित शब्दों में 'भद्दा' और 'मल्ला' जैसे शब्दों का प्राचुर्य है। ऐसे शब्दों के विकास का इतिहास महत्त्वपूर्ण होने के साथ-साथ मनोरंजक भी है। अतएव ध्वनि और अर्थ-विकास का सम्बन्ध भारतीय आर्य भाषा के विकास से है।

भारतीय आर्य भाषा

भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतर स्वरूप, जिसे सामान्यतया प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का नाम दिया गया है, वैदिक संहिताओं में सुरक्षित है। वेदों में भी सबसे अधिक प्राचीन ऋग्वेद है। इसके बाद आर्य भाषा का प्रतिनिधित्व वह संस्कृत भाषा करती है जिसकी व्याख्या पाणिनि और पतंजलि ने की है और कालिदास आदि कवियों से लेकर जिसका प्रयोग आज तक होता रहा है। वह भाषा भी प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का प्रतिनिधित्व रती है, जो वैदिक आर्यों से लेकर पाणिनि के समय तक और उसके बाद शिष्ट समाज में भी बोलचाल की भाषा रही। इस प्रकार प्राचीन भारतीय आर्य भाषा में वैदिक भाषा और साहित्यिक संस्कृत, दोनों का समावेश हो जाता है।

भारतीय आर्य भाषा का दूसरा स्वरूप वह है जो मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्वरूप ईसा पूर्व ६ठी शती से ईसा की ११वीं शती तक रहता है। इस स्वरूप में प्रायः सभी प्राकृतें समाविष्ट हो जाती है। इसके पश्चात् नव्य भारतीय आर्य भाषा का युग प्रारम्भ होता है जो आज तक चल रहा है।

लगभग ३५-३६ सौ वर्ष से भारतीय आर्य भाषा की धारा कुछ व्याहत होने पर भी अटूट गति से प्रवाहित रही है। भाषा-प्रवाह की ऐसी अटूटता कदाचित ही किसी अन्य भाषा में मिले। इस दृष्टि से विश्व के किसी भाषा-परिवार के इतिहास में भारतीय आर्य भाषा अद्वितीय है। भारोपीय भाषा-क्षेत्र में भी इस भाषा का केन्द्रीय पद बहुत ऊंचा उठ जाता है क्योंकि भारत जैसे उपमहाद्वीप में इसका अबाध इतिहास है; यद्यपि उसमें भाषा को

कुछ दुर्घटनाओं और संक्रमण-चक्रों में होकर भी निकलना पड़ा है। इस दीर्घ-कालीन इतिहास में उस संस्कृत भाषा के अतिरिक्त जो सांस्कृतिक दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण रही है, मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषा से सम्बन्धित प्राकृतों का भी बड़ा व्यापक महत्त्व रहा है क्योंकि लगभग सतरह–अठारह सौ शताब्दियों तक इन्होंने भी भारतीय संस्कृत की भाषाओं के रूप में अपना योग दिया और साहित्यिक और धार्मिक क्षेत्रों में महत्त्व प्राप्त करने के साथ-साथ इन्होंने बोलचाल की भाषाओं के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

यह कहना अनर्गल न होगा कि शुद्ध व्यावहारिक दृष्टिकोण से मध्य–कालीन भारतीय आर्य भाषाओं और बोलियों ने प्राचीन आर्य भाषा की अपेक्षा अधिक व्यापक उपयोगिता सिद्ध की। यद्यपि संस्कृत ने प्राचीन आर्य भाषा के प्रतिनिधि के रूप में अनेक युगों में कभी भी अपने गौरव को एकान्ततः नष्ट नहीं होने दिया और धार्मिक मतभेदों के होते हुए भी देश में उसने ऐक्य स्थापित करने में समुचित योग दिया, फिर भी भारत के इतिहास में कुछ ऐसे युग भी आये जबकि मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं ने उसका निगरण-सा कर लिया। इसका प्रमाण अशोक के इतिहास प्रसिद्ध शिलालेख हैं। प्राकृत शिलालेखों और मुद्रालेखों का महत्त्व लगभग आठ शतियों तक बना रहा और इस युग के उत्तरार्द्ध में प्राकृतों ने बोलचाल और संस्कृति की भाषाओं के रूप में संस्कृत भाषा से बड़ी होड़ लगाई। होड़ लगाने वाली भाषाओं में धार्मिक प्राकृतों (पालि और अर्ध-मागधी) का स्थान प्रमुख है। इन दोनों भाषाओं में उस युग की सांस्कृतिक उपलब्धियों को व्यक्त करने वाला विशाल साहित्य निर्मित हुआ था।

जहाँ तक सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक इतिहास का प्रश्न है, भारत के लिए इन भाषाओं का महत्त्व प्राचीन आर्य भाषा से कहीं अधिक है। दूसरे शब्दों में, इन साहित्यों में संस्कृत साहित्य की अपेक्षा कहीं अधिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध है। यद्यपि प्रायः यह कहा जाता है कि संस्कृत तत्त्वतः वैयाकरणों द्वारा उत्थापित भाषा थी जिसका वर्ग विशेष के लोगों ने साहित्यिक भाषा के रूप में ही नहीं, वरन् बोलचाल की भाषा के रूप में भी उपयोग किया; किन्तु इस सम्बन्ध में मतभेद भी व्यक्त किया जाने लगा है। यहां किसी विवाद में पड़ने के बजाय हम इतना स्वीकार कर सकते हैं कि संस्कृत के संस्कृतीकरण में असंख्य वैयाकरणों का क्रियात्मक योग रहा, जिसके प्रमाण हमें प्रातिशाख्यों से लेकर बहुत बाद तक मिलते हैं। वैया–करणिक शोध-प्रक्रियाओं की चरमसीमा हमें पाणिनि और पतंजलि कृत अष्टाध्यायी और महाभाष्य में दिखाई पड़ती है; किन्तु हमें यह न भुला देना चाहिये कि संस्कृत का शुद्धीकरण प्राचीन भारतीय आर्य बोलियों से हुआ जो ऋग्वेद के समय से ही देश में धारावाही रूप में चली आ रही थीं और जो

पाणिनि और पतंजलि और उनके शताब्दियों बाद तक भी संस्कृत के समानान्तर प्रवाहमय रहीं और वे तब तक रहीं जब तक कि मध्य भारतीय आर्य भाषा ने प्राचीन भारतीय आर्य भाषा की स्थिरता को बोलचाल के माध्यम के रूप में अन्तिम रूप से उलट न दिया और जब तक कि नव्य भारतीय आर्य भाषा अपनी सरलता लेकर बोलचाल का भार-वहन करने के लिये न आ गई।

कुछ लोगों की यह धारणा हो सकती है कि वह संस्कृत जिससे वे परिचित हैं, प्राचीन आर्य भाषा का सर्वस्व है। प्राचीन आर्य बोलियों का उल्लेख समय-समय पर पाणिनि और पतंजलि ने भी किया है। उन्होंने अपनी कृतियों में उन रूपों और अर्थों का उल्लेख भी किया है जो किसी विशेष स्थान पर प्रचलित थे, किन्तु तत्कालीन आर्यावर्त में संस्कृत भाषा के सामान्य ढाँचे में फिट नहीं हो पाये थे। इन बोलियों का विस्तृत ज्ञान प्राचीन आर्य भाषा के आलोचनात्मक अध्ययन से ही सम्भव हो सकता है, किन्तु इन बोली सम्बन्धी प्रवृत्तियों की प्रतीति हमें प्राचीन आर्य भाषाओं की रचनाओं में स्थान-स्थान पर हो जाती है। इसके अध्ययन में मध्यकालीन आर्य भाषा और नव्य आर्य भाषा की सहायता बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

आर्य भाषा : विकास-क्रम

प्राचीन आर्यभाषा के संस्कार के मूल में दो कारण काम कर रहे थे—प्रथम तो यह कि जैसे-जैसे आर्य फैलते गये उनकी भाषा में अन्तर पड़ता गया, इसलिए अपनी राष्ट्रीयता की रक्षा और पारस्परिक संबंध और सहयोग स्थापित करने के लिये उन्होंने एक टकसाली भाषा बनाने का प्रयत्न किया जिससे सम्पूर्ण आर्यावर्त की एक ही शिष्ट भाषा बन सके; दूसरा कारण यह था कि उस समय भारत पर बाह्य आक्रमण होने लगे थे। आक्रमणकारी अपने साथ अपनी नवीन भाषा और संस्कृति लेकर आये थे। एक अन्य कारण यहाँ की अन्य अनार्य भाषाएं भी थीं। द्राविड़, आदि मुंडा भाषाओं के शब्दों का आर्य भाषा में भी प्रचलन होने लगा था। यदि यह क्रम चलता रहता तो संस्कृत के रूप की शुद्धता का अक्षुण्ण रहना असंभव हो जाता। यही सोच कर अपनी भाषा की रक्षा और भाषा के द्वारा संस्कृति और एकता की रक्षा के लिये वैयाकरणों ने भाषा को व्याकरण से जकड़ कर अभेद्य बना दिया। ऐसा कर उन्होंने साहित्यिक भाषा की तो रक्षा कर ली, परन्तु लौकिक भाषा में यह आदान-प्रदान बराबर होता रहा। साहित्य भी इस प्रभाव से पूर्णरूप से अछूता न रह सका। विभिन्न स्थानों के आर्य विभिन्न प्रकार के प्रयोग काम में लाने लगे। कोई 'क्षुद्रक" (छोटा) कहता था, तो कोई "क्षुल्लक", कोई "श्रवण" कहता था तो कोई "श्रोणा"। एक "ड" भिन्न भिन्न स्थलों में ल, ळ, ड़, ल्ह रूप में बोला जाता था।

इससे यह निष्कर्ष निकला कि उस समय भाषा के दो रूप बन गये। पाणिनि के व्याकरण द्वारा अनुशासित भाषा 'संस्कृत' कहलाई और इसके समानान्तर ही एक दूसरी भाषा भी चलती रही, जिसे जनसाधारण की भाषा कहा जाता था। इन दोनों भाषाओं का उद्‌गम वैदिक भाषा से ही हुआ। पाणिनि द्वारा जिस भाषा का संस्कार किया गया वह पहले तो 'संस्कृता वाक्' कहलाई, परन्तु कालान्तर में केवल संस्कृत कहलाने लगी। डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा का कहना है कि "साहित्यिक भाषा से भिन्न लोगों की कुछ बोलियाँ भी अवश्य थीं; इसके प्रमाण हमें तत्कालीन संस्कृत–साहित्य में मिलते हैं। पतञ्जलि के समय के व्याकरण शास्त्र जानने वाले केवल विद्वान् ब्राह्मण शुद्ध संस्कृत बोल सकते थे। अन्य ब्राह्मण अशुद्ध संस्कृत बोलते थे तथा साधारण लोग 'प्राकृत भाषा' (स्वाभाविक बोली) बोलते थे।"* अतः जनसाधारण की बोली जो वैदिक काल के अधिक समीप थी 'प्राकृत' कहलाने लगी। भाषा के इन दो रूपों का प्रमाण वाल्मीकीय रामायण से भी मिलता है। "हनुमान जब अशोक-वाटिका में सीताजी के पास गये तो इस पशोपेश में पड़ गये कि "द्विजी" भाषा में बोलूँ या मानुषी भाषा में। द्विजी भाषा विद्वानों की भाषा थी जिसे संस्कृत कहा जाता है और "मानुषी" भाषा जनसाधारण की थी जिसे प्राकृत कहा जाता है। अन्त में उन्होंने मानुषी भाषा में ही बातचीत की।"†

भाषा के इन दो रूपों के विषय में डा० श्यामसुन्दरदास भी आश्वस्त हैं—"वेदकालीन कथित भाषा से ही संस्कृत भी उत्पन्न हुई और अनार्यों के सम्पर्क से अन्य प्रान्तीय बोलियाँ भी विकसित हुईं। संस्कृत ने केवल चुने हुए प्रचुर-प्रयुक्त व्यवस्थित व्यापक शब्दों से ही अपना भंडार भरा, पर औरों ने वैदिक भाषा की प्रकृति-स्वच्छन्दता को भरपेट अपनाया। यही उनके प्राकृत (स्वाभाविक या अकृत्रिम) कहलाने का कारण है; यही उनमें वैदिक भाषा की उन विशेषताओं के उपलब्ध होने का रहस्य है जो संस्कृत में कहीं दीख नहीं पड़ती।"

इस प्रकार संस्कृत भाषा व्याकरण से सुरक्षित होकर व्यापक और शिष्ट समाज की भाषा बन गई। संस्कृत यह काम कई शताब्दियों तक करती रही, परन्तु जब मगध में मौर्यों का प्रभाव बढ़ा तो इस पूर्वी प्रदेश की बोली ने, जो वैदिक भाषा से भी कुछ अंशों में भिन्न रही थी, सिर उठाया। परन्तु मौर्यों के उपरान्त पुनः संस्कृत का प्रभुत्व बढ़ा। उसके पश्चात् बहुत

*डा० श्यामसुन्दरदास, हि० भा० का इतिहास
†चन्द्रबली पांडेय, भाषा का प्रश्न

समय तक यह भारत की प्रादेशिक भाषाओं को प्रभावित करती हुई सर्वव्यापक रही। इसकी रक्षा का पूर्ण प्रयत्न किया गया। संस्कृत साहित्य की रक्षा के लिए प्राचीन युग में जो युक्तियां काम में लाई गईं वे सभ्य संसार के इतिहास में अद्वितीय हैं। श्रुति की रक्षा के लिए पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ आदि कृत्रिम उपायों का सहारा लिया गया। भाव-गरिमा की रक्षा सूत्र-शैली से की गई। इससे भाषा का स्वरूप रक्षित रहा। बहुत समय तक संस्कृत का स्थान सर्वव्यापक रहा, परन्तु कालान्तर में वह राष्ट्रीय से साम्प्रदायिक बन गई। इसके कारण निम्नलिखित थे:—

(१) वह जनसाधारण के लिए अत्यन्त क्लिष्ट थी। उसके व्याकरणिक नियम ही इसके कारण थे।

(२) आर्य जैसे-जैसे फैलते गये उनका सम्पर्क दूसरे भाषा-भाषियों से होता गया। उन्होंने भी काल-धर्म को स्वीकार कर इन नवीन भाषाओं से आदान-प्रदान प्रारंभ कर दिया।

(३) महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों का प्रचार जनसाधारण की बोलियों में किया, जिससे अर्द्धमागधी और मागधी बोलियाँ धर्म का आश्रय पाकर संस्कृत की बराबरी करने लगीं। बोलियों का यह भेद प्राचीन काल में भी था—एक पूर्व प्रदेश में पूर्वागत आर्यों की बोली और दूसरा पश्चिम भाग अर्थात् 'मध्य देश' में नवागत आर्यों की बोली। गौतम बुद्ध ने ब्राह्मण-धर्म के विरोध मे ही संस्कृत का विरोध किया था।

(४) इस नये धर्म के प्रभाव से बचने के लिये संस्कृत को और भी जटिल बना कर एक साम्प्रदायिक भाषा का रूप दे दिया गया। अत: उसका व्यापक प्रभाव कम हो गया।

इतना होने पर भी संस्कृत बहुत समय तक विद्वानों की भाषा बनी रही। संस्कृत साहित्य संसार का सबसे समृद्ध और उन्नत साहित्य माना जाता है। भारत में आज भी संस्कृत का प्रचार है। वह सदा से ही भारत की अन्य भाषाओं को प्रभावित कर समृद्ध बनाती रही है।

प्राचीन वैदिक भाषा और संस्कृत भाषा के रूप की तुलना कर लेने से यह प्रकट हो जाता है कि

(१) प्राचीन भाषा की अपेक्षा उत्तरवर्ती भाषा में स्वरों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

(२) ऌ का प्रयोग बहुत सीमित हो गया है।

(३) च-वर्ग और ट-वर्ग ध्वनियों का विकास हुआ है;

(४) तीन क-वर्ग के स्थान पर एक ही क-वर्ग रह गया है।
(५) स्पर्शों में प्रत्येक वर्ग में एक-एक अनुनासिक और बना लिये गये हैं।
(६) उदासीन स्वर भी लुप्त हो गया है। उसके स्थान पर 'इ' का प्रयोग होने लगा है।
(७) दो नई ऊष्मध्वनियाँ आ गई हैं—श और स।
(८) ह-ध्वनि का भी प्रयोग होने लगा है।

प्राचीन भाषा में कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं जो उत्तरवर्ती भाषा में नहीं मिलतीं—

(१) ऐ और औ का उच्चारण क्रम से 'आइ' और 'आउ' था।
(२) शब्दों में धातु का अर्थ अपरिवर्तनीय था। बाद में बदलने लगा।
(३) स्वराघात संगीतात्मक था, परन्तु बाद में समाप्त हो गया।
(४) आठ कारक, तीन वचन और तीन लिंग थे।
(५) रूप-रचना जटिल थी। बाद में नियमित और सरल हो गई।
(६) वाक्य में शब्द का स्थान और क्रम निश्चित नहीं था।
(७) उपसर्ग मूल शब्द से पृथक् कहीं भी रक्खे जा सकते थे।

उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त वैदिक भाषा की कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं जो परवर्ती संस्कृत में न मिल कर केवल प्राकृत में मिलती हैं।

(१) प्राकृत में व्यंजनान्त शब्द का प्रयोग प्रायः नहीं होता। संस्कृत के व्यंजनान्त शब्द का अन्तिम व्यंजन प्राकृत में लुप्त हो जाता है—जैसे, संस्कृत 'तावत्' प्राकृत में 'ताव' हो जाता है। वैदिक भाषा में दोनों प्रकार के प्रयोग मिलते हैं, जैसे 'पश्चात्' और 'पश्चा'; पर संस्कृत में इस प्रकार व्यंजन का लोप नहीं होता।

(२) प्राकृत में संयुक्त वर्णों में में एक का लोप कर पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर को दीर्घ कर देते हैं। जैसे, कर्तव्य=कातव्य, निश्वास=नीसास। वैदिक भाषा में भी ऐसा होता है; जैसे दुर्दम=दूडभ; दुर्णाश=दूणाश।

(३) स्वरभक्ति का प्रयोग दोनों भाषाओं में प्रचुरता से होता है। जैसे, प्राकृत–स्व=सुव। वैदिक–तन्व=तनुव।

(४) दोनों में ही पदगत किसी वर्ण का लोप कर उसे फिर संकुचित कर दिया जाता है। जैसे–राजकुल=(प्राकृत) राउल; शतक्रतवः=(वैदिक) शतक्रत्व।

(५) शौरसेनी प्राकृत में अकारान्त शब्द प्रथमा के एकवचन में 'ओकारान्त' हो जाता है । जैसे देवः=शौरसेनी–देवो । सः चित्=(वैदिक) सो चित् ।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि "प्राचीन वैदिक भाषा से ही प्राकृतों की उत्पत्ति हुई, अर्वाचीन संस्कृत से नहीं । यद्यपि लोगों ने समय-समय पर प्राकृत को नियमित और आबद्ध करने का प्रयत्न किया तथापि बोलचाल की उस भाषा का प्रवाह किसी-न-किसी रूप में चलता रहा । उसमें कोई रुकावट न हो सकी । यही 'प्राकृत' अथवा बोलचाल की आर्य भाषा क्रमशः आधुनिक भारतीय देशभाषाओं के रूप में प्रकट हुई ।

मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओं का समय ईसा पूर्व छठी शती से ई० की ११वीं शती तक (कुछ लोग १३०० ई० तक मानते हैं) माना गया है । इस काल में संस्कृत का पराभव होकर प्राकृत का प्रभाव और प्रसार हुआ । संस्कृत के प्राचीन युग में प्राकृत जनसाधारण की भाषा थी । इसी कारण उसमें साहित्य की रचना नहीं हुई । प्राचीन उल्लेखों में उसका प्रयोग कहीं-कहीं अशिष्ट भाषा के रूप में ही मिलता है । परन्तु यह भाषा जनता का आश्रय ग्रहण कर निरन्तर विकसित होती गई, किन्तु अपने विकास-क्रम में इसने अपनी माता वैदिक भाषा से सदैव निकट सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया । मध्य-युग में आकर इस भाषा ने क्रमशः साहित्यिक रूप धारण किया और इसका विकास तीव्र गति से हुआ । इस दीर्घ काल में इसके रूपों में तीन प्रमुख परिवर्तन हुए । इनमें से पहला रूप पाली, दूसरा रूप साहित्यिक प्राकृत तथा तीसरा रूप अपभ्रंश कहलाया । कुछ विद्वान् इन रूपों को क्रमशः प्रथम प्राकृत, द्वितीय प्राकृत और तृतीय प्राकृत भी कहते हैं । समष्टिरूप से हम मध्ययुग को "प्राकृत युग" के नाम से सम्बोधित कर सकते हैं । प्राकृत युग कहने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल की भाषा के तीनों रूप संस्कृत से उत्पन्न न होकर वैदिक भाषा की परम्परा में ही रहे । उन्होंने संस्कृत से प्रेरणा लेकर उसके शब्दभंडार का उपयोग तो किया, परन्तु अपनी प्राकृति को अक्षुण्ण रक्खा । हिन्दी इस परम्परा की अन्तिम कड़ी है ।*

प्राकृत के उपर्युक्त तीनों रूपों के आधार पर मध्ययुग को तीन कालों में विभाजित किया गया है:—

(१) आदिकाल—प्रथम प्राकृत या पाली (छठी ई० पूर्व से १ ई० पूर्व) ।

---

*श्यामसुन्दरदास, हिन्दी भाषा का इतिहास

(२) **मध्यकाल**—साहित्यिक प्राकृत भाषाएँ अथवा दूसरी प्राकृत (१ ई० से ५०० ई० तक) ।

(३) **उत्तरकाल**—तीसरी प्राकृत अथवा अपभ्रंश (५०० ई० से १००० ई० तक) । कुछ विद्वान् स्थूल रूप से अपभ्रंश का समय ईसा की दूसरी शताब्दी से १३वीं शताब्दी के अन्त तक मानते हैं ।

बोलचाल की भाषा का सबसे प्राचीन उपलब्ध रूप हमें अशोक के शिलालेखों तथा प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथों में मिलता है । इस काल में भी बोली-भेद था । इन धर्म-लिपियों की भाषा से यह स्पष्ट होता है कि उस समय उत्तर भारत में बोली के तीन भिन्न-भिन्न रूप थे—पूर्वी, पश्चिमी और पश्चिमोत्तरी । दक्षिणी रूप का कोई उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु धर्म लिपियों की भाषा को देखने से यह नहीं प्रतीत होता कि वह किसी भी बोली का प्रथम साहित्यिक रूप है । इस विषय में डॉ० धीरेन्द्र वर्मा का मत है कि—"मध्यकाल के उदाहरण अधिक मात्रा में पहले-पहल अशोक की धर्म-लिपियों में पाये जाते हैं । यहाँ यह प्राकृत प्रारंभिक अवस्था में नहीं है, किन्तु पूर्ण विकसित रूप में है ।" इसका स्पष्ट अर्थ है कि यह भाषा पहले ही साहित्यिक रूप प्राप्त कर चुकी थी । पाली उसका प्रथम साहित्यिक रूप नहीं था । परन्तु उस पहले रूप के प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं । इस भाषा को बौद्ध मत के प्रभाव से जो साहित्यिक और धार्मिक रूप प्राप्त हुआ तो यह 'पाली' कहलाने लगी। पाली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत 'पंक्ति' शब्द से मानी जाती है । पहले त्रिपिटक की मूल पंक्तियों के लिये इसका प्रयोग होता था । पंक्ति से पंत्ति 7 पत्ती 7 पट्टी 7 पाटी 7 पाली, यह रूप हुआ । इस पाली को पंत्ति, मागधी या मागधी निरुक्ति भी कहते थे । बौद्ध पाली को ही आदि भाषा मानते थे । उनका कथन है कि "आदि कल्प में उत्पन्न मनुष्य-गण, ब्रह्मगण, संबुद्धगण एवं वे व्यक्तिगण जिन्होंने कभी कोई शब्दालाप नहीं सुना जिसके द्वारा भाव-प्रकाशन किया करते थे, वही मागधी भाषा मूल भाषा है ।" बौद्धों का यह आग्रह धार्मिक आग्रह-मात्र है । सभी धर्म के अनुयायी अपने धर्म-ग्रन्थों की भाषा को ही मूल भाषा मानते आये हैं ।

पालिभाषा की उत्पत्ति के संबंध में निश्चित रूप से कुछ इसलिए नहीं कहा जा सकता कि जिस भाषा को पाली नाम से अभिहित किया जाता है वह अपने मूल रूप में बौद्धों की भाषा ही नहीं थी अपितु शौरसेनी प्राकृत की भाँति मध्यदेशीय भाषा थी जो देश के अन्य भू-भागों में भी प्रचलित थी। उसकी कड़ी को वैदिककालीन बोली की शृंखला से वियुक्त नहीं किया जा सकता । हमें यहाँ यह समझने की भूल नहीं करनी चाहिये कि पाली* नाम की भाँति ही यह भाषा बहुत बाद की है ।

*देखिये, लेखककृत पालिभाषा और साहित्य

अकृत्रिम भाषा में (१) छंदस् की भाषा, (२) अशोक की धर्म-लिपियों की भाषा, (३) बौद्ध ग्रन्थों की पाली, (४) जैन सूत्रों की मागधी, (५) ललित विस्तर की गाथा या गड़बड़ संस्कृत और (६) प्राकृत शिलालेखों की अनिर्दिष्ट प्राकृत, ये ही पुराने नमूने हैं। जैन सूत्रों की भाषा मागधी या अर्द्ध मागधी कही गई है। उसे आर्य प्राकृत भी कहते हैं। पीछे से प्राकृत वैयाकरणों ने मागधी, अर्द्ध मागधी, पैशाची, शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि देश-भेद के अनुसार प्राकृत भाषाओं की छांट की।

बौद्ध भाषा संस्कृत पर अधिक आधारित रही है। सिक्कों तथा लेखों की भाषा भी वैसी ही है। शुद्ध प्राकृत के नमूने जैन सूत्रों में मिलते हैं। यहाँ दो बातें ध्यान रखने की हैं—(१) एक तो यह कि जिसने व्याकरण बनाया, उसने प्राकृत को भाषा समझकर व्याकरण नहीं लिखा, (२) दूसरी बात यह कि संस्कृत नाटकों की प्राकृत को शुद्ध प्राकृत का नमूना नहीं मानना चाहिये। वह नकली या गढ़ी हुई प्राकृत है। पुराने काल की प्राकृत-रचना देश-भेद के नियत हो जाने पर, या तो मागधी में हुई या महाराष्ट्री प्राकृत में। शौरसेनी, पैशाची आदि केवल भाषा में विरल देश-भेद मात्र रह गईं। मागधी, अर्द्ध-मागधी तो आर्ष प्राकृत रह कर जैन सूत्रों में ही बंद हो गई। वह भी एक तरह की छंदस् की भाषा बन गई। प्राकृत वैयाकरणों ने महाराष्ट्री का पूरी तरह विवेचन कर उसी को आधार मानकर, शौरसेनी आदि के अन्तर को उसी के अपवादों की तरह लिखा है।

जो हो, देश-भेद से कई प्राकृत होने पर भी प्राकृत (साहित्य की प्राकृत) एक थी। जो पद पहले मागधी का था, वह महाराष्ट्री को मिला। वह परम प्राकृत और सूक्तिरत्नों का सागर कहलाई। राजाओं ने उसकी कद्र की थी। हाल (सातवाहन) ने उसके कवियों की चुनी हुई रचना की सतसई बनाई, प्रवरसेन ने सेतुबंध मे अपनी कीर्ति उसके द्वारा सागर के पार पहुंचाई, वाक्पति ने उसी में गौडवध किया, किन्तु यह पंडिताऊ प्राकृत हुई, व्यवहार की नहीं। जैनों ने धर्म-भाषा मान कर उसका स्वतन्त्र अनुशीलन किया। मागधी की तरह महाराष्ट्री भी जैन रचनाओं में ही शुद्ध मिलती है।

और छन्दों के होने पर भी जैसे संस्कृत का 'श्लोक' छन्द छन्दों का राजा है, वैसे ही प्राकृत की रानी 'गाथा' है। लम्बे छन्द प्राकृत में आये कि संस्कृत की परछाई स्पष्ट दीख पड़ी। एक समय ऐसा आया जब प्राकृत कविता का आसन ऊँचा हुआ और यह कहा गया कि देशी शब्दों से भरी प्राकृत कविता के सामने संस्कृत की कौन सुनता है। राजशेखर ने तो प्राकृत को मीठी और संस्कृत को कठोर कह डाला:—

"परुसा सक्कअ बन्धा पाउअबन्धो वि होइ सुउमारो।
पुरुस महिलाणं जेन्ति यमिहन्तर तेत्तियमिमाणं॥"

अपभ्रंश—"बाँध से बचे हुए पानी की धाराएँ मिलकर अब नदी का रूप धारण कर रही थीं, उनमें देशी की धाराएँ भी आकर मिल गईं। देशी और कुछ नहीं, बाँध से बचा हुआ पानी है, या वह पानी है जो नदी-मार्ग पर चला आया, बाँधा न गया। उसे भी कभी-कभी छानकर नहर में ले लिया जाता था। बाँध का जल भी रिसता-रिसता इधर मिलता जा रहा था। पानी बढ़ने से नदी की गति वेग से निम्नाभिमुखी हुई। उसका अपभ्रंश होने लगा।"

राजशेखर ने संस्कृत-वाणी को सुनने योग्य, प्राकृत को स्वभाव-मधुर, अपभ्रंश को सुभव्य और भूतभाषा को सरस कहा है। उसने काव्य-पुरुष का शरीर शब्द और अर्थ का बनाया है जिसमें संस्कृत को मुख, प्राकृत को बाहु, अपभ्रंश को जघनस्थल, पैशाची को पैर और मिश्र को उरु कहा है।

देशभाषा और साहित्यिक भाषा नाम से अपभ्रंश के दो भेदों का उल्लेख संस्कृत के प्राचीन नाटकों तथा कविताओं में मिलता है। नाटकों में सामाजिक व्यवहारों का प्रदर्शन होता है। इससे उस समय की देशभाषा के प्रचलित मुहावरों का नाटक में समावेश हो जाना स्वाभाविक है।

अपभ्रंश शब्द का अर्थ है बहुत नीचे गिरना और अपभ्रंश का तात्पर्य उस भाषा से जोड़ा गया जो बहुत नीचे गिरी हुई मानी गई। भाषा को यह नाम किसने दिया? अनुमानत: यह नाम ब्राह्मणों का दिया हुआ है। ब्राह्मणों ने ब्राह्मणेतर वर्णों का तथा सामान्य लोक में प्रचलित भाषा को अपभ्रंश नाम देकर लोकभाषा का तिरस्कार ही किया है। इसका एक प्रमाण यह है कि जिस वर्ग या वर्ण ने संस्कृत को देव-भाषा संज्ञा प्रदान की, उसी ने लोक भाषा को 'प्राकृत' और 'अपभ्रंश' संज्ञा प्रदान की और यह काम ब्राह्मणों के सिवा दूसरों का नहीं है।

यदि लोक-भाषा पतित या गिरी हुई होती है तो क्या वेद-भाषा लोक-भाषा नहीं थी? जिसको पाणिनि ने शिष्ट भाषा कहा है उससे वेद-भाषा भिन्न है। मुझे इसमें संदेह नहीं है कि वेदों की भाषा उस समय की लोकभाषा है—लोक की प्रकृति-सिद्ध या स्वाभाविक भाषा है और जो भाषा प्रकृतिसिद्ध हो उसे पतित या नीच कैसे कहा जा सकता है। अनेक प्राकृतों और वेदों की भाषा में गहन संबंध है। प्राकृतों का जितना सम्बन्ध वैदिक भाषा से दृष्टिगोचर होता है, उतना पाणिनि की शिष्ट भाषा से नहीं प्रतीत होता है। वैदिक और प्राकृत भाषाओं की क्रियाओं में अति निकट साम्य मिलता है' अतएव यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वेदों में मिलने वाली लौकिक भाषा को तो 'आर्ष' कह कर पवित्र बतलाया जाये और लोक-प्रचलित भाषाओं को भ्रष्ट कह कर तिरस्कृत किया जाये।

कहने का तात्पर्य यह है कि लोक-भाषा को अपभ्रंश नाम ब्राह्मणों के मुख से ही मिला। जिस प्रकार कभी वेदों की भाषा लोक-भाषा रूप में प्रचलित थी उसी प्रकार अपभ्रंश कही जाने वाली भाषा भी कभी समस्त भारत में प्रचलित थी। ब्राह्मणों ने केवल यही नहीं कहा कि लोक-भाषा 'अपभ्रंश' है, वरन् यह भी कहा कि जो शास्त्र इस लोक-भाषा में रचित हैं वे प्रमाणित नहीं हैं, चाहे उनमें अहिंसादि तत्त्वों की मीमांसा ही क्यों न की गई हो। जिस प्रकार कुत्ते के चमड़े की कोथली में भरा गाय का दूध भ्रष्ट होता है, वह ग्रहणीय नहीं होता उसी प्रकार भ्रष्ट भाषा में निरूपित तत्त्व-ज्ञान भी ग्राह्य नहीं है—

"सन्मूलम्–अपि अहिंसादि श्वदृतिनिक्षिप्त क्षीरवत् अनुपयोगि अविश्रम्भणीय च।"

प्राचीन भाषा के पक्षपाती पंडितों ने 'अपभ्रंश' शब्द के प्रयोग से भाषा में जो खोट निकाल कर उसे तिरस्कृत किया है उसके लिए उसमें कोई गुंजाइश नहीं है। प्राचीन पंडितों ने अपभ्रंश में जिस भ्रष्ट उच्चारण का खोट निकाला था, वास्तव में खोट नहीं है वह तो लोक-भाषा की प्रकृति है जिसके आधार पर लोकभाषा, साधारण भाषा, जनपद भाषा देशी भाषा या प्राकृत भाषा नाम दिया जाना चाहिये था। जिस प्रकार गोरे लोगों ने हमारी भाषा को वर्नाक्यूलर नाम से अभिहित किया था उसी प्रकार उस समय के जातिवादी ब्राह्मणों ने साधारण जनभाषा को - लोकभाषा को—अपभ्रंश कहा था। फिर भी वाक्पति राजशेखर आदि वैदिक ब्राह्मणों ने प्राकृत भाषा की बड़ी प्रशंसा की है—"प्राकृत भाषा भाषा-मात्र की—शुद्ध संस्कृत तक की—जननी है।" यह कह कर उन्होंने प्राकृत भाषा का गुणानुवाद किया है। इतना ही नहीं वरन् उन्होंने इस भाषा में सेतुबंध, कर्पूरमंजरी जैसे ग्रन्थों की रचना करके प्राकृत भाषा के उत्कर्ष को ही दिखलाया है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मागधी और शौरसेनी शब्द प्रदेश-विशेष की भाषा के बोधक हैं और पैशाची शब्द जाति-विशेष की भाषा का ज्ञापक है। 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग देश-विशेष या जाति-विशेष की भाषा के लिए नहीं हुआ, बल्कि वैदिक और लौकिक संस्कृत का भ्रष्ट रूप, आर्ष प्राकृत या साधारण प्राकृत का भ्रष्ट रूप, मागधी का भ्रष्ट रूप, शौरसेनी का भ्रष्ट रूप अथवा भाषाओं का भ्रष्ट रूप—अपभ्रंश के भाव में समाविष्ट हो जाता है।

जिस प्रकार प्राकृत भाषा का व्यापक अर्थ है, उसी प्रकार अपभ्रंश शब्द का भाव व्यापक है। यह एक विशिष्ट भाषा के अर्थ का द्योतक है। जिस भाषा की सूचना अपभ्रंश शब्द देता है। वह कब उत्पन्न हुई थी, यह कहना दुष्कर है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से देखने से अपभ्रंश भाषा अपना जन्म सम्बन्ध वैदिक युग की आदिम प्राकृत के साथ रखती है। वैदिक युग में जो भाषा बोल-चाल में प्रचलित थी, वह आदिम प्राकृत के नाम से प्रसिद्ध है। आदिम प्राकृत के बोलने वाले आर्यों अथवा उनके सम्पर्क में आने वाले आदि लोक का उच्चारण एक-सरीखा नहीं था। आशय यह है कि उच्चार्यमाण आदिम प्राकृत का जो उच्चारण-विशेष भ्रंश को प्राप्त हुआ उसका ए समग्र नाम अपभ्रंश नाम से अभिहित किया जा सकता है। याद रखने की बात है कि आदिम प्राकृत के भ्रष्ट उच्चारण का सूचक अपभ्रंश शब्द भाषा विशेष का सूचक न था। फिर भी विशेष भाषा-रूप अपभ्रंश का बीज उ भ्रष्ट उच्चारण में निहित है, इसमें संदेह नहीं है।

अपभ्रंश शब्द का सबसे पहला उपलभ्य प्रयोग पतंजलि के 'महाभाष्य में मिलता है। वहाँ अपभ्रंश शब्द केवल अशुद्ध या विकृत उच्चारण का सूच है। वे कहते हैं कि अशक्ति से किसी प्रकार ब्राह्मणी द्वारा 'ऋतक' के स्था पर 'लृतक' प्रयुक्त हुआ। ब्राह्मणी का यह 'लृतक' उच्चारण भ्रष्ट है। इ प्रकार उनके समीप गँवारों (ग्राम्य-जनों) के उच्चारण—असामर्थ्य के कार बिगड़े हुए संस्कृत शब्द ही अपभ्रंश हैं। वे कहते हैं कि प्रत्येक शब्द के अने विकृत रूप हो गये हैं; जैसे—'गो' के 'गऊ' 'गवी' गोता, 'गोपोतलिका' गो आदि हो गये हैं। इस दृष्टि से अपभ्रंश का अर्थ केवल विकार, विभ्रंश विभ्रष्ट होता है जो भरत ने भी माना है।

अपभ्रंश का विशेष अर्थ—धीरे-धीरे किसी एक भाषा के प्राबल्य के व से वही भाषा सर्वसाधारण की लोक-भाषा बन गयी। वैदिक या लौकिक संस् में पहले पहल 'अपभ्रंश' का प्रयोग साधारण या यौगिक अर्थ में ही होता थ रूढ़ प्रयोग तो बहुत बाद में हुआ है।

विशेष भाषा के अर्थ में 'अपभ्रंश' का प्रयोग

(१) भरत के नाट्यशास्त्र में जिसकी रचना विक्रम की छठी श से पूर्व मानी जाती है, १७ वें अध्याय में अतिभाषा, आर्यभाषा, जातिभा योन्यन्तरी भाषा, भाषा, विभाषा आदि अनेक सामान्य पदों द्वारा अने भाषाओं की महिमा प्रतिष्ठित की गई है। इसके उपरान्त मागधी, अवन्तिः प्राच्यभाषा—शौरसेनी, अर्द्धमागधी, बाह्लीका और दाक्षिणात्या इन स भाषाओं को भाषा नाम से अभिहित किया गया है तथा वनेचरी भाषा विभाषा के नाम से अभिहित किया गया है। शकार, आभीर, चाण्डाल, शब द्रमिल, आन्ध्र आदि की भाषाओं को (शकारी, चाण्डाली, आभीरी, शाब द्राविड़ी या द्रामिडी तथा आन्ध्र) विभाषाओं में गिनाया गया है।

भरत मुनि से सम्बन्धित उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है:—

१—उनके समय में देशभाषा का प्रचलन था, जो संस्कृत और प्राकृत से भिन्न केवल प्रांतों की बोलचाल की भाषा थी।

२—उनके समय में सात भाषाएँ मानी जाती थीं—मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाह्लीका, दाक्षिणात्या। ये उस समय की साहित्यिक भाषाएँ थीं और बोलचाल की भाषाओं को विभाषा कहते थे जिनमें शकारी, आभीरी, चाण्डाली, शाबरी, द्रामिल या द्राविड प्रमुख थीं। ये भाषाएँ हीन वर्ग या चरवाहा जाति के लोगों की बोलियाँ थीं।

३—चरवाहा आदि जातियों की भाषा का नाम आभीरी पड़ा और धीरे-धीरे उसने विशेष नाम तथा प्राकृत की साहित्यिक भाषाओं में विशेष स्थान प्राप्त कर लिया।

४—भरत के समय में अपभ्रंश को लोग जानने लग गये थे, यद्यपि यह उस समय अपनी प्रारम्भिक तथा विकासात्मक अवस्था में ही थी।

५—भरत ने 'उकार' को अपभ्रंश की मुख्य व्यापक विशेषता बतलाया है और उसने उसका प्रचार सिंध, सौवीर और पंजाब में बतलाया है। यही वह देश था जहाँ अपने गाय, घोड़े, ऊँट आदि पशुओं को लेकर ग्वाले लोग पहले-पहल आकर बसे थे। विशेषत: ऊँट वालों के लिए सिंधु नदी की बालुकाकीर्ण भूमि से अच्छा स्थान और कोई न था।

६—भरत ने आभीरी के लिए अपभ्रंश का प्रयोग कहीं भी नहीं किया है। इससे पता चलता है कि यह भाषा भरत के समय में अपने प्रारम्भिक विकास की अवस्था में थी और आभीरोक्ति के नाम से प्रसिद्ध थी। इसके बोलने वालों का स्थान पंजाब और ऊपरी सिंध में था। इस बोली का क्षेत्र संकुचित होने से—केवल पशुपालकों की भाषा होने के कारण—इसका साहित्य नहीं बनने लगा था। शनैः शनैः ये लोग दक्षिण तथा उत्तर की ओर बढ़े, आर्य जनता में इन्होंने अपने को मिला दिया और इन्हीं की वाणी के योग से प्राकृत को अपभ्रंश का रूप मिला।

२—चण्ड ने अपने प्राकृत-व्याकरण (वि० छठी शती) में "नलोपोऽपभ्रंशेऽधोरेफस्य"* सूत्र में विशेष भाषावाचक रूढ़ 'अपभ्रंश' पद का उपयोग किया है।

३—वलभी के राजा धरसेन द्वितीय के एक शिलालेख से जिसमें 'अपभ्रंश-प्रबन्ध' पद का प्रयोग हुआ है, अपभ्रंश पद के रूढ़ प्रयोग का

* देखिए, चण्ड का प्राकृत लक्षण, पृष्ठ २४, सूत्र ३७ (सत्य०)

साहित्यिक अपभ्रंश-काल पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। शिलालेख की वह पंक्ति जिसमें रूढ़ अपभ्रंश पद का प्रयोग है—

"संस्कृतप्राकृताभ्रंशभाषात्रयप्रतिबद्धप्रबन्धरचनानिपुणः"

धरसेन का पिता गृहसेन जिसके विषय में यह शिलालेख लगवाया गया था, ५५९ और ५६९ ई० से सम्बद्ध किया गया है। इससे पता चलता है कि ईसा की छठी शताब्दी के मध्य में अपभ्रंश में साहित्यिक रचना होने लगी थी, यद्यपि अभी तक उस समय का कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं हुआ है।

४—भामह भी अपभ्रंश से परिचित थे। ये छठी शताब्दी के अन्त में वर्तमान थे। इन्होंने अपने 'काव्य' में लिखा है:—

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यंपद्यं च तद् द्विधा।
संस्कृतं प्राकृतं चान्यदपभ्रंश इति त्रिधा ॥"

भामह के इस उल्लेख के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छठी शताब्दी के अन्त तक अपभ्रंश भी काव्य-भाषा मानी जाने लगी थी, परन्तु इससे यह नहीं पता चलता कि यह भाषा किन लोगों द्वारा बोली जाती थी।

५—महाकवि दण्डी (वि० आठवीं शती) ने अपने समय की साहित्यिक भाषाओं में अपभ्रंश का भी नाम गिनाया है—

**"आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः।
शास्त्रे तु, संस्कृतादन्यद् अपभ्रंशतयोदितम् ॥"**

(काव्यादर्श १ परि० श्लोक ३६)

दण्डी के इस श्लोक के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है—

१—आभीरादि की गिरा ही अपभ्रंश थी।

२—काव्य में अपभ्रंश का प्रयोग प्रतिष्ठित हो गया था।

६—'कुवलयमाला' कथा के कर्त्ता दाक्षिण्य चिह्न वा उद्योतनसूरि (वि० नवीं शती) ने अपनी कथा में अपभ्रंश पद का प्रयोग विशेष भाषा के अर्थ में किया है—

"किं चि अवब्भंसकया का वि य पेसायभासिल्ला"

(कुवलयमाला प्रारम्भ, हस्तलिखित अ०पा०)

७—रुद्रट ने (वि० नवीं शती) अपने काव्यालंकार में भाषाओं के ६ भेद किए हैं:—१. संस्कृत २ प्राकृत ३. मागध ४. पैशाची ५. शौरसेनी ६. अपभ्रंश, जिसके देश-भेद के कारण कई भेद हो गये थे—

**"प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च।
षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंश ॥"** २.१२

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मागधी आदि प्रांतीय भाषाओं के अतिरिक्त उन प्रांतों में अपभ्रंश भी कुछ भेद के साथ प्रचलित थी। यह उनकी तरह केवल एकदेशीय होकर नहीं रह गई थी।

८—**राजशेखर**—इनका समय भी नवीं शताब्दी है। राजशेखर ने बड़े कौशल से न केवल राजसभा में स्थित कवियों के स्थान का निर्देश किया है, वरन् संस्कृत आदि भाषाओं के प्रचार-स्थानों का उल्लेख भी कर दिया है। देखिए—

"तस्य चोत्तरतः संस्कृताः कवयो निविशेरन् ।
पूर्वेण प्राकृताः कवयो…………
पश्चिमेनापभ्रंशिनः कवयः
दक्षिणतो भूतभाषाकवयः

(काव्यमीमांसा पृ० ५४)

इससे स्पष्ट है कि अपभ्रंश के कवियों का स्थान राजशेखर ने पश्चिम माना है। इसी भाव को राजशेखर ने कुछ अधिक विस्तार देकर इस प्रकार व्यक्त किया है—

**"गौडाद्याः संस्कृतस्थाः परिचितरुचयः प्राकृते लाटदेशाः
सापभ्रंशप्रयोगाः सकलमरुभुवष्टक्कभादानकाश्च ।
आवन्त्याः पारियात्राः सहदशपुरजैर्भूतभाषां भजन्ते
यो मध्ये मध्यदेशं निवसति स कविः सर्वभाषानिषण्णः ।।**

इस प्रकार राजशेखर यह प्रकट कर देता है कि उसके समय में अपभ्रंश का प्रचार सारे मरु प्रदेश तक और भादानक प्रदेश में था। इससे हम यह नहीं कह सकते कि अपभ्रंश भाषा केवल उन्हीं प्रदेशों में बोली जाती थी, इसका तात्पर्य केवल यही है कि उस समय उन प्रदेशों के साहित्य में अपभ्रंश का प्रचलन था। राजशेखर यह भी लिखता है कि राजा के नौकरों को अपभ्रंश भाषा में प्रवीण होना चाहिये क्योंकि नौकरों के द्वारा ही राजा साधारण लोगों के दुःखों को जान सकता है। सम्भवतः राजशेखर ने इसी विचार से राजा के नौकरों के निमित्त यह नियम रखा है। एक अन्य श्लोक में राजशेखर ने एक और मार्के की बात कह दी है: वह यह कि सुराष्ट्र, चवण आदि स्थानों के कवि संस्कृत में रुचि रखते थे, परन्तु उसमें अपभ्रंश का पुट सदैव रहता था। श्लोक इस प्रकार है—

**"सुराष्ट्रचवणाद्या ये पठन्त्यर्पितसौष्ठवम् ।
अपभ्रंशवदंशानि ते संस्कृतवचांस्यपि"।।**

इस प्रकार मरु, टक्क और भादानक के साथ चवण और सुराष्ट्र ने भी साहित्यिक अपभ्रंश की वृद्धि में अपना योग दिया।

राजशेखर की काव्य-मीमांसा में अपभ्रंश से सम्बन्धित ये सूचनाएं मिलती हैं—

१—नाटकों में भृत्य पात्रों की भाषा अपभ्रंश होती थी।

२—राजकर्मचारी अपभ्रंश-भाषण-प्रवण होते थे।

३—संस्कृत के साथ लालित्य की वृद्धि के लिए काव्य में अपभ्रंश का प्रयोग भी प्रचलित हो गया था।

४—राजशेखर के समय अपभ्रंश भाषा साहित्यिक भाषा नहीं थी, अपितु बोलचाल की भाषा भी थी। साहित्य और बोलचाल की भाषाएँ एक दूसरे से बहुत सम्बन्धित थीं और दोनों जीवित भाषाएँ थीं। अन्य पुरानी प्राकृतों की भाँति अपभ्रंश अभी मृत भाषा नहीं हुई थी।

नमिसाधु की कुछ उक्तियों से भी अपभ्रंश की स्थिति पर काफी प्रकाश पड़ता है। काव्यालंकार की टीका में वे लिखते हैं—

"प्राकृतेवापभ्रंशः। सचान्यैरूपनागराभीरग्राम्यादभेदेन त्रिधोक्तस्तान्निरसायमुक्तं भूरिभेद इति कुतो देशविशेषात्। तस्यच लक्षणं लोकादेव सम्यगवसेयम्॥"

नमिसाधु की उक्तियों से यह बात प्रकाश में आती है कि "अपभ्रंश का प्रसार मगध तक था।" भारत के समय के अपभ्रंश के बीज (आभीरी) ने उगकर अपना प्रसार सिंध, मुलतान और उत्तर पंजाब तक कर लिया और धीरे-धीरे नमिसाधु के समय (वि० ११२५) तक उसकी शाखाएँ मगध तक फैल चुकी थीं।

यहाँ हम सरस्वती-कण्ठाभरण के रचयिता भोज और वाग्भटालंकार के रचयिता वाग्भट को भी अपभ्रंश के सम्बन्ध से भुला नहीं सकते क्योंकि अपभ्रंश की स्थिति पर रचना के उद्धरणों से पर्याप्त प्रकाश पड़ सकता है। भोज कहते हैं कि गुर्जर लोग अपने अपभ्रंश से ही तुष्ट होते हैं, उत्तर भाषाओं से नहीं:—"अपभ्रंशेन तुष्यन्ति नान्येन गुर्जरा।"

(सरस्वती-कण्ठाभरण, पृ० २ श्लोक १३)

और वाग्भट ने काव्य की काया के निर्माणार्थ चार भाषाओं का उल्लेख किया:—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और भूत-भाषित:—

"संस्कृतं प्राकृतं तस्य अपभ्रंशो भूतभाषितम्,
इति भाषाश्चतस्रोऽपि यान्ति काव्यस्य-कायताम्।"

(वाग्भटालंकार, पृ० २.१)

वाग्भट ने 'शुद्ध अपभ्रंश' की बात कह कर उसके विकार या भ्रंश की ओर भी इंगित किया है:—

"अपभ्रंशस्तु यच्च तद्शुद्धं देशेषु भाषितम्।"

(वाग्भटा० श्लोक ३)

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि साहित्यिक अपभ्रंश का अस्तित्व विक्रम की छठी शती के आस-पास का है, किन्तु भरत द्वारा किया हुआ 'आभीरोक्ति' शब्द का प्रयोग और उसके उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किये गये अपभ्रंश पद्य साहित्यिक अपभ्रंश को विक्रम की छठी शती से भी पूर्व पहुँचा देते हैं।

बात यह है कि किसी भाषा में साहित्यिक रचना एक साथ ही नहीं फूट निकलती। जो भाषा लोक-भाषा के रूप में स्थिर हो जाती है, जिसके प्रयोग स्थिर हो जाते हैं, कवि उसी भाषा में अपने सब भावों को व्यक्त कर सकता है, किन्तु लोक-भाषा को साहित्यिक भाषा का रूप प्राप्त करने में समय तो लगता ही है। अतएव भरत मुनि द्वारा दिये हुए अपभ्रंश-पद्यों के आधार पर यह कहना अनुचित नहीं है कि इन साहित्यिक पद्यों की भाषा को उनके स्तर तक आने के लिए एक-डेढ़ शती का समय तो लग ही गया होगा। अतएव भाषा के रूप में अपभ्रंश का प्रचलन विक्रम की चौथी-पाँचवी शती तक पहुँच जाता है।

महायान पंथ के ललितविस्तर आदि ग्रन्थों के अपभ्रंश पद्य—तुलनात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि से देखने पर उक्त ग्रन्थों में आनेवाले अनेक पद्यों की भाषा चोखी अपभ्रंश है। बौद्धमहायान-परंपरा के ललितविस्तर, लंकावतार-सूत्र, सद्धर्मपुण्डरीक आदि-आदि अनेक ग्रन्थों में जो आज उपलब्ध हैं ऐसे अनेक पद्य मिलते हैं जो न तो संस्कृत के हैं न रूढ़ प्राकृत के; किन्तु उन पद्यों में आये हुए विभक्त्यन्त पदों को देखकर अपभ्रंश का कोई भी विद्वान् उनमें विकसित अपभ्रंश रूप को पा सकता है।

जैन ग्रन्थ वसुदेवहिंडि आदि में अपभ्रंश पद्य और गद्य—इसके उपरान्त जैन-ग्रन्थ वसुदेवहिंडि आवश्यक चूर्णि, कुवलयमाला आदि ग्रन्थों में स्पष्ट अपभ्रंश-पद्य विद्यमान हैं।

उक्त बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों का समय—कुवलयमाला में ही सुन्दर संदर्भवाला गद्य अपभ्रंश मिलता है। कुवलयमाला का समय वि० की नवीं शती माना जाता है। आवश्यकचूर्णि का समय विक्रम की ८वीं शती है। जैनों का एक ग्रंथ 'विशेषणवती' है। उसका समय ७वीं शती है। इसी ग्रन्थ में 'वसुदेवहिंडि' ग्रन्थ का परिचय दिया हुआ है, जिसका समय ५वीं-६ठी शती के बीच में माना जाता है। इन जैन ग्रन्थों के आधार पर ही साहित्यिक अपभ्रंश का समय विक्रम की पाँचवीं शती के उत्तरार्ध में पहुँच जाता है।

बौद्ध ग्रन्थों का समय इनसे भी पूर्व जा पहुंचता है। ललितविस्तर का समय विक्रम की चौथी शताब्दी माना जाता है। इससे साहित्यिक अपभ्रंश

किसी चालू भाषा को साहित्यिक पद पर पहुँचते-पहुँचते एकाध शताब्दी का समय तो लग ही सकता है।

बोलचाल की अपभ्रंश तथा साहित्यिक अपभ्रंश का समय—इस प्रकार देखने पर बोलचाल का अपभ्रंश पाली, आर्षप्राकृत या अर्धमागधी का निकटवर्ती है और बोलचाल के अपभ्रंश के पीछे ही साहित्यिक अपभ्रंश का आविर्भाव घटित प्रतीत होता है। समय की दृष्टि से साहित्यिक अपभ्रंश का शैशवकाल विक्रम की तीसरी शताब्दी, किशोरकाल चौथी शताब्दी, और पाँचवीं शताब्दी के पीछे इसका यौवन काल माना जा सकता है।

'अपभ्रंश प्रबन्ध' के सूचक उक्त शिलालेख तथा पाँचवीं-छठी शती के वसुदेवहिंडि ग्रन्थ में आने वाले अपभ्रंश-पद्य साहित्यिक अपभ्रंश के जिस समय की सूचना देते हैं और उक्त ललितविस्तर के पद्यों से साहित्यिक अपभ्रंश के जिस विकासमान यौवनकाल का अनुमान कराया गया है, उनके बीच में विशेष अन्तर नहीं है। इसलिए साधारण रीति से साहित्यिक अपभ्रंश का समय पाँचवीं शती कहना अनुचित नहीं है।

अपभ्रंश का साहित्य—साहित्य की दृष्टि से देखने पर अपभ्रंश का साहित्य विपुल है। महाकवि चतुर्मुख, स्वयंभू, त्रिभुवन, तिलकमंजरीकार धनपाल, 'भविसयत्तकहा' का रचयिता द्वितीय धनपाल, पुष्पदंत, कनकामर और जोइंदु आदि कवियों का अपभ्रंश के विकास में बहुत बड़ा योग है।

अवहट्ट और अपभ्रंश—कुछ कवियों ने अपभ्रंश भाषा को 'अवहट्ट' (अपभ्रष्ट) शब्द से अभिहित किया है। अवहट्ट* और अपभ्रंश, इन दो पदों के अर्थ में विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता।

अपभ्रंश का वैविध्य—जैन और बौद्ध कवियों ने अपभ्रंश भाषा में समान रूप से रुचि दिखलायी है। देशभेद और कालभेद में अपभ्रंश में एक तारतम्य मिलता है। भेददृष्टि से अपभ्रंश के शौरसेन, मागध, पैशाच आदि प्रान्तिक भेद किये गये हैं। जिस प्रकार एक सर्वसाधारण 'प्राकृत' के प्रान्तिक भेद शौरसेन प्राकृत, मागध प्राकृत आदि कहलाये, उसी प्रकार एक सर्वसाधारण अपभ्रंश के 'शौरसेन अपभ्रंश' आदि भेद हुए। इस संबंध में यह बात याद रखनी चाहिये कि मूल अपभ्रंश और प्रान्तिक अपभ्रंश में असाधारण अन्तर नहीं रहा था।

---

* संदेशरासक में भाषाओं की गणना में अपभ्रंश के लिये अवहट्ट (अपभ्रंशक) शब्द मिलता है—"अवहट्टय-सक्कय-पाइयंमि पेसाइयंमि भासाए।" गाथा—६

अर्थात् अवहट्टय (अपभ्रष्टक), संस्कृत, प्राकृत और पैशाचिक भाषाओं के नाम लिये गये हैं।

राजशेखर और मार्कण्डेय द्वारा किये हुए अपभ्रंश-भेद—राजशेखर के काव्यमीमांसा आदि अलंकार ग्रन्थों में अपभ्रंश के नागर, टक्क, व्राचड आदि भेद किये गये हैं। इस भेद-गणना की प्राचीन परंपरा का अनुसरण करके मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के अनेक भेद किये हैं। मार्कण्डेय अपभ्रंश के नागर, व्राचड और उपनागर–इन तीन भेदों को प्रधान समझता है। इसके पश्चात् लाट, वैदर्भ, बार्बर, आवन्त्य, पांचाल, टाक्क, मालव, कैकय, गौड़, औढ्र, पाश्चात्य, पांड्य, कौन्तल, सैंहल, कालिंग्य, प्राच्य, कार्णाटिक, द्राविड़, गौर्जर, आभीर, मध्यदेशीय, वैतालिकी आदि सत्ताईस[1] भेदों की सूचना देता है।

विकास की दृष्टि से अपभ्रंश ने गद्य और पद्य दोनों शैलियों में विकास किया। ललितविस्तर महापुराण का गद्य-भाग सरल संस्कृत में है और पद्य-भाग अपभ्रंश भाषा में है। जिस प्रकार लोक-भाषा के ग्रन्थों में संस्कृत व असंस्कृत जैसी शैली विशेष शोभा देती है, उसी प्रकार ललितविस्तर की प्रांजल संस्कृत में लोक-भाषा की रचना से विशेष सौष्ठव आता है। प्रबन्ध-चिन्तामणि आदि प्रबन्ध-ग्रन्थों की एवं इसी प्रकार के अन्य कथा-ग्रन्थों की रचना-शैली देखकर तथ्य सामने आ सकता है।

लोकभाषामय रास आदि में संस्कृत-शैली जिस प्रकार भली प्रतीत होती है, उसका नमूना पृथ्वीराज-रासो तथा तुलसी-कृत रामचरितमानस में मिल सकता है:—

१. आदी देव प्रणम्य नम्य गुरयम् वानीय वन्दे पयं।
सिष्टं धारन धारयम वसुमती लच्छीस चर्नाश्रयम्।
(पृथ्वीराज रासो, पृष्ठ १)

२. अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि।
(रामचरितमानस, सुन्दर काण्ड : ३)

अपभ्रंश भाषा की विशेषताएँ

(१) संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं से प्राप्त अन्तिम स्वर का ह्रास हो जाता है।

(२) अन्तिम स्वर के पूर्व स्वर की मात्रा वैसी ही रहती है।

(३) द्वित्व व्यंजनों का अभाव और प्रथम अक्षर का दीर्घीकरण हो जाता है।

---

[1] दे. मार्कण्डेय प्राकृत स० पृष्ठ २ विभाग

(४) समीप में स्थित स्वरों का संकोच हो गया।
(५) अकारान्त पुल्लिंग शब्द के रूपों की प्रधानता हो गयी।
(६) लिंग-भेद समाप्तप्राय हो गया।
(७) तृतीया तथा सप्तमी और चतुर्थी-पंचमी-षष्ठी के रूपों का समन्वय तथा परसर्गों का प्रयोग हुआ।
(८) पुरुषवाचक सर्वनामों के रूपों में कमी हो गयी।
(९) विशेषणमूलक सर्वनामों के रूप नामों के समान होने लगे।
(१०) धातुओं के कालों में न्यूनता होगयी।
(११) कृदन्त रूपों का अधिक मात्रा में प्रयोग हुआ।
(१२) स्वर ध्वनियाँ अ, इ, उ,—ये ह्रस्व तथा आ, ई, ऊ, ए, ओ—ये दीर्घ मिलती हैं।
(१३) व्यंजनों में ङ और ञ को छोड़ कर सभी ध्वनियाँ मिलती हैं।
(१४) अन्त्य स्वर का लोप तथा ह्रस्व करने की प्रवृत्ति मिलती है जैसे—प्रिया 7 पिय, सन्ध्या 7 सांझ, क्षेत्रित 7 खेती।
(१५) उपधा (अन्त्याक्षर से पूर्व अक्षर) की सुरक्षा हुई है, जैसे—गोरोचन 7 गोरोअण, पुष्कर 7 पोक्खर।
(१६) कहीं-कहीं अन्त्याक्षर में व्यजन-ध्वनि के लोप हो जाने पर उपधा तथा अन्त्य स्वर का संकोच भी हो जाता है, जैसे—पोट्टलिका 7 पोट्टलि, परकीया 7 पराई।
(१७) आदि अक्षर के स्वर को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति है, जैसे—गभीर 7 गहिर, तडाग 7 तलाउ, ग्राम 7 गाम।
(१८) आदि व्यंजन को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति है। आदि का 'य' 'ज' में वदल जाता है, जैसे—याति 7 जाइ।
(१९) मध्यम व्यंजनों का लोप हो गया है, जैसे—परकीय 7 पराई, योगिन् 7 जोई। महाप्राण व्यंजनों के स्थान पर 'ह' हो गया है—यथा, मुक्ताफल 7 मुक्ताहल, शोभा 7 सोहा।
(२०) म का वँ हो गया है जैसे—भ्रमर से भँवर, कमल से कवँल।
(२१) अन्तिम व्यंजन का लोप हो जाता है, जैसे—जगत् 7 जग, आत्मन् 7 अप्पा (आप)।
(२२) नपुंसक लिंग तथा द्विवचन समाप्त हो गये।
(२३) कारकों में परसर्गों तथा कृदन्तों का प्रयोग होने लगा।
(२४) सर्वनामों में परिवर्तन हो गया, यत् का 'जो' तथा 'जे' रूप आ गया। किम् के स्थान पर क, कि, कवण (कौन) हो गये।

(२५) आत्मनेपद सर्वथा लुप्त हो गया। धातु-रूप भ्वादि-गण के समान ही चलने लगे।

(२६) शब्द-रूपों तथा धातु-रूपों में सरलता आ गई।

प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं में ऐसे बहुत से शब्द आ गये थे जिनकी सिद्धि संस्कृत धातुओं से नहीं होती थी और न वे तत्सम या तद्भव ही थे। ऐसे शब्दों को देशी कहा जाने लगा और जब ये शब्द अधिक मात्रा में आ गये तो वे देशी भाषा के नाम से अभिहित होने लगे।

इस समग्र विवेचन का निष्कर्ष यह है कि—

(१) अपभ्रंश दूसरी शती में आभीरोक्ति के नाम से पुकारी जाती थी और सिंध, मुलतान तथा उत्तर पंजाब में आभीर आदि पशु-पालक जातियों द्वारा, जो इन प्रांतों में आकर बस गई थीं, बोली जाती थी।

(२) छठी शताब्दी तक अपभ्रंश जो आभीरों की बोली कहलाती थी अपभ्रंश नाम से पुकारी जाने लगी और उसने अपना साहित्य भी बना लिया था। इसे भामह, दण्डी आदि काव्यशास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है।

(३) नवीं शताब्दी में अपभ्रंश का आभीरों की बोली कहलाना बन्द हो गया और व्यवसायी व्यक्तियों की भाषा के रूप में वह पहचानी जाने लगी। अस्तु, नवीं शताब्दी तक यह जनसाधारण की भाषा हो चली थी और उसका प्रचार दक्षिण में सुराष्ट्र और पूर्व में मगध तक था।

(४) ग्यारहवीं शती के मध्य तक अपभ्रंश के कई भेद हो गये। उनमें से एक ने साहित्यिक भाषा के महत्त्व को प्राप्त किया। इस शती के पूर्वार्द्ध तक देश भाषाओं का प्रादुर्भाव प्रारंभ हो जाने पर भी अपभ्रंश की प्रधानता थी। देश-भाषाओं का प्रारम्भ तो प्रायः सातवीं शताब्दी से ही हो गया था, परन्तु उन्होंने वर्तमान रूप धारण करना बारहवीं शती के अन्त के आस-पास आरम किया था। चन्द कवि १३वीं शती के आरंभ में हुए थे। भाषा का वह आरम्भिक रूप चौहान राजा हमीर के समय (१२८३-१३०१ ई०) तक रहा था।

(५) अपभ्रंश के उपर्युक्त इतिहास का श्रेय भारत में आने वाले आभीरों* को ही है, जिन्होंने देश की भाषा में इतना बड़ा परिवर्तन कर दिया।

---

*आभीर जाति का उल्लेख महाभारत में मिलता है। जब अर्जुन कृष्ण की विधवाओं को लेकर लौट रहे थे, उस समय आभीरों ने ही उन पर पंचनद में आक्रमण किया था। आभीरों को मनुस्मृति में ब्राह्मण पिता और अम्बष्ठ माता से उत्पन्न माना है—"ब्राह्मणात् × × × आभीरोम्बष्ठकन्यायाम्"—(अध्याय १० १५) जान पड़ता है कि आभीर ईसवी शती के आरंभ में पंचनद में बसते थे। उनका काम गाय, ऊँट, घोड़े, आदि इधर-उधर

(६) अपभ्रंश आभीरों की निजी भाषा न थी, वरन् उनके उच्चारण से स्थानीय प्राकृत का जो परिवर्तित रूप हुआ, वह पीछे से अपभ्रंश कहलाया। आभीर पीछे के आये हुए विदेशीय थे। आर्यावर्त में बस जाने पर उन्होंने स्थानीय प्राकृतों को बोलना आरम्भ किया, परन्तु वे नवीन भाषा का उच्चारण ठीक-ठीक नहीं कर सकते थे। अतः आभीरों द्वारा प्राकृत का एक नवीन अपभ्रंश रूप प्रकट हुआ, जो कालान्तर में अपभ्रंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(७) आभीर जाति ज्यों-ज्यों पूर्व दक्षिण की ओर बढ़ती गई, त्यों-त्यों वहां की प्रचलित प्राकृतों को बोलने लगी। यही कारण है कि पीछे के वैयाकरणों ने अपभ्रंश के कई भेद लिखे हैं।

(८) राजशेखर (९वीं शताब्दी ई०) के समय में अपभ्रंश का बहुल प्रयोग मारवाड़, टक्क, (पूर्व पंजाब) और भदानक प्रदेशों में होता था। सुराष्ट्र और त्रवण (पश्चिमीय राजपूताना) के लोग संस्कृत पढ़ सकते हैं, उसमें अपभ्रंश का मिश्रण रहता है—

सुराष्ट्रत्रवणाद्या: ये पठन्त्यर्पितसौष्ठवम्।
अपभ्रंशावदंशानि ते संस्कृतवचांस्यपि॥

(काव्यमीमांसा पृ० ३४)

(९) पीछे अपभ्रंश का साहित्य बढ़ता गया और ग्यारहवीं शताब्दी में इसमें साहित्य-रचना प्रचुरता से होने लगी। यों तो अपभ्रंश की रचनाएँ १४वीं शती के अन्त और १५वीं के आरम्भ तक भी हुईं, किन्तु ग्यारहवीं

चराते फिरना था। इसके लिए पंजाब की विस्तृत उर्वरा भूमि अत्यन्त उपयुक्त थी।

आभीर जाति क्रमशः प्रभुता प्राप्त करती गई। ईसवी सन् १८१ में क्षत्रप रुद्रसिंह के समय में उसके सेनापति के आभीर होने का उल्लेख मिलता है। सन् ३०० में में शिवदत्त का पुत्र ईश्वरसेन, जो नासिक का शासक था, आभीर था। इलाहाबाद के स्तंम्भ पर खुदे हुए समुद्रगुप्त के लेख (ई० सन् ३६०) से पता चलता है कि आभीर और मालव जाति राजस्थान, मालवा, और गुप्त साम्राज्य के दक्षिण-पश्चिम की सीमा पर शासन करती थी। इस प्रकार क्रमशः प्रबल होती हुई आभीर जाति पूर्व और दक्षिण की ओर विस्तार करती चली गई। आठवीं शताब्दी में जब 'काठी' लोगों ने सौराष्ट्र पर आक्रमण किया, उस समय वह देश आभीरों के अधिकार में था। 'फरिश्ता' ने तो खानदेश के प्रसिद्ध दुर्ग असीरगढ़ को आसा नामक अहीर का बनवाया हुआ बतलाया है।

शती का अंत होते-न-होते आधुनिक भाषाओं का जोर बढ़ा और उन्हीं में साहित्य की रचना होने लगी।

(१०) अपभ्रंश के विकास को ध्यान में रखकर उसके चार भेद किये जा सकते हैं—(i) आभीरी, (ii) ग्राम्य, (iii) उपनागर तथा (vi) नागर। नागर के तीन भेद हैं—(i) आदि रूप महाराष्ट्री, (ii) हेमचन्द्र द्वारा उल्लिखित तथा (iii) पुरानी हिन्दी।

(११) प्रमुख रूप से तो नागर, उपनागर और व्राचड—ये तीन भेद ही माने गये हैं।

एक हजार ई० के बाद मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा के अंतिम रूप अपभ्रंश भाषाओं ने शनैः शनैः अपना रूप बदल दिया और उनमें से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का रूप आविर्भूत हुआ। हिन्दी के विकास में सबसे अधिक योग शौरसेनी और अर्द्धमागधी अपभ्रंशों का है।

हिन्दी भाषा के विकास का इतिहास सामान्यतया तीन मुख्य कालों में विभाजित किया जाता है: प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल। प्राचीनकाल की सीमा १४०० ई० तक मानी गयी है। मध्यकाल १८५० तक रहता है और इसके बाद आधुनिक काल का पदार्पण माना जाता है।

वह समय, जबसे हम हिन्दी भाषा के इतिहास का प्रारम्भ मानते हैं, बड़ी उथल-पुथल का युग था। हिन्दी-प्रदेश उस समय तीन राज्यों में विभक्त था। पश्चिम के भाग में चौहानों का राज्य था जिसकी राजधानी दिल्ली थी। पृथ्वीराज के समय में अजमेर का राज्य भी इसमें मिल गया था। दिल्ली राज्य की सीमाएँ पश्चिम में पंजाब के मुसलमानी राज्य में मिली हुई थीं। दक्षिण पश्चिम में राजस्थान के राजपूत राज्य थे और यहाँ के राजाओं से चौहान राजाओं की घनिष्ठता थी, किन्तु पूर्वी सीमा प्रायः कलहाक्रान्त थी। वहाँ प्रायः घरेलू युद्ध होते रहते थे। चौहान राज्य के पूर्व में राठौर राज्य था जिसकी राजधानी कन्नौज थी। इसका विस्तार अयोध्या और काशी तक था। चौहान और राठौर दरबारों में साहित्य-चर्चा की प्रधानता थी। नरपतिनाल्ह का सम्बन्ध अजमेर से और चंद का दिल्ली से था। इधर राठौरवंशीय जयचद का दरबार भाषा-साहित्य-चर्चा का प्रधान केन्द्र था। राठौर और चौहान राज्यों के दक्षिण में महोबा का प्रसिद्ध राज्य था। प्रसिद्ध कवि जगनिक इसी राज-दरबार से सम्बन्धित थे।

यह हिन्दी-प्रधान देश सामान्यतया मध्य देश के नाम से अभिहित है। इससे सम्बन्धित उक्त तीनों राज्य सन् ११९१ ई० के बाद लगभग एक दशक के भीतर ही नष्ट हो गये। इस समय पृथ्वीराज पानीपत के निकट गोरी से हारा। अगले वर्ष जयचंद इटावा के पास विजित हुआ। इस प्रकार दो-तीन

वर्ष के भीतर ही मुसलमानों ने दिल्ली राज्य के अतिरिक्त कन्नौज से काशी तक के प्रदेश पर अधिकार कर लिया। थोड़े ही समय में महोबा भी उनके हाथों में आगया। इस प्रकार समस्त हिन्दी-भाषी प्रदेश विदेशी शासकों के अधिकार में आगया। नयी भाषा के विकास को यह बड़ा भारी धक्का था और इसका प्रतिफल हिन्दी को आज तक भोगना पड़ रहा है।

हिन्दी भाषा के इतिहास के समग्र प्राचीन युग में मध्य देश पर ही नहीं, शेष उत्तर भारत पर भी मुसलमानों का साम्राज्य कायम रहा। शासकों की भाषा तुर्की और उनके दरबारों की भाषा फारसी थी। इससे हिन्दी के विकास को एक भीषण धक्का लगा। इसका एक कारण यह भी था कि शासकों की रुचि भी जनभाषा या जन-संस्कृति के मूल स्रोतों के अध्ययन की ओर नहीं थी। साहित्यिक रुचि के जो लोग शासकों के सम्पर्क में रहते थे वे भी हिन्दी के प्रति विशेष रुचि नहीं दिखला सकते थे। परिणाम यह हुआ कि इस शासन के तीन सौ वर्षों के युग में हिन्दी भाषा की उन्नति में कोई सहायता नहीं मिली। अमीर खुसरो जैसे लोग बहुत कम ही हुए, जिन्होंने, भले ही मनोरंजन के लिए ही सही, हिन्दी भाषा से प्रेम दिखलाया। इन्हीं दिनों में पूर्वी भारत में धार्मिक आन्दोलनों का आविर्भाव हुआ। उनके कारण भाषा का कुछ विकास हुआ, किन्तु राज्य ने भाषा के विकास में योग देने के स्थान पर बाधा ही प्रस्तुत की। उन आंदोलनों में गोरखनाथ, रामानन्द, कबीर आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी भाषा के प्राचीन युग की सामग्री इन स्रोतों से उपलब्ध होती है:—

(१) शिलालेख, ताम्रपत्र एवं प्राचीन पत्र आदि
(२) अपभ्रंश काव्य
(३) धार्मिक हस्तलिखित प्रतियां
(४) चरण काव्य
(५) अन्य काव्य ग्रंथ
(६) पुरानी खड़ी बोली का काव्य।

इस युग के भाषा-शिलालेख मिलते हैं किन्तु बहुत कम। राजस्थान के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में भी तत्कालीन शिलालेख मिलते तो हैं, किन्तु कम। इस सामग्री की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। श्री हीरालाल जैसे कम ही गवेषकों ने हिन्दी-शिलालेखों और ताम्रपत्रों पर दृक्पात किया है। कभी यह अनुमान था कि हिन्दी के प्राचीनतम नमूने पृथ्वीराज तथा समरसिंह के दरबारों से सम्बन्ध रखने वाले पत्रों के रूप में उपलब्ध हैं, किन्तु वे अप्रामाणिक सिद्ध हुए।

'गोरखबानी' और 'पुरातत्त्व निबन्धावली' के प्रकाशन से हिन्दी गवेषकों का ध्यान गोरखनाथ और वज्रयानी सिद्धों की साहित्य-सेवा की ओर भी गया। इन रचनाओं के विद्वान् संपादकों की लेखनी से बहुत-सी नवीन सामग्री भी प्रकाश में आयी। जिन कवियों का सम्बन्ध उक्त रचनाओं से जोड़ा जाता है उनका समय ७०० ई० से १३०० ई० के बीच माना जाता है, किन्तु इन रचनाओं की भाषा की अभी समुचित परीक्षा होनी है। सिद्धों की भाषा (प्रमुखतया प्रारम्भिक सिद्धों की) अपभ्रंश स्वीकार की गयी है, किन्तु ध्यान से देखने पर प्राचीन हिन्दी के स्वरूप का बीजपात भी इन्हीं में देखने को मिल जाता है। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री के 'बौद्धगान ओ दोहा' के प्रकाशन से विद्वानों को इस साहित्यिक धारा का प्रथम परिचय प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त पुरानी हिन्दी के कुछ नमूने पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के 'पुरानी हिन्दी' शीर्षक लेख में मिलते हैं। इनमें हिन्दी के प्राचीन रूप कम ही मिलते हैं क्योंकि जिन ग्रन्थों का सदर्भ इस लेख में मिलता है वे गंगा की घाटी के बाहर के प्रदेशों में बने थे। अधिकांश उदाहरणों में प्राचीन राजस्थानी के नमूने ही मिलते हैं। इन उदाहरणों की भाषा में अपभ्रंश का इतना अतिरेक है कि उन्हें हिन्दी के अन्तर्गत न रख कर तत्कालीन अपभ्रंश के अन्तर्गत रखना ही अधिक उचित होगा। फिर भी इनसे हिन्दी भाषा की पुरानी परिस्थितियों का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है।

इस युग की भाषा के बहुत से नमूने चारण काव्य, धार्मिक काव्य तथा लौकिक काव्य में मिलते हैं, किन्तु भाषा-शास्त्र की कसौटी पर ये संदिग्ध प्रतीत होते हैं क्योंकि ये प्रामाणिक हस्तलिखित प्रतियों से नहीं दिये गये।

इस काल की भाषा के अध्ययन में अधिक सहायता हमें या तो पुराने लेखों से मिल सकती है या हस्तलिखित प्रतियों से जो १४०० ई० के आसपास की हैं या पहले की हैं।

हिन्दी भाषा के विकास के अध्ययन के लिए हिंदवी या दखिनी हिन्दी का अध्ययन भी आवश्यक है। दखिनी हिन्दी का साहित्य मोहम्मद तुग़लक के दक्षिण पर आक्रमण के बाद सन् १३२६ के आसपास ही निर्मित होने लगा था। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि दखिनी हिन्दी के प्रादुर्भाव में मुसलमान सूफी फकीरों का विशेष योग रहा है। उनकी रचनाओं का लक्ष्य धर्म-प्रचार था। इन रचनाओं की भाषा पुरानी खड़ीबोली है। इन लेखकों में ख्वाजा बन्दानवाज़ का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बंदानवाज़ का समय १३२१-१४५२ ई० माना जाता है।

हिन्दी भाषा का मध्यकाल १४०० ई० से १८५० ई० तक फैला हुआ है। इस काल के प्रारम्भिक दिनों में देश की परिस्थितियों में भारी मोड़ आये। इसी युग में देश की बागडोर तुर्कों के हाथ से सूरों तथा मुगलों के हाथ में गई। ये सम्राट जनता को समझने-समझाने का प्रयत्न करने लगे। शासन की ओर से शांति के प्रयत्न बढ़ जाने से लोगों का हौसला साहित्यिक चर्चा की ओर भी हुआ। इस युग में साहित्यिक विकास के साथ भाषा भी प्रौढ़ता की दिशा पकड़ती गयी।

इस युग में हिन्दी प्रदेश में भाषा के तीन रूप सामने आते हैं—खड़ी बोली, ब्रजभाषा तथा अवधी। इनके मिले-जुले नमूने कबीर ग्रन्थावली की भाषा में मिल जाते हैं। खड़ीबोली ने मुसलमानों के घरों की ओर अधिक तेजी से चलना प्रारम्भ किया तो ब्रजभाषा ने देश-व्यापी वैष्णव आन्दोलन के माध्यम से कृष्ण काव्य में आविर्भाव का मार्ग खोजा। अवधी सूफीकाव्य के माध्यम से प्रगति-मार्ग पर आयी और कुछ पूर्वी प्रदेशों के रामकाव्य रचयिताओं के प्रयत्नों से भी आगे बढ़ी, किन्तु ब्रजभाषा ने उसकी स्पर्धा को सफल न होने दिया; अतएव रामचरितमानस में अपनी चरमोन्नति दिखाकर अवधी ठण्डी पड़ गई। हाँ, सूफीकाव्य में इसको कुछ प्रोत्साहन मिलता रहा, किन्तु नगण्य सा। अवधी में पदमावत, मधुमालती और रामचरितमानस जैसी रचनाएं बहुत कम ही आयीं और जो आयीं उनका साहित्यिक मूल्य इतना नहीं है। विकास की दृष्टि से भाषा का भी विशेष मूल्य नहीं है।

इधर ब्रजभाषा ने अपने विकास का इतिहास बनाना प्रारम्भ कर दिया। कहा जा चुका है कि ब्रजभाषा को वैष्णव सम्प्रदायों का बड़ा भारी सहयोग मिला। वल्लभाचार्य के प्रोत्साहन से सोलहवीं शती के पूर्वार्द्ध में ब्रजभाषा का साहित्यिक विकास हुआ। इस सम्बन्ध से ब्रजभाषा की जो साहित्यिक धारा प्रवाहित हुई उसका केन्द्र मध्य देश का पश्चिमी भाग था, इसलिए ब्रजभाषा साहित्य को धर्म के साथ देशी-विदेशी राजाओं का संरक्षण भी मिला। एकबारगी ब्रजभाषा देश के कोने-कोने में धर्म-मार्ग से जा पहुँची। इतना ही नहीं, कुछ साहित्यकार तो इसके माधुर्य आदि गुणों से ही इसकी ओर आकृष्ट हुए। परिणामतः बंगाल, आसाम, बिहार, मध्य देश, राजस्थान, गुजरात आदि प्रदेशों में ब्रजभाषा की साहित्यिक दुंदुभी बज उठी। बंगाल में 'ब्रजबुली' तथा राजस्थान में 'पिंगल' ने ब्रजभाषा के आधिपत्य को शिरसा स्वीकार किया। गुजरात के कृष्णभक्त कवि भी १५वीं शती के अन्त तक ब्रजभाषा को धर्म की भूमिका पर साहित्यिक सम्मान देते रहे। इसलिए एक ओर जहाँ अष्टछाप के कवियों तथा तुलसी आदि की रचनाओं ने ब्रजभाषा का सम्मान बढ़ाया तो दूसरी ओर नरसी मेहता तथा ब्रजबुली के कृष्ण भक्त

गायकों ने उसको सम्यक् प्रतिष्ठा प्रदान की। ब्रजभाषा का सम्मान यहाँ तक बढ़ा कि सत्रहवीं शती का समग्र हिन्दी साहित्य ब्रजभाषा में ही रचा गया। ब्रजभाषा को एक ओर साहित्यिक और धार्मिक प्रतिष्ठा मिली तो दूसरी ओर रूप को परिष्कार की गरिमा भी प्राप्त हुई। इधर अन्य प्रादेशिक भाषाओं के सम्पर्क से ब्रजभाषा ने अपने शब्द-कोश का विकास भी किया। बुन्देलखंडी, राजस्थानी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं के शब्द-संगम से भाषा की गरिमा वृद्धि को प्राप्त हुई।

प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी के ग्रन्थों में कहीं-कहीं खड़ीबोली का रूप बिखरा मिलता है। रासो से लेकर भूषण तक की भाषा में खड़ी-बोली के प्रयोग विद्यमान हैं। इधर कबीर प्राचीन हिन्दी और मध्यकालीन हिन्दी के स्वरूप के जोड़ने में एक संयोजक का काम करते हैं। यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि कबीर की भाषा खड़ीबोली के प्रयोगों से ओतप्रोत है, किन्तु उसे स्वतंत्र रूप से खड़ी हुई बोली की अभिधा देना संभव नहीं है क्योंकि वह स्थान-स्थान पर अपनी स्वतंत्रता में लड़खड़ाती हुई ब्रज, अवधी आदि की सहायता के लिए झुक जाती है।

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि खड़ीबोली का अस्तित्व तो प्राचीन काल से ही था; हाँ, हिन्दू कवियों और लेखकों के साहित्य में इस बोली का प्रयोग अधिकता से नहीं होता था। उस समय बहुत संभव है कि खड़ीबोली मुसलमानी बोली समझी जाती रही हो। इसका प्रमाण कबीर की भाषा से उतना नहीं मिलता जितना खुसरो, बन्दानवाज़ आदि की भाषा से मिलता है। १८वीं शताब्दी में तो खड़ीबोली को मुसलमान शासकों का संरक्षण ही मिल गया और साहित्यिक सम्मान भी मिलने लगा। १८५० ई० के आसपास तो हिन्दू लेखक और कवि भी इस बोली की ओर झुक आये। १८वीं शती के पूर्व मुसलमान कवि यदि भाषा में साहित्यिक रचना प्रस्तुत करते थे तो वे प्रायः ब्रजभाषा या अवधी का प्रयोग करते थे। खड़ीबोली उर्दू के प्रथम कवि के रूप में हैदराबाद (दक्खिन) के वली का नाम उल्लेखनीय है। इनका कविता-काल अठारहवीं शती का प्रारम्भ माना जाता है। अठारहवीं और उन्नीसवीं शती में खड़ी बोली ने अनेक मुसलमान कवियों का आदर प्राप्त किया और उसका स्वरूप अधिकाधिक मार्जित होता चला गया। खड़ीबोली के विकास की दृष्टि से मीर, सौदा, इन्शा, गालिब, ज़ौक और दाग़ का नाम उल्लेखनीय है।

अठारहवीं शती का अन्त होते-न-होते परिवर्तन के झोंके प्रतीत होने लग गये। राजनीतिक उथल-पुथल ने मध्य देश की भाषा हिन्दी को भी प्रभावित किया। ...

क्षीण होने लगी थी और मुसलमानों में खड़ीबोली दिन-दिन जोर पकड़ती जा रही थी। उन्नीसवीं शती में राजनयिक कारणों ने खड़ीबोली को कुछ और बल दिया। फोर्टविलियम कालेज के अधिकारियों के प्रयत्न, इस संबंध में, प्रमुखता से उल्लेखनीय हैं। प्रेमसागर और नासिकेतोपाख्यान की रचनाएँ हिन्दी के प्रचार में सहयोगिनी सिद्ध हुईं।

प्रारम्भ में खड़ीबोली के ग्रंथों पर ब्रजभाषा का प्रभाव दिखायी पड़ता है जो स्वाभाविक भी था। बाद में खड़ीबोली का गद्य भी साकार होने लगा। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में खड़ीबोली का गद्य प्रचार को प्राप्त हुआ। इस समय धर्म और साहित्य दोनों ने खड़ीबोली की सेवा में अपने को जुटा दिया। महर्षि दयानन्द और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के प्रयत्न इस दिशा में सराहनीय हैं। अङ्गरेजों के सम्पर्क से भारत की राजनीतिक और सामाजिक विचार-धाराओं ने अँगड़ाइयाँ लीं और मुद्रण-यंत्रों का सहयोग पाकर वे आत्माभिव्यंजन के साथ-साथ खड़ीबोली के उत्थान में भी बड़ी सहायक सिद्ध हुईं। बीसवीं शती में खड़ीबोली को गद्य और पद्य दोनों के लिए समादृत कर दिया गया। वह दोनों शैलियों की एकमात्र साहित्यिक भाषा होगयी। ब्रजभाषा में कविता करने की शैली अभी तक पूर्ण रूप से लुप्त नहीं हुई है। मथुरा, भरतपुर, अलीगढ़ और आगरा के कुछ पुरानी पद्धति के कवि अब भी पुराने छंदों के लिए ब्रजभाषा को ही सँभाल लेते हैं, यद्यपि वे शिष्ट बोलचाल की बोली के रूप में खड़ीबोली का ही उपयोग करते हैं।

खड़ीबोली की प्रारंभिक कविताओं में ब्रजभाषा का पुट भी मिलता है, बिल्कुल उसी प्रकार जिस प्रकार लल्लूलाल आदि के खड़ीबोली-गद्य में ब्रजभाषा का। श्रीधर पाठक की खड़ीबोली कविता के माधुर्य में ब्रजभाषा के पुट का भी योग है। आज खड़ीबोली परिवर्तन-पथ का विसर्जन करके स्थैर्य को प्राप्त हो गयी है। इस युग को खड़ीबोली का वैभव-काल कह सकते हैं। यद्यपि अभी इसके महत्त्व को राजनीतिक भूकंपों के झटकों का सामना करना पड़ रहा है, किन्तु इनके दिन इनेगिने हैं।

विगत दो सौ वर्षों से मेरठ-बिजनौर की जनता की पड़ी बोली ने खड़ी होने के लिए अनेक सहारे खोजे और धीरे-धीरे वह इतनी स्वतंत्र और व्यापक हो गयी है कि दक्षिण और पूर्व के लोग भी उसके अध्ययन में जुट गये हैं। उसके अध्ययन के लिए जहाँ उसके साहित्यिक विकास को विस्मृत नहीं किया जा सकता उसी प्रकार उसके शब्द-विकास को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। इस कृति में अधिकांशतः हिन्दी के तद्भव शब्दों के विकास पर ही विचार किया गया है। कहीं-कहीं प्रयोजनवश कुछ ऐसे देशी शब्दों को भी

प्रस्तुत किया गया है जिनके संबंध में लोगों की कुछ भ्रांतियां बनी हुई हैं। जिस प्रकार अनेक देशी, विदेशी शब्द खड़ीबोली की सम्पत्ति बन गये हैं उसी प्रकार कुछ नये शब्दों का निर्माण अब भी होता जा रहा है; अतएव हिन्दी भाषा का शब्द-समूह भाषा की उस स्थिति की सूचना देता है जिसमें उसकी पाचन-शक्ति बहुत बढ़ जाती है। वास्तव में यह शक्ति ही भाषा की सम्पन्नता है। आज अंग्रेजी ने जो लोकप्रियता प्राप्त कर रखी है उसका एक कारण उसकी पाचन शक्ति की वृद्धि अर्थात् उसकी आग्रहण क्षमता भी है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि नये सम्पर्कों और नयी आवश्यकताओं से भाषा का भंडार बढ़ता है। यह भंडार उतना बढ़ाने से नहीं बढ़ता जितना सहज रूप में बढ़ता है क्योंकि सहज व्यवहार में आकर अनेक शब्द, चाहे वे बाहर के ही हों, भाषा के अपने हो जाते हैं और वे नूतनार्थ की अभिव्यक्ति में सहज समुचित योगदान प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी भाषियों का यह दृष्टिकोण अनुचित नहीं है कि वे व्यावहारिक भाषा में इतर भाषाओं के शब्दों का अनादर नहीं करते। यह हो सकता है कि साहित्यिक रचनाओं में ऐसे शब्दों की भर्ती न की जाये; किन्तु जो शब्द हिन्दी के व्यावहारिक सेवक होकर सेवा-प्रवृत्त होना चाहते हैं उनको भी उचित सम्मान मिलना चाहिये। इससे हिन्दी की शक्ति बढ़ेगी, वह व्यापक लोकप्रियता प्राप्त करेगी और देश में भावात्मक एकता की प्रतिष्ठा में अपना समुचित योगदान देगी।

हिन्दी का शब्द-भण्डार काफी बढ़ चुका है और बढ़ता जा रहा है, किन्तु उससे हमारा सम्यक् परिचय नहीं है। बहुत से शब्दों से हमारा परिचय न होने का एक कारण यह भी है कि वे विदेशी होते हुए भी हमारी भाषा में दूध में पानी की तरह समाविष्ट हो गये हैं, किन्तु बहुत से ऐसे शब्द भी हैं जो भारतीय आर्य भाषा परिवार के हैं और उनसे हमारा परिचय नहीं है। निःस्सन्देह इन शब्दों का स्रोत हम मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं में और फिर प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं में खोज सकते हैं। इस परिचय के लिए आवश्यक है कि हम हिन्दी में प्रचलित शब्द को प्राकृत शब्द-समूह में देखें और संस्कृत शब्दसमूह में भी उसकी गवेषणा करें। लेखक की इसी खोज का परिणाम प्रस्तुत तद्भव शब्दावली है। संस्कृत को प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का प्रतिनिधि मानकर शब्द-विशेष को वहीं से देखना प्रारम्भ किया गया है। इसके बाद उसने मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा में अर्थात् प्राकृत या अपभ्रंश में क्या स्वरूप ग्रहण किया है, यह देखने का प्रयत्न भी किया गया है। आज हिन्दी में उसका क्या स्वरूप हो गया है और उसका व्यवहार प्रमुखतः किस अर्थ में होता है, इस पर भी विचार किया गया है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी शब्द समूह में विकास की दृष्टि से तद्भव शब्दों का प्रमुख स्थान है क्योंकि यह एक ऐसा शब्द-समूह है

जिसके मूल के परिचय के बिना कई बार अर्थ-ग्रहण में भ्रान्ति हो जाती है। प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी के अनेक शब्द प्रत्यक्षत: हमें एक अर्थ से अवगत कराते हैं किन्तु वस्तुतः उनका प्रयोग किसी दूसरे अर्थ में ही होता है। अभीष्ट अर्थ तक पहुँचने के लिए हमें शब्द के विकास के इतिहास का ज्ञान भी होना चाहिये। यह काम सामान्य व्यक्ति का नहीं है, केवल भाषा-विज्ञान का विद्यार्थी ही इस दृष्टि को प्राप्त कर सकता है और उसी विद्यार्थी के लिए प्रस्तुत तद्भव शब्दावली की रचना की गयी है।

यह ठीक है कि सामान्यत: हिन्दी का कोई भी तद्भव दो श्रेणियों को पार करके तीसरी पर हमें मिला है किन्तु उन श्रेणियों का समुचित ज्ञान भाषा-विज्ञान के विद्यार्थी को अवश्य होना चाहिये जो अध्ययन और अभ्यास से ही सम्भव है। भाषा-विज्ञान के विद्यार्थी को इन शब्दों के विकास का परिचय प्राप्त करने के लिए ध्वनि-परिवर्तन के अनेक प्रकारों और कारणों से भी अवगत होना चाहिये क्योंकि जब तक वह यह नहीं जानता कि अमुक ध्वनि ने अमुक स्तर पर अमुक रूप धारण किया है तब तक वह शब्द के मर्म से, साथ ही अर्थ के मर्म से भी, वंचित रहता है। किस प्रकार का ध्वनि परिवर्तन हुआ और क्यों हुआ, यह जानकर ही साहित्य का विद्यार्थी शब्द की आत्मा में प्रवेश कर सकता है और वह साहित्य-मर्मज्ञ के लिए अत्यावश्यक है।

ध्वनियाँ और उनका वर्गीकरण

आर्य भाषा में प्राचीनकाल से ही दो प्रकार की ध्वनियों का प्रयोग होता रहा है। वे हैं स्वर और व्यंजन। स्वर वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में उच्चारण अवयवों का स्पर्श नहीं होता, वायु मुख-विवर के बीच से ही निकल जाती है। व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में वायु उच्चारण-अवयवों को स्पर्श या घर्ष करती है। स्वर और व्यंजन, दोनों के उच्चारण में प्रयत्न और उच्चारण-स्थान दोनों ही आवश्यक हैं। इसलिए ध्वनि-वर्गीकरण के दो प्रधान आधार हैं—प्रयत्न और उच्चारण-स्थान।

वाह्य और आभ्यन्तर के भेद से प्रयत्न भी दो प्रकार के होते हैं। मुख-विवर से बाहर होने वाले प्रयत्न को वाह्य तथा भीतर होने वाले प्रयत्न को आभ्यन्तर कहते हैं। मुख-विवर का आरम्भ कंठ-पिटक से होता है। इसके पूर्व स्वर-तंत्री होती है, जो ध्वनियों के उच्चारण में काम करती है। इसी के प्रयत्न के अनुसार ध्वनियाँ प्रभावित होती हैं। वाह्य प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों के दो रूप मिलते हैं: घोष और अघोष। घोष ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-तंत्री में कंपन पैदा हो जाता है। समस्त स्वर तथा वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और

पंचम वर्ण य, र, ल, व और ह घोष ध्वनियाँ हैं। शेष ध्वनियाँ अर्थात् वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण श, ष और स अघोष हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न के अनुसार स्वरों के चार भेद हैं—संवृत, अर्द्ध संवृत और विवृत तथा अग्र, मध्य, पश्च एवं व्यंजनों के आठ भेद—स्पर्श, स्पर्श-संघर्षी, संघर्षी, अनुनासिक, पार्श्विक, लुंठित, उत्क्षिप्त और अर्द्ध स्वर हैं। इनका परिचय इस प्रकार है:—

१. **संवृत स्वर**—इनके उच्चारण में मुख-द्वार बहुत संकरा हो जाता है, किन्तु इतना संकरा नहीं होता कि किसी प्रकार का स्पर्श हो—इ, ई और उ, ऊ सवृत स्वर हैं।

२. **अर्द्ध संवृत**—इनके उच्चारण में मुख-द्वार आधा सँकरा होता है। ए और ओ इसी प्रकार के स्वर हैं।

३. **अर्द्ध विवृत**—इनके उच्चारण में मुख-द्वार अधखुला रहता है। ऍ तथा ऑ इसी प्रकार के स्वर हैं।

४. **विवृत**—इनके उच्चारण में मुख-द्वार पूरा खुल जाता है, जैसे अ, आ।

५. स्वरों के उच्चारण में कभी जीभ का अग्र भाग उठता है, कभी मध्य भाग और कभी पश्च भाग। ई, ए और ऍ अग्र स्वर हैं, अ मध्य स्वर तथा आ, ऊ और ओ पश्च स्वर हैं।

६. **स्पर्श व्यंजन**—इनके उच्चारण में मुख-द्वार बंद होकर फिर खुलता है जिससे उच्चारण-अवयव एक-दूसरे का पूर्णतः स्पर्श करते हैं। पहले वायु मुख में बिल्कुल रुक जाती है और फिर एक झोंके से धक्का देकर बाहर निकलती है। इससे एक स्फोट की ध्वनि होती है। इस कारण इनको स्फोट वर्ण भी कहते हैं। इस वर्ग के व्यंजनों में क से लेकर म तक के व्यंजन सम्मिलित हैं।

७ **स्पर्श संघर्षी**—इनके उच्चारण में उच्चारण-अवयवों में स्पर्श की प्रतीति के साथ-साथ उनसे हवा थोड़ी रगड़ खाकर निकलती है जिससे थोड़ी ऊष्म ध्वनि भी सुन पड़ती है। इस कारण इनको स्पर्श-संघर्षी या स्पर्श-घर्ष कहते हैं। हिन्दी के च, छ, ज और झ वर्ण इसी कोटि के हैं।

८. **संघर्षी या घर्ष वर्ण**—इनके उच्चारण में वायु-मार्ग किसी एक स्थान पर इतना सँकरा हो जाता है कि वायु के बाहर निकलने में सर्प की जैसी शीत्कार ध्वनि अथवा ऊष्म ध्वनि होती है। इनके उच्चारण में जिह्वा और दंतमूल अथवा वर्त्स के बीच का मार्ग खुला रहता है, बिल्कुल बन्द नहीं हो जाता। इससे वायु रगड़ खाकर निकलती है। इन्हें घर्ष अथवा विवृत व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु कहीं रुकती नहीं है। इससे इन वर्णों

को सप्रवाह, अव्याहत अथवा अनवरुद्ध भी कहते हैं। स, श, ष और ज़ ऐसे ही घर्ष वर्ण हैं। कुछ विद्वान् इन ध्वनियों में फ़, व़, ख़ और ग़ को भी सम्मिलित कर लेते हैं।

९. **अनुनासिक**—जिस वर्ण के उच्चारण में मुख किसी एक स्थान पर बन्द हो जाता है और कोमल तालु (कंठस्थान) इतना झुक जाता है कि वायु नासिका में से निकल जाती है अर्थात् जिसके उच्चारण मे दोनों होंठ, जीभ-दाँत, जीभ-मूर्द्धा या जीभ-पश्च और कोमल तालु आदि का स्पर्श होता है और वायु मुख में गूँजती नासिका-मार्ग से निकलती है, वह अनुनासिक अथवा नासिक्य-ध्वनि कहलाती है।

१०. **पार्श्विक**—इस ध्वनि के उच्चारण में वायु मुख के मध्य में रुक जाती है और जीभ के अगल-बगल से बाहर निकलती है। यह भी सप्रवाह व्यंजन है। हिन्दी 'ल' इसी वर्ग की ध्वनि है।

११. **लुंठित**—इसके उच्चारण में मुख-द्वार जीभ की नोंक से बहुत जल्दी-जल्दी बन्द होता है। जीभ बेलन की तरह लपेट खाकर तालु को छूती है। इस वर्ग की ध्वनि 'र'* है। इसका एक नाम लोंठित भी है।

१२. **उत्क्षिप्त**—उत्क्षिप्त उन ध्वनियों को कहते हैं जिनमें जीभ तालु के किसी भाग को वेग से मार कर हट जाये, जैसे—ड़ तथा ढ़। डा० कादिरी और डा० चटर्जी ने 'र' को उत्क्षिप्त बतलाया है। ड़ और ढ़ की गणना 'ताड़नजात' ध्वनियों में भी की गयी है।

१३. **अर्द्ध स्वर**—वे ध्वनियाँ हैं जो साधारणतया व्यंजनवत् व्यवहृत होती हैं, किन्तु कभी-कभी स्वर हो जाती हैं। ये श्रुति ध्वनियाँ हैं जो एक प्रकार से स्वर और व्यंजन के बीच में हैं। इनके उच्चारण का आरम्भ स्वर-स्थिति से होता है। य और व इसी प्रकार की ध्वनियाँ हैं। इन दोनों के उच्चारण में उच्चारण-अवयव क्रम से पहले इ या उ की स्थिति में आते हैं, फिर थोड़ी देर रुक कर आगामी स्वर या व्यंजन की स्थिति में चले जाते हैं। इससे ये ध्वनियाँ श्रुति हैं।

उच्चारण-स्थान के आधार पर ध्वनि-भेद:—

१. **ओष्ठ्य**—जिन ध्वनियों के उच्चारण में केवल ओठों का प्रयोग होता है वे ओष्ठ्य ध्वनियाँ कहलाती हैं जैसे—प, फ़, व़, भ्, म्, व, उ, ऊ।

२. **दन्तोष्ठ्य**—जिन ध्वनियों के उच्चारण में ऊपर के दाँत तथा नीचे का ओष्ठ का प्रयोग होता है वे दन्तोष्ठ्य कहलाती हैं, जैसे—व़ तथा फ़।

---

* यह ध्वनि जिह्वोत्कंपी भी बतायी गयी है, किन्तु इसके उच्चारण में जीभ में उत्कंपन न होकर उसका उत्क्षेप ही होता है।

३. **दन्त्य**—जिनके उच्चारण में जीभ दांत को छूती है वे दन्त्य ध्वनियां कहलाती हैं जैसे त, थ, द, ध ।

४. **वर्त्स्य**—इन ध्वनियों के उच्चारण में वर्त्स (मसूड़ा) और जिह्वाग्र का प्रयोग होता है । न, ल, र, स, ज़ और च वर्ग की ध्वनियां इसी वर्ग की हैं ।

५. **तालव्य**—इनके उच्चारण में जीभ तालु का स्पर्श करती है । च, छ, ज, झ, य, श और इ ध्वनियां इसी वर्ग के अन्तर्गत आती हैं ।

६. **मूर्द्धन्य**—जिन ध्वनियों के उच्चारण में कठोर तालु जीभ द्वारा छू जाता है, वे मूर्द्धन्य कहलाती हैं । संस्कृत की ट, ठ, ड, ढ, ण, ऋ तथा ष ध्वनियाँ मूर्द्धन्य मानी गयी थीं । हिन्दी में इनका उच्चारण बदल गया है । शायद ही कोई वक्ता इनका सही उच्चारण करता हो; अतएव मूर्द्धन्य के स्थान पर इनको तालव्य ही कहा जा सकता है ।

७. **कण्ठ्य**—जिन ध्वनियों का उच्चारण कंठ से होता है वे कण्ठ्य कहलाती हैं । क, ख, ग, घ, ङ और 'अ' इसी वर्ग की ध्वनियां हैं ।

८. **जिह्वामूलीय**—जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वामूल या जिह्वापश्च का उपयोग किया जाता है, उन्हें जिह्वामूलीय, अलिजिह्वीय या जिह्वापश्चीय कहते हैं । इनके दो स्वरूप होते हैं : एक तो स्पर्श ध्वनिका और दूसरा घर्ष या संघर्षी ध्वनि का । क़, ख़, ग़ इसी प्रकार की ध्वनियां हैं ।

९. **स्वरयंत्रमुखी**—जो ध्वनियाँ स्वर-यंत्र-मुख से उच्चरित होती हैं उन्हें स्वरयंत्रमुखी कहते हैं । इनको स्वरयंत्र स्थानीय, काकल्य अथवा उरस्य भी कहते हैं । 'ह' तथा विसर्ग ध्वनियां इसी प्रकार की हैं ।

स्वरतंत्रियों के आधार पर व्यंजन-भेद—इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद होते हैं: घोष तथा अघोष ।

१. **घोष**—जिनके उच्चारण में बीच से निकलती हुई वायु स्वरतंत्रियों में कंपन उत्पन्न करदे वे ध्वनियां घोष कहलाती हैं। पाँचों वर्गों की अन्तिम तीन ध्वनियां तथा य, र, ल, व, ज़, ग़, ह, ड़, ढ़ आदि घोष हैं ।

२. **अघोष**—जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कोई कंपन नहीं होता । पांचों वर्गों की प्रथम दो ध्वनियाँ, क़, ख़, फ़, स, श आदि ध्वनियां हिन्दी में अघोष मानी जाती हैं ।

घोष वर्णों को नाद, कोमल या स्वनंत कहते हैं तथा अघोष वर्णों को श्वास या कठोर कहते हैं ।

प्राणत्व के आधार पर हिन्दी-ध्वनि-भेदः—

प्राण और वायु समानार्थक शब्द हैं । श्वास शब्द भी 'प्राण' के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है । प्राण या श्वास-योग की दृष्टि से हिन्दी-ध्वनियां दो

प्रकार की कही गयी हैं—महाप्राण या सप्राण तथा अल्पप्राण या अप्राण। जिस ध्वनि के उच्चारण में प्राण या श्वास अधिकता से प्रयुक्त होता है उसे महाप्राण या सप्राण ध्वनि कहते हैं और जिसके उच्चारण में उसका कम प्रयोग होता है उसे अल्पप्राण या अप्राण कहते हैं।

हिन्दी में प्राण-ध्वनि का प्रतिनिधित्व 'ह्' ध्वनि करती है। इस कारण महाप्राण ध्वनि को ह-युक्त तथा अल्पप्राण ध्वनि को ह-रहित कहते हैं।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि प्राणत्व केवल स्पर्श ध्वनियों में ही होता है। मैं समझता हूँ कि संघर्षी ध्वनियों के अलावा अन्य सभी ध्वनियों में महाप्राण या अल्पप्राण की स्थिति हो सकती है। ल्ह, न्ह, ढ़, र्ह आदि ध्वनियों में इसके उदाहरण मिलते हैं। हिन्दी की महाप्राण ध्वनियाँ ये हैं—ख, घ; छ, झ; ठ, ढ; थ, ध; फ, भ; न्ह, म्ह, ल्ह, र्ह, ढ़; तथा ये ध्वनियाँ अल्पप्राण हैं :—क, ग, ङ; च, ज, ञ; ट, ड, ड़, ण; त, द, न; प, ब, म।

उच्चारण के आधार पर हिन्दी-ध्वनि-भेद—इस आधार पर तीन भेद मिलते हैं : सशक्त, अशक्त और मध्यम। जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुँह की मांसपेशियाँ दृढ़ बनी रहें वे सशक्त ध्वनियाँ कहलाती हैं, जैसे ट्, स्,। अशक्त ध्वनियों के उच्चारण में मांसपेशियाँ ढीली रहती हैं। र्, ल् इसी प्रकार की ध्वनियाँ हैं। च्, श् आदि ध्वनियों को 'मध्यम' के अन्तर्गत गिना जाता है।

अनुनासिकता के आधार पर ध्वनि-भेद—इस आधार पर व्यंजन-ध्वनियों के तीन भेद होते हैं : १. अनुनासिक, सानुनासिक एवं अननुनासिक। ङ्, ञ्, ण्, न्, और म् अनुनासिक ध्वनियाँ हैं; कँ, जँ, तँ आदि सानुनासिक ध्वनियाँ है, तथा क, च, छ, थ, ल, ग आदि सभी ध्वनियाँ जिनका अनुनासिकता या नासिक्यता से कोई संबंध नहीं है, अननुनासिक हैं।

व्यंजन-संयोग के आधार पर भेद—हिन्दी भाषा में व्यंजनों का प्रयोग दो रूपों में होता है—एक तो संयुक्त रूप में तथा दूसरा असंयुक्त रूप में। क, ट, ग, च आदि असंयुक्त व्यंजन हैं इनमें केवल स्वर-योग होता है। दूसरे वे व्यंजन हैं जो संयुक्त होते हैं, जैसे-क्क, क्ख, क्ष (क्श), त्र (त्र), ज्ञ (ज्ञ) आदि। इनके भी दो भेद हैं—द्वित्व व्यंजन, जैसे कच्चा, इसमें दोनों मिले व्यंजन एक ही हैं। दूसरा, संयुक्त, जिसमें भिन्न व्यंजन मिलते हैं जैसे क्ष (क्श), त्न, म्न, र्म, आदि।

मात्रा की दृष्टि से वर्ण-भेद—इस दृष्टि से हिन्दी में दो प्रकार के वर्ण है, ह्रस्व और दीर्घ। जिन स्वरों या व्यंजनों के उच्चारण में कम समय लगता है उन्हें ह्रस्व तथा जिनके उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हें दीर्घ कहते

हैं। वेदों में एक भेद प्लुत भी था, किन्तु हिन्दी में इसका उपयोग नहीं होता। अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व हैं। इनमें एक मात्रा मानी जाती है तथा आ, ई, ऊ में ह्रस्व के उच्चारण का दूना समय या अधिक समय लगता है, अतएव ये दीर्घ स्वर हैं। इन्हीं के संबंध से व्यंजन भी ह्रस्व और दीर्घ हो जाते हैं। संयुक्त व्यंजनों से पूर्व का ह्रस्व वर्ण भी मात्रा-काल की दृष्टि से दीर्घ हो जाता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी ध्वनियों के स्वर और व्यंजन, दो भेद हैं। स्वरों में अ, इ, उ तथा ऋ ह्रस्व स्वर हैं तथा आ, ई, ऊ दीर्घ। ए, ऐ, ओ और औ संयुक्त स्वर हैं। व्यजनों में २५ स्पर्श व्यंजनों के अतिरिक्त य, र, ल, व, श, ष, स और ह असंयुक्त व्यंजन हैं जिनका विवरण पीछे दिया जा चुका है तथा क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त व्यंजन हैं।

'अं' में अ के ऊपर के विन्दु को अनुस्वार कहते हैं। कंगाल, पंजाव, संचय, आदि में इसी अनुस्वार का उपयोग हुआ है। हिन्दी में इसके दो स्वरूप मिलते हैं: एक तो पंजाव में 'प' के ऊपर के बिन्दु की भाँति। इसे मुक्त अनुस्वार कह सकते हैं। इसका उच्चारण खुला होता है, किन्तु पाँच में 'पा' के ऊपर जो चन्द्रबिन्दु है उसका उच्चारण खुला नहीं है। इसको अननुमुक्त नासिक्य (अनुनासिक) कहते हैं। बहुत-से लेखक इन दोनों ध्वनियों में भेद नहीं करते। कुछ लोग तो लिखावट की सुविधा के लिए ऐसा करते हैं और कुछ उनमें अभेद मानकर लिखते हैं। मुद्रण-यंत्रों की सुविधा या उनके प्रमाद से भी उनमें अभेद हो जाता है।

हिन्दी-तद्भव शब्दों का जो रूप हमारे सामने आया है उसको हम यदि इनके स्रोतों को सामने रख कर देखें तो हमें रूप और अर्थ के परिवर्तन के अलावा ध्वनि-परिवर्तन विशेषता से दिखायी पड़ेगा। रूपात्मक परिवर्तनों में शब्द के लिंग और वचन का विशेष स्थान है। संस्कृत का 'पत्रम्' शब्द अपने नपुंसकत्व का परित्याग करके हिन्दी में पुंसकत्व प्राप्त कर बैठा है। इसी प्रकार 'यशस्' हिन्दी में 'यश' होकर पुल्लिग बन गया है चाहे फिर वह 'जस' ही क्यों न रह गया हो। संस्कृत 'पत्रे' और 'पत्राणि' 'पत्र' शब्द के द्विवचन और बहुवचन रूप थे, हिन्दी में 'पत्ते' बहुवचन बन गया है। यह परिवर्तन सीधा संस्कृत से हिन्दी में नहीं हो गया है, वरन् मध्य भारतीय आर्य भाषा की विशाल घाटी पार करके आया है। इस घाटी को पार करने पर 'निद्रा' का 'नींद' जैसा रूप हमें रूपात्मक प्रत्ययों की ओर भी आकृष्ट करता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अनेक आकारान्त स्त्री शब्द 'अकारान्त' होकर पुल्लिग वेश में भी स्त्रीत्व सँभाले हुए हैं।

तद्भवों के स्वरूप-ज्ञान के लिए ध्वनि-ज्ञान अत्यावश्यक है। ध्वनियों में परिवर्तन अनेक कारणों से होता है। प्रमुख कारण ये हैं—वाह्य कारण—

जैसे राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक; तथा आन्तरिक कारण—इनके अन्तर्गत प्रयोगाधिक्य, स्वराघात आदि उल्लेखनीय हैं। इन कारणों को देख कर हम भविष्यत् रूप के संबंध में कुछ नहीं कह सकते क्योंकि ध्वनि-परिवर्तन का कोई नियत पथ नहीं है। यदि ऐसा होता तो जिस प्रकार संस्कृत 'कर्म' प्राकृत में 'कम्म' होकर हिन्दी में 'काम' हो गया है उसी प्रकार 'धर्म' शब्द 'धम्म' होकर 'धाम' होगया होता, किन्तु उसे हम हिन्दी में 'धरम' रूप में पाते है। इससे स्पष्ट है कि ध्वनि-माया विचित्र है। ध्वनि-परिवर्तन के कारणों को हम प्रायः इस रूप में देखते हैं।

(१) **वाग्यन्त्र की भिन्नता**—किन्हीं दो व्यक्तियों का वाग्यन्त्र एक-सा न होने से उनके उच्चारण में भी भेद होता है। यही भेद थोड़ा-थोड़ा करके बढ़ता जाता है, किन्तु उस भेद की प्रतीति कुछ बाद में होती है।

(२) **श्रवणेन्द्रिय-भेद**—वाग्यन्त्र की भाँति श्रवणेन्द्रिय-भेद भी शनैः-शनैः ध्वनि-परिवर्तन में योग देता है।

उक्त दोनों कारणों में से कोई एक कारण सफल नहीं होता, दोनों मिलकर ही एक काम में—ध्वनि-परिवर्तन लाने में—सफल होते है।

(३) **अपूर्ण-अनुकरण**—जिस प्रकार बोलने और सुनने का योग ध्वनि-परिवर्तन को मिलता है उसी प्रकार इन दोनों को और अन्ततः ध्वनि-परिवर्तन को अपूर्ण अनुकरण का योग मिलता है। 'ओ३म् नमः सिद्धम्' लोक-भाषाओं में 'ओनामासीधम' कैसे होगया, इसका कारण अपूर्ण अनुकरण में ही खोजा जा सकता है। अंग्रेजी 'इंस्पेक्टर' शब्द राजस्थान के गाँवों में 'नसपेटर' इसी कारण हो गया है।

(४) **अज्ञान**—ध्वनि-परिवर्तन के कारणों में एक अज्ञान भी है। अज्ञान के कारण शब्दों का सही रूप लोगों की समझ में नहीं आता। इससे शब्द उच्चारण-नियतता को खो बैठता है। भद्र शब्द प्राकृतों में 'भद्द' होकर हिन्दी में 'भद्दा' और 'भला' में विभक्त अज्ञान के कारण ही होगया है। 'सिगनल' 'सिगल' इसी कारण बना है और 'गार्ड' भी इसी कारण 'गार्द' या 'गाड' बन गया है। बोड (गोर्ड), कानिस्टबल (कान्स्टेबुल) आदि अनेक शब्द अज्ञान के ही शिकार हैं।

(५) **भ्रामक व्युत्पत्ति**—ध्वनि-परिवर्तन का यह कारण भी अज्ञान या अशिक्षा से संबंधित है किन्तु इसके लिए दो मिलते-जुलते शब्दों की सत्ता आवश्यक है। कभी-कभी भ्रामक व्युत्पत्ति को धर्मसाम्य भी योग दे देता है। सतप्रदेश का मान्दर देस, चेम्सफोर्ड का चिलमफोड़, एडवांस का अडवांस या लडवांस, लाइब्रेरी का रायबरेली, हुकम्स देयर का हुकम सदर, मेकेंजी का मक्खनजी, लाडसाहब का लाठसाहब आदि शब्द इसी रोग से ग्रसित हुए है।

हैं। वेदों में एक भेद प्लुत भी था, किन्तु हिन्दी में इसका उपयोग नहीं होता। अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व हैं। इनमें एक मात्रा मानी जाती है तथा आ, ई, ऊ में ह्रस्व के उच्चारण का दूना समय या अधिक समय लगता है, अतएव ये दीर्घ स्वर हैं। इन्हीं के संबंध से व्यंजन भी ह्रस्व और दीर्घ हो जाते हैं। संयुक्त व्यंजनों से पूर्व का ह्रस्व वर्ण भी मात्रा-काल की दृष्टि से दीर्घ हो जाता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी ध्वनियों के स्वर और व्यंजन, दो भेद हैं। स्वरों में अ, इ, उ तथा ऋ ह्रस्व स्वर हैं तथा आ, ई, ऊ दीर्घ। ए, ऐ, ओ और औ संयुक्त स्वर हैं। व्यजनों में २५ स्पर्श व्यंजनों के अतिरिक्त य, र, ल, व, श, ष, स और ह असंयुक्त व्यंजन हैं जिनका विवरण पीछे दिया जा चुका है तथा क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त व्यंजन हैं।

'अं' में अ के ऊपर के विन्दु को अनुस्वार कहते हैं। कंगाल, पंजाव, संचय, आदि में इसी अनुस्वार का उपयोग हुआ है। हिन्दी में इसके दो स्वरूप मिलते हैं: एक तो पंजाव में 'प' के ऊपर के बिन्दु की भाँति। इसे मुक्त अनुस्वार कह सकते हैं। इसका उच्चारण खुला होता है, किन्तु पाँच में 'पा' के ऊपर जो चन्द्रविन्दु है उसका उच्चारण खुला नहीं है। इसको अननुमुक्त नासिक्य (अनुनासिक) कहते हैं। बहुत-से लेखक इन दोनों ध्वनियों में भेद नहीं करते। कुछ लोग तो लिखावट की सुविधा के लिए ऐसा करते हैं और कुछ उनमें अभेद मानकर लिखते हैं। मुद्रण-यंत्रों की सुविधा या उनके प्रमाद से भी उनमें अभेद हो जाता है।

हिन्दी-तद्भव शब्दों का जो रूप हमारे सामने आया है उसको हम यदि इनके स्रोतों को सामने रख कर देखें तो हमें रूप और अर्थ के परिवर्तन के अलावा ध्वनि-परिवर्तन विशेषता से दिखायी पड़ेगा। रूपात्मक परिवर्तनों में शब्द के लिंग और वचन का विशेष स्थान है। संस्कृत का 'पत्रम्' शब्द अपने नपुंसकत्व का परित्याग करके हिन्दी में पुंसकत्व प्राप्त कर बैठा है। इसी प्रकार 'यशस्' हिन्दी में 'यश' होकर पुल्लिग बन गया है चाहे फिर वह 'जस' ही क्यों न रह गया हो। संस्कृत 'पत्रे' और 'पत्राणि' 'पत्र' शब्द के द्विवचन और बहुवचन रूप थे, हिन्दी में 'पत्ते' बहुवचन बन गया है। यह परिवर्तन सीधा संस्कृत से हिन्दी में नहीं हो गया है, वरन् मध्य भारतीय आर्य भाषा की विशाल घाटी पार करके आया है। इस घाटी को पार करने पर 'निद्रा' का 'नींद' जैसा रूप हमें रूपात्मक प्रत्ययों की ओर भी आकृष्ट करता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अनेक आकारान्त स्त्री शब्द 'अकारान्त' होकर पुल्लिग वेश में भी स्त्रीत्व सँभाले हुए हैं।

तदभवों के स्वरूप-ज्ञान के लिए ध्वनि-ज्ञान अत्यावश्यक है। ध्वनियों में परिवर्तन अनेक कारणों से होता है। प्रमुख कारण ये हैं—वाह्य कारण—

जैसे राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक; तथा आन्तरिक कारण—इसके अन्तर्गत प्रयोगाधिक्य, स्वराघात आदि उल्लेखनीय हैं। इन कारणों को देख कर हम भविष्यत् रूप के संबंध में कुछ नहीं कह सकते क्योंकि ध्वनि-परिवर्तन का कोई नियत पथ नहीं है। यदि ऐसा होता तो जिस प्रकार संस्कृत 'कर्म' प्राकृत में 'कम्म' होकर हिन्दी में 'काम' हो गया है उसी प्रकार 'धर्म' शब्द 'धम्म' होकर 'धाम' होगया होता, किन्तु उसे हम हिन्दी में 'धरम' रूप में पाते हैं। इससे स्पष्ट है कि ध्वनि-माया विचित्र है। ध्वनि-परिवर्तन के कारणों को हम प्रायः इस रूप में देखते हैं।

(१) **वाग्यन्त्र की भिन्नता**—किन्हीं दो व्यक्तियों का वाग्यन्त्र एक-सा न होने से उनके उच्चारण में भी भेद होता है। यही भेद थोड़ा-थोड़ा करके बढ़ता जाता है, किन्तु उस भेद की प्रतीति कुछ बाद में होती है।

(२) **श्रवणेन्द्रिय-भेद**—वाग्यन्त्र की भाँति श्रवणेन्द्रिय-भेद भी शनैः-शनैः ध्वनि-परिवर्तन में योग देता है।

उक्त दोनों कारणों में से कोई एक कारण सफल नहीं होता, दोनों मिलकर ही एक काम में—ध्वनि-परिवर्तन लाने में—सफल होते हैं।

(३) **अपूर्ण-अनुकरण**—जिस प्रकार बोलने और सुनने का योग ध्वनि-परिवर्तन को मिलता है उसी प्रकार इन दोनों को और अन्ततः ध्वनि-परिवर्तन को अपूर्ण अनुकरण का योग मिलता है। 'ओ३म् नमः सिद्धम्' लोक-भाषाओं में 'ओनामासीधम' कैसे होगया, इसका कारण अपूर्ण अनुकरण में ही खोजा जा सकता है। अंग्रेजी 'इंस्पेक्टर' शब्द राजस्थान के गाँवों में 'नसपेटर' इसी कारण हो गया है।

(४) **अज्ञान**—ध्वनि-परिवर्तन के कारणों में एक अज्ञान भी है। अज्ञान के कारण शब्दों का सही रूप लोगों की समझ में नहीं आता। इससे शब्द उच्चारण-नियतता को खो बैठता है। भद्र शब्द प्राकृतों में 'भद्द' होकर हिन्दी में 'भद्दा' और 'भला' में विभक्त अज्ञान के कारण ही होगया है। 'सिगनल' 'सिगल' इसी कारण बना है और 'गार्ड' भी इसी कारण 'गाट' या 'गाड' बन गया है। बोड (बोर्ड), कानिस्टबल (कान्सटेबुल) आदि अनेक शब्द अज्ञान के ही शिकार हैं।

(५) **भ्रामक व्युत्पत्ति**—ध्वनि-परिवर्तन का यह कारण भी अज्ञान या अशिक्षा से संबंधित है किन्तु इसके लिए दो मिलते-जुलते शब्दों की सत्ता आवश्यक है। कभी-कभी भ्रामक व्युत्पत्ति को वर्णसाम्य भी योग दे देता है। आन्ध्रदेश का आन्दर देस, चेम्सफोर्ड का चिलमफोड़, एडवांस का अडवांस या अठवांस, लाइब्रेरी का रायबरेली, हू कम्स देयर का हुकम सदर, मेकेंजी का मक्खनजी, लार्डसाहब का लाठसाहब आदि शब्द इसी रोग से ग्रसित हुए हैं।

(६) **उच्चारण-त्वरा**—उच्चारण-शीघ्रता या त्वरा के कारण भी ध्वनि-परिवर्तन होता है। मास्टर साहब इसी कारण माट सहाब या मास्साब हुए हैं। घनश्याम का घंस्याम, उसने का उन्ने, कम्पाउण्डर का कंपोडर, टू नोट का डोंट आदि इसी त्वरा के कारण हुए हैं।

(७) **मुख-सुख या प्रयत्न-लाघव**—यह मानव-प्रवृत्ति है कि मनुष्य भाषा का दास न होकर उसे ही अपनी दासी बनाने का प्रयत्न करता है; अतएव वह कम से कम प्रयास से अपने भाव व्यक्त करने की चेष्टा करता है। जो ध्वनि उच्चारण-कर्त्ता के मुख-सुख में बाधक सिद्ध होती है, वह उसे कभी-कभी शब्द से छोड़ देता है। ब्राह्मण का बामन, गोपेन्द्र का गोविन, उपाध्याय का ओझा, वेस्टकोट का वास्कट इसी प्रयत्न के परिणाम हैं। राउल (राजकुल), देवल (देवकुल) आदि शब्द इसी कारण बने हैं।

(८) **भावुकता**—यह ध्वनि-परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से है। डालचन्द का डल्लू, डल्ली; वेदव्रत का विद्दू; आभा का अब्भू आदि रूप इसी कारण से हुए हैं। बिटिया, ललुआ, बचुआ आदि रूपों में भी यही कारण विद्यमान है।

(९) **बनकर बोलना**—यह भी ध्वनि-परिवर्तन का एक कारण है, किन्तु अस्थायी। बहुत से बोत, बहन से वेन, आज से आज़, इच्छा से इक्षा, जाल का ज़ाल भी इसी कारण हुआ है।

(१०) **प्रमाद या असावधानी** – प्रमाद से भी ध्वनियां परिवर्तित हो जाती हैं। स्थायी का स्थाई, नान्दी का नांदी, गौरी का गोरी, पत्थर का फ़त्थर, कोढ़ का कोड़, कौड़ी का कोड़ी आदि रूप प्रमाद या असावधानी से बने हैं।

(११) **विभाषा का प्रभाव**—जब दो जातियाँ या संघ एक-दूसरे से सम्पर्क पाते हैं तो विचारों के साथ ध्वनियों में भी आदान-प्रदान होता है। ऐसा अनुमान है कि आर्य-ध्वनि-समूह में टवर्ग का आगम द्रविड़ों के सम्पर्क से हुआ है। इसी प्रकार पढ़, चढ, पड़ आदि शब्दों में ड का ड़ और ढ का ढ़ जाति या संघ-सम्पर्क के ही कारण हुआ है।

(१२) **सामाजिक एवं राजनीतिक कारण**—समाज में अनेक उथल-पुथल होती रहती हैं। कभी धर्म-क्रांति होती हैं, कभी राजनीति बदलती है और कभी सामाजिक ढांचे में कोई उत्क्रान्ति जन्म लेती है। सांस्कृतिक पुनरुत्थान भी सामाजिक परिवर्तन को जन्म देते हैं। वाराणसी से बनारस और बनारस का फिर वाराणसी इसी उथल-पुथल का परिणाम है। कलकत्ता और बंबई (कलिकाता और मुंबई से) इसी क्रान्ति के कारण अंग्रेजों की वाणी में परिवर्तित हुए थे। भद्र (बौद्धों के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त शब्द) भद्द

(पालि) में होकर भद्दा इसी क्रान्ति के कारण बन गया। जिस प्रकार अशान्ति के समय ध्वनि-लोप की गति बढ़ जाती है उसी प्रकार शान्तिकाल में नवीन ध्वनियों का विकास भी रुक जाता है।

(१३) **भौगोलिक कारण**—भाषा वैज्ञानिकों में इस संबंध में ऐकमत्य नहीं है; फिर भी कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि उष्ण और शीत देशों की ध्वनियों में कुछ भेद अवश्य होता है। भारत के लोगों की भाषा-ध्वनियों को योरुपीय भाषा-ध्वनियों की तुला में तोलने पर यह भेद स्पष्ट हो जाता है। पश्चिमोत्तर भारतीय ध्वनियों और पूर्वी (बँगला आदि की) ध्वनियों में भी थोड़ा-सा अन्तर मिलता ही है। मास का माश, सकल का शकल, शाक का हाक, शकट का हकड़ आदि परिवर्तन भौगोलिक कारणों से संबंधित है।

(१४) **लेखन-संबंधी कारण**—संस्कृत 'भगिनी' शब्द प्राकृतों में बहिणी या बहिण या भैंण मिलता है, किन्तु फारसी लिपि के प्रभाव से (जब्र और जे़र के अभेद से) 'बहन' भी लिखा जाता है। हिन्दी के अधिकांश उपन्यासों में (अन्यत्र भी) 'बहन' शब्द चल पड़ा है। इसी प्रकार अंग्रेजी में राम, मित्र, गुप्त, मिश्र, श्याम आदि लिखने में अन्त में ए (a) लिखने का परिणाम यह हुआ कि रामा, मित्रा, गुप्ता, मिश्रा, श्यामा आदि शब्द बोलचाल में चल पड़े हैं। कदाचित् उर्दू और गुरुमुखी लिखावट के कारण मुसलमानों और पंजाबियों में हरबिन्दर, राजिन्दर, परधान, सटेशन आदि शब्दों को जन्म मिल गया है।

(१५) **सादृश्य**—कभी-कभी एक शब्द दूसरे की होड़ में अपनी ध्वनियों को बदल बैठता है। सुख ने दुक्ख (दुःख) की होड़ से सुक्ख रूप ले लिया। इसी प्रकार स्वर्ग के सादृश्य पर नरक का नर्क हो गया। 'तुभ्यम्' से जिस प्रकार तुज्झ फिर तुझ बनता है उसी प्रकार सादृश्य की महिमा से मज्झ न बनकर मुज्झ और फिर मुझ से मह्मम् बनता है। कबीर के 'इंगला' शब्द की उत्पत्ति (इड़ा से) पिंगला के सादृश्य पर ही हुई है। इतना ही नहीं कभी-कभी तो सादृश्य बिल्कुल नये शब्दों को जन्म दे देता है। 'सुरति' के सादृश्य से ही 'निरति' को जन्म मिला है।

(१६) **संक्षेप-प्रवृत्ति**—राजस्थान यूनिवर्सिटी कालेज टीचर्स एसोशिएशन से 'रूक्टा' इसी प्रवृत्ति से प्रादुर्भूत हुआ है। पेप्सू, भारोपीय, यूनेस्को आदि शब्दों के निर्माण में इसी प्रवृत्ति ने काम किया है।

(१७) **व्यंजन-बलहीनता**—जिन शब्दों में बलहीन व्यंजन अधिक होते हैं उनमें ध्वनि-परिवर्तन अधिक शीघ्रता से होता है। बलहीन ध्वनियाँ बड़ी ध्वनियों के कारण अन्तर्हित हो जाती हैं। निवर्तते का निबटे, अर्द्ध का आध, स्थापन का 'थापन' आदि शब्दों के उद्भव में यही कारण विद्यमान है।

(१८) **स्वाभाविक विकास**—शब्द काल-चक्र पर चढ़ कर अपने आप भी घिसते रहते हैं। इससे ध्वनियाँ घिसती, मिटती रहती हैं। शब्दों का इस प्रकार का विकास सहज या स्वाभाविक होता है। 'मया' से 'मइ' और फिर 'मैं' इसी प्रकार का विकास द्योतित करता है। 'कूपक' से 'कूवअ' और 'कुआ' या 'कुआँ' भी इसी प्रकार के विकास के परिणाम हैं। 'मृग' से 'मिअ' भी ऐसी ही स्थिति का द्योतक है। अकारण अनुनासिकता भी इसी विकास का परिणाम होती है। 'साँप' और 'साँच' में अनुनासिकता भी इसी कारण से दिखायी देती है।

(१९) **बलाघात**—ध्वनि-परिवर्तन का एक कारण बलाघात भी है। बल देने के कारण श्वास किसी विशेष ध्वनि को महत्त्व देकर दूसरी को दुर्बलता के हवाले कर देती है और इस प्रकार दुर्बलताग्रस्त ध्वनियाँ लुप्त हो जाती हैं। अभ्यन्तर से भीतर और 'उपाध्याय' से 'ओझा' या 'झा' इसी का परिणाम हैं। अ, उ, प, य आदि ध्वनियाँ बलाघात के चक्कर में पिस कर लुप्त हो गयी हैं।

(२०) **अंधविश्वास**—बहुत सी ध्वनियों के परिवर्तन में यह कारण विद्यमान रहता है। राजस्थान के लोग 'रमास' को (मास) की स्थिति से 'रमास' न कह कर चौला कहते हैं। इसी प्रकार 'गोभी' में 'गो' ध्वनि के साथ गाय का अर्थ निहित रहने से पूर्वी यू० पी० के लोग उसे 'कोभी' या 'कोवी' कहते हैं। एक स्त्री के पति का नाम सीताराम है; अतएव सीताराम के पिता आदि उसे सीता या सीतिया नाम से पुकारते हैं। उसकी पत्नी अंधविश्वास के कारण 'सीता' को भी 'गीता' ही कहती है। ऐसे उदाहरणों का हिन्दी में अभाव नहीं है।

(२१) **कविता का बन्धन**—मात्रा, तुक, कोमलता आदि कविता के बन्धन हैं। अतएव इनके कारण भी कुछ ध्वनियाँ अपना ह्रस्व-दीर्घ रूप बदल देती हैं। कहीं-कहीं अनुनासिकता में घटत-बढ़त इसी कारण हो जाती है। ध्वनि-लोप या ध्वनि-आगम के बहुत से उदाहरण इसी बन्धन के कारण दृष्टिगोचर होते हैं। तुक के बन्धन में 'मर्म' शब्द कहीं-कहीं 'मरम्म' हो गया और कहीं-कहीं विकराल ने विकरार रूप धारण कर लिया। चक्का ने तुक के प्रभाव से ही 'चका' रूप स्वीकार कर लिया। 'मानस' का 'राय' इसी फेर में सफल हो गया। सत्य, किम्मति, उलज्झ, कड़क्क, समुज्झ आदि शब्द इसी कारण बन गये हैं।

(२२) **नयी ध्वनियों से सम्पर्क**—किसी इतर भाषा की नयी ध्वनियों के निरन्तर सम्पर्क से भाषा विशेष में उनका आगमन होने लगता है। कभी-कभी नयी ध्वनियाँ अपरिचित होने के कारण कुछ मिलती-जुलती ध्वनियाँ

के उद्भव में भी योग दे डालती हैं। हिन्दी में 'ऑ' अथवा क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आदि ध्वनियाँ विदेशी भाषाओं से सम्पर्क के कारण ही आयी हैं। अंग्रेजी की ट, ड ध्वनियाँ न तो हिन्दी ट, ड के समान मूर्द्धन्य हैं और न त, द के समान दन्त्य, वरन् ये वर्त्स्य ध्वनियाँ हैं; किन्तु हिन्दी में 'रपट' और 'डेस्क' शब्दों में मूर्द्धन्य और अगस्त (August) तथा दिसम्बर (December) में दन्त्य बन गयी हैं। फारसी-अरबी के क़, ख़, ग़, ज़, और फ़ हिन्दी की चालू बोलियों में क, ख, ग, ज और फ रह गये हैं।

भारतीय आर्य भाषाओं में इन कारणों के अतिरिक्त ध्वनि-परिवर्तन का एक कारण और है : वह है संधि।

(२३) संधि—भारतीय आर्य भाषा के अनेक शब्दों का विकास संधि के कारण हुआ है। संस्कृत में भी यह प्रवृत्ति थी और बड़ी प्रखर थी। स्वर, व्यंजन और विसर्ग—संधि के ये तीनों भेद विद्यमान थे। वैयाकरणों ने उनके संबंध में कठोर नियम बना दिये थे। महोन्नति, तद्धाम, जगन्नाथ, अतएव, तच्छुल्क जैसे अनेक संधियुक्त शब्द संधि के चक्कर में आगये थे। प्राकृत में भी इस प्रवृत्ति का प्रवाह रुका नहीं, किन्तु मन्द अवश्य होगया। हिन्दी ने इस प्रवृत्ति को अपनी पूर्वजाओं से ग्रहण किया है। अन्य सन्धियों का हिन्दी में इतना महत्त्व नहीं है जितना स्वर-संधि का है क्योंकि इसके कारण शब्द कुछ के कुछ बन गये हैं। सौत∠सउत∠सपत्नी मैं∠मइ∠मया, सौ∠सउ∠शत, चौंर∠चउँर, चँवर∠चामर, नैन∠नइन∠नयन, कादौ∠कद्दँउ∠कर्दम आदि शब्द संधि-माया में पड़कर ही बने हैं।

स्वर-संधि के साथ ध्वनि-परिवर्तन में व्यंजन और विसर्ग संधि का योग भी अविस्मरणीय है क्योंकि शब्दों का आकार बदलने में इनका योग भी रहता है। उघाड़न (उद्घाटन), उजला (उज्ज्वल), नीझर (निर्झर), नीदंद (निर्द्वन्द्व) आदि शब्द कुछ तो संधि के कारण बदले हैं कुछ नये प्रयोगों के कारण। कुछेक, हरेक--जैसे शब्द भी संधि-क्षेत्र में नये रूप ले रहे हैं।

ये बातें तो रहीं ध्वनि-परिवर्तन के कारणों के संबंध में, अब विचार करना है ध्वनि-परिवर्तन की दिशाओं पर—उसके स्वरूप पर। स्वर और व्यंजन के भेद से ध्वनि-परिवर्तन को दो भागों में विभक्त किया गया है और फिर आगम, लोप, विपर्यय तथा आदि, मध्य और अन्त के संबंध से समस्त स्वर-व्यंजन ध्वनियों की विस्तार से विवेचना की गयी है।

(क) स्वरागम—आदि, मध्य और अन्त के संबंध से स्वरागम तीन प्रकार का होता है। आदि-स्वरागम में शब्द के आदि में कोई स्वर आजाता है। यह स्वर प्रायः ह्रस्व होता है। अस्नान (स्नान), अपरबल (प्रवल), अलोप (लोप), अन्हान (न्हान), अस्तुति (स्तुति), अस्पष्ट (स्पष्ट) आदि शब्द आदि-स्वरागम के उदाहरण हैं।

जहाँ शब्द के बीच में किसी स्वर का आगम हो जाता है वहाँ मध्य-स्वरागम की स्थिति होती है। यह आगम आलस्य, अज्ञान या उच्चारण-सौकर्य से होता है। पूरव (पूर्व), धरम (धर्म), करम (कर्म), परजा (प्रजा), रकत (रक्त), भगत (भक्त), जुगति (युक्ति), कीरति (कीर्ति), विसवास (विश्वास) आदि शब्दों का रूप इसी प्रकार का है।

मध्यस्वरागम से प्रायः दो सयुक्त व्यंजन वियुक्त हो जाते हैं। इससे उच्चारण सुकर बनता है। इस प्रकार के मध्य स्वरागम को 'स्वर-भक्ति' कहते हैं। विप्रकर्ष या युक्त विकर्ष भी इसीके अन्य नाम हैं। अपिनिहितिभी इसी का एक स्वरूप है, किन्तु कुछ विशेष स्थिति में। वल्ली (लता) 7बइल्लि7बइल 7वेल; वली7वइलि7वइल; अग्नि7अगिनि आदि उदाहरण इसी प्रकार के हैं। अन्त-स्वरागम वहाँ होता है जहाँ शब्द के अन्त में स्वर आजाये। प्रायः सभी कालों की भारतीय आर्य भाषाओं के शब्दों में अन्त के स्वर और व्यंजन का लोप तो पाया जाता है, किन्तु आगम नहीं पाया जाता। कुछ विद्वानों ने भद्दा और भल्ला (भद्र से) के उदाहरण अन्त–स्वरागम के संबंध में प्रस्तुत किये हैं, किन्तु यह बात अभी सर्वमान्य नहीं है। हाँ, संस्कृत के कुछ हलन्त शब्द हिन्दी–लेखन में प्रायः अकारान्त होगये हैं, जैसे महान (महान्), भगवान (भगवान्) आदि।

(ख) व्यंजनागम—आदि, मध्य और अन्त के संबंध में व्यंजनागम भी तीन प्रकार का होता है।

आदि व्यञ्जनागम के उदाहरणों में होठ (ओष्ठ), हड्डी (अस्थि), हुलास (उल्लास), आदि शब्द प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

हिन्दी में मध्य-व्यंजनागम के उदाहरण बहुत मिलते हैं। सुक्ख (सुख), सुंदरी (सुनरी), बन्दर (वानर), श्राप (शाप), प्रण (पण), इंगला (इड़ा) आदि शब्दों को देखकर इस प्रकार का अनुमान किया जा सकता है। मध्य-व्यंजनागम के उदाहरण पालि आदि भाषाओं में भी मिलते हैं।

अन्त-व्यंजनागम के उदाहरण भी हिन्दी में प्रचुरता से मिलते हैं-काल्ह (कल्य), भौंह (भ्रू), छावँ (छाया)।

(ग) अक्षरागम—जहाँ कोई अक्षर आदि में जुड़ जाता है वहाँ आदि-अक्षरागम होता है। खंगोडर (कोटर), घुंगुची (गुंजा) आदि इसी के उदाहरण हैं।

मध्य-अक्षरागम में कोई अक्षर मध्य में आ जुड़ता है; जैसे खरल (खल), आलकस (आलस) आदि।

अन्त-अक्षरागम के भी बहुत से उदाहरण मिलते हैं। इसमें अक्षर शब्द के अन्त में बढ़ जाता है। जीमड़ी (जीभ), बघूटी (वधू), आँकड़ा (आँक), देसड़ा (देस या देश), पांखड़ी (पाँख) आदि इसके उदाहरण हैं।

२. **लोप**—जहाँ शब्द से स्वर, व्यंजन या अक्षर का लोप हो जाता है वहाँ यह प्रकार होता है। उच्चारण-सुकरता, शीघ्रता या स्वराघात के कारण शब्द से कभी-कभी ध्वनि निकल जाती है। स्वर-लोप, व्यंजन-लोप तथा अक्षर-लोप के भेद से यह तीन प्रकार का होता है।

(क) स्वरलोप—

आदि-स्वर लोप—नाज (अनाज), वायन (उपायन), भीतर (अभ्यन्तर), भी (अपि), ग्यारह (एकादश), रहट (अरघट्ट), तीसी (अतीसी), पूआ या पूवा (अपूप) आदि अनेक शब्द आदि-स्वर-लोप के ही उदाहरण हैं।

मध्य-स्वर-लोप—भारतीय आर्य भाषाओं में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। संस्कृत शब्द राज्ञा अथवा राज्ञी राजन् शब्द में 'अ' के लोप से ही बने हैं। इसी प्रकार प्राकृत शब्द 'घीदा' या 'घीआ' मध्य-स्वर-लोप से ही बने हैं। हिन्दी के बहुत से शब्द उच्चारण में मध्य-स्वर-लोप को ही प्रकट करते हैं, किन्तु वे लिखने में नहीं आते। फिर भी उदाहरणों का अभाव नहीं है। प्रघर (पर-घर), प्रमात्मा (परमात्मा), कृप्या (कृपया), बल्देव (बलदेव) आदि शब्द मध्य-स्वर-लोप को ही व्यक्त करते हैं।

अन्त-स्वर-लोप—मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा-काल के अन्त में संस्कृत के दीर्घ स्वर—आ, ई, ऊ-प्राकृत शब्दों के अन्त में पाये जाते थे, परन्तु आधुनिककाल में आते-आते वे ह्रस्व होकर लुप्त होगये। इस प्रकार हिन्दी के अधिकांश तद्भव शब्द व्यंजनान्त होते हैं। कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं:—

संस्कृत		हिन्दी
भगिनी	से	बहिन्
निद्रा	से	नींद्
दूर्वा	से	दूब्
संगे	से	संग्

शब्द के अन्त में रहने वाला व्यंजन या स्वर धीरे-धीरे क्षीण होता हुआ लुप्त हो जाता है, वैदिक से लेकर हिन्दी-ध्वनियों तक के इतिहास से यही विदित होता है। हिन्दी के, तथा हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत के, अकारान्त शब्द

बोलचाल में प्रायः व्यंजनान्त हो गये हैं। आम्, दाम्, कमल् अमल्, काल्, चाम्, प्यार, मार आदि शब्दों में 'अ' ध्वनि की यही दशा हुई है।

(ख) **व्यंजन-लोप—**

आदि-व्यंजन-लोप—हिन्दी-तद्भव शब्दों में आदि-व्यंजन-लोप के बहुत-से उदाहरण मिलते हैं। संस्कृत के वे शब्द जिनके प्रारम्भ में केवल व्यंजन थे, वे सब हिन्दी में इसी प्रकार के हो गये हैं, जैसे—स्थान 7 थान, स्थाणु 7 थाणु, ज्वलन 7 वलन, श्मशान 7 शमशान, स्तूप 7 थुआ, स्थाली 7 थाली, स्थापना 7 थापना आदि।

हिन्दी-तद्भव-शब्दावली में मध्य-व्यंजन-लोप के भी प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। मध्य-व्यंजन-लोप की प्रक्रिया प्राकृतों में ही प्रारम्भ हो गयी थी सायर (सागर), वअण (वचन), सुई (सूची), णअर (नगर), कवितावली (कवित्तावली), घरबार (गृहद्वार) आदि उदाहरण मध्य-व्यंजन-लोप के ही हैं। कायथ (कायस्थ), उपास (उपवास), बाम्हन (ब्राह्मण), गाभिन (गर्भिणी), कातिक (कार्तिक), उठान (उत्थान), कैथ (कपित्थ) आदि तद्भव मध्य-व्यंजन-लोप के उदाहरण हैं।

अन्त-व्यंजन-लोप—संस्कृत के प्रायः सभी हलन्त शब्द मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा-काल में अन्त्य व्यंजनहीन हो गये थे, जैसे-पश्चा (पश्चात्), जाव (यावत्), सम्मं (सम्यक्), ताव (तावत्), भगवा (भगवान्) आदि। जो, तो आदि हिन्दी तद्भव शब्दों में अन्त-व्यंजन-लोप के उदाहरण मिलते हैं।

(ग) **अक्षर-लोप—**

स्वर-व्यंजन-लोप के छः प्रकारों के अतिरिक्त हिन्दी में अक्षर-लोप के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। जब एक ही शब्द में दो समान अथवा मिलते-जुलते अक्षर एक ही साथ आते हैं तो प्रायः एक अक्षर का लोप हो जाता है।

आदि-अक्षर-लोप—इस प्रकार के उदाहरणों का हिन्दी में अभाव तो नहीं है, किन्तु ऐसे कम ही मिलते हैं। झा (उपाध्याय से) इसी प्रकार का उदाहरण है।

मध्य-अक्षर-लोप—फलाहारी 7 फलारी, राजकुल्य 7 राउर, भाण्डागार 7 भण्डार, गोवूमचणक 7 गोचना, गोधूमयव 7 गाजई आदि उदाहरणों से हिन्दी-तद्भव-शब्दावली में मध्य-व्यंजन-लोप की स्थिति का अनुमान किया जा सकता है।

अन्त-अक्षर-लोप—मौक्तिक से मोती, भ्रातृजाया से भावज, विज्ञप्ति से विनती, माता से माँ, कर्तरिका से कटारी, कुंचिका से कुंजी, यज्ञोपवीत से जनेऊ आदि तद्भवों का विकास इसी प्रक्रिया से हुआ है।

उक्त तीन प्रकार के अक्षर-लोपों के अतिरिक्त एक और प्रकार भी है। उसे समाक्षर–लोप (Haplology) नाम दिया गया है। अंग्रेजी नाम प्रसिद्ध भाषा-विज्ञानी ब्लूमफील्ड का दिया हुआ है। जब किसी शब्द में एक अक्षर या अक्षर-समूह या ध्वनि दो बार आये तो एक का लोप हो जाता है। यह लोप प्रायः शब्द-मध्य में होता है। नाटकार (नाटककार), नकटा (नाक-कटा), मँझार (मध्यघार), गधमार (गर्दभ-मार) आदि उदाहरण समाक्षर-लोप के हैं।

३. विपर्यय—

इसके अन्य नाम 'वर्ण-विनिमय' और 'वर्ण-व्यत्यय' भी हैं। इसमें किसी शब्द का स्वर, व्यंजन या अक्षर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाता है और दूसरा अपना स्थान छोड़कर उसके स्थान पर आ जाता है, जैसे मतलब से मतबल, अमरूद से अरमूद, सिनेमा से सिमेना आदि।

इसको अंग्रेजी में Metathesis कहते हैं। इसके दो प्रकार हैं: 'पार्श्ववर्ती विपर्यय' तथा 'दूरवर्ती विपर्यय'। पहले में पास–पास की ध्वनियाँ स्थानान्तरित होती हैं, अन्यथा दूसरे प्रकार का विपर्यय होता है। बाम्हन < ब्राह्मण में पार्श्ववर्ती विपर्यय है तथा बनारस < वाराणसी में दूरवर्ती।

स्वर और व्यंजन के भेद से इसके प्रमुखतः ४ भेद होते हैं। नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी की तद्भव-शब्दावली में ऐसे विपर्ययों की प्रचुरता है। कुछ उदाहरण अक्षर–विपर्यय के भी मिल जाते हैं, किन्तु बहुत कम जैसे टिकली < तिलक। हिन्दी के विदेशी तद्भवों में ऐसे उदाहरण बहुत मिलते हैं जैसे मतबल (मतलब), बरफ़ (ब़फ़र), अरज़क (अज़रक) आदि। बलदना (बदलना), नखलऊ (लखनऊ) आदि शब्दों में भी यही रूप है। स्वर और व्यंजन–विपर्यय के उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं—

(क) स्वर–विपर्यय

सं०	हिं०
उल्का	लूका
अंगुली	उंगली
एरंड	रेंडी
अम्लिका	इमली
विन्दु	बूंद
इक्षु	ऊख
श्मश्रु	मूछ
सन्धि	सेंध
श्वसुर	सुसर
अनुमान	उनमान

(ख) व्यंजन–विपर्यय

सं०	हिं०
विडाल	बिलार
लघुक	हलका
गृह	घर
परिधान	पहिरना
गरुड	गड़ुर

शब्दांश-विपर्यय—विपर्यय का एक अन्य स्वरूप शब्दांश-विपर्यय है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें प्रायः आदि-शब्दांश का विपर्यय होता है। इसमें दो शब्द साथ-साथ आते हैं उनमें से दोनों के आदि अक्षर का विपर्यय हो जाता है, जैसे—घोड़ागाड़ी का गोड़ा-गाड़ी, दाल-चावल का चाल-दावल आदि। हिन्दी-तद्भव शब्दावली में ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं। अंग्रेजी में इस विपर्यय को Spoonerism कहते हैं।

४. सावर्ण्य या समीकरण—

भाषा की साधारण प्रवृत्ति है कि ध्वनियाँ एक-दूसरी पर प्रभाव डालती हैं। जब एक ध्वनि दूसरी को प्रभावित करके सजातीय बना लेती है तब समीकरण या सावर्ण्य की स्थिति होती है, जैसे—सं० चक्र से प्रा० चक्क और हिन्दी चक्का अथवा सं० मुक्त से प्रा० मुक्क और हिन्दी मुक्क या मूक्का। इसके दो भेद हैं: पूर्व सावर्ण्य और पर-सावर्ण्य। इनके अन्य नाम पुरोगामी सावर्ण्य और पश्चगामी सावर्ण्य भी हैं। पत्र से पत्ता, चक्री से चक्की लग्न से लग या लग्गा आदि उदाहरण इसी प्रकार के हैं। मत्त, सप्प, यम्म, कम्म, दुद्ध आदि रूप पर-सावर्ण्य या पश्चगामी सावर्ण्य के हैं। नील का लील भी इसी का एक उदाहरण माना जाता है।

उपर्युक्त सभी उदाहरण व्यंजन-समीकरण के हैं। समीकरण का एक भेद स्वर-समीकरण भी होता है। इसके भी पूर्वसावर्ण्य और पर-सावर्ण्य दो भेद होते हैं। खुरपी से खुरुपी, सूरज से सुरुज आदि रूप पूर्व सावर्ण्य के उदाहरण हैं; किन्तु अंगुलि का ऊँगली, इक्षु का उक्खु आदि उदाहरण पर-सावर्ण्य के हैं।

५. असावर्ण्य या विषमीकरण—

इस परिवर्तन के अन्तर्गत दो सजातीय या एक-सी ध्वनियाँ अथवा रूप छोड़ कर भिन्न बन जाती हैं। स्वर और व्यंजन के संबंध से इसके भी प्रमुखतः दो भेद होते हैं: स्वर-असावर्ण्य तथा व्यंजन-असावर्ण्य।

(क) **स्वर-असावर्ण्य**—तिलक से टिकली, पुरुष से पुरिस आदि उदाहरण पूर्व-स्वर-असावर्ण्य के हैं तथा मुकुट से मउर, नूपुर से नेउर, मुकुल से मउर या बउर आदि उदाहरण पर-स्वर-असावर्ण्य के हैं।

(ख) **व्यंजन-असावर्ण्य**—कंकण से कगन, काक से काग, लांगूली से लंगूर आदि उदाहरण पूर्व-व्यंजन-असावर्ण्य के हैं तथा ललाट से निलाट, दारिद्रय से दलिद्दर, नवनीत से लोनी पर-व्यंजन-असावर्ण्य के स्वरूप हैं।

६. संधि और एकीभाव—

भाषा में अनेक ध्वनि-विकार संधिज होते हैं। स्वरों के बीच में जो विवृत्ति रहती है वह प्रायः संधि-द्वारा विकार उत्पन्न कर देती है। उदाहरण

के लिए 'थइर' शब्द को ले सकते हैं जो गिरनार के शिलालेख में 'स्थविर' के लिए मिलता है, किन्तु अब 'अ' और 'इ' के बीच के मिट जाने से 'थइर' का 'थेर' रूप हो गया है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं के उदाहरणों में मध्य-व्यंजन-लोप से स्वरों की तीन दशाएं मिलती हैं : (१) स्वरों के बीच में विवृत्ति रहती है, जैसे 'हुआ' में, (२) बीच में 'य' अथवा 'उ' का आगम हो, जैसे--'गतः' से 'अ' होने पर 'गया' और 'गवा' रूप बनते हैं; अथवा (३) संधि-द्वारा दोनों-स्वरों का एकीभाव हो जाये, जैसे 'चलइ' का 'चलै', 'मइ' का 'मैं', 'सउ' का 'सौ' आदि। हिन्दी में तीसरे प्रकार के ध्वनि-विकारों का बाहुल्य दिखायी पड़ता है, जैसे—

सं०	प्रा०	हि०
खादति	खाअइ	खाइ, खाय
राजदूत	राअउत्त	राउत, रावत
चर्मकार	चम्मआर	चमार
वचन	वअण, वइन	बैन
नगर	णअर	नयरु, नइर, नेर
समर्पयति	सअप्पेइ, सवप्पेइ, सउप्पइ	सउंपे, सौंपे
अपर	अवर	और
मुकुट	मउड	मौर
मयूर	मउर	मोर
शत	सअ { सओ, सउ } { सए, सइ }	{ सौ, सै }
सपत्नी	सउत्त	सौत
नयन	णइण	नैन
चामर	चॅवर, चॅउर	चौर

७. अनुनासिकता—

हिन्दी-तद्भव शब्दावली में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनमें अनुनासिकता आ गयी है, किन्तु उनके मूल रूपों में नहीं थी। सांप (सर्प), साँच (सत्य), ऊँट (उष्ट्र), जूँ (यूका), कुआँ (कूप), आँसू (अश्रु), भौं (भ्रू) आदि शब्द अनुनासिकता के योग से ही बने हैं।

८. मात्रा-भेद—

असावधानी, अज्ञान या बोलने की प्रवृत्ति से बहुत से शब्दों में दीर्घ मात्रा ह्रस्व हो जाती है और ह्रस्व दीर्घ हो जाती है। वानर से बंदर,

आभीर से अहीर, आषाढ़ से असाढ़, आकाश से अकास, आश्चर्य से अचरज आदि शब्दों में दीर्घ से ह्रस्व की प्रवृत्ति काम कर रही है; किन्तु प्रिय से पीव, अक्षत से आखत, अंकुश से आँकुस, जिह्वा से जीभ, कंटक से काँटा, अद्य से आज, स्कंध से कंधा आदि में ह्रस्व मात्रा से दीर्घ मात्रा हो गयी है। हिंदी की तद्भव-शब्दावली में ऐसे शब्दों की बहुलता है।

९. महाप्राणीकरण—

अल्पप्राण ध्वनियों के महाप्राण हो जाने से भी कितने ही हिन्दी तद्भव शब्दों का निर्माण हुआ है, जैसे:—बाफ या भाप (वाष्प), पीठ (पृष्ठ), बिच्छू या बीछू (वृश्चिक), घर (गृह), ढीठ (धृष्ट), सूखा (शुष्क), हाथ (हस्त), भेष (वेष)।

१०. घोषीकरण—

जब अघोष ध्वनियाँ घोष हो जाती हैं तब इस प्रकार की स्थिति होती है। परिवर्तन के इस प्रकार में कुछ न कुछ योग उच्चारण-सुविधा का भी होता है। सगल (सकल), मगर (मकर), साग (शाक), कँगना (कंकण), काग (काक) आदि शब्दों का निर्माण घोषीकरण की स्थिति से ही हुआ है।

११. अल्पप्राणीकरण—

कुछ तद्भव शब्दों में महाप्राण का अल्पप्राण भी हो गया दिखाई पड़ता है। हिन्दी-बोलियों के दूद (दूध=दुग्ध), सूदो (सूधो=शुद्ध), मजधार (मझधार=मध्यधार), सादू (साधु) आदि शब्द इसी प्रक्रिया से बने हैं।

ध्वनि-परिवर्तन के अनेक चक्रों पर चढ़ कर भारतीय आर्य भाषा की शब्दावली घिसती चली गयी है। कहीं-कहीं परिवर्तन-प्रक्रिया में कुछ खुरदरापन आ गया है या नोकें निकल आयी हैं जिससे तद्भव शब्दों को मूल शब्दों के सामने रखने पर सहसा उनमें किसी संबंध का अनुमान नहीं किया जा सकता, किन्तु भाषाज्ञानी की दृष्टि उस पर अवश्य पहुंच जाती है। शब्द के आकार-प्रकार के विकास के साथ बहुत से शब्दों के अर्थों में भी क्रान्ति हुई है। परिवर्तन के अनेक कारणों और दिशाओं की चर्चा तो इस प्रसंग में अधिक उपयुक्त न होगी, किन्तु कुछ उदाहरणों से हिन्दी तद्भव शब्दावली के अर्थ-परिवर्तन, अर्थ-विकास और अर्थ-संकोच का अनुमान किया जा सकता है। यों तो काल-चक्र पर चढ़ कर बहुत से तत्सम शब्दों ने भी अर्थ-क्रान्ति की है, किन्तु तद्भव शब्दों में यह प्रवृत्ति कुछ अधिक व्यापकता से मिलती है। घर, बाड़ी, पाती (चिट्ठी), धन, कन, चाल, गाढ़ (कोली या जुलाहे की गाढ़), मद्दा, चाक, चाकी, पहिरन, अखाड़ा, खाजा (खाना विशेष), भोला, सद (ताजा), भजना (भागना), थापा, टप्पा आदि तद्भवों के मूल के अर्थों से अलगाव, विकास या संकोच की स्थिति दिखायी दे सकती है।

घर—गृह (सं.) से विकसित यह शब्द कभी मकान के अर्थ में प्रयुक्त होता था। आज रसोईघर, पेशाबघर आदि शब्दों में यह कमरे का अर्थ भी देता है।

बाड़ी—(सं० वाटिका) इसके मूल 'वाटिका' का प्रयोग लघु उद्यान के अर्थ में होता था। आज इसका संबंध 'खेती-बाड़ी' या 'चाटुर्ज्या बाड़ी' जैसे शब्दों से हो गया है। इसी प्रकार 'मालियों की बाड़ी' आदि शब्द प्रयोग में आते हैं। यहाँ बाड़ी गृह-समूह के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

पाती—इसका उद्भव 'पत्र' शब्द से हुआ था, किन्तु संस्कृत काल में ही उसने 'पत्रिका' (चिट्ठी) का अर्थ ग्रहण कर लिया था। आज 'पाती' शब्द प्रमुखतः चिट्ठी के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है, यद्यपि 'फूल-पाती' के साथ यह अपने मूल अर्थ को भी अक्षुण्ण रखता है।

धान—यह शब्द अपने मूल रूप में 'धान्य' था जिससे सामान्यतः 'अन्न' का अर्थ द्योतित होता था। आज इसका संबंध प्रमुखतः चावल से हो गया है।

कन—इसका उद्भव संस्कृत 'कण' से हुआ है जिसका अर्थ 'अंश' या 'छोटा टुकड़ा' होता था। आज राजस्थान की बोलियों में इसका प्रयोग 'अन्न' के लिए ही विशेष रूप से होता है।

चाल—यह शब्द चल् धातु से बना है। इसका अर्थ गति होता है, किन्तु 'मैं आपकी चाल से परिचित हूँ'—जैसे वाक्यों में इसका अर्थ चालाकी या 'विरोधी गति-विधि' हो गया है।

इसी प्रकार 'चल्' धातु से बने हुए 'चलन' शब्द का अर्थ हिन्दी में 'रीति' या 'प्रथा' ग्रहण किया जाता है।

गाढ़—यह शब्द सं० 'गर्त' या 'गर्तक' से विकसित हुआ है जिसका सामान्य अर्थ 'गड्ढा' या 'गढ़ा' होता है, किन्तु उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भागों में 'गाढ़' का अर्थ 'कोली या जुलाहे की शाला' होता है, जिसमें बैठकर वह अपने करघे पर कपड़ा बुनता है।

भद्दा—'भद्र' शब्द से विकसित इस शब्द ने 'शिष्ट' या 'भले' के अर्थ के विरोध में 'अशिष्ट' या 'बुरे' का अर्थ धारण कर लिया है।

चाक—सं० 'चक्र' से विकसित इस शब्द का अर्थ सामान्यतया 'पहिया' होना चाहिये था, किन्तु आज यह शब्द कुम्हार के 'चाक' के अर्थ में ही रूढ़ हो गया है।

चाकी—यह शब्द चक्रिका से व्युत्पन्न हुआ है। आज इसका अर्थ 'हाथ से आटा पीसने की चक्की' के लिए प्रायः रूढ़ हो गया है। 'चाकी' के स्थान पर आजकल एक शब्द 'चक्की' भी प्रयुक्त होता है जैसे—'पनचक्की',

'बिजली की चक्की', किन्तु जो अर्थ 'चाकी' देता है वह 'चक्की' सामान्यतया नहीं देता। 'चक्की' या 'चकिया' शब्द आजकल हलवाई लोग भी प्रयुक्त करते हैं। इससे उनका आशय 'बर्फी' से होता है।

पहिरन—'परिधान' से व्युत्पन्न यह शब्द अपने मूल अर्थ को सुरक्षित रखते हुए अर्थ-विस्तार की दिशा में चला गया है। 'वेश-भूषा' के अतिरिक्त आज यह शब्द पहिनने की एक शैली का भाव भी द्योतित करता है।

अखाड़ा—विद्वानों ने इसे 'अक्षवाट' से व्युत्पन्न माना है। इसने भी अर्थ-विस्तार के मार्ग से 'दल' या दलबन्दी का अर्थ ग्रहण करलिया है। कसरती अखाड़े या पहलवानों के अखाड़े तो प्रायः सभी ने देखे होंगे, किन्तु 'अखाड़े बाजों' की माया से बहुत कम लोग परिचित होंगे।

खाजा— 'खाद्य' से व्युत्पन्न यह शब्द अर्थ-संकोच का शिकार हो गया है। पहले यह खाने की वस्तु के लिए सामान्य रूप से प्रयुक्त होता था। मध्यकाल में यह शब्द मिठाई-विशेष के अर्थ में ही प्रयुक्त होने लगा। आज नई-नई मिठाइयों के नामों ने 'खाजा' के महत्त्व को मिटा-सा दिया है। फिर भी 'खाजा' अभी तक मध्यदेशीय गांवों में ब्याह-शादी के अवसर पर 'खजला' या 'खाजला' के रूप में अपना महत्त्व स्थापित किये हुए है।

भोला—प्राकृत ग्रन्थों में 'भ्रान्त' शब्द के लिए 'भुल्ल' शब्द का प्रयोग होता था, किन्तु उसका अर्थ आज के भोला से भिन्न था। आज 'भोला' ने भूला से पृथक् अर्थ व्यक्त करना प्रारंभ कर दिया है। इसलिए 'भुल्ल' के अर्थ को 'भूला' तो द्योतित करता है, किन्तु 'भोला' नहीं। सच तो यह है कि 'भोला' ने सपूत की भांति 'भुल्लो' के अवगुणों को छिपाकर गुणों का ही प्रकाशन किया है। इसका गुण यहाँ तक बढ़ गया कि वह शंकर का विशेषण या पर्याय बन गया है।

सद—इसका तत्सम 'सद्यः' है जो अपने अव्यय रूप में शीघ्र, हाल ही में, अभी आदि अर्थ व्यक्त करता है; किन्तु सद रोटी', सद पानी', 'सद मट्ठा' आदि शब्दों में 'सद' अव्यय रूप छोड़कर विशेषण बन गया है और 'ताज़ा' (fresh) अर्थ द्योतन करता है।

भजना—तद्भवों की पंक्ति में बैठकर बहुत से शब्द अपने पाठक या श्रोता को तत्समों में अपना 'स्रोत' खोजने की प्रेरणा देते हैं, किन्तु ऐसी दृष्टि से कभी-कभी अनर्थ हो जाता है। संस्कृत के 'भज्' शब्द से इसका कोई संबंध नहीं है। कुछ विद्वानों ने इसका 'भञ्ज्' धातु से जोड़ने का प्रयत्न किया है और भञ्जित (वि०) प्राकृत में 'भञ्जिय' होकर 'भगिया' या भागा हो गया है। इसी 'भञ्ज' धातु से 'भजना' या 'भगना' संज्ञा शब्द व्युत्पन्न हुए हैं। यह ठीक है कि 'ज' और 'ग' परस्पर बदलते रहते हैं किन्तु मैं इस शब्द

को 'देशज' समझता हूं; जो तद्भवों की पंक्ति में बैठकर तद्भव सा प्रतीत हो रहा है।

थापा—अपने मूल रूप में यह शब्द स्था' धातु का भूतकालिक कृदन्त है जो णिच् प्रत्यय से 'स्थापित' हुआ था, जिसका अर्थ था 'रखा हुआ', 'जमाया हुआ', 'अवस्थित' या 'निर्धारित'। आज इसका अर्थ किसी वस्त्र, भित्ति आदि पर रंग से बने हुए हस्त-चिह्न या हस्तांक के रूप में ग्रहण किया जाता है। इसी का दूसरा भाई 'ठप्प' है जिसका अर्थ 'हस्तांक' न होकर 'मुद्रांक' होता है।

इन उदाहरणों को देख कर हिन्दी के तद्भव शब्दों में हुए ध्वनि-परिवर्तनों की पूर्वपीठिका की ओर ध्यान चला जाता है। यों तो आज आधुनिक साहित्यिक हिन्दी में तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुत बढ़ गया है, किन्तु ध्वनियों के इतिहास का अध्ययन केवल तद्भव-शब्दावली के अध्ययन से ही हो सकता है। वास्तव में तद्भव शब्दों में से अधिकांश हिन्दी की बोलियों की सम्पत्ति हैं, किन्तु उनमें से बहुत से साहित्यिक हिन्दी में भी चले आये हैं। हिन्दी कहानियों और उपन्यासों की लोक-प्रिय शब्दावली में ऐसे शब्दों का बाहुल्य है। यदि हम एक ओर संस्कृत शब्दों को और दूसरी ओर हिन्दी के तद्भव शब्दों को सामने रखें तो ध्वनि-सम्बन्धी कुछ सामान्य बातें दृष्टिगोचर होती हैं जिनमें से स्वर-विषयक ये हैं—

स्वर-रूप

(१) संस्कृत शब्दों के अन्तिम स्वर आ, ई, ऊ धीरे-धीरे अ, इ, उ में परिवर्तित हो गये और ए, ओ का परिवर्तन इ, उ में हो गया। इस प्रकार दीर्घ तथा संयुक्त से ह्रस्व हुए स्वरों में और मूल ह्रस्व स्वरों में कोई भेद नहीं रह सका। हिन्दी में शब्दान्त के ह्रस्व स्वर कुछ दिन रहने के बाद धीरे-धीरे लुप्त हो गये। इस समय उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी के तद्भव शब्द बहुलता से व्यंजनान्त हैं। हां, यह परिवर्तन अभी लिखने में स्वीकृत नहीं हुआ है। हिन्दी की कुछ बोलियों में अन्त्य अ, इ आदि का उच्चारण कुछ-कुछ प्रचलित है।

(२) गुणवृद्धि परिवर्तन संस्कृत में तो होते ही हैं, हिन्दी में भी मिलते हैं। हिन्दी में संधि-पूर्व के इ तथा उ कभी-कभी, दीर्घ में न बदल कर, प्राय: ए तथा ओ में बदल जाते हैं। बेल ∠ बिल्व, सेम ∠ शिवा, कोढ़ ∠ कुष्ठ, तथा कोख ∠ कुक्षि शब्द इसी प्रक्रिया से बने हैं।

(३) हिन्दी के तद्भव शब्दों में वृद्धि स्वरों का प्रयोग बहुत कम मिलता है। केवट ∠ कैवर्त, गेरू ∠ गैरिक तथा गोरा ∠ गौर इस प्रकार के परिवर्तन की स्थिति के प्रमाण हैं।

(४) हिन्दी के तद्भव शब्दों में ऋ का परिवर्तन किसी अन्य स्वर या 'रि' में हो जाता है। रूख ∠ वृक्ष, माई ∠ भ्रातृ, किया ∠ कृतः, मुआ ∠ मृतः, नाच ∠ नृत्य, बसह ∠ वृषभ, रितु ∠ ऋतु, रिन ∠ ऋण आदि शब्दों से ऋ के विभिन्न परिवर्तनों का अनुमान किया जा सकता है।

हिन्दी की तद्भव शब्दावली के समग्र अवलोकन से हम स्वरों के परिवर्तन के सम्बन्ध में यह निष्कर्ष निकालते हैं—

(१) अ—

(i) कहीं-कहीं संस्कृत की 'अ' ध्वनि हिन्दी तद्भव शब्दों में सुरक्षित रहती है, जैसे—पहर ∠ प्रहर, सगरो ∠ सकलः, गड्ढा ∠ गर्त, थन ∠ स्तन, थल ∠ स्थल, सरग ∠ स्वर्ग।

(ii) कहीं-कहीं संस्कृत 'अ' हिन्दी तद्भवों में 'आ' रूप धारण कर लेता है जैसे पाकड़ ∠ पर्कटी, आगल ∠ अर्गला, काम ∠ कर्म, चाम ∠ चर्म, घाम ∠ घर्म।

(iii) कहीं-कहीं संस्कृत शब्दों का 'अ' हिन्दी के तद्भवों में 'इ' का रूप धारण कर लेता है, जैसे—इमली ∠ अम्लिका, गिनना ∠ गणना, पिंजरा ∠ पंजर आदि।

(iv) कहीं-कहीं अ-ध्वनि अर्द्ध-स्वर 'व' के साथ 'उ' में बदल जाती है, जैसे—जुर ∠ ज्वर सुर ∠ स्वर, धुनि ∠ ध्वनि।

(v) कहीं-कहीं 'अ' 'उ' का रूप धारण कर लेता है, जैसे—खुजली ∠ खर्जु।

(vi) कहीं-कहीं तद्भवों में संस्कृत 'अ' को 'ऊ' हो जाता है, जैसे—मूँछ ∠ श्मश्रु।

(vii) कहीं-कहीं 'अ' को 'ए' हो जाता है, जैसे—मेंढक ∠ मण्डूक सेंध ∠ संधि।

(viii) कहीं-कहीं 'अ' को 'ऐ' हो जाता है, जैसे—रैन ∠ रजनी मैन ∠ मदन, सै ∠ शत।

(ix) कहीं-कहीं 'अ' को 'ओ' हो जाता है, जैसे—पतोहू ∠ पुत्रवधू इस परिवर्तन के लिए 'अ' के पश्चात् 'व' का होना आवश्यक है।

(x) यदि किसी तत्सम शब्द के अन्त में 'व' हो तो 'व' का लोप होकर उसके पूर्ववर्ती 'अ' को 'औ' हो जाता है, जैसे—भादौं ∠ भाद्र माधौ ∠ माधव। 'भादौं' शब्द भी इसी प्रक्रिया से प्राकृत में 'भद्दवअ' हो हिन्दी में भादौं बना है। यहाँ नियम में थोड़ा सा व्यतिक्रम है।

ा—

(i) कहीं-कहीं संस्कृत शब्दों का 'आ' हिन्दी के तद्भव शब्दों में सुर- , जैसे ग्वाला∠गोपाल, आम∠आम्र, तांबा∠ताम्र, आस∠आशा, काष्ठ, थान∠स्थान, खाजा∠खाद्य, धान∠धान्य आदि में।

(ii) कहीं-कहीं 'आ' के स्थान पर हिन्दी-तद्भवों में 'अ' भी मिलता े— अचरज∠आश्चर्य, बघेरा∠व्याघ्र, महगा∠महार्घ, बखान∠ ान।

इ—

(i) कहीं-कहीं हिन्दी-तद्भवों में भी यह ध्वनि सुरक्षित रहती है, करन∠किरण, गाभिन∠गर्भिणी, बहिरा∠वधिर आदि में।

(ii) कहीं-कहीं तत्सम शब्दों में आई हुई 'इ' हिन्दी तदभवों में 'ई' हो है, जैसे—लाठी∠यष्टि, रीता∠रिक्त, करसी∠करीषिका, सीख∠शिक्षा, ∠मिष्ट आदि में।

(iii) कहीं-कहीं तत्सम शब्दों में प्रयुक्त 'इ' का 'अ' हो जाता है, जैसे रश्मि, भींत∠भित्ति, आँख∠अक्षि, तुरत∠त्वरित, सुरत∠स्मृति, ∠वधिर आदि में।

(iv) कहीं-कहीं 'इ' का 'ऊ' भी हो गया है, जैसे ऊख∠इक्षु।

(v) कहीं-कहीं 'इ' का 'ऊ' हो जाता है, जैसे गेरू∠गैरिक, बूंद∠ ।

ई—

(i) कहीं-कहीं संस्कृत शब्दों की 'ई' ध्वनि हिन्दी तद्भवों में सुरक्षित है, जैसे कीड़ा∠कीट, तीखा∠तीक्ष्ण, अलसी∠अतीसी, पानी∠पानीय, ∠शार्ष।

(ii) कहीं-कहीं 'ई' ह्रस्व ध्वनि 'इ' में परिवर्तित हो जाती है, जैसे ∠दीपक, पियरा∠पीतल, पिढ़िया∠पीठिका, जिउ∠जीव।

(iii) कहीं-कहीं 'ई' को 'इ' भी हो जाता है, जैसे रैन∠रजनी, ∠परीक्षा।

) उ—

(i) हिन्दी-तद्भवों में यह ध्वनि कभी-कभी सुरक्षित रहती है, जैसे ड़ा∠कुब्जक, कुहाड़∠कुठार, गुफा∠गुहा।

(ii) कहीं-कहीं 'उ' के स्थान पर हिन्दी में 'ऊ' हो जाता है, जैसे ∠मुष्टि, तूठा∠तुष्ट, दूध∠दुग्ध, पूठा∠पुष्ट, रूठा∠रुष्ट, सूखा∠शुष्क, ∠गुर्जर, चूमना∠चुम्बन, सूता∠सुप्त, गूंजन∠गुंजन, पूत∠पुत्र, ∠त्रुटित।

(iii) कभी-कभी तत्सम शब्दों में प्रयुक्त 'उ' को हिन्दी तद्भवों में 'अ' हो जाता है, जैसे साध∠साधु, बूंद∠बिन्दु, बटला∠वर्तुल, बांह∠बाहु।

(६) ऊ—

(i) कुछ तद्भवों में 'ऊ' सुरक्षित रहता है, जैसे मूसा∠मूषक, मूत∠मूत्र, रूखा∠रूक्षक, सूत∠सूत्र, धूत∠धूर्त, मूसल∠मुषल।

(ii) कभी-कभी 'ऊ' का 'उ' भी हो जाता है, जैसे कुआ<कूप, धुआँ∠धूम, भुवाल∠भूपाल, महुआ<मधूक, सुई<सूचिका।

(iii) कहीं-कहीं 'ऊ' का 'ए' हो जाता है, जैसे नेउर<नूपुर।

(iv) कहीं-कहीं 'ऊ' का 'ओ' हो जाता है, जैसे मोल<मूल्य, मोजपत्र<भूर्जपत्र।

(७) ऋ—

तत्सम शब्दों ने हिन्दी में आते-आते अनेक रूप बदले हैं। उनकी अन्य ध्वनियों की भाँति ऋ का भी हाल हुआ है। परिवर्तन इस प्रकार दिखायी देते हैं:—

(i) ऋ का अ में परिवर्तन—
वसह<वृषभ; हट्टा<हृष्ट।

(ii) ऋ का परिवर्तन आ में—
कान्ह<कृष्ण।

(iii) ऋ का परिवर्तन इ में—
तिस<तृषा, मडा<मृत, तिन<तृण।

(iv) ऋ का परिवर्तन ई में—
दीठि<दृष्टि, पीठ<पृष्ठ, घीठ∠धृष्ट।

(v) ऋ का परिवर्तन उ में—
पुट्ठा<पृष्ठ, घुटा<घृष्ट।

(vi) ऋ का परिवर्तन ऊ में—
वूठा∠वृष्ट, रूख<वृक्ष।

(vii) ऋ का परिवर्तन 'रि' या 'री' में—
रिन<ऋण, रितु<ऋतु, रीछ<ऋक्ष।

(८) ए—

हिन्दा तद्भवों में 'ए' ने विशेष परिवर्तन का मुँह नहीं देखा। हाँ, हिन्दी में संस्कृत का दीर्घ 'ए' ह्रस्व हो गया है, जैसे "एक दिन ऐसा होइगा, मैं रूंधूंगी तोहि" में।

कहीं-कहीं कविता में उर्दू के सम्पर्क से 'ए' को 'इ' के रूप में देखा गया है, जैसे "इक (एक) वार नज़र जो फेर चले, तो तुम्हें जमाना पूछेगा"

(९) ऐ—

संस्कृत शब्दों में प्रयुक्त 'ऐ' हिन्दी में आने से पहले ही 'ए' रूप धारण कर चुका था।

(i) हिन्दी तद्भवों में भी 'ऐ' को 'ए' हो जाता है—गेरू<गैरिक, केवट<कैवर्त।

(ii) कहीं-कहीं संस्कृत शब्दों के 'ऐ' को हिन्दी तद्भवों में अइ या अई हो जाता है, जैसे दईत<दैत्य, मइत्री<मैत्री, वईद<वैद्य।

(१०) ओ—

हिन्दी तद्भवों में 'ओ' ने बहुत कम परिवर्तन देखे हैं।

(i) प्रायः वह सुरक्षित रहता है, जैसे जोति या जोत<ज्योति, कोई<कोऽपि, सोई<सोऽपि, डोला<दोला, डोरा<दोरक।

(ii) कहीं-कहीं 'ओ' को 'औ' हो जाता है, जैसे कौली<क्रोड।

(iii) कहीं-कहीं 'ओ' का 'उ' या 'ऊ' हो जाता है, जैसे मुद<मोद, चूसना<चोषण, चुराया<चोरित।

(११) औ—

हिन्दी के तद्भव शब्दों में संस्कृत का 'औ' सुरक्षित नहीं रहा है।

(i) इसके स्थान पर प्राय: ओ हो जाता है, जैसे मोती<मौक्तिक, पोता<पौत्रक, जोवन<यौवन।

(ii) कहीं-कहीं संस्कृत 'औ' का हिन्दी तद्भवों में 'अइ' या 'अउ' में विघटन हो गया है, जैसे नउका<नौका।

उक्त स्वर-परिवर्तनों को देख कर हम ये नियम निर्धारित करते हैं—

१. प्रा० भा० आ० भाषा के आदि-अक्षर के स्वर हिन्दी की तद्भव शब्दावली में प्रायः सुरक्षित हैं।

२. आदि स्वर (अच्) पर स्वराघात न होने पर उसमें विकार हुआ है और अनेक उदाहरणों में आदि 'अ' लुप्त भी हो गया है, जैसे भीतर∠अभ्यन्तर, रीठा∠अरिष्ट, लौकी∠अलाबु।

३. आदि-व्यंजन-युक्त 'अ' हिन्दी में सुरक्षित हैं, जैसे कहना∠कथन, घड़ा∠घटक, छतरी∠छत्र।

४. प्रा० भा० आ० भाषा के किसी शब्द में संयुक्त व्यंजन से पूर्व आने वाला 'अ' (ह्रस्व) 'आ' (दीर्घ) हो जाता है, जैसे—चाक∠चक्र, चाम∠चर्म, घाम∠घर्म, कान∠कर्ण।

५. उक्त प्रकार के संयुक्त व्यंजन में से एक के अनुनासिक होने पर तथा उसके लुप्त होजाने पर 'अ', कभी-कभी 'आँ' में बदल जाता है, जैसे—आँत∠अन्त्र, दाँत∠दन्त, पाँती∠पंक्ति।

६. प्रा० भा० आ० भाषा के कुछ शब्दों के अन्त में कार-पद आता है। यदि कार पद से पूर्व संयुक्त व्यंजन में ह्रस्व स्वर हो तो कार का 'क्' लुप्त होकर म० भा० आ० भाषा में केवल 'आ' रह जाता है जो ह्रस्व 'अ' में मिल कर भी दीर्घ बना रहता है, जैसे—चमार∠चम्मआर∠चर्मकार सुनार∠सुण्ण-आर∠स्वर्णकार ।

७. प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों का आदि 'आ' हिन्दी तद्भवों में प्राय: सुरक्षित रहा है जैसे—आम∠आम्र, आरसी∠आदर्शिका, आलू ∠आलुक:, आसा∠आशा ।

८. कहीं-कहीं शब्द के आदि या आद्यक्षर में रहने वाला 'आ' अपने बाद संयुक्त व्यंजन होने पर हिन्दी तद्भवों में ह्रस्व होजाता है, जैसे—अपना ∠आत्मन:, बखान∠व्याख्यान ।

९. कहीं-कहीं शब्दों में आदि में स्वराघात के अभाव से 'आ' निर्बल होकर 'अ' हो गया है, जैसे—असाढ़∠आषाढ़, अहेर∠आखेट, बनारस∠वाराणसी, अचरज∠आश्चर्य ।

१०. दो शब्दों के समस्त पद में यदि पहला पद दो व्यंजनों का हो और उनमें से पहला वर्ण दीर्घ हो तो हिन्दी में वह ह्रस्व हो जाता है, जैसे-वतकही∠वार्तकथा, कठफोडवा∠काष्ठस्फोटक ।

११. प्रा० भा० आ० भाषा के शब्द के आदि अक्षर के इ, ई के पश्चात् असयुक्त व्यंजन आने पर हिन्दी-तद्भवों में इ, ई सुरक्षित हैं, जैसे—बिहान∠विभाण, कीड़ा∠कीटक, खीर∠क्षीर ।

१२. प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों में आने वाली इ, ई अथवा ऋ ध्वनियों के पश्चात् संयुक्त व्यंजन आने पर हिन्दी-तद्भवों में स्वर दीर्घ होजाते हैं, जैसे—जीभ∠जिह्वा, भीख∠भिक्षा, रीछ∠ऋक्ष, ईंट∠इष्ट, सीख∠शिक्षा ।

१३. आदि अक्षर के स्वराघात के अभाव में 'इ' सुरक्षित रहता है, जैसे—निठुर∠निष्ठुर, निकास∠निष्कास, विनती∠विज्ञप्ति ।

१४. प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों के असंयुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती उ, ऊ हिन्दी में सुरक्षित हैं, जैसे—छुरी∠क्षुरिका, पुराना∠पुराण, गुफा∠गुहा, कुवाँरा∠कुमारक, जूड़ा∠जूटक, धूर∠धूलि ।

१५. प्रा० भा० आ० भा० के संयुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती आदि एवं आदि अक्षर के उ, ऊ हिन्दी में सुरक्षित है, जैसे—दुबला∠दुर्बल, उजला∠उज्ज्वल, उछाह∠उत्साह, सूत∠सूत्र, मूत∠मूत्र, दूब∠दूर्वा ।

१६. प्रा० भा० आ० भापा के शब्दों का उ हिन्दी तद्भवों में कहीं-कहीं 'ऊ' भी होगया है, जैसे—ऊँचा∠उच्च, ऊँट∠उष्ट्र, मूठ∠मुष्टि, रूठा ∠रुष्ट, दूध∠दुग्ध ।

१७. प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों के प्रथमाक्षर में रहने वाली 'इ' और 'उ' ध्वनियाँ बाद में संयुक्त व्यंजन होने पर हिन्दी में कभी-कभी 'ए' या 'ओ' में बदल जाती हैं, जैसे छेद∠छिद्र, बेल∠बिल्व, पोखर∠पुष्कर, कोढ़ ∠कुष्ठ।

१८. प्रा० भा० आ० भाषा का 'ऐ' हिन्दी शब्दों में प्रायः 'ए' हो गया है, जैसे—केवट∠कैवर्त।

१९. प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों के आदि अक्षर की 'ए' ध्वनि हिन्दी-तद्भवों में सुरक्षित है, जैसे—केवड़ा∠केतक, जेठ∠ज्येष्ठ, खेत∠क्षेत्र, बेंत∠वेत्र, सेठ∠श्रेष्ठी।

२०. प्रा० भा० आ० भाषा का 'औ' हिन्दी में 'ओ' होगया है, जैसे—गोरा∠गौर, चोरी∠चौरिका, कोसी∠कौशिका।

२१. असंयुक्त व्यंजन से पूर्व का आदि अक्षर में रहने वाला 'ओ' हिन्दी में सुरक्षित है, जैसे—घोड़ा∠घोटक, तिकोना∠त्रिकोण, थोड़ा∠स्तोक, कोठा∠कोष्टक, ओठ (होंट)∠ओष्ठ।

२२. शब्दान्त या पदान्त स्वर हिन्दी में लुप्तप्राय हैं। यद्यपि वे लिखने में आते हैं, किन्तु उच्चारण में उनका लोप हो चुका है, जैसे—पूत्∠पुत्रः, राम्∠रामः, राजपूत्∠राजपुत्रः सीप्∠शुक्ति, रात्∠रात्रि।

२३. शब्दान्त के ह्रस्व स्वर हिन्दी के कुछ शब्दों में दीर्घ होकर सुरक्षित हैं, जैसे—हिया∠हृदय, मुआ∠मृत।

२४. प्रा० भा० आ० भाषा के पदान्त के दीर्घ स्वर हिन्दी में कहीं कहीं सुरक्षित हैं, जैसे—बहू∠वधू, साँईं∠स्वामी, रानी∠राज्ञी, पाती∠पत्री, धरती धरित्री।

व्यंजन-परिवर्तन स्वर-परिवर्तन से किसी भी प्रकार कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, वरन् उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन परिवर्तन कुछ अधिक ध्यान देने योग्य है। व्यंजनों के स्पर्श, अन्तस्थ, ऊष्म; घोष-अघोष; अल्पप्राण-महाप्राण आदि अनेक भेद हैं। इनके भी संयुक्त-असंयुक्त दो भेद और होते हैं। इन अनेक भेदों का प्रभाव परिवर्तन की दिशा पर भी पड़ता है। हिन्दी की तद्भव शब्दावली के अन्तर्गत सम्मिलित अनेक शब्दों को देख कर हम कुछ सामान्य परिवर्तन-नियमों का अनुमान कर सकते हैं। नीचे उनका विवरण देखिये:—

(क) असंयुक्त व्यंजनों के सम्बन्ध में:—

(१) प्रा० भा० आ० भाषा का आदि असंयुक्त व्यंजन प्रायः सुरक्षित रहता है। यह प्रवृत्ति हिन्दी में ही नहीं, वरन् प्रायः समस्त भारोपीय भाषाओं में मिलती है। हिन्दी में इसके कुछ उदाहरण देखिये:—

(१२) असंयुक्त अन्त्य व्यंजन के सम्बन्ध में पहले ही कहा जा चुका है कि हिन्दी के व्यंजनांत शब्दों का भी एक इतिहास है। प्रा० भा० भा० भाषा के अनेक इ–ईकरान्त तथा उ–ऊकारान्त शब्द हिन्दी में अकारान्त हो गये हैं, जैसे—

जोत ∠ ज्योति
सत्तर ∠ सप्तति
दयाल ∠ दयालु
बाँह ∠ बाहु
रैन ∠ रजनी

हिन्दी के उक्त अकारान्त शब्द उच्चारण में व्यंजनान्त हैं। नये होने के कारण अभी ये इस रूप में लिखे नहीं जाते हैं।

(१३) हिन्दी की बोलियों में कुछ और परिवर्तन भी देखने में आये हैं जो इस प्रकार हैं:—

(i) 'य्' का 'ज्' हो जाता है:—

जमुना < यमुना
जोग < योग
जग्य < यज्ञ
काज < कार्य

(ii) 'ल्' का 'र' हो जाता है:—

केरी < कदली
महिरारू < महिला
थारी < स्थाली

(iii) 'व्' का 'ब्' हो जाता है:—

सब < सर्व
बिरियाँ < वेला
बात < वार्ता

(iv) 'श्' का 'स' हो जाता है:—

बस < वश
सरीर < शरीर
साप < शाप
सँदेसा < सदेश

(v) 'ष्' का 'ख' हो जाता है:—

भाखा < भाषा
माखन < माषण

मेख < मेष

सोखा < शोषित

ा) संयुक्त व्यंजनों के सम्बन्ध में—

(१) यदि प्रा० भा० आ० भाषा के शब्द के आदि में कोई दीर्घ र-युक्त संयुक्त व्यंजन हो तो संयुक्त व्यंजन की द्वितीय ध्वनि हिन्दी में लुप्त । जाती है, जैसे—

साँस < श्वास

गास < ग्रास

गाँव < ग्राम

(२) यदि प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों के आदि में संयुक्त-दीर्घ-वर-युक्त व्यंजन हो और उसके बाद में 'म्' हो तो संयुक्त व्यंजन की द्वितीय वनि लुप्त होकर प्रथम दीर्घ व्यंजन प्रायः सानुनासिक हो जाता है, जैसे—

गाँव < ग्राम

नाँव < नाम

साँई < स्वामी

(३) प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों के आदि के संयुक्त व्यंजन कभी-कभी किसी स्वर के आगम से वियुक्त हो जाते हैं, जैसे—

भरम < भ्रम

पिरान < प्राण

धियान < ध्यान

गियान < ज्ञान

(४) प्रा० भा० आ० भाषा के शब्दों के मध्य में आने वाले संयुक्त स्पर्शों में से पहले का हिन्दी शब्दों में लोप हो जाता है और पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है:—

दूध < दुग्ध

मूंग < मुद्ग

सात < सप्त

भींत < भित्ति

(५) यदि प्रा० भा० आ० भाषा के मध्यवर्ती संयुक्त व्यंजन क्रमशः स्पर्श एवं अनुनासिक हों तो हिन्दी में अनुनासिक का प्रायः लोप हो जाता है, जैसे—

आग < अग्नि

तीखा < तीक्ष्ण

माखा < मक्ष

(६) यदि मध्यवर्ती संयुक्त व्यंजनों में से पहला अनुनासिक हो तो हिन्दी में उसका लोप होकर पूर्वस्वर अनुनासिक हो जाता है, जैसे—

जांघ ∠ जङ्घा
चोंच ∠ चञ्चु
कांटा ∠ कण्टक
चांद ∠ चन्द्र
कांपना ∠ कम्पन
सींचना ∠ सिञ्चन

(७) प्रा० भा० आ० भाषा में मध्यवर्ती संयुक्त स्पर्श और अन्तस्थ व्यंजन की स्थिति होने पर हिन्दी तद्‌भवों में प्रायः अन्तस्थ का लोप हो जाता है, जैसे—

जोग ∠ योग्य
बाघ ∠ व्याघ्र
दुबला ∠ दुर्बल
पका ∠ पक्व
तुरंत ∠ त्वरित

(८) यदि प्रा० भा० आर्य भाषा के शब्दों में मध्यवर्ती संयुक्त व्यंजन स्पर्श और अन्तस्थ के योग से बने हों तो हिन्दी शब्दों में अन्तस्थ लुप्त हो जाता है और स्पर्श व्यंजन य, र तथा व के लुप्त होने पर क्रमशः चवर्ग, टवर्ग और पवर्ग में परिवर्तित हो जाता है, जैसे—

य्— साँच ∠ सत्य
नाच ∠ नृत्य
आज ∠ अद्य
वाँझ ∠ वन्ध्या
साँझ ∠ सन्ध्या

र्— काटना ∠ कर्तन
कौड़ी ∠ कर्पदिका
गाड़ी ∠ गंत्री
पलटना ∠ परिवर्तन

व्— बूढ़ा ∠ वृद्ध
बारह ∠ द्वादश

(९) प्रा० भा० आर्य भाषा में शब्दों में स्पर्श और ऊष्म व्यंजनों का संयोग होने पर हिन्दी में ऊष्म का प्रायः लोप हो जाता है और यदि स्पर्श व्यंजन अल्पप्राण हो तो महाप्राण हो जाता है, जैसे—

पच्छाँ ∠ पश्चिम
आँख ∠ अक्षि
खेत ∠ क्षेत्र
काठ ∠ काष्ठ
पीठ ∠ पृष्ठ
थन ∠ स्तन
हाथ ∠ हस्त
जीभ ∠ जिह्वा
गुझिया ∠ गुह्य

(१०) अनुनासिक और अन्तस्थ के संयोग से बने हुए संयुक्त व्यंजन हिन्दी में अपनी अन्तस्थ-ध्वनि का लोप कर देते हैं—

अरना ∠ अरण्य
ऊन ∠ ऊर्ण
काम ∠ कर्म
कान ∠ कर्ण
सूना ∠ शून्य

(११) अनुनासिक एव ऊष्म संयोग में हिन्दी में अनेक परिवर्तन दीख पड़ते हैं—

(i) कहीं अनुनासिक लुप्त हो जाता है—
रास ∠ रश्मि

(ii) कभी ऊष्म लुप्त हो जाता है—
मसान ∠ श्मशान

(iii) कभी दोनों किसी-न-किसी रूप में रह जाते हैं —
सनेह ∠ स्नेह

(iv) कभी ऊष्म 'ह' में बदल जाता है, जैसे—
नहान ∠ स्नान
कान्ह ∠ कृष्ण

(१२) अन्तस्थ-अन्तस्थ के योग में हिन्दी में कभी एक का लोप हो जाता है और कभी दोनों ठहर जाते हैं—

(i) लोप—
मोल ∠ मूल्य
सब ∠ सर्व
चोरी ∠ चौर्य

(ii) दोनों की सुरक्षा—

सूरज ∠ सूर्य

परब ∠ पर्व

बरत ∠ व्रत

(१३) अन्तस्थ और ऊष्म से संयुक्त व्यंजनों में भी हिन्दी में कई परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं।

(i) कभी-कभी अन्तस्थ सुरक्षित रहता है—

सिर ∠ शीर्ष

पास ∠ पार्श्व

(ii) कभी-कभी ऊष्म सुरक्षित रह जाता है—

साला ∠ श्यालक

ससुर ∠ श्वशुर

आसरा ∠ आश्रय

(iii) कभी-कभी दोनों सुरक्षित रह जाते हैं—

मिसिर ∠ मिश्र

मगसिर ∠ मार्गशीर्ष

(१) क्ष, त्र, ज्ञ—प्रा० भा० आ० के शब्दों के इन व्यंजनों में भी हिन्दी में आकर अनेक परिवर्तन-रूप दिखायी देते हैं। हिन्दी के तत्समों में तो इनमें कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता, केवल 'ज्ञ' का उच्चारण तत्समों में भिन्न प्रकार से किया जाता है; किन्तु हिन्दी तद्‌भवों से इनके परिवर्तन बड़े अद्‌भुत होते हैं। नीचे इनके विभिन्न रूप देखिये—

क्ष—(i) हिन्दी तद्‌भवों में कहीं 'ख्' हो जाता है जैसे—

नखत ∠ नक्षत्र

खेत ∠ क्षेत्र

खन-खन ∠ क्षण-क्षण

(ii) कहीं-कहीं इसके स्थान पर हिन्दी में 'छ्' भी हो जाता है:-

छुरी ∠ क्षुरिका

छमा ∠ क्षमा

(iii) कहीं-कहीं इसके स्थान पर 'झ्' हो जाता है—

झीन ∠ क्षीण

(iv) कहीं-कहीं 'क्ख्' (किन्तु बहुत कम) हो जाता है:—

मक्खी ∠ मक्षिका

रक्खे ∠ रक्षति

त्र—(i) हिन्दी तद्भवों में कभी-कभी संस्कृत का उपान्त्य 'त्र् त्' में बदल जाता है—

मीत ∠ मित्र

बेंत ∠ वेत्र

खेत ∠ क्षेत्र

(ii) कहीं-कहीं 'त्र्' 'ड्' में बदल जाता है, जैसे—

गाड़ी ∠ गत्री

(iii) कहीं-कहीं 'त्र्' के 'त् + र्' दोनों हिन्दी में वियुक्त हो जाते हैं—

मंतर ∠ मंत्र

तंतर ∠ तंत्र

जंतर ∠ यंत्र

ज्ञ—संस्कृत से हिन्दी शब्दों में आने पर इसका रूप भी अनेक प्रकार से बदल गया है—

(i) कहीं-कहीं इसके स्थान पर 'ग्य' हो जाता है—

जग्य ∠ यज्ञ

ग्यान ∠ ज्ञान

(ii) कहीं-कहीं इसके स्थान पर 'न्' हो जाता है—

रानी ∠ राज्ञी

जनेऊ ∠ यज्ञोपवीत

ध्वनि-परिवर्तनों की विवेचना हमें तद्भव शब्दावली के व्युत्पत्ति-पक्ष की ओर ले जाती है। वस्तुत: यह कृति व्युत्पत्ति की दृष्टि से ही प्रस्तुत की गयी है। किसी शब्द की व्युत्पत्ति अपने आप में बड़ी रोचक होती है, यद्यपि किसी अनभिज्ञ व्यक्ति को वह बड़ी कठिन प्रतीत होती है। शब्द की व्युत्पत्ति बताते समय हमें प्रमुखत: चार बातों का ध्यान रखना चाहिये:—शब्द-स्रोत, ध्वनि-परिवर्तन, परिवर्तन का लिंग और वचन पर प्रभाव तथा अर्थ पर प्रभाव। उदाहरण के लिए हम 'आंख' शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करते हैं:—

आंख—

(i) स्रोत—यह तद्भव शब्द है। यह संस्कृत के 'अक्षि' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है।

(ii) ध्वनि-परिवर्तन—मूल शब्द में परिवर्तन इस क्रम से हुआ है—

अक्षि 7 अक्खि 7 आंख

'क्ष' संयुक्त व्यंजन है। इसमें क्+ष् संयुक्त हैं। 'क्' क-वर्गीय, अघोष, अल्पप्राण व्यंजन है और 'श्' तालव्य ऊष्म ध्वनि है। प्राकृत में जब 'क्ष्' अपना रूप बदलता है तो इसमें अन्तर्निहित ऊष्म ध्वनि द्वित्वमयी प्राण-ध्वनि उत्पन्न करके स्वयं लुप्त हो जाता है। इस प्रकार प्राकृत में अक्षि से 'अक्खि' बना है। इसको हम भारतीय आर्य भाषा की शब्दावली का प्रथम परिवर्तन कह सकते हैं जो प्राचीन भारतीय आर्य भाषा से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा में हुआ। दूसरा परिवर्तन म० भा० आ० भाषा से नव्य भारतीय आर्य भाषाओं (हिन्दी आदि) में हुआ।

नव्य भारतीय आर्य भाषाओं की सरलीकरण की प्रकृति के कारण 'अक्खि' का 'क्ख' द्वित्व भग्न हुआ, किन्तु द्वित्व ने भग्न होने के साथ अपने पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ करके अपने साथी को लुप्त कर दिया; अतएव अक्खि का 'आखि' हो जाना चाहिये था; किन्तु हिन्दी ने शब्दान्त के निर्बल स्वरों से भी अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। इस कारण 'आख' शब्द बना। फिर 'आ' 'अकारणअनुनासिकता' के नियम के अनुसार 'आँ' रूप में बदल गया। इस प्रकार हिन्दी तद्भव 'आँख' शब्द व्युत्पन्न हुआ।

'आँख' शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है जबकि इसका मूल शब्द 'अक्षि' नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होता था। इसका कारण यह है कि हिन्दी ने संस्कृत आदि आर्य भाषाओं की भाँति तीन लिंग स्वीकार न करके केवल पुल्लिग और स्त्रीलिंग ही स्वीकार किये हैं। संस्कृत आदि के नपुंसक शब्दों को लोगों की रुचि के अनुसार जिस लिंग में स्थान मिल गया, वहीं घुस गये। उसके बाद परम्परा के प्रवाह में वे अपनी स्थिति को प्रौढ़ बनाते चले गये। 'आँख' शब्द की भी यही स्थिति है। संस्कृत का यह नपुंसक शब्द हिन्दी में स्त्री-लिंग-वाचक शब्दों में घुस गया। बाद में इस परम्परा को प्रश्रय मिलता चला गया।

'आँख' शब्द के वचन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। 'अक्षि' शब्द एक-वचन में प्रयुक्त होता था; 'आँख' का प्रयोग भी एकवचन में ही होता है।

'अक्षि' का मूल अर्थ भी 'आँख' में सुरक्षित है।

व्युत्पत्ति के लिए दूसरा शब्द 'सद' लेते हैं।

सद—

(i) स्रोत—यह तद्भव शब्द है। संस्कृत के 'सद्यस्' शब्द से यह व्युत्पन्न हुआ है।

(ii) ध्वनि-परिवर्तन—प्राकृत काल में ही इस शब्द के अन्त्य व्यंजन 'स्' का लोप हो गया था और समीकरण नियम से इसका प्राकृत रूप 'सद्द' हो गया

था। 'य्' ने द् का रूप लेकर उसी से द्वित्व-सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। हिन्दी की सरलीकरण की प्रकृति ने द्वित्व का विसर्जन किया तो इनमें से एक 'द्' लुप्त हुआ। इसकी बड़ी कृपा यह हुई कि इसने अपने पूर्ववर्ती स्वर को अप्रभावित ही छोड़ दिया। इस प्रकार हिन्दी 'सद' शब्द व्युत्पन्न हुआ।

अपने मूल रूप में अर्थात् 'सद्यस्' शब्द अव्यय था। हिन्दी में इसका प्रयोग विशेषणवत् होता है जैसे, 'सद रोटी खाओ', 'सद पानी पिया' आदि वाक्यों में। जिस प्रकार अन्य अकारान्त विशेषण हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं उसी प्रकार 'सद' भी प्रयुक्त होता है। अन्तर केवल यह हुआ कि 'सद' शब्द रूप बदलने से अपनी अव्यय-योनि से मुक्त हो गया है। हिन्दी में इसकी गणना सलिंग और सवचन शब्दों में है।

इसके अर्थ में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। मूल रूप में अर्थात् 'सद्यस्' शब्द के रूप में इसका अर्थ आज, अभी, तत्काल होता था, हिन्दी में इसका अर्थ आज का, अभी का, ताजा आदि होता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा	मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा	नव्य भारतीय आर्य भाषा (हिन्दी)	अर्थ
अंश	अंस	आंस, अंस	कंधा
अकर्ण	अकण्ण अकन्न	अकान	कर्ण रहित
अकर्मन् (अकर्मक)	अकम्म (अकम्मण)	अकम्मा	कर्महीन
अकुलीन	अउलीन	औलीन	कुलहीन
अकृत्य	अकज्ज	अकाज	बिगड़ा कार्य
अकृष्ट	अकिट्ठ	अकीठ	नही जोती हुई जमीन
अक्रिया	अकिरिया	अकिरिया	क्रिया का अभाव
अक्रोध	अक्कोह	अकोह	क्रोध का अभाव
अक्लिष्ट	अकिलिट्ठ	अकीठ	क्लेश-वर्जित
अक्ष	अक्ख	आख	पासे
अक्षत	अक्खय	अखय	घाव-रहित
अक्षय	अक्खय	अखय, अखै	क्षयहीन
अक्षर	अक्खर	आखर	वर्ण
अक्षवाटक	अक्खाडग अक्खाड्य	अखाड़ा	अखाड़ा
अक्षि	अक्खि	आँख	नेत्र
अक्षीण	अज्झीण	अझीन	अक्षय
अक्षोट	अक्खोड	अखरोट	अखरोट का पेड़
अक्षोभ	अक्खोभ	अखोह, अछोह	क्षोभ का अभाव
अखाद्य	अखज्ज	अखाज	जो न खाने लायक हो
अगणित	अगणिअ	अगनिय, अनगिन	अनगिन, अवगणित
अगरु	अगर	अगर	सुगन्धित काष्ठ-विशेष
अगरुक	अगरुअ	अगरुआ, अगरवा	छोटा, लघु
अगाध	अगाह	अगाह	गहरा, गम्भीर
अगुण	अगुण	अगुन	गुणरहित
अग्नि	अग्गि, अगणि	आग, अगिन	आग

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अग्रतस्	अग्गओ	अगाऊ	सामने, आगे
अग्रन्थिम	अगंठिम	अगांठिया	केला
अग्रहिल	अगहिल्ल	अगहला	जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल
अग्रिम	अग्गिम	आगिम	प्रथम, पहला
अग्रिल	अग्गिल	अगला	आगे का
अग्रे	अग्गे	आगे	आगे, पहले
अघ	अह	अह	पाप
अङ्क	अंक	आंक	गोद, वर्ण
अङ्कित	अंकिअ	आंकिअ, आंका	चिह्नित
अङ्कुर	अंकुर	आंकुर	प्ररोह, फुनगी
अङ्कुश	अंकुस	आंकुस	लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाया जाता है
अङ्ग	अंग	अंग, आंग	देश-विशेष, आजकल जिसे बिहार कहते हैं। अवयव
अङ्गण	अंगण	आंगन	चौक
अङ्गार अङ्गारक	अंगार अगारग	अंगार अंगारा	जलता हुआ कोयला, अंगार
अङ्गुलि, अङ्गुली	अंगुरि, अंगुरी	अंगुली, उंगली	उंगली
अङ्गुष्ट	अंगुट्ठ	अंगूठा	अंगूठा
अचलपुर	अचलपुर	अचलपुर, एलचपुर	नगर-विशेष
अच्छ	अच्छ	अच्छा	स्वच्छ, अच्छा
अच्छेद्य	अच्छिज्ज	अछीज	जिसमें छेद नहीं किया जा सके
अजिका	अइया	अइया	बकरी
अजिर	अइर	अइर	आंगन, चौक
अजीर्ण	अजिण्ण, अइण्ण	अइन्न, अजीरन	अपच
अजीव	अजिअ	अजिउ	जीव-रहित
अज्ञान	अयाण अजाण	अयान अजान	१. ज्ञान का अभाव २. अनजान, मूर्ख

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अञ्जन	अंजण	अंजन	काजल
अञ्जनिका	अंजणिआ	आंजनी, अंजनी	काजल का आधार पात्र
अञ्जलि	अंजलि	आंजुली, आंजुरी	हाथ का संपुट
अट	अड, अट्ट	अड, अट	भ्रमण करना
अटन	अट्टण	अटन, आटना	परिभ्रमण
अटोपित	अडोविय	अडोविया	भरा हुआ
अट्टालक	अट्टालग अट्टालय	अटाला अटारा	अटारी
अणहिल्ल	अणहिल्ल	अणइल	गुजरात देश की प्राचीन राजधानी जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है
अण्ड अण्डक	अंड, अडअ अंडग	अंडा	अंडा
अतसी	अयसि, अयसी	अलसी	धान्य विशेष
अतिथि	अइहि	अइहि	जिसकी आने की तिथि नियत न हो
अत्र	इत्थ एत्थ	इत्थै, अठै	यहाँ, यहाँ पर
अदत्त	अदिन्न	अदीन्ह	नहीं दिया हुआ
अदस्	अह	यह, वह	यह, वह
अदृश्य	अदिस्स	अदीस, अदीख	देखने के अयोग्य
अदृष्ट	अद्दिट्ठ, अदिट्ठ	अदीठ	१. नहीं देखा हुआ २. एक प्रकार का फोड़ा
अद्य	अज्ज	आज	आज
अद्वितीय	अबीय	अविय	असाधारण
अधन्य	अहन्न	अहन्न	हतभाग्य
अधर	अहर	अहर	ओष्ठ
अधरी	अहरी	अहरी	पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अग्रतस्	अग्गओ	अगाऊ	सामने, आगे
अग्रन्थिम	अगंठिम	अगांठिया	केला
अग्रहिल	अगहिल्ल	अगहला	जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल
अग्रिम	अग्गिम	आगिम	प्रथम, पहला
अग्रिल	अग्गिल	अगला	आगे का
अग्रे	अग्गे	आगे	आगे, पहले
अघ	अह	अह	पाप
अङ्क	अंक	आंक	गोद, वर्ण
अङ्कित	अंकिअ	आंकिअ, आंका	चिह्नित
अङ्कुर	अंकुर	आंकुर	प्ररोह, फुनगी
अङ्कुश	अंकुस	आंकुस	लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाया जाता है
अङ्ग	अंग	अंग, आंग	देश-विशेष, आजकल जिसे विहार कहते हैं। अवयव
अङ्गण	अंगण	आंगन	चौक
अङ्गार, अङ्गारक	अंगार, अंगारग	अंगार, अंगारा	जलता हुआ कोयला, अंगार
अङ्गुलि, अङ्गुली	अंगुरि, अंगुरी	अंगुली, उंगली	उंगली
अङ्गुष्ट	अंगुट्ठ	अंगूठा	अंगूठा
अचलपुर	अचलपुर	अचलपुर, एलचपुर	नगर-विशेष
अच्छ	अच्छ	अच्छा	स्वच्छ, अच्छा
अछेद्य	अच्छिज्ज	अछीज	जिसमें छेद नहीं किया जा सके
अजिका	अइया	अइया	बकरी
अजिर	अइर	अइर	आंगन, चौक
अजीर्ण	अजिण्ण, अइण्ण	अइन्न, अजीरन	अपच
अजीव	अजिअ	अजिउ	जीव-रहित
अज्ञान	अयाण, अजाण	अयान, अजान	१. ज्ञान का अभाव २. अनजान, मूर्ख

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अञ्जन	अंजण	अंजन	काजल
अञ्जनिका	अंजणिआ	आँजनी, अंजनी	काजल का आधार पात्र
अञ्जलि	अंजलि	आँजुली, आँजुरी	हाथ का संपुट
अट	अड, अट्ट	अड, अट	भ्रमण करना
अटन	अट्टण	अटन, आटना	परिभ्रमण
अटोपित	अडोविय	अडोविया	भरा हुआ
अट्टालक	अट्टालग, अट्टालय	अटाला, अटारा	अटारी
अणहिल्ल	अणहिल्ल	अणइल	गुजरात देश की प्राचीन राजधानी जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है
अण्ड, अण्डक	अंड, अडग्र, अंडग	अंडा	अंडा
अतसी	अयसि, अयसी	अलसी	धान्य विशेष
अतिथि	अइहि	अइहि	जिसकी आने की तिथि नियत न हो
अत्र	इत्थ, एत्थ	इत्थै, अठै	यहाँ, यहाँ पर
अदत्त	अदिन्न	अदीन्ह	नहीं दिया हुआ
अदस्	अह	यह, वह	यह, वह
अदृश्य	अदिस्सं	अदीस, अदीख	देखने के अयोग्य
अदृष्ट	अदिट्ठ, अदिट्ठ	अदीठ	१. नहीं देखा हुआ २. एक प्रकार का फोड़ा
अद्य	अज्ज	आज	आज
अद्वितीय	अबीय	अबिय	असाधारण
अधन्य	अहन्न	अहन्न	हतभाग्य
अधर	अहर	अहर	ओष्ठ
अधरी	अहरी	अहरी	पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अघरीलोष्ट	अहरीलोट्ठ	अहरीलोढ़ा	जिससे पीसा जाता है वह पत्थर
अधस्	हेट्ठ	हेटा	नीच
अधिकरण	अहीकरण	अहीकरन	कलह, झगड़ा
अधिगम्	अहिगम	अहिगम	ज्ञान
अधिमास	अहिमास	अहिमास	अधिक मास
अधिराज	अहिराज	अहिराज	राजा
अधीन	अहीण	अहीन	अधीन
अधृष्ट	अधिट्ठ	अधीठ	अधीठ
अध्रुव	अद्धुव	अधुव	चंचल, अस्थिर
अनशित	अणसिय	अनसिया	भूखा
अनार्द्र	अणाल्ल	अनाला	जो आला न हो, सूखा हुआ
अनीक	अणिय	अनी	सेना, लश्कर
अनीश	अणीस	अनीस	अनाथ, निरंकुश
अनीह	अणिह	अनिह	धीर, सहिष्णु
अन्तर	अंतर	आँतरा, आँतर	भेद, फासला
अन्तरिक्ष	अंतरिक्ख, अंतरिच्छ	अंतरिक्ख	आकाश
अन्त्र	अंत (डी)	आंत, आंतड़ी	आँत
अन्ध	अंध	आंधा, अंधा	अंधा
अन्धकार	अंधयार	अंधियार, अंधेरा	अंधेरा
अन्न	अण्ण	अन्न, अन	नाज, अनाज
अन्य	अण्ण	आन	दूसरा
अन्यादृश	अण्णारिस	अनारिस	दूसरे के जैसा
अप	ओ	ओ, अनैस	इन अर्थों का सूचक अव्यय- १. विपरीतता २. बुरापन
अपकार	अवगार	अवगार, औगार	अपकार
अपकारी	अवगारि	औगारी	अहित करने वाला
अपक्व	अपक्क	अपका	जो पक्का न हो
अपक्षारण	अवक्खारण	ओखारन	निर्भर्त्सना

प्रा०	हि०	अर्थ
अवगइ	औगइ, औगत	१. दुर्गति २. गोपनीय स्थान
अवजाय	ओजाय	वैभवहीन पुत्र
ओहावणा	ओहावना, उहावन	तिरस्कार
अवमाण	औमान, ओमान	तिरस्कार
अवजस	औजस	अपकीर्ति
अवर	और	अन्य, दूसरा
अवसउण अवसगुण	ओसगुन, औसगुन	खराब शकुन
अवसद्द	ओसद्द	अशुद्ध शब्द, कटु शब्द
अवसोग	अवसोग	शोक-रहित
अवसोण	औसोन	थोड़ा लाल
अवहार	औहार	अपहरण
अपुत्तय	अपूत	पुत्र-रहित
अपूय, अपूव	पुआ	एक भक्ष्य पदार्थ
अविक्खण	अवेखन	अपेक्षा
अवोह	अबोह	विचार करना, विकल्प करना
अप्पह	अपह	निस्तेज
अप्पिय	अपिय	अप्रिय
अवुज्झ	अवूझ	अनजाने
अभअ	अभै	भयरहित
अहिगम	अहिगम	सामने जाना
अहिमण्णु अहिमण्णु	अहिमन्नु, अहमन्ना	अर्जुन के एक पुत्र का नाम
अहिमर	अहिमर	धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला
अभिमाण अहिमाण	अहिमान	गर्व
अहिमुह	अहिमुह	संमुख
अहिराम	अहिराम	मनोरम
अहिरामिण	अहिरामिन	आनन्द देने वाला

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अभिरूप	अहिरूव	अहिरूव	सुन्दर, मनोहर
अभिलाष	अहिलास अभिलास	अहिलास	इच्छा, चाह
अभिलोकन	अहिलोयण	अहिलोयन	ऊंचा स्थान, ध्यानपूर्वक देखना
अभिशंका	अहिसंका	अहिसंका	भ्रम, संदेह
अभिषव	अभिसव	अहिसव	मद्य आदि का अर्क
अभिषेक	अभिसेग	अहिसेग	राजा, आचार्य आदि के पद पर आरूढ़ करना
अभिसरण	अहिसरण	अहिसरन	प्रिय के समीप गमन
अभीर	अहिर	अहीर	गोवाला, अहीर
अभीरु	अहीरु	अहीरु	निडर, निर्भीक
अभूत	अहूव	अहुअ, अहुआ, हुउवा	जो न हुआ हो
अभोज्य	अभोज्ज	अभोज	भोजन के अयोग्य
अभ्युत्थान	अब्भुट्ठाण	अहुठान	नवोत्थान
अमध्य	अमज्झ	अमांझ	मध्य-रहित
अमर्ष	अमरिस	अमरिस	असहिष्णुता
अमावास्या	अमावस अमावस्सा	अमावस मावस	अमावस
अमित	अमिय	अमी	परिमाण-रहित असंख्य, अनन्त
अमित्र	अमित्त	अमीत	रिपु, दुश्मन
अमुख	अमुह	अमुह	निरुत्तर, मुखहीन
अमूल्य	अमोल्ल	अमोल	बहुमूल्य
अमृष	अमूस, अमुस	अमूस, अमुस	सत्यवादी
अमोघ	अमोह	अमोह	सफल
अम्बा	अंबा	अंबा, अम्मा	माता
अम्लान	अमिलाण	अमिलान	म्लानि-रहित, ताजा
अयस्कार	एक्कार	एकार	लोहार
अरघट्ट	अरहट्ट	रहट	पानी का चरख
अरण्य	अरण्ण	रण, रन	वन, जंगल

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अरति	अरइ	अरइ	बेचैनी
अरिष्ट	रिट्ठ	रीठ, रीठा	रीठा, काक, कौआ
अर्क	अक्क	आक	आक
अर्गल, अर्गला	अग्गल, अग्गला	आगल	किवाड़ बन्द करने की लकड़ी
अर्घ्य	अग्घ	आघ (अरघ)	पूजा में दिया गया जलादि द्रव्य
अर्चक	अच्चग	आचग	पूजक
अर्चन	अच्चण	आचन	पूजा
अर्चि	अच्चि	आँच	कांति, तेज, आग
अर्द्ध	अद्ध	आध, आधा	आधा
अर्द्ध तृतीय	अड्ढाइज्ज, अड्ढाइअ	अढाई	ढाई
अर्ध चतुर्थ	अद्धुट्ठ, अहुट्ठ	हूँठा	साढ़े तीन
अर्धोद्घाट	अद्धुग्घाड	अध-उघाड़	आधा खुला
अर्पित	अप्पिअ, अप्पिय	आप्या, आपिया	समर्पित
अलक	अलय	अलय	बिच्छू का कांटा
अलक्तक	अलत्तअ	आलता	महावर
अलक्ष्य	अलक्ख	अलख	जो लक्ष्य में न आ सके
अलसायित	अलसाइअ	अलसाया	जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द
अलावु, अलावू	अलाउ, अलाऊ	अलाऊ	तुम्बी-फल, तुम्बा
अलाभ	अलाह	अलाह	नुकसान, हानि
अलिञ्जरक	अलिंजरअ	अलिंजरह	रंगने का कुंडा, रंग पात्र
अलेश्य	अल्लेस	अलेस	लेस-रहित
अल्प	अप्प	अप्प	थोड़ा
अवकाश	उवास, अउकास	ओकास, उकास	खाली जगह
अवक्रय	अवक्कय	अवक्का	भाड़ा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अवक्रोश	अवक्कोस	अवकोस	मान, अहंकार
अवगाहन	अवगाहण	ओगाहन	अवगाहन
अवगुण्ठन	ओउंठण ओगुंठण	ओंठन, गोंठन	घूंघट
अवग्रहण	उग्गहण	उगहन	लाभ, प्राप्ति, ग्रहण, ज्ञान
अवघाटन	ओहाडण	ओहाड़न	ढकना, पिधा[न] स्थगन
अवचित	अवइद, अवचिअ	औचिया, उचिया	इकट्ठा किया हुआ
अवधार	अवहार	अवहार	निश्चय, निर्णय
अवधारण	ओहारण	ओहारन	निश्चय, नियम
अवधारणी	ओहारणी	ओहारनी	निश्चयात्मक भाष[ा]
अवधीरण	अवहीरण	अवहीरन उहीरन	अवहेलना
अवधूत	अवधूय	औधूअ, औधू	तिरस्कृत, अवधूत
अवनमन	ओणमण	ओनमन	नीचे नवना
अवनमित	ओणविय	ओनई, ओनया	झुका हुआ
अवन्ध्य	अवंझ	अबांझ	सफल, अचूक
अवतंस	ओतंस	ओतंस	शिरोभूषण
अवतार	अउतार, अवयार	औतार	देहान्तरधारण
अवतारण	अउतारण	औतारन	उतारना, योजना करना
अवभग्न	ओभग्ग	उभाग, ओभग	भग्न, नष्ट
अवभास्	ओभास	उभास	चमकना
अवमज्जन	ओमज्जण	उमजन, उवजन	स्नान-क्रिया
अवलग्न	ओलग्ग	ओलगा, उलगा	पीछे लगा हुआ
अवलम्ब, अवलम्बक, अवलम्बन	अवलंब, अवलंबग, ओलंबण	ओलम्ब	सहारा, आश्रय
अवलम्बित	ओलंबिय	ओलंबी	आश्रित, लटकाया हुआ
अवसर	अवसर	औसर	काल, समय
अवसान	अवसाण	औसान ओसान	नाश, अन्तभाग
अवसारित	ओसारिअ	उसारी, उसारा	अवलम्बित
अवस्कन्द	अवक्खंद	ओखंद	शिविर, छावनी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अवहास उपहास	ओहास	ओहास	हँसी, हास्य
अविका	अविआ	अविआ	भेड़
अवित्	अविउ	अविउ	मूर्ख, अज्ञ
अविनय	अविणय	अविनै	विनय का अभाव
अवश्यम्	अवस अवस्स	अवसि	जरूर
अवृद्ध	अवुड्ढ	अबूढ	तरुण, जवान
अवेक्षण	अविक्खण	अवेखन	निरीक्षण
अशकुन	असउण असगुण	असउन असगुन	अपशकुन
अशक्त	असक्क	असक	असमर्थ
अशक्य	असक्क	असक	जिसको न कर सके वह
अशन	असण	असन	भोजन
अशब्द	असद्द	असवद	अपयश
अशान्त	असंत	असंत	शान्ति-रहित, क्रुद्ध
अशिख	असिह	असिह	शिखा-रहित
अशिव	असिव	असिव	विनाश, अमंगल
अशील	असील	असील	दुःशील
अशुभ	असुभ, असुह	असुह	अमंगल
अशेष	असेस	असेस	निःशेष, सर्व
अशोक	असोग	असोग	सुप्रसिद्ध वृक्ष विशेष
अशोभन	असोमण	असोहन	असुन्दर
अश्रद्ध	असद्ध	असद्ध, असघ	श्रद्धा-रहित
अश्रु	अस्सु	आसु, आंसू	आंसू
अश्रोतृ	असुणि	असुनी	न सुनने वाला
अश्व	अस्स	आस	घोड़ा
अश्वत्थ	अस्सत्थ	असत्थ	वृक्ष-विशेष, पीपल
अष्टादशन्	अट्ठारस	अठारह	संख्या विशेष
अष्टानवति	अट्ठाणउइ	अट्ठानवे, अठाणवे	संख्या-विशेष
अष्टापंचाश	अट्ठावन्न	अठावनवाँ	अठावनवाँ
अष्टापञ्चाशत्	अट्ठावण्ण	अट्ठावन	संख्या विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
अष्टाविंश	अट्ठावीसइम	अट्ठाईसवाँ	अट्ठाईसवां
अष्टाविंशति	अट्ठाइस	अट्ठाईस	अट्ठाईस
अष्टाशीत	अट्ठासीय	अट्ठासीवां	अठासीवां
अष्टाशीति	अट्ठासि	अठासी	संख्या-विशेष
अष्टाषष्टि	अट्ठासट्ठि	अड़सठ	संख्या-विशेष
अष्टाह	अट्ठाह	अट्ठाह, अट्ठा	आठ दिन
अष्टाहिका	अट्ठहिया	अठाही	आठ दिनों का एक उत्सव
असंख्य	असंख	असंख	संख्या-रहित
असंयम	असंजम	असंजम	संयम-रहित
असंशय	असंसय	असंसै	संशय-रहित
असत्	असंत	असंत	अविद्यमान, जो संत न हो
असती	असई	असई	कुलटा
असत्य	असच्च	असांच	झूठ वचन
असत्त्व	असंत	असंत	सत्त्व रहित
असह	असहु	असहु	असहिष्णु
असित	असिय	असिय	कृष्ण, अश्वेत
असिद्ध	असिज्झ	असीझ	अनिष्पन्न
असुख	असुह	असुह	अमंगल
अस्ताघ	अत्थाह	अथाह	गम्भीर, थाह-रहित
अस्ति	अत्थि, अहि	है	है
अस्थान	अट्ठाण	अठान, अथान	अयोग्य स्थान
अस्थि	अंठि, अट्ठि	हड्डी	हड्डी, हाड़
अस्थिर	अत्थिर	अथिर	चंचल, चपल
अस्मद्	अम्ह	हम	हम
अस्मदीय	अम्हार	हमारा	हमारा
अस्मादृश	अम्हारिस, म्हारिस	हमारा-सा	हमारे जैसा
अहन्	अह	अह	दिवस
अहीन	अहीण	अहीन	अन्यून, पूर्ण
आकर	आगर, आयर	आगर, आयर	खान, खानि
आकर्णन	अकण्णन	अकनि	श्रुति, सुनना
आकर्षण	आकड्ढण	आकढ़न	खिंचाव

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
आकार	आगार	आगार	इंगित, चेष्टा-विशेष
आकुञ्चन	आउंचण आउंजण	औंजन	औंजना
आकुल	आउल	आउल	व्यग्र
आखेट आखेटक	आहेड़ आहेडग आहेडय	अहेरी अहेरिया	शिकार शिकारी
आख्यान	अक्खाण	अखान	कथन, निवेदन
आघूर्ण	आघुम्म	आघूम	डोलना, हिलना, कांपना
	आहल्ल (अप०)	आहल	हिलना, चलना
आचील	आईल	आईल	पान का थूकना
आज	आय	आय	अज-सम्बन्धी, बकरे के बालों से बने वस्त्रादि
आटविक	आडविय	आडवी	जंगल मे रहने वाला, जंगली
	आढिय (दे)	आढिया	इष्ट, अभीष्ट, माननीय
आतञ्चनिका	आयंचणिया	आयंचनी	कुम्भकार का पात्र-विशेष जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टी वाला पानी रखता है
आतुर	आउर	आउर	रोगी, बीमार, पीड़ित
आत्मनः	अप्पणो	अपना	अपना
आत्मन्	अत्ता, अप्प	आप	आप
आत्मीय	अप्पइय अप्पइअ	आपेर	स्वकीय, निजीय
आदर	आयर	आयर	सत्कार, सम्मान
आदातृ	आदाउ	आदाऊ	ग्रहण करने वाला

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
आदिश्	आइस	आइसु, आयसु	आदेश करना
आदृत	आढिअ	आढिय, आढिया	सत्कृत,सम्मानित
आदेश	आदेस, आएस	आएस, आयसु	आज्ञा
आधा	आहा	आहा	आश्रय, आधार
आनीत	आणिअ	आनिया	लाया हुआ
आपाक	आवाग	आवा	आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान
आपीन	आवीण	आवीन	स्तन, थन
आभरण	आहरण	आहरण	भूषण, अलंकार
आभा	आहा	आहा	कांति, तेज
आभीर	आहीर	अहीर	अहीर, जाति-विशेष
आम	आम	आम	रोग, पीड़ा
आमन्त्रण	आमंतण	आमंतन	निमंत्रण, संबोधन
आमन्त्रणी	आमंतणी	आमंतनी	संवोधन की भाषा
आमर्ष	आमरिस	आमरिस	स्पर्श
आमलक	आमलग आमलय	आमला, आँवला	आँवले का पेड़
आमलकी	आमलई	आमलई	आँवले का फल
आमोटन	आमोडण	आमोड़न	थोड़ा मोड़ना
आम्र	अंब	आम	आम का पेड़
आम्ल	अंबिल	आंबिल	खट्टा रस
आया, आय	आव	आव	आना आगमन करना
आयाति	आयाइ	आयाइ	आगमन, उत्पत्ति
आयान	आयाण	आयान, अयान	१ आगमन २ अश्व का एक आभरण-विशेष
आयाम	आयाम	आयाम	लम्बाई, दैर्घ्य
	आयाम (दे)	आयाम	बल जोर
आयासित	आयासिअ	आयासिय	परिश्रान्त, खिन्न
आरण्य	आरण्ण	आरन, आरना	जंगली, जंगल-निवासी
आरण्यक	आरण्णग		

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
आरव	आरब	अरब	अरब देश का निवासी
आरात्	आरा	आरा	पहला, पूर्व भाग
आरामिक	आरामिअ	आरामी	माली
आरोग्य	आरोग्ग	आरोग	नीरोगता
	आरोह (दे)	आरोह	स्तन, थन
आर्द्र, आर्द्रक	आल्ल, अल्लय	आल, आला	गीला
आर्द्रित	ओल्लिअ	ओलिया	आर्द्र किया हुआ
आलस्य	आलस्स	आलस	आलस, सुस्ती
आलान	आलाण	अलान	बन्धन, हाथी बांधने की डोरी
	आलास (दे०)	आलास	बिच्छू
आलु	आलू	आलू	कन्द-विशेष
आलेख	आलेह	आलेह	चित्र
आलोक	आलोग, आलोअ	आलोग	तेज, प्रकाश
आवर्तन	आउट्टण	औटन	औटना
आवल्गन	आवग्गण	आवगन	अश्व पर चढ़ने की कला
आवसरिक	अवसरिय	औसरिय	सामयिक
आवाप	आवाय	आवा	मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान
आविल	आविल	आबिल	मलिन, आकुल
आवृत्	आवट्ट	आवट्ट	चक्र की तरह घूमना
आवेग	आवेअ	आवेअ	कष्ट, दुःख
आवेद्य	आवेअ	आवेअ	विनती करना
आवेश	आवेस	आवेस	गुस्सा
आवेष्टन	आवेढण	आवेढण, आवेढन	मंडलाकार करना
आवेष्टित	आवेडिढ्य	आवेढ़ी	घिरा हुआ
आश	आस	आस	भोजन
आशा	आसा	आसा, आस	उम्मीद
आशिष	आसी, आसिस	असीस	आशीर्वाद

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
आशी	आसी	आसी	जहरीला सांप
आशु	आसु आंसु	आसु	शीघ्र, जल्दी
आशुरुष्ट	आसुरुट्ठ	आसुरुठ	अतिकुपित
आशूनि	आसूणि	आसूनि	वलिष्ठ वनाने वाली खुराक, रसायण क्रिया
आश्चर्य	अच्चर अच्चरिअ अच्छरिअ	आचरिय अचरिज अचरज	विस्मय चमत्कार
आश्रम	अस्सम	आसरम	स्थान, जगह, ऋषियों का स्थान
आश्वास	आसास	असास	सान्त्वना
आषाढ	आसाढ	असाढ़	मास-विशेष
आषाढ़ी	आसाढी	असाढ़ी	आषाढ़ मास की पूर्णिमा
	आसंग (दे)	आसंग	शय्या-गृह
आसङ्ग	आसंग	आसंग, आसँग	आसक्ति
आसार	आसार	आसार	वेग से पानी का बरसना
आस्य	अस्स	आस	मुख, मुंह
आस्वाद	आसाअ	आसाउ	स्वाद, रस
आह्लाद	अल्हाद	अहलाद	खुशी, प्रमोद
आहिण्डक	आहिडअ आहिडय	आहेंडा	चलने वाला परिभ्रमण करने वाला
इक्षु	इक्खु	ईख	ईख, ऊख
	इंगाली (दे)	ऐंगुली	ईख का टुकड़ा, गंडेरी
इङ्गुद	अंगुजं	अंगुआ	वृक्ष-विशेष
	इज्जा (दे)	ईजा	माता
	इड्डर (दे)	ईडर	गाड़ी
इत्वर	इत्तर	ईतर	अल्प, थोड़ा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
इदम् (एतत्)	इम, ईअ	ईअ, इम	यह
	इन्दोवत्त (दे)	इंदोवत	इन्द्रगोप, कीट-विशेष
इन्द्रजाल	इंदजाल	इंदजाल	माया-कर्म
इन्द्रजालिन् इन्द्रजालक	इन्दजालि इन्दजालिअ	इंदजाली	मायावी, बाजीगर
इन्द्रधनुष्	इंदधणु	इंदधनु	सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है, वह
इन्द्रध्वज	इंदज्झय	इन्दझय	बड़ी ध्वजा
इन्द्रनील	इंदणील	इंदनील	नीलम, नीलमणि
इन्धन	इंधण	ईंधन	ईधन, जलावन
इयत् (एतावत्)	एत्तिअ एत्तिल	इत्ता	इतना
	इरिया (दे)	इरिया	कुटी, कुटिया
इल्लिका	इल्लिया	ईली	क्षुद्र जीव-विशेष
इष्वास	इस्सास	इसास	तीरंदाज्
इह	इह	यहां	यहां, इस जगह
ईक्षक	इक्खअ	इक्खा, ईखा	देखने वाला, प्रेक्षक
ईदृश	अइस, ईइस	अइस, ऐसा	ऐसा, इस तरह का
ईर्ष्या	ईसा	ईसा	ईर्ष्या, द्रोह
ईर्ष्यालु	ईसालु	ईसालु	ईर्ष्या रखने वाला
ईश्वर	इस्सर	ईसर	प्रभु, परमेश्वर
	उक्कंडा (दे)	ऊकँड	घूस, रिश्वत
	उक्केर (दे)	उकेर	उपहार, भेंट
	उक्कोडा (दे)	उँकोर, अँकोर	घूस, रिश्वत
	उक्कोडिय (दे)	उँकोरी, उँकोडी	घूस लेकर कार्य करने वाला, घूसखोर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	उक्खण (दे)	ऊखन	कूटना, खांडना
	उक्खुंड (दे)	उखुंड	उल्मुक, मसाल वस्त्र का एक अंश, अंचल
उक्त	उक्क	ऊका	कथित
उच्चय	उच्चाव	ऊँचाव	ऊँचा करना, उठाना
उच्चयन	उच्चिणण	उचिनन	अवचयन, एकत्रीकरण
उच्चरित	उच्चरिय	उचारा	उच्चरित, कथित
उच्चार	उच्चार	उचार	उच्चारण
उच्चालित	उच्चालिय	उँचाला	उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ
उच्चेतृ	उच्चिणिर	उचिनिर	फूल वगैरह के चुनने वाला
	उच्छट्ट (दे)	उछट्ट	चोर, डाकू
उच्छल	उच्छल्ल	उछल्ल	उछलने वाला
उच्छलित	उच्छलिअ	उछला	उछला हुआ
उच्छ्वसन्	ऊससण	उससन	उसास लेना
उच्छ्वास	उस्सास, ऊसास	उसार्स	ऊँचा श्वास
उच्छालन	उच्छालण	उछालन	उछालना
उच्छालित	उच्छालिअ	उछाला	फेंका हुआ
उच्छीर्ष	उस्सीस	उसीस	तकिया
उच्छुल्क	उस्सुंक उस्सुक्क	ओसुक, उसूक	शुल्क रहित
उच्छृंखल	उस्सिंखल	उसिखल	स्वेच्छाचारी
उच्छेद	उच्छेअ	उछेअ	नाश, उन्मूलन
उच्छेदन	उच्छेयण	उछेअन	विनाश, उन्मूलन
	उज्जड (दे)	उजड़	ऊजड़, वसति रहित
	उज्जाडिअ (दे)	उजाड़ा	उजाड़ किया
उज्जीवन	उज्जीवण	उजीवन	पुनर्जीवन
उज्जीवित	उज्जीविय	उजीवी	पुनर्जीवित, जिलाया हुआ।

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
उज्ज्वल	उज्जल	उजला, ऊजग	निर्मल, स्वच्छ
उज्ज्वलन	उज्जलण	उजलन	चमकीला, देदीप्यमान
उटज	उडज	उडज	ऋषि आश्रम, पर्ण-शाला
	उडंव (दे)	उडंव	लिप्त, लिपा हुआ
	उडिद (दे)	उड़द	धान्य-विशेष
उड्डयन	उड्डाण	उड़ान	उड़ान, उड़ना
	उड्डस (दे)	ऊडस	खटमल
उड्डायन	उड्डावण	उड़ाना	उड़ाना
	उंड, उंडरा (दे)	ऊंडा	गहरा, गम्भीर
उत्कम्प	उक्कंप	उकाँप	कम्प, चलन
उत्कर्षण	उक्कसण	उकसन	अभिमान करना
उत्कर्षित	उक्कड्ढिय	उखाड़ा	उत्पाटित, उठाया हुआ
उत्कल	उक्कल	ऊकल, ओकल	देश-विशेष जिसको आजकल 'उडिया' 'ओरिसा' कहते हैं
उत्कीर्ण	उक्किण्ण	उकिन्न, उकीरन	खोदित, खोदा हुआ
उत्कृत	उक्खुत्त	उखोत, उखोद	काटा हुआ
उत्कृष्ट	उक्कट्ठ	ऊकठा, उकठा	उत्कर्ष
उत्कोच	उक्कोय	उकोय, उकोइ	घूस, रिश्वत
उत्क्रोशन	उक्कोसण	उकोसन	क्रन्दन, तिरस्कार
उत्क्षेप	उच्छेव	उछेव	ऊंचा करना, उठाना
उत्तरङ्ग	उत्तरंग	उतरंगा	दरवाजे के ऊप का काष्ठ
उत्तरण	उत्तरण	उतरना	उतरना, पार करना
उत्तरा	उत्तरा	उत्तर	उत्तर दिशा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
उत्तंस	उत्तंस	ऊतंस	कर्ण-भूषण
उत्तारण	उत्तारण	उतारना	उतारना, दूर करना
उत्तेजस्	उत्तेअ	उतेअ	तेजस्वी, प्रखर
उत्थान	उट्ठाण	उठान	उठान, ऊंचा होना
उत्थापन	उट्ठावण	उठाना	ऊंचा करना
उत्थित	उट्ठिय	उठा	खड़ा हुआ
उत्पन्न	उप्पण्ण	ऊपना	पैदा हुआ, संजात
उत्पल	उप्पल	ऊपल	कमल
उत्पाटन	उप्पाडण	उपाड़न	उत्थापन, ऊपर उठाना
उत्पाटित	उप्पाडिय	उपाड़ा	ऊपर उठाया हुआ, उखाड़ा
उत्पीडन	उप्पीडन	उपीड़न, उपेलन	कस कर बांधना दबाना
	उप्पण (दे०)	ऊपना	धान्य वगैरह को सूर्प आदि से साफ-सुथरा करना
उत्पेष	उप्पेस	उवेस	भय
उल्लसन	ऊसलण, उलसण	उसलना, हुलसन	उल्लसित होना निकलना
उत्शल	उच्छल	उछल	उछलना
उत्शालन	उच्छालण	उछालन	उछलना, ऊँचा फेंकना
उत्संग	उच्छंग	उछंग, उसंग	मध्य भाग, गोद
उत्सव	उच्छव	उच्छव, ऊछव	उत्सव, समारोह
उत्साह	उच्छाह	उछाह	उत्साह, जोश
उत्सेध	उच्छेह	उछेह	ऊँचाई
उत्स्थल	उत्थल	ऊथल, उथला	ऊँचा स्थान
उद	उग्र	उग्र	पानी, जल
उदक	उदग	उदग	जल

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
उदङ्क	उदंक	उदंक	पात्र-विशेष; जिससे जल ऊँचा छिड़का जाता है
उदञ्चन	उदंचण	उलंचण	पानी उलीचना
उदर	उअर	उअर	पेट
उदवाह	उदवाह	उदवाह	पानी वहन करने वाला, जलवाहक
उदास	उआस	उग्रास	दिलगीर, उदासी
उदीरण	उदीरण	उदीरन	कथन, प्रतिपादन
उदुम्बर	उंबर	ऊँबर	वृक्ष-विशेष, गूलर
उदूखल	उऊखल उऊहल उक्खल ओक्खल	ऊखल ओखली	धान कूटने की ओखली
उद्गम	उग्गम	ऊगम	उद्भव, उत्पत्ति
उद्गाथा	उग्गाहा	उगाहा	छन्द-विशेष
उद्गार	उग्गार उग्गाल	उगाल	वचन, उक्ति, उगाल
उद्ग्राहण	उग्गाहण	उगाहन	तक़ाजा, दी हुई चीज की मांग
उद्ग्राहणी	उग्गाहणी	उगाहनी	दी हुई चीज की मांग
उद्ग्राहित	उग्गाहिअ	उगाहा	वसूल किया
उद्घाटन	उग्घाडण	उघाड़न	खोलना, बाहर करना
उद्घाटित	उग्घाडिअ	उघाड़ा	खोला हुआ
उद्दण्ड	उद्दंड उद्दंडग	उदंड	प्रचण्ड, उद्धत
	उद्दाण (दे)	उदान	चूल्हा जिस पर रसोई पकाई जाती है
उद्दाह	उद्दाह	उडाह	भयंकर दाह
उद्धत	उद्धअ	ऊधत	उदण्ड

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
उद्वर्तन	उवट्टण	उबटन	शरीर को निर्मल करने वाला द्रव्य, सुगन्धित वस्तु
उद्वर्तना	उव्वट्टणा	उबटना	१ मरण, शरीर से जीव का निकलना
उद्विक्षेप	उविक्खेव	उविखेव	हजामत, मुण्डन
उद्धूपित	उद्धूविअ	उधूविया	जिसको धूप किया हो वह
उद्धूलन	उद्धूलण	उधूलन	धूलि को अंग पर लगाना
उद्धूलित	उद्धूलिय	उधूलिया	धूलि से लपेटा हुआ
उद्भट	उब्भड	ऊभड़	प्रबल, प्रचंड
उद्भाण्ड	उब्भंड	उभांड	उत्कट भांड, बहुरूपिया
उद्रिंचन	उल्लिंचण	उलीचना	खाली करना
उद्यम	उज्जम	ऊजम	प्रयत्न
उद्यान	उज्जाण	उजान	बगीचा
उद्वर्तित	उव्वट्टिय	उवटा	जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तैल वगैरह का मैल दूर किया हो वह
उद्वलन	उव्वलण	ओवलन, उवलन	लेप--विशेष, मालिश
उद्वस	उव्वस	ऊवस, उवस	उजाड़
उद्वसित	उव्वसिय	उवसा	वसति रहित, उजाड़
उद्वान्त	उव्वक्क उव्वक्किय	उवाक	बाहर निकाला हुआ वमन किया हुआ
उद्वेग	उव्वेग	उवेग	शोक, दिलगीरी
उद्वेलन	उव्वेलण	उवेलन	उच्छलित

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
उद्वेलित	उव्वेल्लिय	उवेला	उछला हुआ
उन्मग्न	उम्मग्ग	उमगा	पानी से ऊपर आया हुआ, तीर्ण
उन्मत्त	उम्मत्त	उम्मत्त, उमत्त	उन्मादयुक्त
उन्मनस्	उम्मण	उम्मन	उत्सुक
उन्मार्ग	उम्मग्ग	उमग	कुपथ
उन्मुख	उम्मुह	उमुहा	संमुख, ऊर्ध्वमुख
उन्मेष	उम्मेस	उमेस	उन्मीलन
उप	ओ, उव	ओ	निम्नलिखित अर्थों का सूचक अवयव— १ समीपता २ सदृशता ३ भीतर
उपकण्ठ	उवअंठ	उवांठ, उपकांठ	समीप का, आसन्न
उपक्रम	उवक्कम	उवकम	आरम्भ, प्रारम्भ
उपग	उवग	उवग	अनुसरण करने वाला
उपगृह	ओहर	ओहर	छोटा गृह
उपदेश	उवएस	उवेस	शिक्षा, वोध
उपधा	उवहा	उवहा, ओहा	माया, कपट
उपधान	उवहाण	उवहान, ओहान	तकिया, उसीसा
उपधि	उवहि	उवही	माया, कपट
उपन्यास	उवण्णास	उवनास	वाक्योपक्रम, प्रस्तावना
उपरि	उवरि	ऊपर	ऊपर
उपवन	ओवण	ओवन	वगीचा
उपवास	ओवास	उपास	उपवास
उपशोधित	उवसोहिय	उवसोही	निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ
उपशोभा	उवसोहा	उवसोहा	विभूषा, शोभा
उपस्थान	उवट्ठाण	उवठान	वैठना, उपवेशन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
एणाङ्क	एणंक	एनंक, एनाँक	चन्द्रमा
एणी	एणी	एनी	हरिणी
एतादृश	एईस, अइस	ऐसा	ऐसा, इस तरह का
एरण्ड	एरंड	अरंड, इरंड	वृक्ष-विशेष
	एरंडइय, एरंडय (दे)	एरडिया	पागल कुत्ता
एल (एड)	एल, एलग	एल	मृगों की एक जाति
एला	एला	एला	इलायची का पेड़
एषक	एसग	एसग	अन्वेषक
एषण	एसण	एसन	अन्वेषण, खोज
एषिक	एसिय	एसी, एसिया	गवेषक
ऐरावण	अइरावण	ऐरावन	इन्द्र का हाथी
	ओग्गाल (दे)	उगाल (जुगाली)	चबाई गई वस्तु का पुनः चबाना
	ओड्ढण (दे)	ओढ़न, ओढ़ना	ओढ़न, उत्तरीय
ओड्र	ओड्ड	ओड	उत्कल देश
	ओप्पा (दे)	ओप	शाण आदि पर मणि वगैरह का घर्षण करना
	ओप्पिअ (दे)	ओप्पिअ	शाण पर घिसा हुआ
	ओलग्गा (दे)	ओलगा	सेवा, भक्ति
	ओवहिअ (दे)	ओहिअ	चाटु, खुशामद
ओषधि	ओसधि	ओसढ़ि, औसधि	वनस्पति
ओष्ठ	ओट्ठ, उट्ठ	ओठ, होंठ	अधर
	ओसा (दे)	ओस	ओस
	ओसार (दे)	उसारा	गो-वाड़ा
औड्र	उड्डिअ	उड़िया	उड़ीसा प्रदेश का निवासी
औड्री	उड्डी	उड़िया	लिपि-विशेष
औद्यानिका	उज्जाणिया, उज्जाणिगा	उजानी	गोष्ठी, गोठ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
औद्यानी	उज्जाणी	उजानी	गोष्ठी, गोठ
औन्निद्रय	ओण्णिद्द	उनींद	निद्रा का अभाव
औरस	ओरस	ओरस	स्वोत्पादित पुत्र
औरस्य	ओरस्स	ओरसि	हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तनिक
और्णिक	ओण्णिय	ऊनी	ऊन का बना हुआ वस्त्र,
औषध	ओसढ	ओसढ़, ओखद	दवा, इलाज, भैषज
ककुद	कउह	कूह, कूहा	बैल के कंधे का कुब्बढ़
ककुभ	कउहा	कूहा, कउहा	१ दिशा, शोभा, २ चम्पा के पुष्पों की माला
कक्ष	कक्ख	कांख	काँख
कङ्कट	कंकड	कांकड़	कवच, न गलने वाला उड़द
कङ्कण	कंकण	कंगन, काँगना	हाथ का आभरण विशेष, कगन
कङ्काल	कंकाल	कंगाल	चमड़ी और मांस रहित अस्थि-पंजर
कङ्कोल	कक्कोल	काँकोल, ककोल	वृक्ष-विशेश
कङ्गु	कंगु	कांगु, कांगुनी	धान्य-विशेष
	कंगणी (दे)	काँगनी	वल्ली-विशेष, कांगनी
कच्चोलक	कच्चोल कच्चोलय	कचोला	प्याला
कच्छप	कच्छभ, कच्छवां	कछुवा, कछवा	कछुआ
कच्छपटिका	कच्छुट्टिया	कछौटी	कछौटी लंगोटी
कच्छपी	कच्छमी, कच्छवी	कछुई	कूर्मी, कछवी
कच्छू	कच्छु, खज्जु	खाज	खुजली, खाज
कज्जल	कज्जल	काजल	काजल
कञ्चनार	कंचणार	कचनार	वृक्ष-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कञ्चुक	कंचु चुअ	काँचू, काँचली	चोली, केंचुल
कञ्चुलिका	कंचुलिआ	कांचली	केंचली, चोली
	कंछुल्ली (दे)	कठुली	कंठाभरण, हारण
कटक	कडग	कड़ा	वलय, हाथ का आभूषण-विशेष
कटप्र	कडप्प	कडव	१ समूह, निकर, २ वस्त्र का एक भाग
कटाक्ष	कडक्ख	कडाख, कडाछ	कटाक्ष
कटालिका	कडाली	कड़ाली	घोड़े के मुंह पर बांधने का एक उपकरण
कटाह	कडाह	कड़ाह	कड़ाह, लोहे की बढ़ी कड़ाही
कटिपट्टक	कडिपट्टय	कटिपट्टा	धोती वस्त्र विशेष
कटिपट्टा	कडिपट्टी	कटिपट्टी	कमर-पट्टा
कटुक	कडु कडुअ	कड़ुआ	कड़ुआ, रस विशेष, कठोर
कट्फल	कप्फल	कायफल	वनस्पति-विशेष
कणिका	कणिय कणिया	कनी	कणिका, चावल का टुकड़ा
कण्टक	कंटग कंटय	कांटा	कांटा
कण्टकिन	कंटइल	कंटैल	काँटों-भरा, बांस
	कंटाली (दे)	कँटैली, कटहली	वनस्पति-विशेष
	कठिअ (दे)	कंठिया	चपरासी
कण्ठिका	कठिआ	कंठी	गले का एक आभरण
	कंडूर (दे)	कंडूर	बक, बगुला
कतिक	कइअ	कई	कतिपय, कई
कतिपय	कइअव	कई	कई
	वोल्ल (प्रा०)	बोल	बोलना, कहना
कथा	कहा	कहा	कथा, वार्ता

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कथानिका	कहाणया, क़हानिआ	कहानी	कहानी
कथित	कहिय	कहा	कथित, कहा हुआ
कदम्ब	कलंब	कदम	वृक्ष-विशेष
कदम्बक	कलंबुअ	कलंबू	कदम्ब का गाछ
कदर	कइर	कैर	वृक्ष-विशेष
कदल	कयल, कइल	केला	कदली-वृक्ष
कदलि (कदली)	कयलि कयलि	केली	केला का गाछ
कनीयस्	कणीअ कणीअस	कनिया	वीणा-विशेष
कन्था	कंथा	कंथा	कथड़ी, गुदड़ी
कन्दरिका	कंडलि कंडलिआ	कंडली, कंदली	गुफा
कन्दुक	कंडुअ, कंडूग,	कंडू	विशेष वनस्पति
कन्दुक	गेंदुअ	गेंद	गेंद
कन्धरा	कंधरा	कंधरा	गरदन
	कंधार (दे)	कधार, कंधा	ग्रीवा का पीछे का भाग
कपर्द	कवड्ड	कौड़	बड़ी कौड़ी
कपर्दिका	कवड्डिआ, कवड्डिया	कौड़ी	कौड़ी
कपि	कइ	कइ	बन्दर
कपित्थ	कइत्थ	कैथ	कैथ का पेड़
कपोत	कवोय	कबो, कवुअ	कबूतर
कबन्ध	कमंध	कमध	रुंड, मस्तकहीन शरीर
कमल	कमल	कँवल	कमल
कमला	कमला	कंवला	लक्ष्मी
कम्बल	कंवल	कबल, कांवला	कामरी, ऊनी ओढ़ना
कम्पते	कम्पइ	कांपे	कांपे
करक	करग	करग	१ कटका २ ओला ३ पानी की [illegible]

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कञ्चुक	कंचु चुअ	कांचू, कांचली	चोली, केंचुल
कञ्चुलिका	कंचुलिआ	कांचली	केंचली, चोली
	कंछुल्ली (दे)	कठुली	कंठाभरण, हारण
कटक	कडग	कड़ा	वलय, हाथ का आभूषण-विशेष
कटप्र	कडप्प	कडव	१ समूह, निकर, २ वस्त्र का एक भाग
कटाक्ष	कडक्ख	कडाख, कडाछ	कटाक्ष
कटालिका	कडाली	कड़ाली	घोड़े के मुंह पर बांधने का एक उपकरण
कटाह	कडाह	कड़ाह	कड़ाह, लोहे की बढ़ी कड़ाही
कटिपट्टक	कडिपट्टय	कटिपट्टा	धोती वस्त्र विशेष
कटिपट्टी	कडिपट्टी	कटिपट्टी	कमर-पट्टा
कटुक	कडु कडुअ	कड़ुआ	कड़ुआ, रस विशेष, कठोर
कट्फल	कप्फल	कायफल	वनस्पति-विशेष
कणिका	कणिय कणिया	कनी	कणिका, चावल का टुकड़ा
कण्टक	कंटग कंटय	कांटा	कांटा
कण्टकिन्	कंटइल	कंटैल	कांटों-भरा, बांस
	कंटाली (दे)	कंटैली, कटहली	वनस्पति-विशेष
	कठिअ (दे)	कंठिया	चपरासी
कण्ठिका	कठिआ	कंठी	गले का एक आभरण
	कंडूर (दे)	कंडूर	बक, बगुला
कतिक	कइअ	कई	कतिपय, कई
कतिपय	कइअव	कई	कई
	वोल्ल (प्रा०)	वोल	वोलना, कहना
कथा	कहा	कहा	कथा, वार्ता

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कथानिका	कहाणया, कहानिआ	कहानी	कहानी
कथित	कहिय	कहा	कथित, कहा हुआ
कदम्ब	कलंब	कदम	वृक्ष-विशेष
कदम्बक	कलंबुअ	कलंबू	कदम्ब का गाछ
कदर	कइर	कँर	वृक्ष-विशेष
कदल	कयल, कइल	केला	कदली-वृक्ष
कदलि (कदली)	कयलि कयलि	केली	केला का गाछ
कनीयस्	कणीअ कणीअस	कनिया	वीणा-विशेष
कन्था	कंथा	कंथा	कथड़ी, गुदड़ी
कन्दरिका	कंडलि कंडलिआ	कंडली, कंदली	गुफा
कन्दुक	कंदुअ, कंदुग,	कंदू	विशेष वनस्पति
कन्दुक	गेंदुअ	गेंद	गेंद
कन्धरा	कंधरा	कंधरा	गरदन
	कंधार (दे)	कधार, कंधा	ग्रीवा का पीछे का भाग
कपर्द	कवड्ड	कौड़	बड़ी कौड़ी
कपर्दिका	कवड्डिआ, कवड्डिया	कौड़ी	कौड़ी
कपि	कइ	कइ	बन्दर
कपित्थ	कइत्थ	कैथ	कैथ का पेड़
कपोत	कवोय	कवो, कवुअ	कबूतर
कबन्ध	कमंध	कमध	रुंड, मस्तकहीन शरीर
कमल	कमल	कँवल	कमल
कमला	कमला	कंवला	लक्ष्मी
कम्बल	कंवल	कवल, कौंवला	कामरी, ऊनी ओढ़ना
कम्पते	कम्पइ	कांपे	कांपे
करक	करग	करग	१ कटका २ ओला ३ पानी की कलश

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
करञ्ज	करंज	करिञ्जा, कंजा	वृक्ष-विशेष
करट	करड	करड	काक, कौआ
करण्ड करण्डक	करड करंडग	करंड	डिब्बा, पेटिका
करण्डिका	करंडिया	करण्डी	छोटा डिब्बा
करपत्र	करपत्त, करउत्त	करौंत	करौंत, आरा
करभ	करभ, करह	करहा	ऊंट
करमर्द	करमद्द	करोंदा	वृक्ष-विशेष
करवाल	करवाल	करवाल, तलवार	तलवार
करहाट	करहाड	करहार	वृक्ष-विशेष
	करिल्ल (दे)	करेला	करेला
करीर	करीर	करील	करील
करीषिका	करसिआ	करसी	करसी
करेणु	करेणु	करेन,	हाथी
	करोडग (दे)	कटोरा	कटोरा, पात्र-विशेष
करोति	करइ	करे	करे
कर्कट	कक्कड	केकडा, ककड़ी	ककडी, केकड़ा
कर्कटिका कर्कटीका	कक्कडिया कक्कडी	ककडी, काकडी	ककडी, खीरा
कर्कश	कक्कस	काकस	कठोर
कर्कोट	कक्कोड	ककोड़ा	शाक-विशेष
कर्ण	कण्ण	कान	कान
कर्णाट	कण्णड	कन्नड़	देश-विशेष
कर्णिकार	कणिआर कणइर	कनेर	कनेर
कर्त्तन	कत्तण	कतरना	कतरना
कर्त्तरी	कत्तरी	कतरनी	कैंची
कर्त्तव्य	कत्तव्व	करतव	करने योग्य
कर्त्तित	कट्टिअ	काटा	काटा हुआ
कर्दम	कद्दम	कादा	कीच, कीचड़
कर्पट	कप्पड	कपड़ा	कपड़ा
कर्पर	कप्पर	खप्पर	खप्पर, कपाल
कर्पास	कप्पास	कपास	कपास

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कर्पूर	कपूर, कप्पूर	कपूर	कपूर
कर्बुर	कब्बुर	कवरा	कवरा, चितकवरा
कर्मकार कर्मकारक	कम्मार कम्मारअ कम्मारय	कमेरा	नौकर, कारीगर
कर्मन्	कम्म	काम	काम
कर्मार	कम्मार	कमार	लोहार
कर्षक	करिसग	करसिया	खेती करनेवाला
कर्षण	कड्ढण	काढ़ना	खिंचाव, आकर्षण
कर्षित	कड्ढिअ	काढ्या, काढ़ा	निकाला हुआ
कलिका	कलिआ	कली	अविकसित पुष्प
	कलंक (दे)	कलांक	वांस, वांस की बनी हुई वाड़
कलाचिका	कलाइआ	कलाई	प्रकोष्ठ, कोनी से लेकर मणिवन्ध तक का हस्तावयव
कलभ	कलभ, कलह	कलभ, कलह	हाथी का वच्चा
	कलंवुआ (दे)	कलवुआ	वल्ली-विशेष
कलहिन्	कलही	कलही	झगडाखोर
कल्पनी	कप्पणी	कापनी	कतरनी, कैंची
कल्मष	कम्मस	कामस, कालिस	मलीनता
कवित्व	कवित्तण, कवित्त	कवित्त, कविता	छन्द विशेष, कविकर्म
कल्य	कल्ल	कल	कल
कल्यवर्त	कल्लवत्त	कलेऊ	कलेवा
कवल	कवल	कौर	कवल, ग्रास
कवि	कइ	कवि	कवि
कविका	कविआ	कविया	लगाम
कवीश	कईस	कवीस	श्रेष्ठ कवि
कवीश्वर	कईसर	कवीसुर	उत्तम कवि
कशा (कसा)	कसा	कसा	चावुक
कशिका	कसिआ	कसिया	प्रतोद, चावुक
कशेरु कशेरुक	कसेरु कसेरुय	कसेरू	जलीय कन्द विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कीट, कीटक,	कीड, कीडय	कीड़ा	कीड़ा
कीटवत्	कीडइल्ल	कीड़ैल	कीट-युक्त
कीटिका	कीडिग्रा, कीडिया	कीड़ी, कीरी	चींटी
कीटी	कीडी	कीड़ी, कीरी	चींटी
कीदृश	कीइस, कइस	कैसा	कैसा
कीरल	कीरल	केरल	देश-विशेष
कीरी	कीरी	कीरी	कश्मीर की लिपि
कील, कीलक	खील, खीलग, खीलय	कील, खीला	कील, खूंटा
कीलिका	कीलिग्रा, कीलिया	कीली, कीलिया	छोटा, खूंटा
	कुक्क (दे)	कूक, कूकर	कुत्ता
	कुक्की (दे)	कूकी	कुत्ती
कुक्कुट	कुक्कुड	कुकुड़	मुर्गा
कुक्कुटिका	कुक्कुडिया	कुकुड़िया, कुकड़ी	मुर्गी
	कुक्कुस (दे)	कूकस	धान्य आदि का छिलका
कुक्षि	कुच्छि, कुक्खि	कोख	उदर, पेट
कुग्राह	कुग्गाह	कुगाह	कदाग्रह, हठ
कुटिल	कुडिल	कुड़िल	वक्र
कुटिलक	कुडिल्लय	कुड़ील, कुड़िल	कुटिल, टेढ़ा
कुटी	कुडी	कुड़ी	छोटा गृह
कुट्ट्	कुट्ट	कूट	कूटना
	कुट्ट (दे)	कोट	कोट, किला
कुट्टन	कुट्टण	कूटन	चूर्णन, भेदन
कुट्टनी	कुट्टणी	कूटनी	मूसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी
कुट्टित	कुट्टिय	कूटा	कूटा हुआ
कुठार	कुहाड	कुहाड़	कुल्हाड़, फरसा
कुठारिका	कुहाड़िग्रा	कुहाड़ी	कुल्हाड़ी
कुठारी	कुहाड़ी	कुहाड़ी	कुल्हाड़ी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कुड्मल	कुंपल	कोंपल	कली
कुड्य	कुलिय	कुलिया	भींत
कुणप	कुडव	कुडव	मुरदा, मृत शरीर
कुण्ड	कुंड	कूंडा; कूंड़ा	कूंड़ा,पात्र-विशेष
कुण्डी कुण्डिका	कुंडी	कूंडी, कूंड़ी	कूंडा,पात्र-विशेष
कुतुप	कुउअ, कुतुव	कुप्पा	स्नेह-पात्र, घी तेल आदि भरने का चमड़े का पात्र-विशेष
कुतूहलिन्	कोहलिअ	कोहली	कुतूहली, कुतूहल-प्रेमी
	कुत्त (दे)	कुत्ता	कुत्ता
	कुत्ती (दे)	कुत्ती	कुत्ती
कुत्र (क्व)	कहि, कहिअ, कहिं	कहां	कहां ?
कुथन्	कुहण	कोहना	सड़ जाना
कुथित	कुहिअ	कुहा	गला, सड़ा, दुर्गन्ध वाला
कुद्दाल	कुद्दाल	कुदार (ल)	भूमि खोदने का उपकरण, कुदार
	कुंत (दे)	कुंत	शुक
	कुंतली	कूंतली	करोटिका, परोसने का एक उपकरण
कुब्ज	कुज्ज	कुवड़ा	कुब्ज, वामन
कुमारी	कुअरी, कुआंरी कुवांरी	क्वारी	क्वारी
कुम्भकार	कुंभार	कुम्हार	कुम्हार
कुरण्टक	कुरंटय	कुरंटा	वृक्ष-विशेष, पिया वाँस
कुरर	कुरर	कुरल	कुरल-पक्षी
कुररी	कुररी	कुरली	कुरर पक्षी की मादा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कुलत्थ	कुलत्थ	कुलथ, कुलथी	कुलथी (दाल)
कुलिका	कुलिया	कुलिया	भींत
कुल्या	कुल्ला	कूला	सारिणी
कुष्ठ	कुट्ठ, कुड्ढ	कोढ़	कोढ़, रोग-विशेष
कुष्ठिन्	कोढि	कोढ़ी	कुष्ठ-रोगी
	कुहणी (दे)	कोहनी	कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग
कूप कूपक	कूव, कूवअ कूवग, कूवय	कुआ	कुआं
कूपिका	कूविया	कुइया	छोटा कूप
कूपी	कूवी	कुई	छोटा कूप.
कूर्च	कुच्च	कूच	दाढ़ी-मूंछ
कूर्चधार	कुच्चधरा कुच्चहरा	कूचहरा	दाढ़ी मूंछ धारण करने वाला
कूर्चिक	कुच्चिय	कुच्ची	दाढ़ी-मूंछ वाला
कर्पास	कुप्पास	कूपास	कञ्चुक, कांचली, जनानी कुरती
कूर्म	कुम्म	कूम	कछुआ
कूर्मी	कुम्मी	कूमी	(स्त्री) कछुआ
कूष्माण्ड	कुमंड	कोहला, कोंहड़ा	फल-विशेष,कोंहड़ा
कृकाटिका	किआडिआ	कियाडी	गले का उन्नत भाग
कृणोति	कुणइ	कुणे	मारे
कृत्	कट्ट	काट	काटना, छेदना
कृत	किअ, कय	किया	किया हुआ
कृते	कए कएण कएण	के	वास्ते, निमित्त
कृत्त	कट्ट	कटा हुआ	काटा हुआ
कृत्ति	किच्चि, कित्ति	किच्च, किति	मृग वगैरह का चमड़ा
कृत्रिम	कत्तिम	कातिउं, कित्तिम	कृत्रिम
कृसर	किसर	खिचड़	पक्वान्न-विशेष
कृसरा	किसरा	खिचड़ा	खिचड़ी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
कृशाङ्ग	किसंग	किमंग	दुर्बल शरीर वाला
कृष्	खंच, खिच	खींच	खींचना
कृषि	किसि	किसि	खेती
कृषीवल	किसीवल	किसीवल	किसान
कृष्ण	कसण	कासन, कसन	वर्ग-विशेष
कृष्ण	कण्ह	कान्ह, कान्हा	श्री कृष्ण
कृष्ट	खंचिय	खींचा	खींचा हुआ
केदार	केआर	क्यार	क्यारी
केदारिका	केआरिआ	क्यारी	घास वाली जमीन, गोचर भूमि
कैरव	कइरव	कैरव	कमल, कुमुद
कैलाश कैलास	कइलास	कैलास	स्वनाम-ख्यात, पर्वत-विशेष
कैवर्त्त	केवट्ट	केवट	धीवर, मच्छीमार
	कोइल (दे)	कोइला	कोयला
कोकिल	कोइल	कोयल	कोयल, पक्षी-विशेष
कोकिला	कोइला	कोयल	कोयल, पक्षी-विशेष
कोटि	कोडि	कोड़ि	करोड़, संख्या-विशेष
	कोट्ट (दे)	कोट	नगर, किला
	कोट्टपाल (दे)	कोतवाल	नगर-रक्षक
कोट्टाक	कोट्टग	कोटग	वढ़ई
	कोडिल्ल (दे)	कुडिल	चुगलीखोर
	कोलिअ (दे)	कोली	कोली
	कोल्हुअ (दे)	कोल्हू	सियार, कोल्हू, चरखी, ऊख से रस निकालने की कल
	कोविआ (दे)	कुविया	शृगाली
कोष्ठ कोष्ठक	कुट्ठ, कोट्ठ, कोट्ठय	कोठा, पेट	छोटा कमरा
कौतुक	कउतिग	कौतिग	शोर, तमाशा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
क्षीण	झीण	झीना	दुर्बल
क्षीयमाण	झिज्जंत झिज्जमाण	झीजंत	कृश होता हुआ
क्षीर	खीर	खीर	दूध
क्षीव	खीव	खींव	मद-प्राप्त, मदोन्मत्त
क्षुधा	खुहा, छुहा	छुधा	भूख
क्षुधालु	छुहालु	छुहालु	भूखा
क्षुधित	छुहाइअ	छुही, छुहाई	भूखा
क्षुत	छीअ	छींक	छींक
क्षुर	खुर, छुर	छुरा	छूरा, उस्तरा
क्षुरक	छुरअ	छुरा	छुरा
क्षुरप्र	खुरप्प	खुरपा	घास काटने का अस्त्र-विशेष
क्षुरप्रिका	खुरप्पिआ	खुरपी	अस्त्र-विशेष
क्षुरी	छुरी	छुरी	चाकू
क्षेत्रिन्	खेत्ति	खेत्ति	क्षेत्र-पाल
क्षेत्र	खइत्त	खेत	खेतों का समूह, खेत
क्षैरेयी	खीरी	खीर	खीर
क्षोणि	खोणि, छोणि	खोणी, छोनी	पृथ्वी
क्षौर	खउर, छउर	खौर, छौर	हजामत
खटिका	खडिआ	खड़िया	खड़िया
खट्टिक	खट्टिअ खट्टिक्क	खटीक	खटीक, कसाई
खट्वा	खट्टा	खाट	खाट, पलंग
	खडक्किआ खडक्की (दे)	खिड़की	खिड़की, छोटा द्वार
खड्ग	खग्ग	खंग	तलवार
	खड्डा (दे)	खड्डा, खाड़	खानि, आकर
खण्ड	खंड	खांड, खांडा	टुकड़ा, अंश, खांड
	खत्त (दे)	खाद	खात
खदिका	खइया	खइया	खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
खदिर	खइर	खैर	वृक्ष-विशेष
खनक	खणग	खनक, खनिया	खोदने वाला
	खणि	खान	खान, आकर
खनित	खत्त, खत्तिया	खती	अनाज भरने का कुआं
खपुर	खउर	खौर	हजामत
खरोष्ट्री	खरुट्टी, खरोट्टी	खरोठी	लिपि-विशेष
खर्जू	खज्जू	खाज	खुजली
खर्जूर	खज्जूर	खजूर	खजूर का वृक्ष
	खलइअ (दे)	खाली	रिक्त, खाली
खलिका] खली	खलिया	खल] खली	तिल वगैरह का तैल-रहित चूर्ण या तिल-पिण्ड
खलिन	खलिण	खलिन	लगाम
खलुक	खलुय	खलुआ] खड़ुआ	गुल्फ, पांव का मणि बन्ध
	खवय (दे)	खवा	कंधा, स्कन्ध
खसखस	खसखस	खसखस	पोस्तों का दाना
	खसण (दे)	खिसना	गिर पड़ना
खादति	खाअइ	खाये	खाये
खादतु	खाउ, खाहु	खाओ	खाओ
खाति] खातिका	खाइ] खाइआ	खाई	खाई, परिखा
खाद्य	खज्ज	खाज	खाने योग्य वस्तु
खाद्यक	खज्जअ	खजला	मिठाई-विशेष
	खिच्च (दे)	खिचड़ी	खीचड़ी
खिद्	खिज्ज	खीज	खेद करना
खुर	खुर	खुर	जानवर के पांव का नख
खुरशान	खुरसाण	खुरसाण	१ देश-विशेष २ गुल्फ, पैर की गांठ
खेट	खेड	खेड़ा	धूलि के प्राकार वाला नगर, मृगया, शिकार

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
खेटक	खेडग	खेड़ा	ढाल, छोटा गाँव
खेद	खेग्र	खेग्र	खेद, शोक
	खेह (दे)	खेह	रज
गगन	गगण	गगन	आकाश
गज	गय	गय	हाथी
गजेन्द्र	गइंद	गइद	ऐरावत हाथी
	गज्जर (दे)	गाजर	गाजर
गञ्जा	गंजा	गंजा, गाँजा	मद्य, गाँजा
	गडवड (दे)	गड़बड़	गड़बड़, गोलमाल
	गड्डरिगा, गड्डरिया (दे)	गड्डरी	भेड़
	गड्डरी (दे)	गड्डरी	बकरी
	गड्डिग्रा, गड्डी	गाड़ी	गाड़ी
गणना	गणणा	गिनना	गिनती, संख्या
गण्डक	गंडय	गेंडा	गेंडा, जानवर-विशेष
	गंडली (दे)	गंडेरी	गंडेरी, ऊख का टुकड़ा
गण्डिका	गंडिया	गंडी	गंडेरी
गण्डोल	गंडुल	गंडूला	कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है
गत	गय	गया	गया हुग्रा
गन्त्री	गंती, गड्डी	गाड़ी	गाड़ी
गन्धिक	गंधिग्र	गांधी	गन्ध-द्रव्य वेचने वाला पंसारी
गन्धिन्	गंधि	गंधी	गंध-युक्त
गम्भीर	गंभीर, गहिर	गहरा	गंभीर
गरुड	गरुल	गरुड	पक्षिराज, पक्षी-विशेष
गर्गरी	गग्गरी	गगरी, गागर	गगरी, छोटा घड़ा
गर्ज्	डिक्क	डीक	सांड़ का गरजना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
गर्जन	गज्जण	गाजन	गर्जन
गर्जल	गज्जल	गाजिल	गर्जन करने वाला
गर्दभ	गद्दभ, गद्दह	गधा	गधा
गर्दभी	गद्दभी	गधी	गधी
गर्भ	गब्भ	गाभ	भ्रूण
गर्भिणी	गब्भिणी	गाभिन	गर्भवती
गर्भित	गब्भिण	गाभिन	गर्भ-युक्त
गर्विष्ठ	गव्विट्ठ	गवीठ	गर्व करने वाला
गलहस्त	गलत्थ	गलत्थ	पीछे गला पकड़ कर धक्का देना, बाहर निकालना
गलहस्तिका	गलत्थिया	गलत्थी	बाहर निकालना
गलित	गलिअ	गला	गला हुआ
गवाक्ष	गवक्ख	गोखा	गवाक्ष, वातायन
	गवार (दे)	गंवार	गंवार, छोटे ग्राम का निवासी
गवेलक	गवेलग	गवेला	भेड़
गवेषित	गविट्ठ	गवीठ	खोजा हुआ
	गहणि (दे)	गहनी	जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बांदी
गह्वर	गव्वर	गव्वर	कोटर, गुहा
	गागर (दे)	घाघरा	स्त्री के पहनने का वस्त्र-विशेष, घाघरा
गान्धिक	गंजिअ	गंजिया	दारू बेचने वाला कलाल
गात्र	गत्त	गात	देह, शरीर
गाथा	गाथा, गाहा	गाहा	छन्द-विशेष
गान	गाण	गाना, गान	गीत, गाना
	गमउड, गामउड (दे)	गामुड	गांव का मुखिया
	गामणी (दे)	गामनी	गांव का मुखिया
गायन	गाण, गाणअ	गान	गवैया, गाना
गारुड	गारुड, गारुल	गारुड, गारुल	सर्प के विष को उतारने वाला, विष-वैद्य

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
गालि	गालि	गाली	अपशब्द
गाह्	गाह	गाहना	टोहना, ढूंढ़ना
	गिड्डिया (दे)	गिडी, गिड्डी	गेड़ी, गेंद खेलने की लकडी
गुटिका	गुडिआ, गुलिया	गोली	गोली
गुड	गुड	गुड	गुड
	गुरण (दे)	गुना	मिष्टान्न-विशेष
	गुत्ति	गुत्ती, गुत्थी	बन्धन
गुरु	गुरु, गुरुअ	गुरू, गरवा	शिक्षक
गुरु } गुरुक }	गुरु, गुरुअ	गुरु, गरुअ	शिक्षक, बड़ा
गुर्जर	गुज्जर	गूजर	जाति विशेष
गुर्जरत्रा	गुज्जरत्ता	गुजरात	गुजरात देश
गुलिका	गुलिया, गुलिआ	गोली	गोली, गुटिका
गुल्फ	गोंफ	गोंफ	पैर की गांठ
	गुवालिया (दे)	ग्वालिया	ग्वाला
गुह्य	गूह	गूह	गू, विष्टा
गृद्धिक	गेहिअ	गेही	अत्यासक्त
गृध्	गिज्झ	गीझ	१ आसक्त होना २ ग्रहण करने योग्य
गृध्र	गिद्ध	गीध, गिद्ध	पक्षी-विशेष, गीध
गृह	घर	घर	घर, आवास
गृह-गोधिका	घरगोहिया	घरगोही	छिपकली से मिलता-जुलता एक जन्तु
गृह-गोली	घर-गोली	घरोली	,, ,,
गृहजामातृक	घरजामाउय	घरजमाई,	घरजमाई
गृह द्वार	घरवार	घरवार	घर का दरवाजा
गृहस्वामिन्	घरसामि	घरसाईं	घर का मालिक
गृहाङ्गण	घरंगण	घरांगन	घर का आंगन
गृहिन्	घरिल्ल	घरिल	गृही, संसारी
ग्रहिल्लिका	गहिल्ली	घेली, गहेली	पगली
गृहीत	गहिअ	गहा	स्वीकृत, ज्ञात

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
गेहिक	गेहिअ	गेही	घरवाला, गृही
गेहिनी	गेहिणी	गेहिनी	गृहिणी
गैरिक	गेरिय, गेरुअ	गेरू	गेरू, लाल रंग की मिट्टी
गो	गउ, गउअ	गऊ, गाय	गाय, गौ
गोकीट	गोकीड	गोकीड	पशुओं की मक्खी, वघी
गोकुल	गोउल	गोउल	गौओं का समूह
गोकुलिक	गोउलिय	गोउली	गो-कुल का मालिक
गोक्षुरक	गोक्खुरय	गोखरू	एक औषधि का नाम, गोखरू
गोच्छक	गोच्छअ } गोच्छग }	गोछा	पात्र-वगैरह साफ करने का वस्त्र-खंड
	गोड (दे)	गोड़	गोड़, पाद, पैर
गोत्र	गोत्त	गोत	जाति
गोत्रिक	गोत्तिअ	गोती	समान गोत्र वाला
गोत्रिन्	गोत्ति	गोती	समान गोत्रवाला, कुटुम्बी
गोदुह	गोदुह	गोदुह	गो को दोहनेवाला
गोदोहिका	गोदोहिया	गोदोहिया	गो का दोहन
गोधा	गोधा, गोहा	गोह	गोह, एक जन्तु
गोधिका	गोहिया	गोह	गोह एक जन्तु
गोधूम	गोहूम	गोहूं, गेहूं	अन्न-विशेष, गेहूं
गोपालक	गोवालअ	ग्वाला	गौ पालने वाला
गोपालिका	गोवालिया	गुवारी	गोप-स्त्री, गोपी
गोपालिन्	गोवालि	ग्वारी	ग्वारी, अहीर
गोपालिनी	गोवालिणी	ग्वालिनी	ग्वालिनी, अहीरी
गोपुर	गेउर	गोउर	नगर का दरवाजा
	गोफण (दे)	गोफन	पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष
गोवल	गोवल	गोवल	गोधन, गोकुल
गोमय	गोमय	गोवर	गोवर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
गोमायु	गोमाअ] गोमाउ]	गोमा	गीदड़
गोमुख	गोमुह	गोमुह	यक्ष-विशेष, एक द्वीप-विशप
गोमुखी	गोमुही	गोमुही	वाद्य-विशेप
गोमेद	गोमेअ, गोमेज्ज	गोमेअ	रत्न की एक जाति
गोरथक	गोरहग	गोरहा	तीन वर्ष का बैल
गोरोचन	गोरोयण	गोरोयन	पीत वर्ण का एक द्रव्य-विशेष
गोलेह्निका	गोलेहणिया	गोलेहनी	ऊषर-भूमि
	गोवर (दे)	गोवर	गोबर
गोवाट	गोवाड	ग्वाड़ा	गौओं का बाड़ा
गोष्ठ	गोट्ठ	गोठ	गोवाड़ा, गौओं के रहने का स्थान
	गोस (दे)	गोसा	प्रभात, सुबह
गोसर्ग	गोसग्ग	गोसग	प्रातःकाल
	गोहुर (दे)	गोवर	गोवर
गौडी	गोडी	गोडी	गुड़ की दारू
गौरी	गोरी	गोरी	शुक्लवर्णा स्त्री
गौल्मिक	गोम्मिअ	गुम्मी	कोतवाल
गोष्ठिक	गोट्ठिल्ल] गोट्ठिल्लग]	गोठिल	एक मंडली के सदस्य, मित्र
ग्रथित	गढिअ, गुत्थ	गठा, गुंथा	गुंथा हुआ
ग्रन्थि	गंठि	गांठ	गांठ, जोड़
ग्रसन	गसण	गसन	भक्षण
ग्रस्त	गसिअ	गसा	भक्षित
ग्रहण	गहण	गहन	आदान, स्वीकार
ग्रहणी	गहणी	गहनी	गुदाशय, गांड
ग्रहिल	गहिल	गहिला	भूतादि से आविष्ट, पागल
ग्राम	गाम	गांव, गाम	गांव
ग्रामक	गमड, गामड	गामड़ा	छोटा गांव

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
ग्रामीण	गामिल्ल गामिल्लुअ	गामिल	गांव का निवासी
ग्रामेश	गामेस	गामेस	गांव का अधिपति
ग्रास	गास	गास	ग्रासस, कवल
ग्राह	गाह	गाह	आग्रह, मकर
ग्रीवा	गीवा	गीव, गीउ	गरदन
ज्ञान	ञाण	जान	जानना
घटक	घडग, घडअ	घड़ा	छोटा घड़ा
घटचेटिका	घडचेडिया	घडचेरी, घड़ेरी	पानी भरने वाली दासी
घटन	घडण	घड़न	घड़ना
घटिका	घडिआ	घड़ी	छोटा घडा, घड़ी
घटित	घटिअ, गठिअ	गढ़ा, गठा	निर्मित, गढ़ा हुआ
घटी	घडी	घड़ी	छोटा घड़ा
घण्ट	घंट	घंटा	घण्टा
घण्टिका	घंटिया	घंटी	छोटा घण्टा
घन	घण	घन	मेघ, बादल
	घम्मोई	घमोई	तृण-विशेष
घरट्ट	घरट्ट	घरट	अन्न पीसने का पाषाण-यंत्र
	घरोलिया घरोली	घरोली	छिपकली
घर्म	घम्म	घाम	घाम, गरमी
घर्षण	घंसण	घिसन	रगड़
घर्षित	घंसिय	घिसा	घिसा हुआ
	घाण (दे)	घान	घानी, कोल्हू
घात	घाय	घाव, घाय	प्रहार, चोट
घातिन्	घाइ	घाई	घातक, नाशक
घास	घास	घास	पशुओं के खाने का तृण
घुग्घिका	घुग्घ घुग्घिअ (अप)	घूघ	कपि-चेष्टा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
घुण	घुण	घुन	काष्ठ-भक्षक कीट
	घुंट (दे)	घूंट	घूंट
घूक	घूअ	घुग्घा	उल्लू
	घूरा (दे)	घूरा	जांघ
घूर्ण	घुन्न, घुम्म, घुम	घूम	घूमना, चक्राकार फिरना
घूर्णन	घुम्मण	घूमन	चक्राकार भ्रमण
घूर्णित	घुण्णिअ	घूमा	घूमा हुआ
घूर्णित	घोलिअ	घोला	रगडा हुआ, मर्दित
घृणा	घिणा	घिन	जुगुप्सा
घृत	घिअ	घी	घी
घृत-किट्ट	घिय किट्ट	घीकीट, घीकिट्ट	घी का मैल
	घेउर (दे)	घेवर	घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न–विशेष
घोट, घोटक	घोड, घोडग घोडय	घोड़ा	घोड़ा
घोटी	घोडी	घोड़ी	घोड़ी
घोलन	घोलण	घोलन	घर्षण, रगड़
घोलित	घोलिअ	घोला	रगडा हुआ, मर्दित
घोष	घोस	घोस	ऊंची आवाज
घोषण	घोषण	घोसना	ऊंची आवाज से कुछ कहना
चक्र	चक्क	चाक, चकवा	चक्रवाक
चक्र	चक्क	चक्का, चाक, चक्कर	चाक, चक्कर
चक्रक	चक्कग, चक्कअ	चक्का	चक्राकार वस्तु
चक्रडोल	चक्कडोल	चकडोल	चकडोल
चक्रवर्तिन्	चक्कवट्ट चक्कवट्टि	चक्कवै	६ खण्ड भूमि का अधिपति, राजा
चक्रवर्ती	चक्कवट्टी	चक्कवै	राजा
चक्रवाक	चक्कवाअ	चकवा	चकवा
चक्राङ्ग	चक्कङ्ग	चाकंग, चकवा	पक्षी-विशेष
चक्रिन्, चक्रिक	चक्कि चक्किय	चक्की	चक्रवाला, चक्रवर्ती राजा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	चक्कल (दे)	चाकल, चकला	कुण्डल कर्ण का आभूशण, चकला
चक्षु	चक्खु	चख	आँख
चक्षुप्	चक्खु	चख, चक्ख	आंख
चञ्चरीक	चञ्चरीअ	चांचरिया	भ्रमर
चञ्चा	चिञ्च	चिञ्चा, चींचा	तृण से बनाई हुई चटाई वगैरह
चञ्चापुरुष	चिंचापुरिस	चिंचापुरिस	तृण का पुरुष जो पशु पक्षी आदि को डराने को खेतों में गाढ़ा जाता है
चञ्चु	चंचु, चुंच	चोंच	चोंच
चटक	चडअ	चड़ा, चिड़ा	चिड़ा
चटिका	चडिआ, चडी	चिड़िया	चिड़िया
चटुल	चडुल	चौल	चचल
चटुः	चडु	चडु, चह	प्रिय वचन
चट्टिन्	चट्टि	चट्टी, चाटी चट्टू	चाटने वाला
चणक	चणअ	चना	चना, अन्न-विशेष
चण्ड	चण्ड	चांड, चांडा	तेज, तीखा
चण्डिका	चण्डिया	चण्डी	चण्डी, देवी
	चण्डिल (दे)	चांडिल	पीन, पुष्ट
चण्डिल	चण्डिल	चांडिल	हज्जाम, नापित
चतुर	चउर	चवर	चालाक
चतुरंग	चउरंग	चौरंग	चार अंग वाला
चतुरंगिन्	चउरंगि	चौरंगी	चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)
चतुर चत्वारिंशत्	चउआलीस	चवालीस	चवालीस
चतुरानन	चउराणण चउरानन	चौरानन	ब्रह्मा
चतुष्काष्ठ	चउकट्ठ	चौकाट	चारों दिशा
चतुष्काष्ठी	चउकट्ठी	चौखट	चौखटा, द्वार का ढांचा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
चतुर्गमन्	चउगमण	चौगमन	चारों दिशाएँ
चतुर्गुण (क)	चउगुण चोग्गुण	चौगुन, चौगुना	चौगुना
चतुर्थक	चउत्थअ	चौथा	चौथा
चतुर्दश	चउद्दह, चउद्दह चोद्दस	चौदह	चौदह
चतुर्दशन्	चउद्दह	चौदह	चौदह
चतुर्दशिका	चाउद्दसिआ	चौदस	चौदस, तिथि-विशेष
चतुर्दशी	चाउद्दसी	चौदस	चौदस
चतुरिक	चउव्वारअ	चौबारा	चौपाल
चतुर्दिश	चउद्दिस	चौदिस, चौदिह	चारों ओर
चतुर्नवति	चउणउइ	चौरानवे	चौरानवे
चतुर्याम	चउजाम	चौजाम	हर समय
चतुर्मुख	चउम्मुह	चौमुह	चौमुहा
चतुर्मुखक	चउम्मुहअ	चौमुहा	चौमुहा
चतुर्वार	चउव्वार	चौवार	चार बार
चतुर्विधक	चउव्विहअ	चौविहा	चार प्रकार का
चतुर्विधा	चउव्विहा	चौविध, चौविह	चार प्रकार
चतुर्विंशति	चउव्वीस, चोव्वीस चोविस	चौबीस	चौबीस
चतुर्वेदी	चउव्वेई	चौबे	चौबे
चतुरशीति	चउरासी	चौरासी	चौरासी
चतुःषष्टि	चउसट्ठि	चौंसठ	चौंसठ
चतुष्क	चउक्क	चौक	चौक
चतुष्काल	चाउक्काल	चौकाल	चार समय
चतुष्किका	चउक्किआ	चौकी	चौकी
चतुष्कोण	चाउक्कोण चउक्कोण	चौकोन	चार कोनों वाला
चतुःपञ्चाशत्	चउप्पण्ण, चउवण्ण	चौपन, चौवन	संख्या विशेष
चतुष्पट्ट	चउप्पड	चौपड	चौपड़
चतुष्पदिका	चउप्पाइआ	चौपई, चौपाई	चौपाई
चतुष्पाद	चउप्पाअ, चउप्पाय	चौपाया	पशु
चतुस्त्रिंश	चउतीसम	चौतीसवां	चौतीसवां

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
चतुस्त्रिंशन्	चउतिस चउतीस	चौतीस	चौतीस
चतुःसप्तति	चउहत्तडि चउहत्तरि	चौहत्तार चौहत्तर	चौहत्तर
चत्वार	चत्तार, चआर	च्यार, चार	चार
चत्वारिंशत्	चोयालीस,चत्तालीस चालीस	चालीस	चालीस
चन्द्रिल	चंदिल	चंदिल	नापित या हज्जाम
चण्द्र	चन्द	चाँद, चन्दा	चाँद, चंदा
चन्द्रमुखी	चन्दमुही	चांदमुही	चन्द्र के के समान सुखद मुख वाली स्त्री
चन्द्रवदन	चन्द्रवयण	चंदवयन	चन्द्र के तुल्य
चन्द्रिका	चंदिया	चंदी. चांदि	ज्योत्स्ना
चन्द्रिमन्	चन्दिमा	चांदिना, चांदना, चानणा	चांदनी
चन्द्रिल्लक	चन्दुल्लअ	चांदला, चँदोला	
चपल	चवल	चौल, चउल	चंचल
चपल–वातुल	चउल-वाउल	चुलबुला	चुलबुला
चपेटा	चविडा चविला चवेला	चवेला	तमाचा, थप्पड़
चमत्कार	चमक्क	चमक	विस्मय, आश्चर्य
चमत्कृत	चमक्किअ	चमका	विस्मित
चमत्कृति	चमक्किइ, चमक्कि	चमक	चमक
चमस	चमस	चमचा, चम्मच	चमचा
	चम्प (दे)	चाप	चांपना, दावना
चम्पक	चम्पय	चम्पा	चम्पा का पेड़
	चम्पण (दे)	चांपन	चांपना, दावना
चम्पारण्य	चम्पारण	चम्पारन	देश विशेष चम्पारन, भागलपुर का प्रदेश
	चम्पिअ (दे)	चांपा	चांपा हुआ या दबाया हुआ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
चर्चरिका	चच्चरिया	चांचरी	नृत्य विशेष
चर्चरी	चच्चरी	चांचरी	गीत विशेष
चर्म	चम्म	चाम	चाम
चर्मकार	चम्मार, चम्मआर	चमार	चमार
चर्मन्	चम्म	चाम	छाल, खाल
चर्मपट्ट	चम्मपट्ट चम्मवट्ट	चमौड़ा	चमडे का पट्टा
चर्वति	चव्वइ	चवे, चावे	चाबे
चरित्र	चारित्त	चरित, चरित्त	चरित्र
चलति	चलइ	चले	चले
चलत्	चलन्तो	चलता, चलतो	चलता
चलन	चलण	चलना	चलना, चलन
चलनी	चलणी	चलनी	साध्वियों का एक उपकरण
चलामि	चलिउं	चलूँ	चलूँ
चलित	चलिअ	चला	चला
चलितृ	चलिर्	चलाऊ	चलने वाला
चलिष्यति	चलिस्सइ, चलिहइ	चलहि	चलहि
चर्वण	चव्वण	चवना, चवेना	चवना, चवेना
चर्वणक	चव्वणअ	चवैना	
चषक	चसअ	चसा, चासिया	प्याला
चक्षुष्	चक्खु	चख, चक्ख	आंख
	चाउल (दे)	चावल	चावल
चाटु	चाडु	चाडु	प्रियवाक्य, खुशामद
चाटुकार	चाडुकार	चाडुआर	खुशामदी
	चाड (दे)	चाड	मायावी, कपटी
चातक	चातग, चायग चायअ	चातिग, चाअिग चायग	पक्षी विशेष
चातुर्थिक	चाउत्थिय	चौथिया	रोग विशेष, चौथे दिन पर होने वाला ज्वर
चातुर्मास	चाउमास चाउम्मास	चौमासा	चौमासा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
चातुर्मासी	चाउम्मासी	चौमासी	चारमास-संबंधी
चातुर्याम	चाउज्जाम	चौजाम	चार महाव्रत
चातुर्वर्ण	चाउवन्न चाउव्वाण	चौवन्न	चारवर्ण वाला, चार प्रकार वाला
चापल	चावल	चपलता	चंचलता
चापल्य	चावल्ल, चाउल्ल	चौल	चहल पहल, चपल
चामर	चामर, चांवर	चंवर	चँवर, वाल-व्यजन
चामुण्डा	चाउंडा	चाउँडा, चौंड़ा	स्वनामख्यात देवी
चारण	चारण	चारन	१ आकाश में गमन करने की शक्ति रखने वा जैन मुनियों की एक जाति २ जाति विशे
चालन	चालण	चालन	चलना, हिल
चालनी	चालणी	चलनी	आटा छानने पात्र
	चास (दे)	चास	चास, हल, रित भूमि खेती
चि	चिण	चिन	इकट्ठा कर
चिकुर	चिउर, चिहुर	चिउर, चिहुर	केश, वाल
	चिक्क (दे)	छींक	स्तोक, थो
चिक्कन	चिक्कण	चीकना, चिकना	चिकना
चिञ्चा	चिंचा	चींच	इमली का
चित	चिणिअ	चिना	इकट्ठा कि
चितका	चिपगा		
चिता	चिपका	चिता	मुर्दे को लिए च लकडि
चित्त	चित्त	चित	चित्त, वि
	चित्तल (दे)		विभूति
चित्रक	चित्तअ	चीता	चीता
चित्रल	चित्तल	चितला	चितल

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
चित्रशालिका	चित्तसारी	चितसारी	चितसारी
चिनोति	चिणइ	चिने	चिने
चिन्तनिका	चितणिया	चितनी	याद करना, चितन करना
चिन्तित	चितिअ, चितिय	चींता, चीता	सोचा हुआ
चिह्न	चिण्ह	चिन्ह	निशानी
चिपिट	चिमिट्ठ चिमिढ	चिपटा, चपटा	चपटा, बैठा हुआ
चिबुक	चिवुअ	चिवू	होठ के नीचे का अवयव, ठोड़ी
चिर्भिट	चिब्भड	चिवड	खीरा, ककडी
	चिरिरिही (दे)	चिरहिड़ी	गुंजा, घुंगचीं
	चिल्ला (दे)	चील	पक्षी-विशेप
	चिल्लूर (दे)	चीलुर	मूसल, एक प्रकार की मोटी लकडी, जिससे धान आदि कूटे जाते हैं
चीत्कार	चिक्कार	चीकार	चिल्लाहट,चिघाड़
चीर	चीर	चीर	वस्त्र-खण्ड
चीरी	चीरी	चीर	वस्त्र-खन्ड
चूचुक	चूचुय	चूची	स्तन का अग्र भाग
	चुंचुमालि (दे)		अलस, आलसी
	चंचुलि (दे)	चूंचली, चोंच	चोंच
	चुप्पालय (दे)	चौपाल	गवाक्ष, वातायन
चुम्बन	चुंवण	चूमन, चूमना	चुम्वन, चूमना
चुम्बित	चुंविअ	चूमा	चुम्वा लिया हुआ
	चुरिम (दे)	चूरमा	खाद्य विशेप
चुल्लि	चुल्लि चुल्ली	चूल्हि, चूल्हा	चूल्हा जिसमें आग रख कर रसोई की जाती है
चुलुक	चुलुअ	चुल्लू	चुल्लू

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
चूडा	चूला	चूला	चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा
चूर्णन	चूरण	चूरना	चूरना
चूर्ण, चूर्णित	चूरिअ	चूरा	चूर-चूर किया हुआ
चूर्ण	चूर	चूरा	चूरा
चूर्ण	चुण्ण	चून	चून
चूर्ण	चुण्ण	चून	चून
चूर्णक	चुरंअ	चूरा	चूरा
चेट, चेटक	चेड, चेडग चेडय	चेर, चेरा	दास, नौकर
चेटक	चेडअ	चेरा, चेला	दास, चेला
चेटिका	चेडिआ चेरिया	चेरी	दासी, चेली
चेटी	चेडी	चेरी	दासी
चेल	चेल, चेलय	चेल, चोल	वस्त्र, कपडा
चेष्टा	चेट्ठा	चेठा	प्रयत्न
चैत्र	चेत्त, चइत्त	चैत	चैत्र मास
	चोक्ख (दे)	चोखा	चोखा, शुद्ध
	चोट्टी (दे)	चोटी	शिखा
	चोप्पाल (दे)	चौपाल	वरण्डा
चोरक	चोरग	चोर	चुराने वाला
चोरकीट	चोरकीड	चोरकीडा	विष्टा में से उत्पन्न होने वाला कीट
	चोलअ (दे)	चोला	कवच
चौर	चोर	चोर	चोर
चौरिका	चोरिअ, चोरिआ		चोरी, अपहरण
चौरी	चोरी		अपहरण, चोरी
चौर्य	चोरिअ, चोरिय		अपहरण, चोरी
च्यवन	चयण, चवण,	चुवन, चूना	१ मरण, २ पतन
च्युत	चुअ	चूआ	टपका गिरा
च्युतः	चुक्क	चूका	भूला, चूका

प्रा०	हि०	अर्थ
छइल (दे) छइल्ल	छैल	विदग्ध, चतुर
छगण (दे)	छगन	गोबर
छगणिया (दे)	छाना	कंडा
छगल	छगल	छाग, अज
छच्छुंदर (दे)	छछूंदर	छछूंदर
छडा (दे)	छडा	विद्युत्, विजली
छट	छींट, छींटा	जल का छींटा
छंटा (दे)	छींटा	सींचना
छत्त	छाता	छाता
छत्तार	छत्तार	छाता वनाने वाला
छत्ति	छत्ती	छाता वाला
छंद	छंद	इच्छा, मरजी
छण्ण	छाना	गुप्त, प्रच्छन्न
छप्पत्तिया (दे)	चपत	थप्पड़
छड्डण	छांडना	परित्याग
छड्ड	छांड	वमन करना
छंडिय	छांडा	परित्यक्त
छलिअ (दे)	छलिया	चालाक
छव्विअ (दे)	छाया	आच्छादित
छागल	छागल	अज-संबंधी
छागलिय	छागली	अजा-पालक
छाली	छाली, छेरी	वकरी
छाण	छान	धान्य वगैरह को छानने का उप-करण
छायण छायणी	छावन छावनी	छाना, पड़ाव
ढंकण (दे)	ढक्कन	ढकना
ढंकणी (दे)	ढकनी	पिधानिका
छाय	छाना	आच्छादन करना
छाइअ	छाया	आच्छादित हुआ
छासी (दे)	छाछ	छाछ
छिक्क (दे)	छींक	छींक

सं०	हि०		प्रा०	अर्थ
		छिछोली (दे)	छिछोली	छोटा जल-प्रवाह
		छिण्णा (दे)	छिना	कुलटा
		छिण्णाल (दे)	छिनाल	जार, उपपति
		छिण्णालिआ, छिण्णाली (दे)	छिनाली	असती, कुलटा
छिद्		छिद	छेद	छेदना
छिम्पक		छिपय	छींपी	कपड़ा छापने वाला
		छिल्ला (दे)	छीलर	छोटा तालाब
		छिहंडअ (दे)	छिहंडा	दही का बना हुआ मिष्टान्न, सिखंड
छुट्		छुट्ट	छूट	छूटना
छुटित		छुट्ट	छूटा	छूटा हुआ
		छुट्ट (दे)	छोटा	छोटा
		छुरमड्डि (दे)	छुरमाडि	नाई
		छेंडी (दे)	छेंड़ी	छोटी गली
छेद		छेअ	छेअ	नाश, छेद
छेदन		छेअण	छेअन	खण्डन, छेदना
		छेल, छेलय, छेलग (दे)	छेलिया	बकरा
		छोइआ (दे)	छोई	छिलका
छोटन		छुट्टण	छूटन	छुटकारा
		छोयर (दे)	छोकरा	छोटा लड़का
		छोहर (दे)	छोहरा	छोटा
जघन		जहण	जहन	कमर के नीचे का भाग
जङ्गल		जंगल	जंगल	निर्जल प्रदेश
जङ्घा		जंघा	जांघ	जांघ
जटा		जडा	जड़ा (जरा)	सटे हुए बाल
जटावत्		जडाल	जड़ा	जटाधारी
जटिन्		जडि	जड़ी	जटावाला
		जड्डा (दे)	जाड़ा	शीत
जड		जड	जड़	अचेतन
जनन		जणण	जनन	जन्म देना

प्रा०	हि०	अर्थ
जणी	जनी	स्त्री, नारी
जंबुअ, जंबुग	जंबू	सियार
जंबू	जामुन	जामुन का पेड़
जेक्कार	जयकार	'जय-जय' आवाज
जज्जर	जाजर	जीर्ण
जज्जरिय	जाजरा	जीर्ण किया हुआ
जलहर	जलहर	जल समूह
जलरंकु	जलरंकु	पक्षी-विशेष, ढेंक
जलवाअस	जलवायस	जल-कौआ
जलसाला	जलसाला	पानी पिलाने का स्थान
जलूगा, जलूया	जोंक	जन्तु-विशेष, जोंक
जंप	जंप	बोलना, बकना
जंपण	जंपन	उक्ति, बकवास
जसद	जस्ता	धातु-विशेष
जहणूसव, जहणूसुअ (दे)	जहनूसा	स्त्री का जांघिया, पेटीकोट
जग्गण	जागरन	जागना
जग्गिअ	जागा	जगा हुआ
झलझल	झलझल	झलकना
झलक्किअ	झलका	भस्मीभूत, चमका
जाणु	जानु	घुटना
जामाउ, जामाइ, जामाउअ	जमाई	जामाता, लड़की का पति
जार	जार	उपपति
जालघरग	जालघर	गवाक्ष वाला मकान
जालपंजर	जालपंजर	गवाक्ष
जिण्हु	जिण्हु	विजयी
जिब्भा, जीहा, जिब्भिया	जीभ, जीह, जिभिया	जीभ
जिण्ण, जुण्ण	जीरन, जूना	पुराना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
जीव	जीअ	जीउ	जीव, प्राण
जीवा	जीवा, जीआ	जीया, जिया	धनुष की डोरी
जीविका	जीविआ	जीविया	आजीविका
जीवित	जीविअ	जिया	जो जिन्दा हो
जृम्भा, जृम्भिका	जंभा, जंभिया	जँभाई	जंभाई
जेमन	जिमण	जेंवन, जीमन	भोजन
जेमन	जेमावण	जिमावन	भोजन कराना
ज्येष्ठ	जिट्ठ	जेठ, जेठा	बड़ा
ज्येष्ठानी	जिट्ठाणी	जिठानी	बड़े भाई की पत्नी
ज्येष्ठिका (जेष्ठा)	जिट्ठआ जिट्ठा	जेठी	बड़ी
ज्योतिस्	जोइस	जोइस	प्रकाश
ज्योत्स्ना	जोण्हा	जुन्हा, जुन्हाई	चन्द्र-प्रकाश
ज्यौतिषिक	जोइसिअ	जोइसी	ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता
ज्यौत्स्न	जोइसिण	जोइसिन	शुक्ल पक्ष
ज्वलन	जलण	जलन	दाह
ज्वलित	जलिअ	जला	जला हुआ
ज्वालन	जलावण	जलावन	जलाना
ज्वाला	जाला, झाला	झल	झल, अग्नि-शिखा
	झरंक, झरंत (दे)	झरंक	तृण का बनाया हुआ पुरुष, नग्ना
झष	झस	झख	मछली
झषक	झसय	झखी	छोटी मछली
झाट	झाड	झाड़	लता-गहन, झाड़ी
झाटन	झाडण	झाड़न	क्षीणता, झाड़ना
	झामर (दे)	झामरा	बूढ़ा
	झामिअ (दे)	झामा	दग्ध
	झिंखण (दे)	झींखना	गुस्सा करना
	झिंगिर, झिंगिरड (दे)	झींगुर	झींगुर
	झिमिअ (दे)	झिमी	भूखा

प्रा०	हि०	अर्थ
झिझिणी (दे)	झींझनी	एक प्रकार का पेड़
झिझरी	झुंझुनू	
झिरिड (दे)	झिरड़ी झिरी	जीर्ण कूप
झिलिअ (दे)	झेला	झेला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो
झिल्लिआ	झिल्ली	झींगुर
झुठ्ठ (दे)	झूठ	झूठ
झुंपडा (दे)	झोंपड़ा	झोपड़ा
झुल्लण (दे)	झूलना	छन्द-विशेष
झोट्टी (दे)	झोटो	अर्ध-महिषी
झोडप्प (दे)	झोडप	सूखे चने का शाक
झोंडलिआ (दे)	झोंडली	रासक के समान एक प्रकार की क्रीड़ा
झोलिआ झोलिअ		झोली, थैली
टक्कर (दे)	टक्कर	ठोकर, शृंग से शृंग का आ[घात]
टंक [दे]	टंक, टाँक	जलाशय,
टंक	टंक, टांक	सिक्का, टाँ[की]
टंकिअ	टांका	टांकी से [illegible] हुआ
टार [दे]	टार	छोटी घोड़ा
टिक्क [दे]	टीका	टीका, तिलक
टिप्पणग	टीपन	तिरस्करण, खोटी टीका
टिप्पी [दे] टिंबरु [दे] टिम्बरुअ	टीपी, टीप टिंबरु, टिम्बरु	टीका, तिलक तेंदू का पेड़
टुंट [दे]	टोंटा, टूंटा	छिन्न-हस्त
टुंबअ [दे]	टूंबा	आघात, ठूंसा
टेक्कार [दे]	टेकर	टेकरी, स्थल निचे

सं०	प्रा०	हि०
जीव	जीअ	जीउ
जीवा	जीवा, जीआ	जीया, जिया
जीविका	जीविआ	जीविया
जीवित	जीविअ	जिया
जृम्भा जृम्भिका	जंभा जंभिया	जँभाई
जेमन	जिमण	जेंवन, जीमन
जेमन	जेमावण	जिमावन
ज्येष्ठ	जिट्ठ	जेठ, जेठा
ज्येष्ठानी	जिट्ठाणी	जिठानी
ज्येष्ठिका (जेष्ठा)	जिट्ठिआ जिट्ठा	जेठी
ज्योतिस्	जोइस	जोइस
ज्योत्स्ना	जोण्हा	जुन्हा, जुन्हाई
ज्योतिषिक	जोइसिअ	जोइसी
ज्यौत्स्न	जोइसिण	जोइसिन
ज्वलन	जलण	जलन
ज्वलित	जलिअ	जला
ज्वालन	जलावण	जलावन
ज्वाला	जाला, झाला	झल
	झरंक झरंत (दे)	झरंक
झष	झस	झख
झषक	झसय	झसी
झाट	झाड	झाड़
झाटन	झाडण	झाड़न
	झामर (दे)	झामरा
	झामिअ (दे)	झामा
	झिखण (दे)	झींखना
	झिगिर झिगिरड (दे)	झींगुर
	झिझिअ (दे)	झिझी

प्रा०	हि०	अर्थ
डित्थ	डीथ	काष्ठ का बना हाथी
डिंभिया	डिंभी	छोटी लड़की
डुंगर (दे)	डूंगर	पर्वत
डुंघ [दे]	डुंघ	नारियर का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम में

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
तरीतृ	तरिउ	तैरू, तैरऊ	तैरने वाला
तरुणिमन्	तरुणिम	तरुनाई	यौवन, जवानी
तर्कु	तक्कु	ताकू, तकुवा	सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ
तर्जन	तज्जण	ताजन	तिरस्कार, भर्त्सन
तर्जनी	तज्जणी	ताजनी	प्रथम अंगुली
तर्णक	तण्णय	तना	वत्स, बछड़ा
तल्	तल	तल,	तलना, भूंजना
तल	तल	तल, ताल	ताड़ का पेड़
तलन	तलण	तलन	तलना, भूंजना
	तलपत्त (दे)	तलपत्ता, तलपतिया	कान का आभूषण-विशेष
	तलिआ, तलिगा (दे)	तलिया, तरिया	जूता
तलित	तलिअ	तला	तला हुआ
तल्प	तप्प	ताप, टाप	शय्या, बिछौना
तव	प्रा. तह, (अप) तउ	ते, तो, तोरा, तोरा, तेरे, तेरा	
तष्ट	तट्ठ	ताठ, ताठा	छिला हुआ
तस्कर	तक्कर	ताकर	चोर
तस्य	तस्स	तास, तासु	तिस, उसका
ताटङ्क	ताडंक	ताडँग, टोंटी	कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल
ताडन	ताडण	ताड़ना	ताड़ना, पीटना
ताडी	ताडी	ताड़ी	वृक्ष-विशेष
ताण्डव	तंडव	तंडव	उद्धत नाच
तादृश्	तइस (अप)	तैसा	वैसा
तान्त	तंत	ताँत	खिन्न, ग्लान्त
तान्त्रिक	तंतिय	ताँती	वीणा बजाने वाला
ताप	ताव, ताअ	ताउ, ताव	गरमी
तापिका	ताविआ	तविया, तइया	तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र
तापित	ताविअ	ताया	तपाया हुआ
ताम्बूल	तंबोल	तंबोल	पान

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
तरीतृ	तरिउ	तैरू, तैरक	तैरने वाला
तरुणिमन्	तरुणिम	तरुनाई	यौवन, जवानी
तर्कु	तक्कु	ताकू, तकुवा	सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ
तर्जन	तज्जण	ताजन	तिरस्कार, भर्त्सना
तर्जनी	तज्जणी	ताजनी	प्रथम अंगुली
तर्णक	तण्णय	तना	वत्स, बछड़ा
तल्	तल	तल,	तलना, भूंजना
तल	तल	तल, ताल	ताड़ का पेड़
तलन	तलण	तलन	तलना, भूंजना
	तलपत्त (दे)	तलपत्ता, तलपतिया	कान का आभूषण-विशेष
	तलिआ, तलिगा (दे)	तलिया, तरिया	जूता
तलित	तलिअ	तला	तला हुआ
तल्प	तप्प	ताप, टाप	शय्या, बिछौना
तव	प्रा. तह, (अप) तउ	ते, तो, तोरा, तोरा, तेरे, तेरा	
तष्ट	तट्ठ	ताठ, ताठा	छिला हुआ
तस्कर	तक्कर	ताकर	चोर
तस्य	तस्स	तास, तासु	तिस, उसका
ताटङ्क	ताडंक	ताडँग, टौंटी	कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल
ताडन	ताडण	ताड़ना	ताड़ना, पीटना
ताडी	ताडी	ताड़ी	वृक्ष-विशेष
ताण्डव	तंडव	तंडव	उद्धत नाच
तादृश्	तइस (अप)	तैसा	वैसा
तान्त	तंत	तांत	खिन्न, क्लान्त
तान्त्रिक	तंतिय	तांती	वीणा बजाने वाला
ताप	ताव, ताअ	ताउ, ताव	गरमी
तापिका	ताविआ	तविया, तइया	तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र
तापित	ताविअ	ताया	तपाया हुआ
ताम्बूल	तंबोल	तंबोल	पान

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
तिमिष	तिमिस	तिमस	एक प्रकार का पौधा, पेठा
तिमी	तिमी	तिमी	मत्स्य की एक जाति
तिरश्चीन	तिरिच्छ	तिरछा	१ तिर्यक्गत २ तिर्यक् संबंधी
तिरस्करिणी	तिरक्करिणी, तिरक्खरिणी	तिरकरिणी, तिरखरिणी	यवनिका परदा
तिरस्कार	तिरक्कार	तिरकार	तिरस्कार
तिर्यक्	तिरिअ, तिरिअंक, तिरिक्ख, तिरिच्छ	तिरिय, तिरिक, तिरखा, तिरछा	वक्र, बांका, तिरछा
तिल	तिल	तिल	स्वनाम प्रसिद्ध अन्न-विशेष
तिलकुट्टी	तिलकुट्टी	तिलकुटी	तिल की बनी हुई भोज्य वस्तु
तिलतैल	तिलेल्ल	तिलेल	तिल का तेल
तिल-पर्पटिका	तिलपप्पडिया	तिलपापड़ी	एक खाद्य-विशेष
तिलमल्ली	तिलमल्ली	तिलमली	एक खाद्य-विशेष
तिलसंगलिका	तिलसंगलिया	तिलसांगरी	तिल की फल
तिल्ल	तिल्ल	तिल्ल, तील	छन्द-विशेष
	तिविडा (दे)	तिविरा, तिवरा	सूची, सुई
तीमन	तीमण	तीमन	कढ़ी,खाद्य-विशेष
तीमित	तीमिअ	तीमा	आर्द्र, गीला
तीरित	तीरिय	तीरा	परिपूर्ण किया हुआ
	तुक्खार (दे)	तोखार, तुखार	घोड़े की जाति
तुङ्गार	तुंगार	तुंगार	अग्निकोण का पवन
	तुंगी (दे)	तुंगी, तोंगी	रात
तुण्ड	तुंड	तूंड	मुख
तुन्द	तुंद	तोंद	उदर, पेट
तुन्दिल	तुंदिल, तुंदिल्ल	तोंदिला	बड़े पेट वाला

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
तुन्नन	तुण्णण	तुनन, तुनना	फटे हुए वस्त्र का संधान
तुन्नवाय	तुण्णाग तुण्णाय	तुन्ना	वस्त्र को साँधने वाला, रफू करने वाला
तुन्नित	तुण्णिय	तुना	रफू किया हुआ
	तुप्प (दे)	तूप, तुप्पा	१ कौतुक २ सरसों, धान्य-विशेष ३ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म पात्र
तुभ्यम्	तुज्झ	तुझ	तुझ
तुम्ब	तुंब	तूंबा, तौंबा	तुम्बी, अलाबु
तुम्बा	तुंबा	तूंबा, तौंबा	लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद्
तुम्बी	तुंबी	तूंबी, तौंबी	तुम्बी, अलाबु
तुरग	तुरय	तुरव, तुरअ	घोड़ा
तुरङ्गिका	तुरंगिआ	तुरंगी	घोड़ी
	तुरु (दे०)	तुरई,	तूर नामक बाजा
तुरुष्क	तुरक्क	तुर्की	तुर्की, देश-विशेष
तुरुष्की	तुरुक्की	तुर्की	लिपि-विशेष
	तुलग्गा (दे)	तोलगा, तुलगा	यदृच्छा, स्वेच्छा
तुलन	तुलण	तुलन, तोलन	तौलना, तोलना
तुलसिका	तुलसिआ	तुलसी	तुलसी
तुलित	तुलिअ	तुला	उठाया हुआ, तोला हुआ
तुल्य	तुल्ल	तुल ,तूल	समान, सरीखा
तुवर	तुअर	तूर, तुअर	धान्य-विशेष
तुवरी	तुवरी	तुअरी	दाल-विशेष, अरहर
तुष	तुस	तुस	भुसी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
तुष्ट	तुट्ठ	तूठा	संतुष्ट
तुष्टि	तुट्ठि	तूठि	संतोष, खुशी
तुष्णीक	तुण्हिअ तुण्हिक्क	तुन्ही, तून	मौन रहा हुआ
तुहिन	तुहिण	तुहिन	हिम, तुषार
तूण	तोण	तून	तरकस, भाथा
तूणा	तूणा	तूना, तुना	वाद्य-विशेष
तूणावत्	तूणइल्ल	तुनैल	तूणा नामक वाद्य बजाने वाला
तूणीर	तोणीर	तूणीर, तूनीर	शरधि, तरकस
तूर्य	तुरिअ, तूर	तुरी, तुरई	वाद्य, वादित्र
तूल	तूल	तूल	रुई
तूलिका तूली	तूलिआ तुली	तूली तुली	रुई से भरा मोटा बिछौना २ तस्वीर बनाने की कलम
तूलिकावत्	तुलिल्ल	तुलील	तस्वीर बनाने की कलम वाला
तृण	तण	तन, तिन	घास, तिनका
तृतीय	तिइज्ज, तिइय	तीजा	तीसरा
तृतीया	तइआ, तईजा	तीज	तिथि-विशेष, तीज
तृप्त	तित्त	तित्त, तिरपित	तृप्त, संतुष्ट
तृप्ति	तित्ति	तित्ति, तिपति	संतोष
तृषा	तिसा	तिसा	प्यास, चाह
तृषित	तिसाइय तिसिय	तिसाया	तृषातुर, प्यासा
तृष्णा	तण्हा	तिहा	प्यास
तेजन	तेअण	तेयन	तेज करना, पैनाना
तेजस्	तेआ	तेया, तेहा	१ उत्तेजन २ त्रयोदशी तिथि
	तेड्ड (दे)	तेड, तेड्ड टिड्ड, टिड्डी	शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्डी
तैनिश	[illegible]णिस	तेनिस	तिनिश वृक्ष-सम्बन्धी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
तैल	तेल्ल	तेल	तेल, तिल का विकार
तैलिक	तेल्लिअ	तेली	तेली
तैलाटी	तेलाडी	तेलाड़ी	कीटविशेष
तोत्र	तोत्त	तोद, तोत	प्रतोद, बैल को हाँकने का बांस का आयुध-विशेष
तोदन	तोडण	तोडन, तोड़न	व्यथा, पीड़ाकरण
तोरण	तोरण	तोरन	१ बन्दनवार, फूल या पत्तों की माला जो उत्सव में लटकाई जाती है
तोलन	तोलण	तोलन	तोलना
तोलित	तोलिय	तोला	तोला हुआ
तोल्य (तौल)	तोल्ल	तोल, तौल	तौल, वजन
तोष	तोस	तोस	संतोष, खुशी
तोषित	तोसविअ तोसिअ	तोसा	खुश किया हुआ
त्वत्	तुह	तुइ	तुम
त्वदीय	तुहार (अप) तुम्हकेर	तुहार तुइय, तुम्हारा	तुम्हारा
त्वरा	तुर, तुरा	तुर, तुरा	शीघ्रता
त्वरित	तुरिअ	तुरंत, तुरत	तुरंत
त्वादृश	तयारिस	तुमसा	तुम जैसा, तूम्हारी तरह का
त्रयस्त्रिंश	तेत्तीसइम	तेतीसवां	तेतीसवां
त्रयस्त्रिंशत्	तेतीस	तेतीस	तेतीस
त्रयी	तई	तई	तीन का समुदाय
त्रयोदश	तेरसम	तेरहवां	तेरहवां
त्रयोदशन्	तेर, तेरस	तेरह	तेरह
त्रयोदशी	तेरसी	तेरसी	१ तेरहवीं, २ तिथि-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
त्रयोविंशति	तेवीस	तेईस	तेईस
त्रस्	डर	डर	डरना
त्रसर	टसर	टसर	टसर, वस्त्र
त्रास	तास	तास, ताह	भय, डर
त्रासन	तासण	तासन ताहन	त्रास उपजानेवाला
त्रासित	तासिअ	तासा (तास्या)	जिसको त्रास उपजाया गया हो
त्रि	ति, ते	तीन	तीन,संख्या-विशेष
त्रिअशीति	तेआसी	तियासी, तेयासी	तिरासी
त्रिअशीत	तेआसीइम	तियासीवां,तेयासीवां	तियासीवां
त्रिक	तिअ, तिरअ	तिया, तिराहा	१ तीन का समुदाय २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों
त्रिचत्वारिंशत्	तेआलीस	तियालीस,	तिआलीस
त्रिदण्डिन्	तिदंडि	तिदंडी	संन्यासी, सांख्य मत का अनुयायी साधु
त्रिदिव	तिदिव	तिदिव	स्वर्ग, देवलोक
त्रिधा	तिहा	तिहा	तीन प्रकार से
त्रिनवति	तिणउइ	तिरानवे	तिरानवे, संख्या-विशेष
त्रिपञ्चाशन्	तेवण्ण, तेवन्न	तेवन, तेपन	तिरपन
त्रिपथगा	तिवहआ	तिवहा	गंगा नदी
त्रिपदी	तिवई	तिवई	१ तीन पदों का समूह २ गति-विशेष
त्रिपर्ण	तिवरण	तिवान, तिपान	पलाश वृक्ष
त्रियामा	तिजामा	तिजामा	रात्रि
त्रिवर्णी	तिवण्णी	तिवनी	एक महौषधि
त्रिवली	तिवली	तिवली	चमड़ी की तीन रेखाएँ
त्रिंश	तीसइम } तीसम }	तीसवां	तीसवां

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
त्रिंशत्	तीस, तीसआ तीसइ	तीस तीसा	तीस
त्रिंशिका	तीसिया	तीसी	तीस वर्ष के उम्र की स्त्री
त्रिषष्टि	तेसट्ठि	तेसठ, तिरेसठ	तिरसठ
त्रिसन्ध्य	तिसंझ, तेसंझ	तिसांझ	प्रभात, मध्यान्ह, और सायंकाल का समय
त्रिसप्तति	तेवत्तरि, तिहत्तरि	तिहत्तर	तिहतर
त्रिसरा	तिसरा	तिसरा	मच्छी पकड़ने का जाल-विशेष
त्रिसरिक	तिसरिय	तिसरी	१ तीनसरा वाला हार, तिलड़ी २ वाद्य-विशेष
त्रुट्	टुट्ट	टूट	टूटना
त्रुटि	तुडि	तुटि, तुडि	दोष
त्रुटित (त्रुट्ट)	तिउट्ट, तुट्ट	टूटा	टूटा हुआ
त्रैमासिक	तेमासिअ	तेमासी	१ तीन मास में होने वाला २ तीन मास-सम्बन्धी
त्रैलोक्य	तइलोक्क, तिलुक्क	तिलोक, तेलोक	तीन लोक, स्वर्ग-मर्त्य-पाताल
त्रोटक	तोटिअ	तोटअ, तोटा	छन्द-विशेष
त्रोटन	तुट्टण	तोड़ना	विच्छेद, पृथक्करण
त्रोटित	तोडिअ	तोड़ा	तोड़ा हुआ
	थउड्ड (दे)	थोड, थुड्ड	भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा
	थर (दे)	थर	दही की तर
	थरथर, थरहर (दे)	थरथर, थरहर	थरथराना, कांपना
	थरहरिअ (दे)	थरहरा	कम्पित
	थलहिगा, थलहिया (दे)	थलहिया	मृतक-स्मारक

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दण्ड	डंड	डंडा	लाठी
दण्डनायक	डंडणायग	दंडनाइ, डंडनाइ	१ दण्ड-दाता २ सेनापति
दण्डयुद्ध	डंडजुज्झ	दंडजुज्झ,डंडजुज्झ	यष्टि-युद्ध
दण्डरास	डंडरास	डडरास	एक प्रकार का नाच
दण्डलात	डंडलत्तिय	डंडली	दण्ड देने वाला
दत्त	दिण्ण	दीन्हा	दिया हुआ,वितीर्ण
दत्तक	दिन्नय	दत्तअ, दीन	गोद लिया हुआ पुत्र
दत्ति	दत्ति	दाति	एक वार में जितना दान दिया जाये
दद्रु	दद्द	दाद	दाद, कुष्ठ रोग
दधि	दधि	दही	दही
दन्त	दंत	दाँत	दांत, दशन
दन्तधावन	दंतधावण,(अप) दतउन	दतौन, दाँतुन	दांत साफ करने की वस्तु
	दंतवण (दे)	दतौन, दाँतुन	दंत-शुद्धि
	दंताल (दे) दंताली (दे)	दंताल,दांतली	घास काटने का हथियार
	दंतिअ (दे)	दांती, दंतिया	शशक, खरगोश
दन्तिका	दंतिया	दांतिया, दंतिया	वृक्ष-विशेष
दन्तुर	दंतुर	दाँतुर, दँतूरा	उन्नत दांत वाला, जिसके दाँत ऊबड़-खावड़ हों
दमन	दमण	दमन, दंवन	निग्रह
दमनक	दमणक दमणग दमणय	दौंना	दौना, सुगन्धित पत्रवाली वनस्पति विशेष
दयित	दइअ	दइय	१ प्रिय, प्रेमपात्र २ अभीष्ट
दयिता	दइआ	दइया	स्त्री, प्रिया
दर	दर	डर	भय, डर
दरिका	दरिआ	दरी	कन्दरा, गुफा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	थविआ (दे)	थविया	प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगाया गया छोटा काष्ठ-विशेष
	थिल्लि (दे)	थिल्ली	यान-विशेष १ दो घोड़े की बग्घी २ दो खच्चर आदि से वाह्य यान
	थाह (दे)	थाह	स्थान, जगह
	थुलम (दे)	थुलम	पट-कुटी, तंबू
	थूण (दे)	घोड़	घोड़ा
	थूरी (दे)	थूरी	तन्तुवाय का एक उपकरण
	थूह (दे)	थूह, थूहा	१ प्रासाद का शिखर २ वल्मीक
	थेवरिअ (दे)	थेवरी	जन्म समय में बजाया गया वाद्य
	थोहर (दे)	थोर	थूहर का पेड़
दंश	डंस	डंस	डसना, काटना
दंशन	दंसण	डसन, डसना	सांप द्वारा दांत से काटना
दंष्ट्रा	दाड्ढा	दाढ़	बड़ा दाँत, दन्त-विशेष
दंष्ट्रिन	दाढि, दाड्ढि	दाढ़ी	१ दाढ़ वाला २ सूअर
दक्षिण	दक्खिण, दच्छिण	दखिन, दच्छिना	१ दक्षिण दिशा २ दान
दग्ध	दड्ढ	दाढ़ा	जला हुआ
	दडवड (दे)	दड़वड़	शीघ्रता की आवाज
	दड्डि (दे)	दड़ी	वाद्य-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दामन्	दाम	दाम	१ माला २ रस्सी
दाय	दाअ	दाइ	दान
दायिक	दाइअ	दाई	पैतृक सम्पत्ति का हिस्सेदार
	दार (दे)	दार	कटि-सूत्र, काची
दार	दार	दारा	स्त्री, महिला
दारक	दारय, दारअ	दारा, दारग	विदारण करने वाला, विध्वंसक
	दारिआ (दे)	दारी	वेश्या, वारांगना
दारिका	दारिआ	दारी	लड़की
दारित	दारिअ	दारा	विदारित, फाड़ा हुआ
दारुपुत्रक	दारुपुत्तय	दारुपूत	कठपुतला
दालि	दालि	दाल	दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूंग आदि अन्न
दालिका	दालिया	दालिया, दाल	दाल
दाहन	दाहण	दाहन	जलाना, भस्म करना
दिगन्त	दिअंत	दिअंत, दिगंत	दिशा का प्रान्त भाग
दिगम्बर	दिअंबर	दिअंबर	नग्न, वस्त्र रहित जैन साधु
दिग्मोह	दिसामोह दिसिमोह	दिसिमोह दिहिमोह	दिशा का भ्रम
दिग्यात्रा	दिसायत्ता दिसियात्ता दिसियत्ता	दिसिजात दिसाजात	देशाटन, मुसाफिरी
दित्सा	दिच्छा	दिच्छा	देने की इच्छा
दिदृक्षा	दिदिक्खा दिदिच्छा	दिदिच्छा	देखने की इच्छा
दिन	दिण	दिन	दिवस
दिनेन्द्र	दिणिंद	दिनिंद	सूर्य, रवि

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दरिद्र दरिद्रिन् दरिद्रिक	दरिद्द दरिद्दि दरिद्दिय	दरिद, दलिद्द दालदी	निर्धन
दर्दुर	दद्दुर	दादुर	मेंढ़क
दर्दुरी	दद्दुरी	दादुरी	मेंढ़की
दर्प	दप्प	दाप	अहंकार, गर्व
दर्पवत्	दप्पुल्ल	दापुल	अहंकार वाला
दर्पित	दप्पिअ	दापा	अभिमानी
दर्पिन्	दप्पि	दापी	अभिमानी
दर्पिष्ठ	दप्पिट्ठ	दापिठ	अत्यन्त अहंकारी
दर्भ	दब्भ	दाभ	तृण-विशेष, डाभ कुश
दलन	दलण	दलन, दलना	पीसना, चूर्णन
दलित	दलिअ	दला	पीसा हुआ
	दवर (दे)	डउर,डोरा,डोर	डोरा, धागा
	दवरिया (दे)	दाँवरी, डोरी	छोटी रस्सी
दह	डह	डह	जलाना
दहन	डहण	डहन	जलाना
दाक्षिणात्य	दक्खिणत्त	दखिना	दक्षिण दिशा में उत्पन्न
दाक्षिणात्य	दक्खिणिल्ल	दखिनैल	दक्षिण दिशा में स्थित
दाक्षिणेय	दक्खिणेय	दखिनेइ	जिसको दक्षिणा दी जाती हो
दाडिम	दाडिम	दाड़िम	फल-विशेष,अनार
दाडिमी	दाडिमी	दाड़िमी	अनार का पेड़
	दाणि (दे)	दान	शुल्क, चुंगी
दातृ	दाउ	दाऊ	दाता, देने वाला
दात्र	दत्त	दाँता, दंतिया	दांती,घास काटने का हँसिया
दान	दाण	दान	दान, उत्सर्ग
दापन	दवावण	दिवावन, दिवाना	दिलाना
	दामण (दे)	दामन	बंधन, पशुओं को नियन्त्रण में रखने की रस्सी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दरिद्र दरिद्रिन् दरिद्रिक	दरिद्द दरिद्दि दरिद्दिय	दरिद, दलिद्द दालदी	निर्धन
दर्दुर	दद्दुर	दादुर	मेंढ़क
दर्दुरी	दद्दुरी	दादुरी	मेंढ़की
दर्प	दप्प	दाप	अहंकार, गर्व
दर्पवत्	दप्पुल्ल	दापुल	अहंकार वाला
दर्पित	दप्पिअ	दापा	अभिमानी
दर्पिन्	दप्पि	दापी	अभिमानी
दर्पिष्ठ	दप्पिट्ठ	दापिठ	अत्यन्त अहंकारी
दर्भ	दब्भ	दाभ	तृण-विशेष, डाभ कुश
दलन	दलण	दलन, दलना	पीसना, चूर्णन
दलित	दलिअ	दला	पीसा हुआ
	दवर (दे)	डउर,डोरा,डोर	डोरा, धागा
	दवरिया (दे)	दाँवरी, डोरी	छोटी रस्सी
दह्	डह	डह	जलाना
दहन	डहण	डहन	जलाना
दाक्षिणात्य	दक्खिणत्त	दखिना	दक्षिण दिशा में उत्पन्न
दाक्षिणात्य	दक्खिणिल्ल	दखिनैल	दक्षिण दिशा में स्थित
दाक्षिणेय	दक्खिणेय	दखिनेइ	जिसको दक्षिणा दी जाती हो
दाडिम	दाडिम	दाड़िम	फल-विशेष,अनार
दाडिमी	दाडिमी	दाड़िमी	अनार का पेड़
	दाणि (दे)	दान	शुल्क, चुंगी
दातृ	दाउ	दाऊ	दाता, देने वाला
दात्र	दत्त	दाँता, दंतिया	दांती,घास काटने का हँसिया
दान	दाण	दान	दान, उत्सर्ग
दापन	दवावण	दिवावन, दिवाना	दिलाना
	दामण (दे)	दामन	बंधन, पशुओं को नियन्त्रण में रखने की रस्सी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दिवस	दिवह	दीह	दिवस, दिन
दिवसान्ध	दीहंध	दीहंध, दिहांध	दिन को देखने में असमर्थ
दिवा	दिआ	दिआ	दिन, दिवस
दिव्य	दिव्य	दिव्व	१ स्वर्गीय २ उत्तम, सुन्दर
दिश्-गजेन्द्र	दिसागइंद दिसिगइंद	दिसिगइंद	दिग्हस्ती
दिश्चक्र	दिसिचक्क दिसिअक्क	दिसिअक दिसिचक	दिशाओं का समूह
दिश्चक्रवाल	दिसिचक्कवाल	दिसिचकवाल	१ दिशाओं का समूह २ तप-विशेप
दिश्-दन्तिन्	दिसादंति दिसिदंति	दिसिदंति दिहदंति	दिग्-हस्ती
दिश्-दाह	दिसाडाह दिसिडाह दिसीडाह	दिसिडाह	दिशाओं में होने वाला एक तरह का प्रकाश, जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश दीखता है, यह भावी उपद्रवों का सूचक है।
दिश्यात्रिक	दिसायत्तिय दिसियत्तिय	दिसाती	दिशाओं में फिरने वाला
दीर्घ	दीह, दिग्घ	दीह	आयत, लम्बा
दीर्घकालिक	दीहकालिय	दीहकाली	दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरंतन
दीर्घदर्शिन्	दीहदंशि	दीहदस्सी	दूरदर्शी
दीर्घदृष्टि	दीहदिट्ठि	दीहदीठि	दूरदर्शी
दीर्घरात्र	दीहरत्त	दीहरात	लम्बी रात
दीर्घिका	दिग्घिआ, दीहिया	डिग्घी, दीही	वापी, सीढ़ी वाला कूप विशेप
दीप	दीव	दीव	प्रदीप, दिया
दीपक	दीवअ, दीवग	दीवा	प्रदीप, दिया

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दीपन	दीवण	दीवन	प्रकाशन
दीपिका	दीविआ दीवी	दीवी	छोटा दिया
दीप्त	दित्त	दीत	ज्वलित, प्रकाशित
दीप्ति	दित्ति	दीति	कांति, तेज
	दुक्कर (दे)	दुकर, दूकर	माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया गया स्नान
दुःख	दुक्ख	दुक्ख, दुख	कष्ट, पीड़ा
दुःखन	दुक्खण	दूखन, दुखना	दुखना, दर्द होना
दुग्ध	दुद्ध	दूध	दूध
	दुद्दम (दे)	दूदम, दुदम	देवर, पति का छोटा भाई
	दुद्दोली (दे)	दूदोली	वृक्ष-पंक्ति
	दुद्धट्टी दुद्धट्टी (दे)	दूधटी, दुद्धट्टी	प्रसूति के बाद तीन दिन का गो-दुग्ध
	दुद्धवलेही (दे)	दुधलेही	चावल का आटा डालकर पकाया गया दूध
	दुद्धसाडी (दे)	दुधसाड़ी	द्राक्षा मिलाकर पकाया गया दूध
	दुद्धिय (दे)	दूधिय, दूधिया	कद्दू, लोकी
	दुद्धिणिआ दुद्धिणी (दे)	दुधिनिया	१ तैल आदि रखने का भाजन २ तुम्बी
	दुमणी (दे)	दुमनी	सुधा, मकान आदि पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष
दुरक्ष	दुरक्ख	दुरख	जिसकी रक्षा करना कठिन हो
दुरक्षर	दुरक्खर	दुराखर	कठोर वचन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दुरन्त	दुरंत	दुरंत	जिसका अन्त खराब हो
दुरभिगम्य	दुरहिगम्म	दुरहिगम	जो जाने मे कठिन हो
दुराग्रह	दुरग्गह	दुरागह	कदाग्रह
दुराराध	दुराराह	दुराराह	जिसका आराधन दुःख से हो सके।
दुरारोह	दुरारोह	दुरारोह	जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके
दुरालोक	दुरालोअ	दुरालोअ	जो दुःख से देखा जा सके
दुरावह	दुरावह	दुरावह	दुर्धर, दुर्वह
दुराश	दुरास	दुरास	१ दुष्ट आशा वाला २ खराव इच्छा वाला
दुराशय	दुरासय	दुरासय	दुष्ट आशयवाला
दुरासद	दुरासय	दुरासय	१ दुष्प्राप,दुर्लभ १ दुर्जय
दुरित	दुरिअ	दुरिय	पाप
दुरुक्त	दुरुत्त	दूरुत	दो बार कहा हुआ, पुनरुक्त
दुरुत्तर	दुरुत्तर	दुरुत्तर	दुस्तर, अयोग्य जवाब
दुरुत्तार	दुरुत्तार	दुरुतार	दुःख से पार करने योग्य
दुरुद्धर	दुरुद्धर	दुरुहर	जिसका उद्धार कठिनाई से हो
दुरुपचार	दुरुवयार	दुरुवयार	जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो
दुरोदर	दरोअर	दुरोअर	जूआ, द्यूत
दुर्ग	दुग्ग [illegible]	दुग (दुरग)	जहां दु:ख से प्रवेश किया जा सके

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दुर्गन्ध	दुग्गंध	दुगंध दुरगंध	खराब गन्ध
दुर्गम	दुग्गम	दुगम	जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके
दुर्गृह	दुग्घर	दुघर	दुष्ट घर
दुर्ग्रन्थि	दुग्गंठि	दुगांठि	दुष्ट ग्रन्थि
दुर्ग्रह	दुग्गह	दुगह	जिसका ग्रहण दुख से हो सके
दुर्ग्रास	दुग्घास	दुगास	दुर्भिक्ष
दुर्घट	दुग्घड	दुघड़, दूघड़	जो दुःख से हो सके
दुर्घटित	दुग्घडिअ	दुघड़ा	खराब रीति से बना हुआ।
दुर्जन	दुज्जण	दुजन	खल, दुष्ट
दुर्जय	दुज्जय	दुजय	जो कष्ट से जीता जा सके
दुर्जेय	दुज्जेअ	दुजेय	दुख से जीतने योग्य
दुर्दम	दुद्दम	दुदम	दुर्जय, दुर्निवार
दुर्दिन	दुद्दिण	दुदिन	बादलों से व्याप्त दिवस
दुर्धर	दुद्धर	दुधर	दुर्वह
दुर्नय	दुन्नय	दुनय	कुनीति
दुर्निग्रह	दुन्निग्गह	दुनिगह	जिसका निग्रह दुःख से हो सके
दुर्निबोध	दुन्निबोह	दुनिबोध	दुःख से जानने योग्य
दुर्निरीक्ष	दुन्निरिक्ख	दुनिरिख	जो कठिनाई से देखा जा सके
दुर्निवार	दुन्निवार	दुनिवार	जिसका निवारण मुश्किल से हो सके

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दुर्निषण्ण	दुन्निसण्ण	दुनिसन्न	खराब नीति से बैठा हुआ
दुर्बद्ध	दुब्बद्ध	दुबंध	खराब रीति से बँधा हुआ
दुर्बल	दुब्बल	दुबल, दुबला	निर्बल
दुर्बलिक	दुब्बलिय	दुबलिया	दुर्बल, निर्बल
दुर्बुद्धि	दुब्बुद्धि	दुबुधि	दुष्ट बुद्धि वाला
दुर्भग	दुब्भग	दुभग, दुभाग	अभागा
दुर्भाषित	दुब्भासिय	दुभासी	खराब वचन
दुर्भिक्ष	दुब्भिक्ख	दुभिक्ख	दुष्काल, अकाल
दुर्मति	दुम्मइ	दुमइ	दुर्बुद्धि
दुर्मनाय	दुम्मण	दुमन	उद्विग्न होना
दुर्महिला	दुम्महिला	दुमहिला	दुष्ट स्त्री
दुर्मेधस्	दुम्मेह	दुमेह	दुर्बुद्धि
दुर्मोक्ष	दुमोक्ख	दुमोख	जो दुःख से छोड़ा जा सके
दुर्लक्ष	दुल्लक्ख	दुलख	जो कठिनाई से देखा जा सके
दुर्लङ्घ	दुलंघ	दुलाँघ	अलंघनीय
दुर्लभ	दुल्लह'	दुलह, दूलह	जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके
दुर्वसु	दुब्वसु	दुवसु	खराब द्रव्य
दुर्वाक्	दुव्वाय	दुवाय	दुर्वचन
दुर्वात	दुव्वाय,	दुवाय, दुवाउ	दुष्ट पवन
दुर्वादिन	दुव्वाई	दुवाई	अप्रियवक्ता
दुर्व्यसन	दुव्वसण	दुवसन,	खराब आदत
दुःशल	दुस्सल	दुसल	दुर्विनीत
दुःशिक्ष	दुस्सिक्ख	दुसिख	दुष्ट-शिक्षा वाला
दुःशील	दुस्सील	दुसील	दुष्ट स्वभाववाला
दुश्चर	दुच्चर	दुचर	जिसमें दुःख से जाया जा सके
दुश्चार	दुच्चार	दुचार	दुराचारी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दुश्चरिन्	दुच्चारि	दुचारी	दुराचारी
दुश्चिन्तित	दुच्चिंतिय	दुचिंता	खराब चिन्तन
दुश्चीर्ण	दुच्चिण्ण	दुचीन	दुश्चरित,
दुष्कर	दुक्कर	दुकर	जो दुःख से किया जा सके
दुष्करिका	दुक्खरिया	दुखरी, दुखरिया] दुकरी, दुकरिया]	दासी
दुष्कर्मन्	दुकम्म	दुकाम	पाप
दुष्काल	दुक्काल	दुकाल	अकाल
दुष्कुल	दुक्कुल	दुकुल	निन्दित कुल
दुष्कृत	दुक्कड़	दुक्कड़, दूकड़	पाप-कर्म
दुष्कृतिन् } दुष्कृतिक }	दुक्कडि] दुक्कडिय]	दुक्कड़ी, दूकड़ी	दुष्कृत करने वाला, पापी
दुष्क्रन्दिन्	दुक्कंदिर	दुकंदी	अत्यन्त आक्रन्दन करने वाला
दुष्ट	दुट्ठ	दुठ्ठ	दोषयुक्त
दुष्पक्ष	दुपक्ख	दुपाख	दुष्ट-पक्ष
दुष्पति	दुप्पइ	दुपइ	दुष्ट—स्वामी
दुष्पुत्र	दुपुत्त	दुपूत	कुपुत्र
दुष्प्रक्षाल	दुप्पक्खाल	दुपखार	जिसका प्रक्षालन कष्ट-साध्य हो वह
दुष्प्रेक्ष	दुपेच्छ	दुपेख	अदर्शनीय
दुःसाध	दुसाह	दुसाह	दुःसाध्य, कष्ट-साध्य
दुस्तटी	दुत्तडी	दुतडी	खराब किनारा
दुस्तर	दुत्तर	दुतर	दुस्तरणीय
दुस्तार	दुत्तार	दुतार	दुःख से पार करने योग्य
दुस्तुण्ड	दुत्तुंड	दुतूंड	दुर्मुख, दुर्जन
दुस्तोष	दुत्तोस	दुतोस	जिसको संतुष्ट करना कठिन हो

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
दु-स्वर	दुस्सर	दुसुर	खराब आवाज
दुस्सह्	दुसह	दुसह	असह्य
दुहितृ	दुहिआ, धीआ	धीय	लड़की, पुत्री
दुहितृदयित	दुहिआदइअ	धीयदइया	जामाता
दूती	दूई	दूई	दूती, कुटनी
दून	दूण	दून	हैरान किया हुआ
दूरस	दुरस	दुरस	खराब स्वादवाला
दूषक	दूसअ	दूसा	दोष प्रकट करने वाला
दूषण	दूसण	दूसन	दोष, अपराध
दूषिका	दूसिआ	दूसिया	आंख का मैल
दूषिन्	दूसि	दूसी	नपुंसक का एक भेद
दूष्य	दूस	दुस, दुसा, दूस	वस्त्र, कपड़ा
दृढ	दृढ, दिढ	दढ़, दिढ़	मजबूत
दृढमूढ	दडमूढ, दढमूढ	दिढ़मूढ़	नितान्तमूर्ख
दृढित	दढिअ	दिढाया	दृढ़ किया हुआ
दृत	दिअ	दिया	हत, मारा हुआ
दृति	दिइ	दिइ, देई	मसक, चमड़े का जलपात्र
दृषद्	दिसआ	दिसिया	पत्थर, पाषाण
दृष्ट	दट्ठ, दिट्ठ	दीठा	देखा हुआ, विलोकित
दृष्टि	दिट्ठी, दिट्ठि	दीठि	नेत्र, आंख, नजर
देवकहकहक	देवकहकहय	देउकहकहा	देवताओं का कोलाहल
देवकुल	देउल	देउल, देवल	देव-मन्दिर
देवकुलपाटक	देउलवाडय	देलवाड़ा	मेवाड़ का एक गांव
देवकुलिक	देवकुलिय,देउलिय,	देउली	पुजारी
देवकुलिका	देउलिया	देउली	छोटा देवस्थान
देवगृह	देउहर	देहुरा	देवगृह, देवता का मन्दिर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
देवगृहिका	देउहरिया	देहुरी	देहरी, छोटा मन्दिर
देवदूष्य	देवदूस	देवदूस	देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र
देवरपत्नी	देअराणी	देरानी, देवरानी	देवरानी
देवलोक	देवलोग	देवलोय	स्वर्ग
देशक	देसय	देसा, देसी	उपदेशक
देशकाल	देसयाल	देसकाल	प्रसंग, अवसर, योग्य समय
देशना	देसणा	देसना	उपदेश
देशभाषा	देसभासा	देसभासा	देश की बोली
देश्य, दैशिक	देसिअ	देसी	देश में उत्पन्न
दैवकुलिक	देउलिअ	देउली	देवस्थान का परिपालक
दैविक	देविय	देविय	देव-संबंधी
दोलय्	डोल	डोल	डोलना
दोला	डोला	डोला	हिंडोला
दोला (दोलक)	डोला	डोला	डोला
दोषा	दोसा	दोसा	रात्रि, रात
दोस्	दोस	दोस, दोह	हाथ, बाहु
दोहन	दोहण	दोहन	दोहना, दूध निकालना
दोहन पाटन	दोहणवाउण	दोहन बाउन	दोहन-स्थान
दौवारिक	दुवारिअ	दुवारी, दोवारी	द्वारपाल
दौहित्र	दुहित्त	दोहता	लड़की का लड़का
दौहित्रिका	दुहित्तिया	दोहती	लड़की की लड़की
द्यूत	जूअ	जुआ	जुआ
द्रम	दम्म	दाम	सोने का सिक्का
द्रविड	दमिल, दविल	दमिल, द्रविड़	१ एक भारतीय देश २ उसके निवासी
द्रष्ट्ृ	दट्ठु, दिट्ठु, दिक्खु	दिठू, देखू	देखनेवाला, प्रेक्षक
द्रह	दह	दह	बड़ा जलाशय
द्राक्षा	दक्खा	दाख	दाख का पेड़

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
द्राविडी	दविडी	दविड़ी	लिपि-विशेष
द्वार	दुआर, दार	दुआर, वार	दरवाजा
द्वारिका	दुआरिआ	द्वारी	छोटा द्वार, गुप्त द्वार
द्वि	दु	दो	दो, संख्या-विशेष
द्विक	दुअ	दुआ, दूआ	युग्म, युगल
द्विखण्ड	दुखंड	दुखंड	दो खंड, दो विभाग
द्विखुर	दुखुर	दुखुरा	दो खुरों वाला
द्विगुण	दुउण	दुगुन, दून	दूना, दुगुना
द्विगुणित	दुउणिअ	दूना	दुगुना
द्विचक्र	दुचक्क	दुचक	गाड़ी, शकट
द्विजिह्व	दुजीह	दुजीह	१ सर्प, सांप २ दुर्जन
द्वितीय	दुइअ दुइज्ज दुईज	दूज, दूजा	दूसरा
द्विपक्ष	दुपक्ख	दुपाख	दो पक्ष, दो पक्ष वाला
द्विपद	दुपय	दुपाया, दुपहिया	१ दो पैर वाला २ गाड़ी
द्विपदी	दोअई	अ ई, दुअई	छन्द-विशेष
द्विभाग	दुभाग	दुभाग	आधा, दो भाग
द्विभाव	दुब्भाव	दुभाव	विभाग, जुदाई
द्विमात्र	दुमत्त	दुमत्त	दो मात्रा वाला
द्विमुख	दुमुह	दुमुह	एक राजर्षि
द्विमुख	दोमुह	दोमुह	दो मुख वाला
द्विरसन	दुरसण	दुरसन	१ सर्प. सांप २ दुर्जन, दुष्ट
द्विरात्र	दुराय	दुरात	दो रात
द्विरुक्त	दुरुत	दुरूत	दो वार कहा हुआ, पुनरुक्त
द्विरेफ	दुरेह	दुरेह	भ्रमर, भँवरा
द्विषटक	दुच्छक्क	दुछक्का	वारह प्रकार का
द्विस्	दु	दु	वृक्ष, गाछ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
द्वैमासिक	दुमासिय,दोमासिअ,	दुमासी, दोमासी	१ दो मास का २ दो मास-संबंधी
	धरिणआ (दे)	धनिया	धन्या, स्तुतिपात्र स्त्री
	धणी (दे)	धनि, धनी	पति, स्वामी
धनिक	धणिअ	धनी	धनी, धनवान्
धनुष्	धणु धणुही	धनु धनुही	धनुष
धन्य	धणिअ	धनि	धन्यवाद योग्य
धमन	धमण	धमन, धवँन	१ आग में तपाना २ धमनी
धमनि धमनी	धमणि धमणी	धमनी धवंनी	धमनी, नाड़ी
धरणि	धरणि, धरणी	धरनि, धरनी	भूमि
धर्म	धम्म	धम्म, (धरम)	शुभ कर्म
धर्मिष्ट	धम्मिट्ठ	धमिट, धम्मिठ	अतिशय धार्मिक
धर्मेष्ठ	धम्मिट्ठ	धमिठ	धर्म-प्रिय
धवल	धवल, धउल	धौल, धौर	श्वेत, सफेद
धवलार्क	धवलक्क	धौलक, धौलका	ग्राम-विशेष जो, आजकल 'धोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है
धवली	धवली, धउली	धौरी	उत्तम गो
	धसक्क (दे)	धसक	हृदय की धवराहट की आवाज
धाटी	धाडी	धाड़ी	डाकुओं का दल
धातकी	धायइ धायई	धाई	धाय का पेड़
धात्री	धावी	धाइ	उपमाता
धाना	धाणा	धना, धनिया	धनिया,एक जाति का मसाला
धानुष्क	धाणुक्क	धानुक, धानका	धनुर्धर,धनुषनिर्माता
धान्य	धन्न	धान	धान, अनाज
धान्यकीट	धन्नकीड	धान कीड़ा	नाज में होने वाला कीट

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
धान्यपिटक	धन्नपिडग	ध. पिटा, धानपेटा	नाज का एक नाप
धान्यप्रस्थक	धन्नपत्थय	धनपथा धनपता	धान का एक नाप
धावन	धावण	धाना	१ वेग से दौड़ना २ प्रक्षालन, धोना
	धाहा (दे)	धाह	धाह, पुकार, रोना
धिक्कृत	धिक्करिअ	धिक्कारा	धिक्कारा हुआ
धीवर	धीवर	धीवर	मच्छीमार
धृति	धिइ	धिइ	धैर्य
धृष्ट	धिट्ठ	धीठ	धीठ, बेशरम
ध्यातृ	झाउ	झाऊ	ध्यान करनेवाला
ध्यान	झाण	झाण	चिन्ता
ध्याम	झाम	झाम	अनुज्ज्वल
ध्रुव	धुअ	धुअ	निश्चल
नकुल	णउल	नेवला	न्यौला
नकुली	णउली	नेवली	विद्या-विशेष, सर्प विद्या की प्रति-पक्ष विद्या
नक्र	णक्क	नाका	जल जन्तु-विशेष नाका
नक्षत्र	णक्खत्त	नखत	नक्षत्र
नख	णक्ख, णह	नख, न्हौं	नख, नाखून
नखशिखा	णहसिहा	नहक	नाव का अग्रभाग
नखिन्	णक्खि, णही	नखी, नही	सुन्दर नख वाला
नग	णग	नग	नग
नगरी	णगरी	नगरी	छोटा नगर
नग्न	णगिण	ंगा, नगन	नंगा
नटी	णडी	नडी, रंडी	नट की स्त्री
नदी	णई	नई	नदी
नन्दन	णंदण	नंदन	पुत्र
नन्दना	णंदणा	नंदना	पुत्री
नन्दिनी	णंदिणी	नंदिनी	पुत्री, लड़की

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
नप्तृ नप्तृक	णत्तु, नत्ती णत्तुअ	नत्तू, नाती नतुआ	१ पौत्र, पुत्र का पुत्र २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र
नप्त्रिका नप्तृका	णत्तुआ णत्तिआ	नातिनी	१ पुत्र की पुत्री २ पुत्री की पुत्री
नयन	णयण	नैन	आँख
नरनाथ	णरनाह	नरनाह	राजा
नरपति	णरवइ	नरवै, नरवइ	नरेश
नरपाल	णरवाल	नरवाल	भूपाल, राजा
नरलोक	णरलोअ	नरलोय	मनुष्य लोक
नरवरेश्वर	णरवरीसर	नरवरीसर	श्रेष्ठ राजा
नरवृषभ	णरवसय णरवसह	नरवसह	श्रेष्ठ मनुष्य, अङ्गीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष
नरसिंह	णरसिंघ णरसींह	नरसिंघ	उत्तम पुरुष
नरेन्द्र	णरिंद	नरिंद	राजा, नरेश
नरेश	णरीस	नरीस	नरपति
नरेश्वर	णरीसर	नरीसर	नरपति।
नर्तन	णच्चण	नाचन	नाच, नृत्य
नर्तिका	णट्टिया	नट्टि, नटी	नटी, नर्तकी
नवति	णउइ	नव्वै	नव्वै, संख्या विशेष
नवनवति	णवणउइ णवनउइ	निनानवे	निन्यानवे
नवनीत	णवणीअ	लवनी, लौनी	मक्खन
नवनीतिका	णवणीइया	लोनी	वनस्पति-विशेष
नवम	णवम	नउम	नौवाँ
नवरङ्ग नवरङ्गक	णवरंग णवरंगय	नौरंग	१ नया रंग २ कौसुम्भ रंग का वस्त्र
नष्ट	णट्ठ	नाठा	नष्ट

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
नागरिका (नागरी)	णागरिआ णागरी	नागरी	नगर में रहने वाली स्त्री
नाट्यकार	णट्टार	नट्टार	नाट्य करने वाला
नाडी	णाली	नाड़ी, नाली	नाड़ी
नाथ	णाह	नाह	स्वामी, मालिक
नापिता	णाविअ	नाई	नाई
नारङ्ग (नारंगिका)	णारंग, णारंगिआ	नारंग, (नारंगी)	शंतरे का पेड़
नारिङ्ग	णारिंग	नारंगी	नारंगी का फल
नालिकेर	णारिएर णारिएल	नारियल	नारियल का पेड़
नासा	णस्सा	नासा	नासिका
नासिक्य	णासिक्क	नासिक	दक्षिण भारत में एक देश, नासिक
निकटे	णिअडे	नियरे	निकट, समीप
निकर	णिअर	निअर	राशि, समूह, जत्था
निकरण	णिकरण, णिगरण	निगरण	निर्णय
निकष	णिहस, णिघस	निहस	कसौटी
निकुरम्ब	णिउरंब	निउरंब	समूह, जत्था
निकूणित	णिकूणिय	निकूनिया	टेढ़ा किया हुआ
निकृष्ट	णिक्किट्ट	निकढ	अधम, नीच
निखन्	णिहण	निहन	गाड़ना
निगुण	णिगुण	निगुन	गुण-रहित
निचुल	णिचुल	निचुल	वृक्ष-विशेष
निजक	णिअग	निजी	आत्मीय, स्वकीय
नितम्बिनी	णिअंविणी	निअंविनी	सुन्दर नितम्बवाली स्त्री
निदाघ	णिदाह	निदाह	घाम, गर्मी
निदान	णिआण	निआन	कारण, हेतु
निद्रा	णिद्दा, णिद्दडी (अप)	नींदड़ी	नींद
निधन	णिहण	निहन	मरण
निधान	णिहाण	निहान	वह स्थान जहाँ पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
निधुवन	णिहुवण	निहुवन	सुरत, संभोग
निन्दु	णिंदु	निंदु	मृतवत्सा स्त्री
निन्द्य	णिंद	नींदा	निन्दनीय
निपत्	णिवड	निवड़	नीचे पड़ना
निपतन	णिवडण	निवड़न	अधःपतन
निपतित	णिवडिअ	निवड़ा	नीचे गिरा हुआ
निपतितृ	णिवडित्तु	निबड़ाऊ	नीचे गिरनेवाला
निपातय्	णिवाड	निवाड़	नीचे गिराना
निपातित	णिवाडिय	निवाड़ा	नीचे गिराया हुआ
निपान	णिवाण, णिआण	नियान, निवान	कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड
निपुण	णिउण	निउन	दक्ष
निपुणिका	णिउणिया	निउनिया	निपुण
निबोध	णिवोह	निवोह	उत्तम ज्ञान
निबोधन	णिवोहण	निवोहन	प्रबोध, समझाना
निमग्न	णिमग्ग	निमगा	डूबा हुआ
निमज्जन	णिवुड्डण	निबूड़न	डूबना
निमन्त्रण	णिमंतण	न्यौतन	न्यौता
निमन्त्रित	णिमंतिय	न्यौता	जिसको न्यौता दिया गया हो वह
निमस्ज	निवुड्ड	निवुड	निमज्जन करना
निमेष	णिमेस	निमेस	निमीलन, पलक
निम्नगा	णिण्णगा	निनगा	नदी
निम्ब	णिंव	नीम	नीम का पेड़
निम्बगुलिका	णिंवोलिया	निंवोली, निंवौरी	नीम का फल
निरक्षर	णिरक्खर	निराखर	मूर्ख, ज्ञान-रहित
निरपलाप	णिरवलाव	निरवलाव	अलाप-रहित
निरभिलाप्य	णिरभिलप्प	निरहिलाव	अनिवर्चनीय
निरशन	णिरसण	निरसन	आहार-रहित

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
निरसि	णिरसि	निरसि	खड्ग-रहित
निरस्त	णिरसिअ	निरसा, निरसिया	परास्त
निराकर्ष	णिरागस	निरागस	निर्धन
निरातप	णिरायव	निरायव	आतप-रहित
निरायुध	णिराउह	निराउह	आयुध-वर्जित
निरालय	णिरालय	निरालय	स्थान-रहित
निराश	णिरास	निरास	आशा-रहित
निरिन्धन	णिरिंधण	निरिंधन	इन्धन-रहित
निरीक्षण	णिरिक्खण	निरखन	अवलोकन
निरुक्त	निरुत्त	निरूत, निरोत	उक्त, कथित
निरुक्ति	णिरुत्ति	निरूति, निरोति	व्युत्पत्ति
निरुज	णिरुज	निरुज	रोग-रहित
निरुत्सव	णिरुच्छव	निरूछव	उत्सव-रहित
निरुत्साह	णिरुच्छाह	निरुछाह	उत्साह-हीन
निरूदर	णिरुदर	निरोदर	छोटे पेट वाला
निरुद्यम	णिरुज्जम	निरुजम, निरूजम	उद्यम-रहित
निरूपण	निरूवण	निरूवण	विलोकन
निरोधन	णिरोहण	निरोहन	रुकावट
निर्गुण्डी	णिग्गुंडी	निगुंडी	ओषधि-विशेष
निर्जरण	णिज्जरण	निजरना	नाश, कर्म-नाश
निर्जरा	णिज्जरा	निजरा	कर्म–क्षय
निर्झर	णिज्झर	नीझर	झरना
निर्झरिणी	णिज्झरणी	नीझरनी	नदी
निर्णाश	णिण्णास	निनास	विनाश
निर्दम्भ	णिद्दंभ	निदंभ	दम्भ-रहित
निर्दय	णिद्दय	निदय	दया-रहित
निर्दलन	णिद्दलण	निदलन	मर्दन, विदारण
निर्दारित	णिद्दारिअ	निदारा	खण्डित, विदारित
निर्द्वन्द्व	णिद्दंद	निदुंद, निदंद	द्वन्द्व-रहित
निर्धूत	णिद्धुणिय, णिद्धुय	नीधुना, निधुआ	नष्ट किया हुआ
निर्धूम	णिद्धुम	निधूम, निधुवाँ	धूम-रहित
निर्धौत	णिद्धोअ	निधोव	धोया हुआ
निर्निद्र	णिण्णिद्द	निनींद	निद्रा-रहित

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
निर्बल	णिव्वल	निबल	बल-रहित
निर्भय	णिब्भय	निभय, नीभय	भय-रहित
निर्भर	णिब्भर	नीभर	भरपूर, पूर्ण
निर्मक्षिक	णिम्मच्छिअ	निमख, निमखी	मक्षिका-रहित
निर्मथन	णिम्मंथण	निमंथन	विनाश
निर्मात्सर्य	णिम्मच्छर	निमाछर	मात्सर्य-रहित
निर्मांस	णिम्मंस	निमांस	मांस-रहित
निर्मित	णिम्मइअ	निमया	रचित, कृत
निर्याण	णिज्जाण	निरजान	बाहर निकालना
निर्यात	णिज्जाय	निज्जाय	निर्गत, निःसृत
निर्यास	णिज्जास	निजास	वृक्षों का रस, गोंद
नियुंक्त	णिज्जुत्त	निजुत्त, निजुट	संयुक्त
नियुंक्ति	णिज्जुत्ति	निजुत्ति	व्याख्या, विवरण
निर्यूह	णिज्जूह	निजूह	१ गृहाच्छादन, पाटन २ गवाक्ष
निर्लक्षण	णिल्लच्छण	निलच्छन	मूर्ख, बेवकूफ
निर्लज्ज	णिल्लज्ज	निलज	लज्जा-रहित
निर्लाञ्छन	णिल्लंछण	निलंछन	शरीर के किसी अवयव का छेदन
नर्लोभ	णिल्लोभ णिल्लोह	निलोभ निलोह	लोभ-रहित
निर्वचन	णिव्वयण	निवयन, निवैन	निरुक्ति
निर्वर्तन	णिव्वत्तण	निवाटन	निष्पति, रचना
निर्वहण	णिव्वहण	निवहन	निर्वाह
निर्वासन	णिव्वासण	निरवासन	देश-निकाला
निर्वाह	णिव्वाह	निवाह	निभाना
निर्वाहण	णिव्वाहण	निवाहन	निर्वाह, निभाना
निर्विण्ण	णिव्विण्ण	निविन्न	निर्वेद-प्राप्त, खिन्न
निर्विराम	णिव्विराम	निविराम	विराम-रहित
निर्विष	णिव्विस	निविस	विष-रहित
निर्वेष	णिव्वेस	निवेस	१ लाभ, प्राप्ति २ व्यवस्था

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
निलय	णिलय	निलय	घर, स्थान
निलयन	णिलयण	निलयन	वसति, स्थान
निलेतृ	णिलीइर	निलिइर	भेंटने वाला, आश्लेष करने वाला
निवर्तन	णिवट्टण	निबटना	निवृत्ति
निवसन	णिअंसण	निअसन	वस्त्र, कपड़ा
निवह	णिवह	निवह, निउह	समूह, राशि
निवात	णिवाय	निवाय, निवाउ	पवन-रहित
निवारित	णिवारिय	निवारा	रोका हुआ, निषिद्ध
निवेश	णिवेस	निवेस, निएस	१ स्थापन, आधान २ प्रवेश ३ आवास-स्थान
निवेशन	णिवेसण	निएसन	१ स्थान, बैठाना २ एक ही दर-वाजे वाले अनेक गृह
निःशङ्क	णिस्संक	निसंक	शंका रहित
निःशब्द	णीसद्द	निसद्द	शब्द-रहित
निशाण	णिसाण	निसाण	शान, एक प्रकार का पत्थर जिस पर हथियार तेज किया जाता है
निशाणित	णिसाणिय	निसाणा	शान दिया हुआ, पैनाया हुआ
निशात	णिसाय	निसाय	शान दिया हुआ, तीक्ष्ण
निशान्त	णिसंत	निसंत	१ श्रुत, सुना हुआ २ अत्यन्त ठंडा १ रात्रि का अव-सान, प्रभात
निशाभक्त	णिसिभत्त	निसिभात	रात्रि-भोजन
निशित	णिसिअ	निसा	शान दिया हुआ, तीक्ष्ण

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
निशीथ	णिसीद, णिसीह	निसीथ, निसीह	मध्य-रात्रि
निशीथिका	णिसीहिआ	निसीहि	१ स्वाध्याय-भूमि
निःशेष	णिस्सेस	निसेस	सर्व, सब
निश्चिन्त	णिच्चित	निचिंत, नीचिंत	चिन्ता-रहित
निश्चेतन	णिच्चेयण	निचेतन	चेतना-रहित
निश्छुटित	णिच्छुट्ट	निछुट	निर्मुक्त
निश्छोटन	णिच्छोडण	निछोडन	बाहर निकालने की धमकी
निश्छोटना	णिच्छोडण	निछोडन	निर्भर्त्सन
निश्रा	णिस्सा	निसर	१ आलम्बन २ अधीनता
निश्राण	णिस्साण	निसान	निश्रा, अवलम्बन
निःश्रेणि	णिस्सेणि	निसेनी, नसेनी	सीढ़ी
निःश्वसन	णीससण	निससन	निःश्वास
निःश्वसित	णीससिअ	निससिय	निःश्वास
निषण्ण	णिसट्ट (अप)	निसठ	बैठा हुआ
निषद्या	णिसज्जा	निसज्जा	आसन, बैठना
निषेध	णिसेह	निसेह	प्रतिषेध, निवारण
निषेधना	णिसेहणा	निसेहना	निवारण
निष्कर्मन्	णिक्कम्म	निकम्मा	कार्य-रहित
निष्कलङ्क	णिक्कलंक	निकलंक	कलंक-रहित
निष्कासन	णिक्कासण	निकासना	बाहर निकालना
निष्किञ्चन	णिक्किंचण	निकिंचन	निर्धन
निष्क्रमण	णिक्कमण	निकलना	निर्गमन
निष्ठ्यूत	णिच्छूढ	निछूढ	थूक, खखार
निष्ठा	णिट्ठा	नीठ	अन्त, अवसान
निष्ठान	णिट्ठाण	निठान	दही वगैरह व्यंजन
निष्ठापक	णिट्ठवय	निठावा	समाप्त करने वाला
निष्ठापन	णिट्ठवण	निठवन	समाप्ति, नीठना,
निष्ठित	णिट्ठिय	नीठा	समाप्त किया हुआ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
निष्ठीव	णिट्ठीव	निठीव	थूक
निष्ठीवक	णिट्ठवय	निठुवा	थूकने वाला
निष्ठुर	णिट्ठुर, णिट्ठुल	निठुर	निष्ठुर, कठिन
निष्पङ्क	णिप्पंक	निपंक	कर्दम-रहित
निष्पिपास	णिप्पिवास	निप्यास	प्यास-रहित
निष्पिष्ट	णिप्पिट्ठ	निपिठ, निपिठा	पीसा हुआ
निष्पीडित	णिप्पीडिअ	निपीड़ा	दबाया हुआ
निष्पुंसन	णिप्पुंसण	निपोंछन	पोंछना
निःसंख्य	णीसंख	निसंख	असंख्य
निःसङ्ग	णिस्संग	निसंग	संग-रहित
निःसरण	णिस्सरण	निसरण	निर्गमन
निसर्ग	णिसग्ग	निसग	१ स्वभाव, प्रकृति २ निसर्जन, त्याग
निसर्जन	णिसिरणया णिसिरणा	निसिरन	निष्कासन
निःसार	णिस्सार	निसार	सार-हीन
निःसारित	णिस्सारिय	निसारा	निकाला हुआ
निःसृत	णीसरिअ	निसरा	निर्गत, निर्यात
नसृष्ट	णिसट्ठ	निसठ	निकाला हुआ, त्यक्त
निसेव्	णिसेव	निसेव	सेवा करना
निस्तार	णित्थार	निथार	छुटकारा, मुक्ति
निस्तारणा	णित्थारणा	नितारना	पार पहुंचाना
निस्तुल	णित्तुल	नितुल	असाधारण, निरुपम
निस्तुष	णित्तुस	नितुस	तुष-रहित, विशुद्ध
निस्तेजस्	णित्तेय	नितेय नितेह	तेज-रहित क्रोध-रहित
निस्फुर	णिप्फुर	निफुर	प्रभा, तेज
निस्फेट	णिप्फेड	निफेड	निर्गमन
टत	णिप्फेडिय	निफेड़ा	निष्कासित
निःस्व	णिस्स	निस्स	निर्धन
निहन्	णिहण	निहन	निहत करना, मारना
निहनन	णिहणण	निहनन	निहति, मारना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
नीड	णिड्ड	नीड़	पक्षि-गृह
नीप	णीव	नीव	वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़
नीरन्ध्र	णिरंध	निरंध	छिद्र-रहित
नीरेणु	णीरेणु	निरेनु	रजो-रहित
नीरोग	णीरोग	निरोग	रोग-रहित
नीवी	णीवी	नीवी	मूलधन, पूँजी
नूपुर	णिउर, णेउर	नेवर	स्त्री के पाँव का एक आभरण
नृशंस	णिसंस	निसंस	क्रूर, निर्दय
नेतृ	णेट	नेक	नेता
नेमि	णेमी	नेड, नाड़	१ चक्र की धारा २ चक्र का घेरा
नैपुणिक	णेउणिअ	नेउणी	निपुण
नैरुक्त	णेरुत्त	नेरुत	निरुक्ति के अनु-सार अर्थ का वाचक शब्द
नेम	णेम	नेम	नेम का विचार
नौ	णावा	नाव	नौका
नौवाणिज	णावावाणिअ	नाववानिया	समुद्र मार्ग से व्यापार करने

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पक्षिन्	पंखि, पंछि	पंखी, पांखि	पक्षी, चिड़िया
	पच्चवर (दे)	पचवर, पचौर	मूसल
	पच्छि (दे)	पछी	पिटारी, पिटिक
पज्झट्टिका	पज्झट्टिआ	पज्झटिया	छन्द विशेष
पञ्चन्	पण्ण, पंच, पण	पांच, पन	पांच, संख्या विशेष
पञ्चगव्य	पंचगव्व	पंचगावि	गौ के ये पांच पदार्थ—दही, दूध घृत, गोमय, गौ मूत्र
पञ्चगुण	पंचगुण	पँचगुना	पांचगुना
पञ्चदश	पण्णरसम	पनरहवां	पन्द्रहवां
पञ्चदशन्	पण्णरस पंचरस	पनरह	पन्द्रह
पञ्चनवत	पंचणउय	पंचानवां	९५वां
पञ्चनवति	पंचणउइ	पचानवे	पचानवे
पञ्चविंशति	पचीस	पच्चीस	पच्चीस
पञ्चसप्तत	पंचहत्तर	पचहत्तरवां	पचहत्तरवां
पञ्चसप्तति	पंचहत्तरि	पचहत्तर	पचहत्तर
पञ्चाल (पांचाल)	पंचाल	पंचाल, पाँचाल	देश-विशेष, पंजाब देश
पञ्जर	पंजर	पिंजर, पिंजरा	पिंजड़ा
पटलक	पडलग पडलय	पड़ला, पल्ला	गठरी, गांठ
पटी	पडी	पड़ी	वस्त्र, कपड़ा
पटोल	पडोल	पड़ोल, परोल	लता-विशेष
	पट्टइल पट्टइल्ल (दे)	पटेल	गांव का मुखिया
पट्टिका	पट्टिया	पट्टी, पाटी	छोटा तख्ता
पठन	पढण	पढ़न	पाठ, पढ़ना
पठित	पठिअ	पढ़ा	पढ़ा हुआ
	पडल (दे)	पड़ल, पड़ैल	खपरैल
	पड्डिया (दे)	पड़िया, पाडी	छोटी भैंस
पण	पण	पन, पण	शर्त, होड़, प्रतिज्ञा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पणित	पणिअ	पणिय, पणी	१ बेचने योग्य वस्तु २ लेन-देन ३ शर्त, होड़
पण्डित	पंडिअ	पांडे, पंडिआ	विद्वान्
पण्य	पणिअ	पणिय	विक्रेय-वस्तु
पण्यगृह	पणिअगिह पणिअघर	पणिघर, पणिहर	दुकान, हाट
पति	पइ	पइ	भर्ता, मालिक
पतित	पडिअ	पड़ा	गिरा हुआ
पत्तन	पट्टण	पट्टन, पाटन	नगर, शहर
पत्र	पत्त	पात	पर्ण, पत्ती
पत्रक	पत्ताय	पत्ता	पत्ता
पत्रल	पत्तल	पातल	पत्र-समृद्ध, बहुत पत्ती वाला
पत्रिक	पत्तिअ	पतिया	मरकत-पत्र
पत्रिका	पत्तिआ	पतिया, पाती	पत्र, पर्ण, पत्ती
पथ	पह	पह	मार्ग, रास्ता
पथ्या	पच्छा	पछा	हर्र, हरीतकी
पद	पय	पै, पय	१ शब्द समूह २ पैर, पांव ३ पदवी
पदवी	पयवी	पयवी	पदवी, विरुद
पदाति	पाइक्क	पाइक	प्यादा, पैर से चलनेवाला सैनिक
पद्म	पउम, पोम, पोम्म	पोम	सूर्य-विकासी कमल
पद्मा,	पद्दा, पउमा	पोमा	लक्ष्मी, कमलिनी
पद्माट	पामाड	पमार	पमाड़, पंवाड़
पद्मिनी	पउमिणी	पोमिनी	कमलिनी
पनक	पणग	पनग, पना	शैवाल, सिवार, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पनस	पणस, फणस	पनस, फनस	वृक्ष-विशेष
पयस्	पय	पय, पै	दूध, क्षीर
	पया (दे)	पया	चुल्ली, चूल्हा
पयोधर	पओहर	पओहर	मेघ, स्तन
परकीया	पराई	पराई	इतर से संबंध रखने वाली
परशु	परसु	फरसा	कुल्हाड़ी
पराङ्मुख	परम्मुह	परमुह	विमुख
परारि	परारि	परार, परारि	आगामी तीसरा वर्ष
	परिअट्ट (दे)	परियट	धोबी
परीक्ष्	परिक्ख	परख	परखना
परिकर्बुर	परिकब्बुर	परिकबरा	विशेष कबरा
परिकर्षण	परिकसण	परिकसन	खिंचाव
परिघ	परिह	परिह	अर्गला
परिज्ञान	परियाण	परिजान	जानना
परितुष्ट	परिउट्ठ	परोट्ठ	विशेष तुष्ट
परिदान	परियाण	परियान	विनिमय, लेन-देन
परिवेदन	परिदेवण	परिदेयन	विलाप
परिधान	परिहण	पहिरन	वस्त्र, कपड़ा
परिधान	परिहाण	पहिरान	वस्त्र, कपड़ा
परिधापन	पहिरावण	पहिरावन	पहिरावन, भेंट में दिया जाता वस्त्रादि
परिवर्तन	परिअट्टण पलिअट्टण	पलटना	पलटाना, बदलाना
परिवाद	परिआद	परिवाय	निन्दा
परिवेशिन्	परिवेसि	पड़ोसी, पड़ौसी	समीप में रहने वाला
परिवेषण	परिवेसण	परोसन	परोसना
	परिहारिणी (दे)	परिहारिनी	देर से ब्याई हुई भैंस
	परिहाल (दे)	परिहाल	जल-निर्गम, मोरी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
परिहित	पहिरिय	पहिरा	पहिरा हुआ
परीक्षण	परिक्खण	परिखन	परीक्षा
परीक्षा	परिच्छा	परिच्छा	परख, जांच
	परोहड (दे)	परोहड़	घर के पीछे का भाग
पर्पट	पप्पड	पापड़	पापड़, मूंग या उर्द की बहुत पतली एक प्रकार की खाद्य वस्तु
पर्पटक	पप्पडग पप्पडअ	पपड़ा	एक प्रकार की खाद्य वस्तु
पर्पटिका	पप्पडिया	पपड़ी, पापड़ी	तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु
पर्यङ्क	पलिअंक	पलंग, पलका	पलंग, खाट
पर्यङ्का	पलिअंका	पलका, पालका	पद्मासन, आसन विशेष
पर्यस्ति	पल्लत्थि	पलथी, पालथी	आसन-विशेष
पर्याण	पल्लाण	पलान	अश्व आदि का साज
पर्याणित	पल्लाणिअ	पलानिया	पर्याणयुक्त
पर्यालोचन	परियालोयण	परियालोचन	विचार, चिन्तन
पर्युषण	पज्जोसवण	पज्जुसन	वर्षाकाल
पर्वक	पव्वक पव्वग	पोइया, पावा	१ वाद्य-विशेष २ ईख जैसी ग्रन्थि वाली वनस्पति
पर्वणी	पव्वणी	पावनी	कार्तिकी आदि पर्व-तिथि
पर्वन्	पोर	पोर	ग्रंथि, गांठ
पल	पल	पल	१ समय की माप २ तोल, चारतोला
पलगण्ड	पलंड	पलंड	राज, चूना पोतने का काम करने वाला कारीगर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पलल	पलल	पलल	तिल-चूर्ण
	पलस (दे)	पलस, पलह	कर्पास-फल
पलाण्डु	पलंडु	पलंडू	प्याज
पलायन	पलाण	पलान	भागना
पलायित	पलाइअ	पलाया	भागा हुआ
पलाल	पलाल	पुआल	तृण–विशेष
पलालपीठक	पलालपीढय	पुआलपीढ़ा	पलाल का आसन
पलाश	पलास, पलाह	पलास	वृक्ष–विशेष
पल्यङ्क	पल्लंक	पालक, पालका	शाक–विशेष
पल्ल	पल्ल	पाल	धान्य भरने का बड़ा कोठा
पल्वल	पल्लल	पलल, पलोल	छोटा तालाब
पवन	पवण	पौन	पवन, वायु
पवमान	पवमाण	पौमान	पवन, वायु
	पवंपुल (दे)	पोंपुल	मच्छी पकड़ने का जाल–विशेष
पवित्र	पवित्त	पवीत, पूत	शुद्ध
पवित्रक	पवित्तय	पवीत, पवीति	अंगूठी, अंगुलीयक
पश्चिम	पच्चिम, पच्छिम	पछां	पश्चिम दिशा
पश्चात्	पच्छइ, पच्छए, पच्छा	पीछे	पृष्ठ भाग, बाद, अनन्तर
	पहिल (दे)	पहला	पहला, प्रथम
पांशुलिका	पंसुलिया, पंसुलिआ	पांसली, पसली	पार्श्व की हड्डी
पांसुल	पंसुल	पांसुल	पुंश्चल, पर-स्त्री-लम्पट
पांसुला	पंसुला	पांसुली	व्याभिचारिणी स्त्री
पाक	पाग	पाग	१ पचन-क्रिया २ पागी हुई वस्तु
पाकहारी	पाउहारी	पाउहारी, पौहारी	भोजन पकानेवाली
पाटन	पाडण	फाड़न	विदारण
पाटल	पाडल	पाडल	वर्ण-विशेष, गुलाबी रंग

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पाटित	पाडिअ	फाड़ा	फाड़ा हुआ
पाटय्	पाड, फाड़	फाड़	फाड़ना
पाठन	पढावण	पढ़ावन	पढ़ाना
पाठित	पाढाविअ	पढ़ाया	अध्यापित
	पाडोसिअ (दे)	पड़ोसी	पडोसी
पात्र	पत्त	पात	भाजन
पात्री	पाई	पाई	छोटा-पात्र
पाद	पाअ	पांय	पैर
पादधारण	पाधारण	पधारन	पधारना
पादप्रोच्छन	पाउंछण	पाओंछा	पैर पोंछने की वस्तु
पादाङ्गुष्ठ	पायंगुट्ठ	पांयगूठा	पैर का अंगूठा
पद्माट	पामाड	पमार	पमाड़, पमार, वृक्ष-विशेष
पान	पाण	पान	पीना
पानीयधरी	पाणीधरी	पनिहारी	पानी लाने वाली स्त्री
पानीय	पाणिअ	पाणी, पानी	पानी
पायित	पाइअ	प्याया	पिलाया हुआ
पायु	पाउ	पाउ	गुदा
पायुक्षालक	पाउक्खालय	पाउखालय	पाखाना
पार	पार	पाल	किनारा, तट
पारस	पारस	फारस	फारस देश
पारसिक	पारसिय	फारसी	फारस देश का
पारसी	पारसी	फारसी	१ फारस देश की स्त्री २ फारसी-लिपि
पारावत	पारेवय	परेवा	कबूतर
पारावती	पारेवई	परेवी	कबूतरी
	पारिहट्टी (दे)	पहराती	प्रतिहारी
	पारी (दे)	पारी	दोहन-भाण्ड
पार्श्व	पस्स, पास	पास	समीप

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पार्ष्णि	पण्हि	पन्हि, पान्हि	गुल्फ का निचला भाग
पालक्या	पालक्का	पालका	पालक का शाक
	पालिआ (दे)	पाली, पालिया	खड्ग-मुष्टि
पाश	पास	फांसा, फांसी	फांसा, बन्धन-रज्जु
पाषाण	पाहाण	पाहन	पत्थर
	पिउली (दे)	पूली	रुई की पूनी
	पिंसुली (दे)		मुंह से हवा भर कर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य
पिङ्ग	पिंग	पिंग, पेंग	पीतवर्ण
पिचु	पिचु	पिचु, पिचू	कर्पास
पिचुमन्द	पिचुमंद	पिचुमंद, पिचूंद	नीम का पेड़
पिच्छिका	पिच्छी	पीछी	चोटी
	पिंचु (दे)	पींचू, पीचू	पक्व करीर-फल
	पिंछोली (दे)	पिंछोली	मुंह के पवन से बजाया जाता तृणमय वाद्य-विशेष
पिञ्ज	पिंज	पींज, पींद	पींजना, रुई का धुनना
पिञ्जन्	पिंजण	पींजन, पींदन	पींजना, पींदना
पिञ्जर	पिंजर	पिंजर	रक्त-पीत
पिञ्जित	पिंजिअ	पींजा	पींजा हुआ
पिटिका	पिडिआ	पेटी, पेड़ी	पेटी, पिटारी
	पिट्ट (दे)	पेट	पेट, उदर
पिट्टन	पिट्टण	पीटन	ताड़न
पिट्टय्	पिट्ट	पीट	पीटना
पिट्टित	पिट्टिय	पिटा	पीटा हुआ
पिठर	पिढर	पिढर	भाजन-विशेष
पिण्ड	पिंड	पिंड	मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाने वाला भोजन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पिण्डगृह	पिंडघर	पिंडघर पिंढ़र	कर्दम से बना हुआ घर
पिण्डार	पिंडार	पिंडार, पींडार	गोप, ग्वाला
पिण्डिका	पिंडिया	पिंडी	पिण्डी, पिंडली जानु के नीचे का मांसल अवयव
पिण्डित	पिंडिय	पींडा	एकत्र
पिण्डी	पिंडी	पिंडी, पिंडिया पिढ़िया	पीढ़ा, बैठने की वस्तु
पिण्डीर	पिंडीर	पिंडीर	दाड़िम, अनार
पिण्याक	पिन्नाग पिनाय	पिन्नाग पिन्नाय	खली, तिल आदि का तेल निकाल लेने पर बचा हुआ भाग
पितृ	पिअ, पिउ	पिउ, पिइ	पिता, बाप
पितृगृह	पिउहर, पिइहर	प्योहर, पीहर	पिता का घर
पित्तल	पित्तल	पीतल	धातु-विशेष
पिपासक	पिवासय	प्यासा	पीने की इच्छा वाला
पिपासा	पियासा, पिवासा	प्यास	प्यास
पिपीलिका	पिपीलिअ	पिपीली	चींटी
पिप्पल	पिप्पल	पीपल	पीपल-वृक्ष
पिप्पलि पिप्पली	पिप्पलि पिप्पली	पीपर पीपली	ओषधि-विशेष, पीपल का फल
	पिप्पिया (दे)	पिपिया	दांत का मैल
	पिलुअ (दे)	पिलुआ	क्षुत, छींक
पिशुक	पिसुअ	पिस्सू	क्षुद्र-कीट-विशेष
पिशुन	पिसुण	पिसून	दुर्जन, खल
पिष्	पिस	पीस	पीसना
पिष्ट	पिट्ठ	पिट्ठा, पीठा	तन्दुल, दाल आदि का आटा
पिष्टिका	पिट्ठिआ	पिट्ठी	पीठी
	पिहुण, पेहुण (दे)	पिहुन, पेहुन	पंख

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	पिहुणहत्थ (दे)	पिहुनहाथ	मोर पंख का पंखा
पीठ	पीढ	पीढ़ा	आसन, पीढ़ा
पीठिका	पीढिआ	पीढ़ी	छोटा पीढ़ा
पीडन	पीलण, पेलण	पेलना, पेरना	पेलना
पीडन	पिट्टण, पिड्डण	पीड़न	पीड़ा
पीडित	पीलिअ	पेरा, पेला	पेला हुआ
	पीढ (दे)	पीढ़	ईख पेलने का यन्त्र, कोल्हू
पीत	पीअ	पीअ	पीत वर्ण
	पीअर (अप)	पीरा (अप)	पीला
पीयूष	पीऊस	पीऊस	अमृत, सुधा
पुंश्चली	पुंसली	पूंसली	व्याभिचारिणी स्त्री
पुच्छ	पुंछ	पूँछ	पूँछ
पुञ्जित	पुंजिअ, पुंजिय	पूंजी	धन राशि
पुटिका	पुडिया	पुड़िया, पुड़ी	पुड़ी, पुड़िया
	पुट्टल, पुट्टलय (दे)	पोटल, पोटला	गठरी, गांठ
	पुट्टलिया (दे)	पुटलिया, पुटली	छोटी गठरी
पुण्य	पुण्ण	पुन्न	शुभ कर्म
पुत्र	पुत्त	पूत	लड़का
पुत्रक	पुत्तलय	पुतला	पूतला
पुत्रिका	पुत्तलिआ	पुतली	पूतली, पूतरी
पुत्रिका	पुत्तिआ	पुतिया	पुत्री
	पुप्फा, पुप्फी, पुप्फिआ (दे)	फूआ	फूफी, पिता की बहिन
पुष्कर	पुक्खर, पोक्खर	पोखर	१ पानी का तालाब २ तीर्थ स्थान
पुष्करिणी	पोक्खरिणी	पोखरी	पानी का छोटा तालाब
पुस्त, पुस्तक	पुत्थ, पुत्थय	पोथ, पोथा	पुस्तक, पोथी
पुस्तकार	पोत्थार	पोथार	पोथी लिखनेवाला

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पुस्तिका	पोत्थिया	पोथी	पोथी, पुस्तक
पूगफली पूगफल	पूअप्फली पूअफली	पूअफली फोंकल मूंगफली	सुपारी का वृक्ष, मूंगफली
पूजन	पुज्जण	पूजन	पूजा, अर्चा
पूत्कार	पुक्का, पुक्कार	पुकार	पुकार, डाँक
पूत्कृ	पुक्क पुक्कर	पुकार	पुकारना
पूत्कृत	पुक्करिय	पुकारा	पुकारा हुआ
पूर्ण	पुण्ण	पूना	पूरा
पूर्णमासी	पुण्णमासी	पुन्नमासी	पूर्णिमा
पूर्णा	पुण्णा	पूना	तिथि-विशेष
पूर्णिमा	पुण्णिमा	पूनिम, पून्यों	तिथि-विशेष, पूर्णमासी
पूर्त	पूअ	पुआ	१ तालाब, कुआँ आदि खुदवाना २ अन्न दान करना
पृष्ट	पुच्छ	पूछा	जिसको पूछा गया हो
पृष्ठ	पट्ट, पिट्ठि	पुट्ठा, पीठ	पीठ, शरीर का पीछे का भाग
पृष्ठमांसिक	पिट्ठिमांसिय	पिठमांसी	पीछे निन्दा करने वाला
पेटिका	पेडिया	पेटी, पेडी	मञ्जूषा
पेया	पिञ्जा	पिञ्जा	यवागू
पेलु	पेलु	पेलू, पूनी	पूनी, रुई की पहल
पेषक	पीसय	पेसा	पीसने वाला
पेषण	पीसण	पीसन, पीसना	पीसना, दलना
पेषण	पेसण, वेसण	वेसन	वेसन
पोतिका पोती	पोत्तिआ पोत्ती	पोती	धोती, पहनने का वस्त्र, साड़ी
पोत्र	पोत्त	पोत	नौका
	पोल्ल (दे)	पोला	पोला, खाली

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
पोष	पोस	पोस	पुष्ट करना
पोषण	पोसण	पोसन	पालन करना
पौत्र	पोत्त, पोत्तअ	पोता	पुत्र का पुत्र
पौत्रिका	पोत्तिआ	पोती	पुत्र की पुत्री
पौरुष	पोरिस	पोरस	मनुष्य की शक्ति
पौष्कर	पोक्खर	पोखर	पुष्कर संबंधी
प्रकर	पगर	पगर	समूह, राशि
प्रकार	पगार	पगार	भेद
प्रकाश	पगास	पकास, पगास	प्रभा, चमक
प्रकाशक	पगासय	पगासी	प्रकाश करने वाला
प्रकाशित	पगासिय	पगासा, पगास्या	दीप्त
प्रक्षालन	पक्खालण	पखारन	पखारना, धोना
प्रक्षेपण	पक्खेवण, फेंकण	फेंकना	क्षेपण
प्रग्रह	पग्गह	पगहा	उपधि,उपकरण
प्रच्छ	पुच्छ	पूछ	पूछना, प्रश्न करना
प्रच्छक	पुच्छअ, पुच्छग	पूछा	प्रश्न करने वाला प्रश्न कर्ता
प्रज्वल्	पजल	पजर	दग्ध होना
प्रज्वलन	पज्जलण	पजरन	जलना, जलानेवाला
प्रज्वलित	पज्जलिय	पजरा	जलाया हुआ, दग्ध
प्रज्वालन	पज्जालण	पजारन	सुलगाना, जलाना
प्रण	पण	पण	प्रतिज्ञा
प्रणति	पणइ	पनइ	प्रणाम
प्रणाल, प्रणाली	पणाल, पणाली	पनाल, पनाली	मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता
प्रतरक	पत्तरक	पतरा, पातरा	आभूषण-विशेष
प्रतिचार	पडिआर, पडिचार	परिचार	रोगी की सेवा-सुश्रूषा
प्रतिचारक	पडिचारय	परिचारा	नौकर
प्रतिपत्	पडिवया	पड़वा	पड़वा, पक्ष की पहली तिथि

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
प्रतिपथ	पडिपंथ	परिपंथ	१ उलटा मार्ग २ प्रतिकूलता
प्रतिपन्थिन्	पडिपंथि	परिपंथी	प्रतिकूल, विरोधी
प्रतिबन्ध	पडिबंध	परिबंध	रोक
प्रतिबन्धक	पडिबंधअ पडिबंधग	परिबंधा	प्रतिबन्ध करने वाला
प्रतिवात	पडिवाय	परिवाय	प्रतिकूल पवन
प्रतिवाद	पडिवाय	परिवाय	विरोध
प्रतिहार	पडिहार	परिहार	द्वारपाल
प्रतोत्र	पअत्त	पतोअ, पोत	प्रतोद, पैना
प्रतोली	पओली	पौली	नगर के भीतर का रास्ता
प्रत्यन्त	पच्चंत	पचंत	एक अनार्य देश
प्रत्यमित्र	पच्चामित्त	पचमीत	अमित्र, दुश्मन
प्रत्यय	पत्तिअ	पतीय, पतीज	विश्वास
प्रत्यवाय	पच्चवाय	पचवाय	१ बाधा, विघ्न २ दोष, दूषण
प्रत्याकार	पडिआर	परियार	तलवार का म्यान
प्रत्यायक	पच्चायय	पचाई	विश्वास-जनक
प्रत्यायन	पच्चायण	पचायन	ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन
प्रत्यूष	पच्चूस पच्चूह	पचूस पचूह	प्रभात काल
प्रत्यूह	पच्चूह	पचूह	विघ्न
प्रथा	पहा	पहा	रीति, व्यवहार
प्रदर	पयर	पैर	१ योनि का रोग विशेष २ विदारण, भंग ३ शर, बाण
प्रदोष	पओस	पओस	सन्ध्या काल
प्रधावन	पधावण	पधावन	दौड़, वेग से गमन
प्रधावित	पधाविअ	पधाया	दौड़ा हुआ
प्रधूपन	पधूवण	पधूवन	धूप देना
प्रघाटन	पहाडण	पहारन	इधर-उधर भगाना, घुमाना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
प्रपञ्च	पवंच	पवंच	१ विस्तार, १ संसार
प्रपञ्चन्	पवंचण	पवंचन	वञ्चना, ठगाई
प्रपत्	पवड	पौड़	पड़ना, गिरना
प्रपतन	पवडण	पौड़ना	अधःपात
प्रपात	पवाय	पवाय	१ गर्त, गढ़ा २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह ३ पतन
प्रपुत्र	पपुत्त, पउत्त	पोता	पुत्र का पुत्र
प्रपौत्र	पपोत्त, पओत्त	पोत	पौत्र का पुत्र, पोते का पुत्र
प्रभूत	पहुत्त पहुअ	बहुत	पर्याप्त
प्रमा	पम्मा	पमा	प्रमाण, परिमाण
प्रमार्जनी	पमज्जणिया, पमज्जणी	पमंजनी, पौंजनी	झाड़
प्रमीत	पमिय	पमिय	परिमित
प्ररपाज	परवाय	परवाय	नाज भरने का कोठा
प्रलघुक	पलहुअ	पलहू	स्वल्प, थोड़ा
प्रलुठित	पलुट्ठ	पलुट्ठा, पलोठा	लेटा हुआ
प्रलोठन	पलोट्टण	पलोटना	ढुलकाना, गिराना
प्रवयन (प्रोतन)	पोअण	पोअन, पोना	पिरोना, गुम्फन
प्रवयना (प्रोतना)	पोअण	पोअना	पिरोना
प्रवर	पवर, पउर	पवर, पौर	श्रेष्ठ, उत्तम
प्रवराङ्ग	पवरंग	पौरंग	सिर, मस्तक
प्रवसन	पवसण, पउसण	पवसन, पोसन	प्रवास, विदेश-यात्रा
प्रवहण	पवहण	पवहन, पौहन	१ नौका, जहाज २ गाड़ी आदि वाहन
प्रवात	पवाय	पवाय	१ प्रकृष्ट पवन, २ वहा हुआ पवन
प्रवाद	पवाय	पवाय	किंवदन्ती

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
प्रवाल	पव्वाल	पवाल	१ नवांकुर २ मूंगा
प्रवास	पव्वास	पवास	विदेश–गमन
प्रविरल	पविरल	परैल	१ विच्छिन्न २ अत्यन्त थोड़ा
प्रविलुप्त	पविलुत्त	पलीत	बिल्कुल नष्ट
प्रविष्ट	पइट्ठ	पैठा	जिसने प्रवेश किया हो
प्रवीण	पवीण	पवीन, प्रवीन	निपुण, दक्ष
प्रवृति	पवदि	पवदी, पवई	ढकना,आच्छादन
प्रवेश	पवेस, पएस	पैस	पैठ, घुसना
प्रवेशन	पविसण	पैसन, पैसना	प्रवेश, पैठ
प्रशंसन	पसंसण	पसंसन	प्रशंसा, श्लाघा
प्रशंसा	पसंसा	पसंसा	श्लाघा, स्तुति
प्रशंसित	पसंसिअ	पसंसिथ	श्लाघित
प्रशठ	पसठ	पसढ़	अत्यन्त शठ
प्रशाखा	पसाहा	पसाहा	शाखा की शाखा, छोटी शाखा
प्रशान्त	पसंत	पसंत	१ प्रकृष्ट शान्त २ शान्त रस
प्रसङ्ग	पसंग	पसंग	१ परिचय २ संगति
प्रसरण	पसरण	पसरन	फैलाव
प्रसव	पसव	पसव	१ जन्म,उत्पत्ति २ पुष्प
प्रसादन	पसायण	पसायन	प्रसन्न करना
प्रसाधन	पसाहण	पसाहन	साधना
प्रसाधित	पसाहिअ	पसाहा	अलंकृत किया हुआ
प्रसार	पसार	पसार	विस्तार, फैलाव
प्रसारण	पसारण	पसारन	विस्तार, फैलाव
प्रसुप्ति	पसुत्ति	पसूति	कुष्ठ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर हुई अचेतनता

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
प्रसूत	पसूअ	पसुअ	उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो
प्रसूति	पसूइ	पसूइ	प्रसव, जन्म
प्रसृ	पसर	पसर	फैलाना
प्रसृत	पसय	पसया, पसा	फैला हुआ
प्रसेवक	पसेवय	पसेवा, पसेया	कोयला, थैला
प्रसेविका	पसेविआ	पसेवी, पसेई	थैली
प्रस्तर	पत्थर	पत्थर, पाथर	पाषाण
प्रस्थान	पट्ठाण	पठान	प्रयाण
प्रस्थापन	पट्ठावण	पठवन, पठाना	प्रारंभ, भेजना
प्रस्थापित	पट्ठविअ	पठाया	भेजा
प्रस्थित	पट्ठिअ	पठिय	जिसने प्रस्थान किया हो
प्रस्वेद	पस्सेउ	पसेव, पसेउ	पसीना
प्रहरण	पहरण	पहरन	अस्त्र, आयुध
प्रहेलिका	पहेलिया	पहेली	गूढ़ आशय वाली कविता
प्राकार	पाकार	पागार, पगार	किला, दुर्ग
प्राकृत	पाइअ, पागय	पाइअ, पागय	प्राकृत भाषा
प्राघुर्ण	पहुण, पाहुण	पाहुना	अतिथि
प्राघुण्य	पहुणाइय	पहुनाई	आतिथ्य
प्राङ्गण	पांगण, पंगण	आँगन	आंगन
प्रातराश	पायरास	पायरास	प्रातःकाल का भोजन
प्रातिपथिक	पडिपहिअ	परिपहिया	संमुख आने वाला
प्राप्त	पत्त	पाया	पाया हुआ
प्राभृत	पाहुड	पाहुड़	उपहार, भेंट
प्राभृतिका	पाहुडिया	पाहुड़ी	
प्रावृष्	पाउस	पावस	वर्षा-ऋतु
प्राहरिक	पाहरिय	पाहरी, पाहरू	पहरेदार
प्रिय	पिअ	पिय	पति, प्यारा
प्रियतर	पिआर	प्यारा	प्यारा, प्रेमी
प्रियतरा	पिआरी	प्यारी	प्यारी, प्रिया
प्रिया	पिआ	पिया	पत्नी, कान्ता

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
प्रियाल	पिआल	पियाल	वृक्ष-विशेष
प्रेक्षण	पिक्खण	पेखन	निरीक्षण
प्रेक्षा	पिच्छा	पिच्छा	निरीक्षण
प्रेक्षाभूमि	पिच्छाभूमि	पिच्छाभुँइ	रंग-मण्डप
प्रेम ग्रन्थि	पेम्मगण्ठी	प्रेमगांठि	प्रेम बन्धन
प्रेषित	पेसिअ	पेसिया, पेसा	भेजा हुआ
प्रेषितकार	पेसिअआर	पेसियार	नौकर, भृत्य
प्रोच्छन	पुंछण	पोंछन	मार्जन
प्रोच्छनी	पुंछणी	पोंछनी	पोंछने का उप-करण
प्रोच्छित	पुंछिअ	पोंछा	पोंछा हुआ
प्रोत	पोअ, पोइअ	पोया	पिरोया हुआ
प्रोथ	पोह	पोह	घोड़े के मुख का प्रान्त भाग
प्रोषित	पवसिअ	पोसी	प्रवास में गया हुआ
प्रौढ	पोढ	पोढ़	समर्थ, निपुण
प्रौढा	पोढा	पोढ़ा	१ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री २ नायिका का एक भेद
प्लक्ष	पिलंखु पिलक्खु	पिलखू	वृक्ष-विशेष-बड़ का पेड़
प्लवक	पवक	पवक, पवा	१ उछल कूद करने वाला २ तैरने वाला
प्लवङ्ग	पवंग	पवंग, पौंग	वानर, वानर-वंशीय मनुष्य
प्लवंगम	पवंगम	पवंगम	वानर
प्लवन	पलवण	पलवन, पलोन	उछलना, उच्छलन
प्लीहा	पिलिहा	पिलिहा	रोग-विशेष
फणीन्द्र	फणिंद	फनिंद	सर्प
फनक	फणग	फनग	कंघा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
फल	फर	फर, फड़	१ काष्ठ आदिका
फलक	फरअ	फरा	तख्ता
			२ ढाल
फलति	फलइ	फले	फले
फल्गु	फग्गु	फाग	वसन्त का उत्सव
फाल	फाल	फाला	लोहमय कुश
फालि	फालि	फारि, फारी	१. फली
			२. शाखा
			३ फाँक, टुकड़ा
फाल्गुन	फग्गुण	फागुन	फागुन मास
फाल्गुनी	फग्गुणी	फागुनी, फगुनी	फागुन मास की पूर्णिमा
	फीणिया (दे)	फीणी, फेनी	एक प्रकार की मिठाई, फेनी
	फुंका (दे)	फूँक	फूँक, मुंह से हवा निकालना
फुल्ल	फुल्ल	फूल	फूल
फूत्कार	फुक्कार	फुफकार	फूं-फूं की आवाज
फेन	फेण	फेन	झाग
	फेरण (दे)	फेरन	फेरना, घुमाना
	फेल्लुसण (दे)	फिसलन	फिसलन
	बउहारी (दे)	बुहारी	झाड़ू
बकी	बगी	बगी	बगुली
बकुल	बउल	बउल	वृक्ष-विशेष मौलसिरी का पेड़
	बग्गड (दे)	बागड़	देश-विशेष
बटु	बडु	बड़	लड़का, छोकरा
बटुक	बडुअ	बड़ुआ	छात्र
बठर	बठर	बठर	मूर्ख छात्र
	बडहिला (दे)	बड़हिला बढ़ेला	धुरा के मूल में दी गयी कील
बदर	बोर	बोर, बेर	फल-विशेष
[illegible]	बोरी	बोरी, बेरी	बेर का गाछ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
बधिर	बहिर	बहिरा, बहरा	बहरा
बन्दुरा	बंदुरा	बंदुर, बाँदुरा	अश्व-शाला
	बंघ (दे)	बंघा	भृत्य, नौकर
बन्धुल	बांधुल	बँधुल, बाँधुल	वेश्या-पुत्र
वंध्या	वंझा	बाँझ	बाँझ
	बप्प (दे)	बप्पा, बाप	सुभट, पिता
	बब्बरी (दे)	बबरी	केश-रचना
बब्बूल	बब्बूल	बंबूल, बबूल	बबूल का पेड़
	बरुअ (दे)	बरू	तृण-विशेष
वर्द्धत्व	बड्डप्पण	बड़प्पन	बड़प्पन
वर्वर	बब्बर	बाबर	अनार्य देश-विशेष
बर्वरी	बब्बरी	बबरी	बर्बर देश की स्त्री
बलाहक	बलाहग	बलाहा	
बलिन् बलिक्	बलिअ	बली	बलवान्
बलीवर्द	बइल्ल	बैल	बैल
	बहुरिया (दे)	बुहारी	झाड़ू
	बाअ (दे)	बाया	बाल, शिशु
	बाइया (दे)	बाई	लड़की
	बाण (दे)	बान	कटहल का पेड़
बालिका	बालिआ	बारी	बाला, कुमारी
बाहु	बाहु	बाँह	हाथ, भुजा
	बिट्ट (दे)	बेटा	बेटा, लड़का
	बिट्टी (दे)	बेटी	बेटी, लड़की
बिन्दु	बिंदु	बुंद, बूंद	१ अल्प अंश २ बिन्दी, शून्य
बिभीतक	बहेडय	बहेड़ा	बहेड़े का पेड़
वीटक	बीडय	बीड़ा	बीड़ा, पान का बीड़ा
बुक्क् (भष्)	बुक्क	भौंक	श्वान का भौंकना
बुक्कितृ	भुक्किर	भौंकू	भौंकने वाला
बुभुक्षा	बुभुक्खा	भूख	भूख
बुभुक्षित	बुहुक्खिअ	भूखा	भूखा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
बुस	भुस	भुस	भूसा, चारा
बुसिका	बुसिम्र	भुसा	भूसा, (जो आदि का)
	वेडा वेडिया (दे) वेडी	वेड़ा, वेरा	नौका, जहाज
	बोकड (दे) बोक्कड	बोकड़ा, बोकरा	छाग, बकरा
	बोंटण (दे)	बोंटन	चूचुक, स्तन का अग्र भाग
	बोंड (दे)	बोंड	स्तन-वृन्त
	बोंदि (दे)	बोंदी	रूप, मुख, शरीर
बोधित	बुज्झविय बुज्झाविअ	बुझाया	जिसको ज्ञान कराया गया हो
	बोव्व (दे)	बोव	क्षेत्र, खेत
	बोहरी (दे)	बुहारी	झाड़ू
ब्राह्मण	बंभण	बाम्हन	विप्र, ब्राह्मण
ब्रुड्	बुड्ड	बूड़	डूबना
ब्रुडन	बुड्डुण	बूड़न	डूबना
भक्त	भत्त	भात	आहार, भोजन
भक्ति	भत्ति	भक्ति	सेवा, विनय
भक्ष्	भक्ख	भख,	भक्षण, करना
भक्षण	भक्खण	भखन,	भक्षण
भगिनी	भइणि भइणिआ भइणी	बहिन	बहिन
भङ्कार	भंकार	भनकार	भनकार, अव्यक्त आवाज
भञ्ज	भूर	भूर	तोड़ना
भञ्जक	भूरग	भूरग	चूरने वाला
भट	भड	भड़	योद्धा
भण्ड	भंड	भांड़	भांड़
	भंटा (दे)	भटा	बैंगन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
भद्र	भल्लअ	भला	भला, उत्तम
भद्र	भद्दअ	भद्दा	बुरा
भयानक	भयाणय भयावरण	भयाना भयावन	भयंकर
भर्जिका	भज्जिआ	भाजी	शाक-विशेष
भल्लूक	भल्लूअ	भालू	भालू
भवित्री	भवित्ती	भविती भावी	होने वाली
भविष्य	भविस्स	भविस	भविष्य काल
	भाउज्जा (दे)	भावज, भौजाई	भाई की पत्नी
भागिन् भागिक	भाइल्ल	भाइला	भागीदार
भागिनी	भागिणी	भाइनी	भाग्य वाली स्त्री,
भागिनेय	भाइणिज्ज भाइणेय	भानेज भानजा	भानजा, बहिन का लड़का
भाजन	भायण	भायन, भाजन	पात्र
भाटक	भाडय	भाड़ा	किराया
भाटकित	भाडिय	भाड़ैत, भाड़िया	भाड़े पर लिया हुआ
भाटिका भाटीका	भाडिया भाडी	भाड़ी भाड़ा	भाड़ा, शुल्क
भाण्ड, भाण्डक	भंड, भंडग	भाँडा, हाँडा	बर्तन, बासन
भाण्डकार	भंडार	भंडार	बर्तन बनाने वाला शिल्पी
भाण्डागार	भंडाआर भंडागार	भंडार	कोठा जहां सामान रखा जाता है
भण्डिका	भंडिआ	भाँडी, हाँडी	बर्तन, थाली
भाद्रपद	भाद्दव भाद्दवय भदवउ,	भादवा भादौं	मास-विशेष
भामिनी	भामिणी	भामिनी	कोपशीला स्त्री
भारिक	भारिअ	भारी	भारी
भिक्षा	भिक्खा, भिच्छा	भीख, भिच्छा	भीख, याचना
भिक्षाकारिन्	भिखारी	भिखारी	भीख माँगने वाला
	भिट्ट (दे)	भेंट	भेंटना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	भिट्टण (दे)	भेंटन	भेंट, उपहार
	भिडण (दे)	भिड़न	मुठभेड़
भित्ति	भित्ति	भींत	दीवार
भिल्ल	भिल्ल	भील	एक जाति-विशेष
भुक्ति	भुत्ति	भुत्ति, भुगति	भोजन, भोग
भुज (भुजा)	भुअ, भुआ	भुआ भुज	१ हाथ २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष
भुजंग	भुअंग	भुवंग	सर्प
भुजगम	भुअंगम	भुवंगम, भुअंगम	साँप
भुजङ्गी	भुअंगी	भुवंगी	नागिन
भुजगेश्वर	भुअईसर भुअएसर	भुंएसर	श्रेष्ठ-सर्प
भुजमूल	भुअमूल	भुअमूल	कांख
भूत	हुअ, हूअ, भूअ	हुआ	अतीत, गुजरा हुआ
भूति	भूइ	भूइ	सम्पत्ति, धन
भूमि	भुम्मि, भूहंडी (अप)	भुइं	धरती
भूयिष्ठ	भूइट्ठ	भुईठ	अत्यन्त
भूर्ज	भुज्ज	भोज	वृक्ष-विशेष
भूर्जपत्र	भुज्जपत्त भुज्जवत्त	भोजपत्त भोजपात	भोज वृक्ष की छाल, या पत्ते
भूषित	भूसिअ	भूस्या, भूसा	मण्डित, सजाया
भृकुटि	भिउडि	भिउड़ी भुँइ	भौंह
भृङ्ग	भिंग	भिंग	भ्रमर
भृङ्गी	भिंगी, भंगी	भिंगी, भाँग	भ्रमरी, भांग
भृति	भइ	भई, भरति	वेतन
भृति	भुइ	भुइ, भरति	भरण, पोषण
भेद	भेअ	भेव	१ प्रकार १ पार्थक्य
भेदन	भेअण	भेअन, भेयन	विदारण, विनाश
भेलक	भेलय	भेला, भेरा	बेड़ा, नौका
भेषज	भेसज	भेसज	औषध

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
भैषज्य	भेसज्ज	भेसज	ओषधि, दवाई
	भोल भोला भोलया } (दे)	भोला	सरल चित्त वाला
भ्रम	भम	भम, भँव	भ्रमण करना
भ्रमण	भमण	भंवन, भगन	घूमना, चकराना
भ्रमर	भमर	भंवर, भौंर	भौंरा, भँवर
भ्रमरिका	भमरिया	भंवरी, भौंरी	वर्रे, जन्तु-विशेष
भ्रमरी	भमरी	भँवरी	भौंरी
भ्रंश्	भुल्ल	भूल	१ भूलना २ च्युत होना
भ्रंशित	भुल्लविअ	भुलाया	भूला हुआ
भ्रष्ट	फिट्ट	फिट्ट	विनष्ट
भ्रातृ	भाउ, भाइ	भाऊ	भाई, भाऊ
भ्रातृजाया	भाउज्जा	भावज	भावज
भ्रू	भमुह, भमुहा	भौंह	भौं
	मइलपुत्ती (दे)	मैलपुती	पुष्पवती, रजस्वला स्त्री
	मइहर (दे)	महिर, मिहर	गाँव का मुखिया, ग्राम-प्रधान
	मउर (दे)	मोर	वृक्ष-विशेष
	मउरंद (दे)	मोरंग	चिरचिरा, लटजीर
मकर	मयर	मयर (मगर)	मगरमच्छ
मकरन्द	मयरंद	मरंद	पुष्प-पराग
मख	मह	मह	यज्ञ
मक्षिका	मक्खिया मच्छिया	मक्खी माखी	मक्खी माखी
मज्जन	मज्जण	मज्जण	मज्जन, स्नान
	मज्झआर (दे)	मझार	मध्य
मञ्च	मंच	माँच, माँचा	मचान, उच्चासन
मञ्चा	मंचा, मंची	माँची	खटिया, खाट
	मंजिआ (दे)	मंजी, माँजिया	तुलसी
मञ्जिष्ठा	मंजिट्ठा	मजीठा	रंग-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मञ्जीर	मंजीर	मंजीर, मँजीरा	१ नूपुर २ झींगुर
मठ	मढ	मढ़	संन्यासियों का आश्रम
मठिका	मढी	मढ़ी	छोटा मठ
मण्ड	मंड	माँड	रस
मण्डक	मंडअ मंडग	मँडा, माँडा	एक प्रकार की रोटी
मण्डन	मंडण	माँडन, माँडना	भूषण, भूषा
मण्डूक	मंडूअ मंडुअ मंडुग	मेंढक	मेंढक
मण्डूकिका मण्डूकी	मंडुक्कलिया मंडुक्किया	मिडकी मेंढकी	स्त्री-मेंढक
मतान्तर	मयंतर	मयंतर	भिन्न मत
मति	मइ, मई	मइ, मई	मेघा
मति-मोहिनी	मइमोहणी	मइमोहनी	सुरा, मदिरा
मत्सर	मच्छर	माछर मच्छर	ईर्ष्या, मच्छर
मत्स्य	मच्छ	माँछ	मछली
मत्तवारण	मत्तवारण	मतवारन	वरंडा, वरामदा
मतालम्ब	मतालंव	मतालंव	वरंडा
मथन	महण	महना	विलोना
मथित	मंथिअ	मथा	विलोडित
मद	मय	मय	१ गर्व २ हाथी के गण्ड-स्थल से झरता प्रवाही पदार्थ
मदकल	मयगल	मँगल	नशे में चूर
मदन	मयण	मयन, मैन	कामदेव
मदनशलाका	मयणसलागा मयणसलाया	मैनसलाया	मैना, सारिका
मदान्ध	मयंध	मयंद	मद में अन्धा वना हुआ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मदीय	मेर (अप)	मेर, मेरा	मेरा
मधु	महु	महु	वसन्त ऋतु
मधुमुख	महुमुह	महुमुँह	पिशुन, दुर्जन
मधुर	महुर	महुर	मीठा
मधूक	महुग्र	महुग्रा	वृक्ष-विशेष
मधूला	महूला, मधूला	मधूला	पाद-गण्ड
मध्य	मज्झ	माँझ, माँह	ग्रन्तराल, मँझार
मध्यम	मज्झिम	मझिम, मंझिल	मध्यवर्ती
मध्यमा	मज्झिमा	माँझली मँझली	बीच की उँगली
मनःशिला	मणंसिल मणंसिला	मनसिल मंसिल	लाल वर्ण की एक उपधातु
मनस्	मण	मन	मन
मनस्विन्	मणंसि	मनंसी, मनसी	प्रशस्त मन वाला
मनाग्	मणयं	मनय	ग्रल्प, थोड़ा
मनुज	मणुग्र	मनुअ, मनुग्रा	मनुष्य
मनुष्य	मणुस मणुस्स	मनुस, मनुख मिनख	मानव
मनोज्ञ	मणुज्ज मणुण्ण	मनूज मनून	सुन्दर, मनोहर
मन्थ	मंथ	मंथ, माँथ	दही बिलोने का दण्ड, मथनी
मन्थन	मंथण	मंथन, माँथन	विलोडन, विलोने की क्रिया
मन्थनिका	मंथणिग्रा	१ मंथनिया, माँथनी २ मथनी	१ मँथनी, दही मथने की छोटी लकड़ी २ मटकी
मन्थनी	मंथणी	मथनी, माँथनी	१ मथनी २ मथानी
मन्थान	मंथाण	मथान	विलोडन-दंड
मन्दार	मंदार	मंदार, मदार	आक का पेड़
मन्दिर	मंदिर	मंदिर, मंदिल	गृह

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मन्दुरा	मँदुरा	मँदुरा, माँदुरा	अश्व-शाला
मन्मथ	मम्मह वम्मह वम्मथ	मामथ मामह	कामदेव
	मम्मणिआ (दे)	मामनी	नील मक्षिका
	मम्मी (दे)	मामी, माईं	मातुल-पत्नी
मय	मय	मय	ऊँट
मया	मइं	मैं	मैं
मयूख	मऊह	मयूह	किरण, रश्मि
मयूर	मऊर	मोर	मोर पक्षी
मरजीवक	मरजीवय	मरजीवा	गोताखोर, समुद्र से मोती निकालने वाला
मरु मरुक	मरु मरुअ	मरु मरुआ	निर्जल देश
मरुवक	मरुअअ मरुअग	मरुआ मरुवा	वृक्ष-विशेष
मर्कट	मक्कड	माकड़	वानर, वन्दर
मर्कटी	मक्कडी	माकड़ी	वानरी, वन्दरी
मर्दन	मद्दण	मद्दन, मलन	अंग-चम्पी, मालिश
मर्दल	मद्दल	मंदला, माँदला	वाद्य-विशेष, मृदंग
मलन (मर्दन)	मलण	मलन	मर्दन, मलना
मलिन	मइल	मैला	मैला, गन्दा
मश, मशक	मस, मसअ	मस	मस्सा, तिल
मसूर मसूरक	मसूर मसूरग	मसूर	धान्य-विशेष, मसूर
	महअर (दे)	महार	निकुञ्ज का मालिक
महाराष्ट्र	मरट्ठ मरहट्ठ	मराठा मरहठा	देश-विशेष
महाराष्ट्री	मरहट्ठी	मराठी	महाराष्ट्र देश की रहने वाली स्त्री

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	महाल (दे)	महाल	जार, उपपति
महालय	महालय	महाला	बड़ा आलय
	महासउण (दे)	महासुन	उल्लू
	महासद्दा (दे)	महासदा	शिवा, शृगाली
महिका	महिआ	महिया	कुहरा, धुंव
महेच्छ	महिच्छ	महिछ	महत्वाकांक्षी
महेच्छा	महिच्छा	महिछा	महत्त्वाकांक्षा
महोत्सव	महूसव महोच्छव	महूसव महोछव	बड़ा उत्सव
मांसल	मंसल	मंसल	पीन, पुष्ट
माङ्गलिक	मंगलिअ मंगलीअ	मंगली मांगली	मंगल-जनक
मञ्जिष्ठ	मंजिट्ठ	मजीठ	मजीठ रंग वाला
मात	माय	माया	समाया हुआ
मातुलिङ्गा मातुलिङ्गी	माउ माउलिंगी	माउलिंगा	बिजौरे का पेड़
मातृ	माइ	माई	माता
मातृगृह	माइघर	मैहर	माता का घर
मातृष्वसा	माउसिआ मउसी मासिआ	माउसी मौसी	मां की बहिन
	मामिया मामी (दे)	मामी, माईं	मामा की बहू
मार्ग	मग्ग	मग	रास्ता
मार्गण	मग्गण	माँगन	खोज, माँग
मार्गशिर(मार्गशीर्ष)	मग्गसिर	मंगसिर	मास-विशेष
मार्गशिरी	मग्गसिरी	मंगसिरी	मँगसिर मास की पूर्णिमा
मार्गित	मग्गिअ	माँगा	१ अन्वेषित २ माँगा हुआ
मार्जन	मज्जण	मंजन, माँजन	साफ करना, शुद्धि
मार्जार	मंजर	माँजर, माँजरा	मंजार, बिलाव
मार्जित	मज्जिअ	माँजा	साफ किया हुआ

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मार्दलिका	मद्दलिअ	मंदलिया, माँदली	मृदंग बजानेवाला
मालिक	मालिअ	माली	माली, एक जाति विशेष
मालिन्	मालि	माली	माली, पुष्प-व्यवसायी
मालिनी	मालिणी	मालिन	माली की स्त्री
मालूर	मालूर, माऊर	मालूर	कपित्थ, कैथ का वृक्ष
माष	मास	मास	उड़द
मास	माह	माह	महीना
	मित्तल (दे)	मीतल	कन्दर्प, काम
मित्र	मित्त	मीत	दोस्त
	मिरिआ (दे)	मिरी, मिरिया	कुटी, झोंपड़ी
मिरिच	मिरिअ	मिर्च, मिरच	मिरच, मिर्च
मिलित	मिलिअ	मिला	मिला हुआ
मिश्र	मिस्स	मिस्स	पूज्य
मिश्र	मीस	मीसा	मिश्रित
मिश्रित	मीसिय	मिस्सी, मिस्सा	संयुक्त, मिलाया हुआ
मिष	मिस	मिस	बहाना, छल
मिष्ट (मृष्ट)	मिट्ठ	मीठा	मधुर
	मिसमिस (दे)	मिसमिस	अत्यन्त चमकना
	मुकलाव (दे)	मुकलावा	भिजवाना
मुकुट	मउड	मौर	किरीट
मुकुर	मउर	मउर, मौर	दर्पण
मुकुल	मउल	मौर, बौर	थोड़ी विकसित कली
मुकुलन	मउलण	मौलन, बौरन	१ कली का खिलना २ संकोच
मुकुलित	मउलिअ	मौल्या	१ मुकुल-युक्त २ संकुचित
मुग्ध	मुद्ध	मुँह	मुँह

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मुञ्ज	मुंज	मूँज	तृण-विशेष जिसकी रस्सी बनाई जाती है
मुण्ड	मुंड	मूंड	मस्तक, सिर
मुण्डन	मुंडण	मूंड़न	केशों का अपनयन
मुण्डित	मुंडिअ	मुंडा	मुण्डन-युक्त
मुद्ग	मुग्ग	मूंग	धान्य-विशेष
मुद्गर	मोग्गर	मोगर	मोगर, मोगरा
मुद्रा	मुद्दा	मूंद	१ मोहर, छाप २ अँगूठी
मुद्रित	मुद्दिअ	मूंदा	जिस पर मोहर लगाई गई हो
मुषित	मुसिय	मुस्या, मुंसा	चुराया हुआ
मुष्क	मुक्ख	मोख	१ अण्ड-कोश २ चोर, तस्कर
मुष्टि	मुट्ठि	मूंठ, मुट्ठी	मुट्ठी, मुक्का
मुस्त	मुत्थ	मोथा	मोथा
मूत्र	मुत्त	मूत	पेशाव
मूल	मूल	मूर	जड़
मूलक	मूलग मूलय	मूला	कन्द-विशेष, मूली
मूलिका मूली	मूलिगा मूली	मूली	ओषधि-विशेष
मूषक	मूसग मुसय	मूसा	चूहा
मृग	मय मिग	मय मिग	हरिण
मृगाङ्क	मयंक मयंग	मयंक मयंग	चन्द्र, चाँद
मृगी	मई, मगी	मई, मगी	हरिणी
मृगेन्द्र	मइंद	मइंद	सिंह
मृज्	मज्ज	माँज	साफ करना
मृणालिका	मुणालिआ	मुनाली, मणाली	कमलिनी

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मृत	मुअ मड, मय	मुआ, मरा	मरा हुआ
मृतक	मडय	मडा, मरा	मुर्दा
मृतगङ्गा	मयंग	मयंगा	जहां पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान
मृति	मइ	मइ,मरी (संज्ञा)	मौत, मरण
मृत्तिका	मित्तिआ,मिट्टिआ	मिट्टी	मिट्टी
मृत्यु	मिच्चु	मीचु	मौत, मरण
मृद्	मद्द, मल	मद्द, मल	१ चूर्ण करना २ मसलना
मृषा	मुसा	मुसा	मिथ्या
मेखला	मेहला	मेहला	करधनी
मेघ	मेह	मेह	बादल
मेचक	मेअय	मेया	काला
मेढ्र	मेंढ	मेंढ़ा	मेंढ़ा, मेष
मेदपाटक	मेअवाडय	मेवाड़	मेवाड़ प्रदेश
मेदिनी	मेइणि मेइणी	मेइनी	पृथ्वी
मेरा	मेरा	मेरा, मेर	तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई
मेलक	मेलाविअ	मेला	मिलाया
मेलित	मिलिअ	मेल्या	मिल:
	मेहर (दे)	मिहर, मेहर	गाँव
	मेहरिया मेहरी (दे)	मेहरिया मेहरी	ा।
मैथुन	मेहुण मेहुणय	मेहुन मेहुना	
मोघ	मोह		
मोरी	मोरी		

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
मोष	मोस	मोस	१ चोरी २ चोरी का माल
मोषण	मुसण	मुसन, मुसना	चोरी
मौक्तिक	मुत्तिअ	मोती	मोती
मोखर	मोहर	मोहर	निष्फल, निरर्थक
मौन	मूण	मून, मौन	चुप्पी
मौलि	मउली	म्हौर	१ किरीट २ चोटी ३ अशोक वृक्ष
म्रक्ष	चोप्पड मक्ख	चुपड़ माख	स्निग्ध करना घी-तेल वगैरह लगाना, माखना
यकृत्	जग	जिगर	पेट की दक्षिण ग्रन्थि
यक्ष	जक्ख	जाख	व्यन्तर देवों की एक जाति
यक्षिणी	जक्खिणी	जाखिनी	यक्ष-योनिक स्त्री
यजन	जयण	जयन	पूजा
यत्	ज	जो	जो, जो कोई
यतन	जयण	जयन, जतन	यत्न
यत्र	जत्थ, जहिं	जहाँ	जहाँ, जिसमे
यन्त्र	जंत	जंत, जंतर	कल, मशीन
यम	जम	जम	अहिंसादि पाँच महाव्रत
यमन	जमावण	जमाना	नियन्त्रण करना
यमुना	जउण	जउना, जमुना	नदी विशेष
यव	जव, जउ	जौ	अन्न-विशेष
यवन	जवण	जवन	म्लेच्छ देश-विशेष
यवनिका	जवणिआ	जवनिया	परदा
यवनी	जवणी	जवनी	परदा, पट
यवास	जवास	जवासा	वृक्ष-विशेष
यष्टि	लट्ठि	लाठी	लाठी, लकड़ी
याक्षी	जक्खी	जाखी	लिपि-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
याग	जाग	जाग, जग	यज्ञ, होम
यात्रा	जत्ता	जात	देशाटन
यादृश	जइस, जारिस	जैसा	जैसा
यान	जाण	जान	बारात
यान	जाण	जान	रथादि वाहन
यान्त्रिक	जंतिअ	जंती	यन्त्र कर्म करने वाला
याम	जाम	जाम	प्रहर, तीन घण्टे का समय
यामिक	जामिग	जामी, जामिग	पहरेदार
यामिनी	जामिणी	जामिनी	रात्रि, रात
यावक	जावय	जावा	लाख का रंग
यावत्	जेत्तिअ जेत्तिल	जेता जित्ता	जितना
यावनी	जवणी	जवनी	यवन की स्त्री
युक्त	जुत्त	जुत	सहित, मिलाहुआ
युग	जुग	जुग	काल-विशेष
युगल	जुअल जुगल	जुअल जुगल	युग्म
युत	जुअ	जुअ	जुड़ा, मिला, युक्त
युतयुत	जुअजुअ (अप)	जुआ-जुआ	जुदा-जुदा अलग-अलग
युद्ध	जुज्झ	जुद्ध	लड़ाई
युध्	जुज्झ	जूझ	लड़ाई करना
युधिष्ठिर	जहिट्ठिल	जहट्ठर	पाण्डु राजा का जेष्ठ-पुत्र
युवति	जुवइ	जुवइ	तरुणी
युवन्	जुव	जुवा	जवान
युष्मदीय	तोम्हर (अप)	तुम्हारा	तुम्हारा
यूका	जूआ	जूं, जू	जूं, क्षुद्र-कीट-विशेष
यूथिका यूथी	जूहिया जूही	जूही जूही	लता—विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
योक्त्र | योक्त्रक |	जोत्त | जोत्तग्र |	जोता	जोता, रस्सी या चमड़े का तस्मा पट्टा
योग	जोग	जोग	व्यापार, मन
योगिन्	जोइ	जोइ	योगी
योगिनी	जोइणी	जोइनी	जोगिनी
योगीश	जोईस	जोईस	योगीश
योजन	जोश्रण	जोजन	परिमाण-विशेष, चार कोस
योजना	जुंजण	जोजना	युक्ति
योध	जोह	जोह, जोधा	योद्धा
योषित्	जोसिश्रा	जोसिश्रा	स्त्री, महिला
यौवन	जोव्वण	जोवन	जवानी
	रउताणिया (दे)	रौतानिया	रोग-विशेष,पामा
	रक्खवाल (दे)	रखवाल	रक्षा करने वाला
रक्त	रत्त	राता	लाल रंग
रक्षक	रक्खग्र | रक्खग |	रखा, राखा | रखग |	रक्षण-कर्त्ता
रक्षण	रक्खण	राखन	रक्षा, पालन
रचन	रयण	रयन	निर्माता
रजन	रयण	रँगना	रँगना
रजनी	रयणी	रैनि	रात्रि
रज्जु	लज्जु	लेजू	रस्सी
रट्	रड	रड़	रोना, चिल्लाना
रटन	रडण	रड़न	चीख,चिल्लाहट
	रड्ड (दे)	रड़ा	खिसक कर गिरा हुश्रा
रण्डा	रंडा	रांड	रांड, विधवा
रति	रइ	रइ	काम-क्रीड़ा
रतीश्वर	रईसर	रईसर	कामदेव
रत्न	रयण	रयन	माणिक्य आदि बहुमूल्य पत्थर
रथ	रह	रह	यान-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
रथाङ्ग	रहंग	रहंग	चक्रवाक,पहिया
रदन	रयण	रयन	दांत, दशन
रद्ध (राद्ध)	रद्ध	रांधा	रांधा हुआ, पक्व
रध् (राधय्)	रंध	रांध	रांधना, पकाना
रन्तृ	रमिर	रमऊ,रमेऊ	रमण करने वाला
रन्धन (राधन)	रंधण	रांधन, रांधना	रांधना, पकाना
	रप्फडिआ (दे)	राफड़ी, रफड़िया	गोधा, गोह
	रब्बा (दे)	राब	राब, यवागू
रभसा	रहसा	रहसा	वेग से
रमणीय	रमणिज्ज	रमनीज, रमनी	सुन्दर
रवि	रइ	रइ	सूर्य
रश्मि	रस्सि	रस्सी	१ किरण, २ रस्सी ३ जेवड़ी
रसना	रसणा	रसना	जीभ
	रह (दे)	रह	रहना
	रहण (दे)	रहन	रहना, निवास
रहन	रहण	रहन	१ त्याग, २ विराम
रहस्	रह	रह, रहसि	१ एकान्त २ गोप्य
रहस्य	रहस, रहस्स	रहस	गुह्य
रहित	रहिअ	रहिय, रहा	परित्यक्त, वर्जित, शून्य
राजक	राणय	राणा	छोटा राजा
राजकुल	राउल	रावल	राजा का वंश
राजकुलिक	राउलिय	राउली	राजकुल संबंधी
राजन्	राइ, राय	राय	राजा
राजपुत्र	राउत्त	रावत	राजपूत
राजि	राइ	राइ	राई
राजिका	राइआ राइगा }	राई	राई, राई का गाछ
राजित	छज्जिअ	छाजा	शोभित
राज्य	रज्ज	राज	शासन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
राज्ञिका	राणिआ	राणी, रानी	रानी
रात्रि	रत्ति	रात	निशा
राध	राह	राह	१ वैशाख मास २ वसन्त ऋतु
राधा	राहा	राहा	गोपी
राधिका	राहिआ राही	राहिया राही	एक प्रधान गोपी
राल	राल	राल	धान्य विशेष,
रालक	रालग रालय		एक प्रकार की कङ्गु
	राला (दे)	राला	प्रियुंग, माल-कांगनी
राव	राउ, राव	राव, रव	रोला, कलकल
राष्ट्र	रट्ठ	राठ	देश
राष्ट्रिय	रट्ठिअ	राठी	देश-सम्बन्धी
रास रासक	रास रासग	रास, रासा	एक प्रकार का नृत्य
रासभ	रासह	रासह	गर्दभ
रिक्त	रिक्क, रित्त	रीता	खाली
रिक्थ	रित्थ	रित्थ	धन, द्रव्य
रिङ्ग रिङ्गण	रिग, रिग्ग रिंगण	रिग रेंगना रेंगन	रेंगना, चलना
रिङ्गित	रिंगिअ	रेंगा, रिंगि	रेंगना
	रिंछोली (दे)	रिंछोली,रिछोली	पंक्ति
रिपु	रिउ, रिवु	रिउ	शत्रु
रिष्टा	रिट्ठा	रीठ, रीठा	१ महाकच्छ विजय की राजधानी २ मदिरा, दारू
रिष्टि	रिट्ठि	रीठि	खड्ग
रीति	रीइ	रीइ	प्रकार, ढंग
रीरी	रीरी	रीरी	धातु-विशेष,पीतल
रुचि	रुइ	रुइ	अनुराग, प्रेम

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
रुचिर	रुइर	रुइर	सुन्दर, मनोरम
रुञ्च	रुंच	रुंछ	रुई से उसके बी को अलग करने की क्रिया
रुण्ड	रुंड	रुंड, रूँड	बिना सिर का धड़
रुद्	रुअ	रोअ	रोना
रुदती	रुअंती	रोअती	वल्ली-विशेष
रुद्ध	रुधिअ	रुँधा	रोका हुआ
रुद्र	रुद्द	रुद्द	महादेव, शिव
रुष्ट	रुट्ठ, रूसिअ	रूठा, रूसा	रोष-युक्त
रुक्ष	लुक्ख	लूखा, रूखा	रूखा
रुत	रूअ	रूअ, रूई	रुई, तूला
रूपक	रूअग, रूअग, रूवग	रुपया	रुपया, सिक्का
रूपकार	रूआर	रूआर	मूर्ति बनाने वाला
रूपिन्	रूपि	रूपी	शौनिक, कसाई
रूप्य	रूप्य, रुप्पय	रुपया	चाँदी, रजत
	रूवि (दे)	रूवी	आक का पेड़
रेखा	रिक्खा, रेहा	रिखा, रेहा	लकीर
	रेल्लि (दे)	रेल, रेला	रेल, प्रवाह
	रेवलिआ (दे)	रेवली	वालुकावर्त, धूल का आवर्त
रोग	रोअ	रोअ, रोव	बीमारी
रोचन	रोअण	रोयन	गोरोचन
रोचना	रोअणा	रोवना	गोरोचन
रोदन	रुअण, रुवण, रोवण,	रोवन	रुदन, रोना
रोप	रोव	रोप	पौधा
रोपण	रुंपण	रूँपन, रोपना	रोपना
रोमन्थ	रोमंथ	रौंथ	पगुराना, चबी हुई वस्तु का पुनः चबाना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
	रोल (दे)	रोल	कलह
रोलम्ब	रोलंव	रोलंव	भ्रमर, मधुकर
रोष	रोस	रोस	गुस्सा
रोषण	रूसण, रोसण	रोसन, रूसना	गुस्सा
लकुट	लउड लक्कुड	लकड़ लकड़ी	लकड़ी
लक्ष	लक्ख	लाख	संख्या-विशेष, सौ-हजार
लक्षण	लक्खण लच्छन	लक्खन लच्छिन	लच्छिन
लक्ष्मण	लक्खण	लखन, लाखन	श्रीराम के छोटा भाई
लक्ष्मी	लच्छी	लच्छी, लाछी	संपति, वैभव
लक्ष्य	लक्ख	लक्ख	पहचानने योग्य लक्षण
लगन (लग्न)	लग्ग लग्गण	लाग लगन	संबद्ध
लगित	लइअ	लिए	लगा हुआ
लघु	लहु लहुअ	लहु	छोटा, तुच्छ
लघुक	हलुअ	हलका	हलका
लङ्घन	लंघण	लांघना	अतिक्रमण
	लंच (दे)	लंच, लांच	मुर्गा
लञ्चा	लंचा	लंचा, लांचा	रिश्वत
	लड्डिय (दे)	लाड़	लाड़, दुलार
लड्डुक	लड्डुअ लड्डुग	लड्डू	लड्डू, मोदक
लड्डुककार	लड्डुयार	लडुआर	लड्डू वनानेवाला
	लद्द (दे)	लाद	भार भरना
	लद्दण (दे)	लादन	वोझा
	लद्दी (दे)	लीद	घोड़े, हाथी आदि की विष्टा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
लभ्	लभ, लह	लह	प्राप्त करना
लभन	लहण	लहन, लहना	लाभ, प्राप्ति
ललाट	णिडल णडाल	लिलाट नलाट	भाल, ललाट
ललाटिका	णडालिआ	नलाटी	ललाट-शोभा
ललित	ललिअ	लाल्या	शोभा-युक्त
ललिता	ललिआ	लली	एक पुरोहित स्त्री
लल्ल	लल्ल	लल्ल	अव्यक्त आवाज़ वाला
	लल्ल (दे)	लाल, लल्ला	१ स्पृहा वाला २ न्यून, अधूरा
लवक	लवअ	लवा, लाव	गोंद, लास
लवङ्ग	लवंग	लौंग	वृक्ष-विशेष का फल
लवण	लूण लोण	लूण लोन, नौन	नमक
लवल	लउल, लवल	लौल	पुष्प-विशेष
लवितृ	लाविर	लावा	काटने वाला
लशुन	लसुण	ल्हसन	ल्हसन, कन्द-विशेष
ला	ले, लय	ले	लेना, ग्रहण करना
लाक्षा	लक्खा	लाख	लाख, चपड़ा
	लाग (दे)	लाग	चुंगी, एक प्रकार का सरकारी टैक्स
लाङ्गल	णंगर णंगल	लाँगर (नागल)	हल, जिससे खेत बोया और जोता जाता है
लाङ्गलिन	णंगलि	लंगली	बलभद्र, हली
लाङ्गूल	णंगूल	लंगूर	पुच्छ, पूँछ
लाङ्गूलिन	णंगूलि	लंगूरी	लम्बी पूँछवाला वानर
लाटी	लाडी	लाडी	लिपि-विशेष
लालय्	लाल	लाल	स्नेह-पूर्वक पालन करना

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
लावणिक	लोणिय	लोनी	लवण-युक्त
लासक	लासक लासग	लासा	रास गाने वाला
लास्य	लास	लास	नृत्य, नाच
लिक्षा	लिक्खा	लीख	छोटी जूं
लिप्त	लित्त, लिप्प	लेप, लीप	लेपयुक्त, संवेष्टित
	लिवोहली (दे)	निबोली	निम्ब-फल
लुञ्च	लुंच	लूंच, नूंच, नोंच	बाल उखाड़ना
लुञ्चित	लुंचिअ	लूंचा, नूंचा, नोंचा	केश रहित किया हुआ, मुण्डित
लुट्	लोट्ट	लोट	लोटना
लुठन	लुढन	लुढना, लुढ़कन	लुढ़कना, लेटना
लुण्ट्	लुंट	लूट	लूटना
लुण्टन	लुंटण	लूटन	लूट
लुम्बी	लुंबी	लुंबी, लूंबी	फलों का गुच्छा
लू	लुण	लुन	छेदना, काटना
लूता	लूआ	लूआ	१ वातिक रोग विशेष २ मकड़ी
लेष्टु	लेठ्ठु लेठु लेठुअ	लेठु लेठुआ	रोड़ा, ईंट-पत्थर आदि का टुकड़ा
लेह	लेह	लेह	चाटन
लोक	लोग, लोअ	लोग, लोय	लोग
लोचन	लोअण	लोयन	आंख
	लोढ (दे)	लोढ़ा	पीसने का पत्थर
लोप्त्र	लोत्त	लोत	चोरी का माल
	लोनसी (दे)	लोनसी	ककड़ी
लोष्ट	लोट्ठ, लुट्ठ	लोड़, रोड़, रोड़ा	ढेला
लोहकार	लोहार	लुहार	लुहार, लोहे का काम करने वाला
लोहित	लोहिअ	लोही	लाल रंग

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
लोही	लोही	लोही	लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, करास
	वइंगण(वाइंगण)(दे)	बैंगन	बैंगन
	वक्खार (दे)	बखार,बखारी	अन्नादि भरने का मकान, गोदाम
वक्र (वङ्क)	वंक	बाँका	टेढ़ा, तिरछा
वक्षस्	वक्ख, वच्छ	बाछ	छाती, सीना
	वंग (दे)	वंग	वृन्ताक, भंटा
वचन	वयण	वयन	उक्ति, कथन
	वंजर (दे)	वंजर, वाँजर	नीवी,कटि-वस्त्र
वञ्जुला	वंजुला	वजुल, बाँजुल	१ अशोक वृक्ष २ वेतस वृक्ष
वट	वड	बड़	बड़ का पेड़
वटक	वडग	वड़ा	खाद्य-विशेष,बड़ा
	वट्ट (दे)	वाट(वाटका)	प्याला
	वड्डिआ (दे)	बढ़ी, वाढी	कूपतुला, ढेंकली
वणिज	वणि वणिअ	बनिया	वनिया
वण्ट, वण्टन	वण्ट, वंठण	बंट, बाँटना	बाँटना, विभाजन
वत्स	वच्छ	बाछ	बछड़ा
वद्	वज्ज	बाज	बजना
वदन	वयण	वयन	मुख
वदितृ	वज्जणअ	बजाऊ	बजने वाला
वधू	बहू	बहू	बहू, भार्या
वधूटिका	बहुलिआ	बहुरिया	अल्प वय वाली स्त्री
वनन	वणण	वनन	बछड़े को उसकी माता से भिन्न दूसरी गौ से लगाना
वनीपक	वणिअय	वनीया (वनिया)	भिखारी
वन्ध्या	वंझा	बाँझ	अपुत्रवती-स्त्री

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
वपन	ववण	बोना	अनाज का बोना
वर	वर	वर	१ पति २ वरदान
वरटा	वरडा वरडी }	वर्र	तैलाटी, कीट-विशेष
वरत्रा	वरत्ता	वरत, वर्त	रज्जु, रस्सी
वरला	वरला	वरला	हंसी, हंस पक्षी की मादा
वराट वराटक	वराड वराडग वराडय }	वरार	दक्षिण का 'बरार' नामक प्रसिद्ध देश
वराटिका	वराडिया	वराड़ी	कौड़ी
वरिष्ठ	वरिट्ठ	वरिठ	अति-श्रेष्ठ
वर्ज	वज्ज	बाज, बाझ	रहित, वर्जित
वर्णिका	वन्निआ	बानी, बानगी	नमूना, तरह-तरह के नमूने
वर्तक	वट्टय	वतक	पक्षी-विशेष
वर्ति	वट्टि	वत्ती, बाती	दीपक में जलने वाली बाती
वर्तिका	वट्टिआ	वत्ती	दीप वत्ती
वर्तुल	वट्टुल	बटुल	वृत्ताकार
वर्त्मन्	वट्ट, वट्टा	बाट	मार्ग
वर्धक	वड्ढवअ	वड्ढावा	१ बढ़ाने वाला २ बधाई देनेवाला
वर्धकि	वड्ढइ	बढ़ई	लकड़ी का काम करने वाला
वर्धन (वर्धापन)	वद्धावण	बधावन	बधाई
वर्धनिका (वर्धापनिका)	वद्धावणिया	बधावनी	बधाई
वर्धानिक	वद्धणिआ वद्धणी }	बढ़नी, बढ़ानी	संमार्जनी, झाड़
वर्धापन	वड्ढवण	वड्ढावन	बधाई
वर्धित वर्धापित]	वद्धाविअ	बधाया	जिसको बधाई दी गई हो

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
वर्ध्र	वद्ध	बाँध	चर्म-रज्जु
वर्वर	वव्वर	बावर	मूर्ख, पामर
वर्षा	वारिसा	बरसा	वृष्टि
वलभि वलभी	वलहि वलही	वलही	छज्जा, बरामदा
वलित	वलिअ	वला	मुड़ा हुआ
वल्क	वक्क	वाक	त्वचा, छाल
वल्कल	वागल वाकल वक्कल	बाकल	वृक्ष की छाल
वल्कलिन्	वक्कलि वक्कलिण	वाकली	वृक्ष की छाल पहनने वाला
वल्गा	वग्गा	बाग	लगाम
वल्मीक	वम्मिअ वम्मीअ	बामी	कीट-विशेष
	वल्लाय (दे)	बल्लाय	नकुल, न्यौला
वंशी	वंसी	वंसी, बाँसी	वाद्य-विशेष, मुरली
वसति	वसइ	वसइ	स्थान, आश्रय
वसन	वसण	वसन	१ वस्त्र, कपड़ा २ निवास
वसा	वसा	वसा	शरीरस्थ, धातु-विशेष
वसुधा	वसुहा	वसुहा	पृथ्वी
वसुमती	वसुमइ वसुमई	बसुमई	१ धरती २ एक इन्द्राणी
वस्तु	वत्थु	वत्थु, वसत	पदार्थ, चीज
वहन	वहण	वहन	१ ढोना २ भारवाही वाहन
	वहिया (दे)	वही	हिसाव लिखने की किताब
वह्लिक	वहिलग	वहिला	ऊँट बैल आदि भारवाही पशु

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
वागड	वागड	वागड़	गुजरात का एक प्रान्त 'वागड़'
वागुरा	वग्गुरा,वाउरा	वागुर, वगुरा	पशु फँसाने का जाल
वागुरिक	वग्गुरिय,वाउरिय	वावरिया,वागुरी	व्याध, पारधि
वाग्मिन्	वग्गि	वागी	प्रशस्त वाक्य बोलने वाला
वाट	वाड	वाड़	वाड़
वाटिका	वाडिग्रा	वाड़ी	वगीचा,
वाटी	वाडि | वाडी |	वाड़ी	वाड़ी
वाणिज	वाणिग्र	वानिया,वनिया	व्यापारी
वाणिज्य	वाणीज | वणिज्ज |	वनिज	व्यापार
	वाणीर (दे)	वानीर	जम्बू वृक्ष
वातूल	वाउल	वाउर	वात-रोगी, उन्मत्त
वादित	वज्जिग्र	वाज्या, वजा	वजाया हुग्रा
वादित्र	वाइत्त	वाइत	वाद्य, वाजा
वाद्य	वज्ज, वाइज	वाजा	वाजा, वादित्र
वानर	वाणर	वांदर	वन्दर
वानीर	वाणीर	वानीर	वेतस-वृक्ष, नरसल
वाप	वाय	वाय	१ वपन. वोना २ खेत
वापित	वाविग्र	वया, वोया	वोया हुग्रा
वापी	वापी	वावी, वावड़ी	चतुष्को जलाशय-विशेष
	वायंगण (दे)	वैंगन	वैंगन
	वायण (दे)	वायना	भोज्योपायन, खाद्य-उपहार
	वायार (दे)	वयार	शिशिर वात
	वाउ	वाउ	हवा
वार	वार	वार	अवसर, वेला

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
वारक	वारग	बार	बारी. क्रम
वारा	वारा	वारा, बार	देरी, विलम्ब
वाराणसी	वाणारसी	बनारस	बनारस,एक नगर
	वारिश्र (दे)	वारी	नापित
वारित	वारिश्र	वारा,	१ निवारित २ वेष्टित
वार्त्ता	वत्ता वत्तडिश्रा	बात	बात, कथा
वार्तिक	वत्तिश्र	वातिय	कथाकार
वार्दल	वद्दल	वादल	बादल, घ
वार्दलिका	दद्दलिया	बदली, बादली	बदली
वालुका	वालुश्र वालुआ	बालू	धूल, रेत
वालुङ्क	वालुंक	वालूंक	ककड़ी. खीरा
वालुङ्की	वालुंकी वालुक्की	वालुंकी वालुकी	ककड़ी का गाछ
	वासण (दे)	वासन	पात्र, बर्तन
वासि (वासी)	वासि	बासि	वसूला, बढ़ई का एक अस्त्र
वासित	वासिद वासिय	वास्या बसाया बासी	१ बसाया हुआ २ वासी रखा हुआ
वास्तु	वत्थु	वाथु	गृहादि-निर्माण शास्त्र
वास्त्रिक	वत्थिअ	वाथी	वस्त्र बनाने वाला, शिल्पी
वाहक	वाहय	वाहा, वाही	चलाने वाला, हांकने वाला
	वाहडिया (दे)	वाहड़ी	कावर, बहंङी
	वाहलिया (दे) वाहली	वाहली	क्षुद्र नदी
	विश्रालिउ (दे)	व्यालू	सायंकाल का भोजन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
विंशति	वीस वीसइ	वीस	संख्या-विशेष
विंशतिम्	वीसम वीसइम	बीसवाँ	बीसवाँ
विंशिका	वीसिया	वीसी	बीस संख्या वाला
विकत्थन	विकत्थण	विकहन	१ प्रशंसा २ प्रशंसा-कत
विकार	विगार	विगाड़	विकृति
विकीर्ण	विक्खिरिअ	बिखरा	बिखरा हुआ, फैला हुआ
विकृत्	विकट्ट	विकट	काटना
विक्रय	विक्किअ	विकय, बेच	बेचना
विक्रयण	विक्किणण	विकियन, बेचन	बेचन
विक्री	विक्क	बेच	बेचना
विक्रीत	विक्कीय	विका	बेचा हुआ
विखण्डन	विहंडण	विहंडन	विनाश, विच्छेद
विखण्डित	विहंडिअ	विहंडी विहँडा	विनाशित
विच्छेद	विच्छेअ	विच्छेय, विछेह	विभाग,पृथक्करण
	विच्छोह (दे)	विछोह	विरह, वियोग
विजनयित्री	विआउरी	व्यावर	व्याने वाली, प्रसव करने वाली
विटप	विडव	विरवा	वृक्ष
	विट्टी (दे)	वीटी	गठरी, पोटली
विडङ्ग	विडंग	विडंग	ओषधि-विशेष
	विंटालिआ (दे)	वीटली	गठरी, पोटली
	विंटिया (दे)	विंटी	गठरी, पोटली
विदुर	विदुर	विदुर, विउर	विज्ञ
विद्ध	विज्झ	वीझा	विंधा हुआ
विद्युत्	विजुरि, विज्जु	वीजुरी,विजली	विजली
विद्वस् (विज्ञ)	विज्ज	विज्ज	पण्डित
विधवा	विहवा	विधवा, विहवा	जिसका पति मर गया हो वह स्त्री, रांड

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
विध्यात	विज्झाण	बुझा	बुझा हुआ, उपशान्त
विध्यापन	विज्झवण	बुझाना	बुझाना
विध्यापित	विज्झविअ	बुझाया	बुझाया हुआ
विध्वंस	विद्धंस	विधंस विधुंस	विनाश
विनमित	विणमिअ	विनमा, विनवा	नबाया हुआ
विनष्ट	विणट्ठ	बिनठा	विनाश-प्राप्त
विना	विणा, विणु (अप)	बिना, बिनु	बिना
विनिःसृत	विणिस्सरिय	विनिसरा	बाहर निकाला हुआ
	विप्पवर (दे)	विप्पोर, विपोर	भल्लातक, मिलावा
विभावरी	विहावरी	विहावरी	निशा
विमर्श (मीमांसा)	वीमांसा	वीमस	विचार, पर्या-लोचन
विमर्शित (मीमांसित)	वीमंसिय	विमंस्या	विचारित
विरक्त	विरत्त	विरत	विराग-प्राप्त
विरक्ति	विरत्ति	विरत्ति, विरति	वैराग्य
	विरत्ति (दे)	विरलि	वस्त्र-विशेष, डोरिया
विरूप	विरूअ विरूव	विरूव	कुरूप
विलोडित	विलोडिय	विलोडा	मथित
विवाह	विआह	ब्याह	पाणिगहण
विवाहित	विवाहिय	विवाहा	जिसकी शादी हो गई हो
विवेक	विवेअ, विवेग	विवेग	ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय
विवेचन	विवेयण	विवेयन	निर्णय
विशासन	विसासण	विसासन	विघातक, विनाशक
विशासित	विसासिअ	विसासा	मारित, हिंसित

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
विशासी	विसासी	विसासी	वध करने वाला, मारक
विशोक	विसोग	विसोग	शोक-रहित
विश्लेष	विसलेस, विसेस	विसलेस, विसेस	जुदाई
विश्वस्त	वीसत्थ	वीसह	विश्वास-युक्त
विश्वास	विस्सास	विसास	भरोसा
विश्वासित	विस्सासिय	विसासी	जिसको विश्वास कराया गया हो
विष्ठा	विट्ठा	बीट	बीट, मल
विसारण	विस्सारण	विसारन	विस्तारण, फैलाना
विस्मारित	वीसारिअ	विसार्‌या	भुलवाया हुआ
विस्मृत	विसरिअ	विसरा	भुलाया हुआ
वीजन	वीअण, वीजण	वीजन	पंखे से हवा करना
वीजय (वीज)	वीअ	वीज	हवा करना, पंखा करना
वीथि, वीथिका, वीथी	वीहि, हिय, वीही	वाही	१ मार्ग, रास्ता २ पंक्ति ३ बाजार
	वुणण (दे)	बुनन	बुनना
	वुणिय (दे)	बुना	बुना हुआ
वृक्ष	वक्ख, वच्छ	बाख, बाछ	पेड़
वृत	वरिअ	बरया, बरा	१ स्वीकृत २ जिसकी सगाई की गई हो
वृत्त	वट्ट	वट	बाट, मार्ग
वृत्तान्त	वित्तंत	वितांत, वितंत	समाचार, खबर
वृत्ति	वित्ति	वित्ति	जीविका
वृद्ध	वुड्ढ	बूढ़ा	बूढ़ा
वृद्धि	विद्धि	बढ़ी	बढ़ाव, बढ़ती
वृन्त	विंट, वंट	बेंट	फल-पत्र आदि का बन्धन, बेंट
[illegible]		विनागी	बैंगन का पौधा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
वृन्दावन	विंदावण	विंदावन	मथुरा का एक वन
वृश्चिक	विंचुअ	विच्छू	विच्छू, बीछू
वृषण	वसण	वसन	अण्ड कोष, पोता
वृषभ	वसभ	वसह	१ वृष राशि, २ वैल
वृष्ट	विट्ठ, वुट्ठ	वूठा	बरसा हुआ
	वेअड्ड (दे)	वेअड़	मल्लातक, भिलावा
वेतन	वेअण	वेयन	तनख्वाह
वेदन	वेअण	वेयन	अनुभव, रोग
वेपन	वेअण	वेयन	कम्प, काँपना
	वेला (दे)	वेला	दन्त मांस, दाँत के मूल का मांस
वेला	वेला	वेरा, बेर	अवसर, काल
वेष्ट	वेढ	वेढ़	लपेटना
वेष्टित	वेढिअ	वेढ़ा	लपेटा हुआ
वेष्टिम	वेढिम	वेढ़वी	१ वेष्टन से बना हुआ २ खाद्य-विशेष
वेसन	वेसण	वेसन	चना आदि द्वि-दल का आटा
वैकुण्ट	वइकुंठ	वेकुंठ	विष्णु-लोक
वैराग्य	वइराग	वेराग	विरक्ति
वैरिन्	वइरि वइरिअ	वैरी	दुश्मन, रिपु
वैशाख	वइसाह	वैसाख	मास-विशेष
	वोड्ड (दे)	वोड़	मूर्ख, वेवकूफ
	वोढ (दे)	वोढ	दुष्ट
व्यंसक	वंसय	वंसय, वंसी	धूर्त, ठग
व्यध्	विज्झ	वींझ	वींधना, भेदना
व्यय	वय	वय, विय	खर्च
व्यवधान	ववधाण	ववधान, ववहान	अन्तर, दो पदार्थों के बीच का अन्तर
व्यवसाय	ववसाय	व्योसाय, वौसाय	व्यापार

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
व्यवहार	ववहार	व्योहार	आचरण
व्यवहारिन्	ववहारि	व्योहारी	व्यापारी, वणिक्
व्याकुल	वाउल	वाउल, वाउर	बावला
व्याख्यान	वक्खाण	वखान	विवरण
व्याघारित	वग्घारिअ	वघारा	वघारा हुआ, छौंका हुआ
व्याघ्र	वग्घ	वाघ	बाघ, शेर
व्याघ्री	वग्घी	वाघी, वाघिन	मादा बाघ
व्यापृत	वावर	वावर	काम में लगा
व्युत्सृज्	वोसर] वोसिर]	ओसर	परित्याग करना, छोड़ना
व्युत्सृष्ट	वोसट्ठ	ओसढ़	१ परित्यक्त २ परिष्कार-रहित
शकट	सगड	सगड़	गाड़ी
शकटिका] शकटी]	सगडिया] सगडी]	सगड़ी	छोटी गाड़ी
शङ्का	संका	संका	संशय, संदेह
शङ्खिका	संखिया	संखी	छोटा शंख
शची	सची, सई	सची, सई	इन्द्राणी, इन्द्र की एक पटरानी
शट्	सड	सड़	सड़ना
शटन	सडण	सड़न	सड़ना
शटित (सम)	सडिअ	सड़ा	सड़ा हुआ
शण	सण	सन	तृण-विशेष, पाट
शण्ड (षण्ड)	संड	सांड	सांड़, बैल
शत	सय	सै, सौ	सौ
शनि	सणि	सनि	ग्रह-विशेष
शनैस्	सणिअं	सनिय	धीरे, हौले
शपथ	सवह, सउह	सौंह	सौंह
शफरी	सहरी	सहरी	मछली
शबल	सबल	सबल	चितकबरा

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
शमिला	समिला, सइँला	समिला, सैल	युग-कीलक, जुए की सैल, जुए में दोनों ओर डाली गई लकड़ी की कील
शमी	छमी	छमी	वृक्ष-विशेष
शयन	सयण	सयन	शय्या, बिछौना
शय्या	सिज्जा	सेज	बिछौना
शरक	सरग, सरय	सरग	गुड़ की बनी दारू
शरधि	सरहि	सरह	तूणीर, तीर रखने का भाथा
शराव	सराव	सरवा	मिट्टी का पात्र, शकोरा
शर्कर	सक्कर	सक्कर	खण्ड, खाँड
शर्करा	सक्करा	सक्कर	चीनी
शर्वल	सव्वल	सावल	कुन्त, बर्छा
शलाका	सलागा } सलाया }	सलाई	सली, सलाई
शवला	सव्वला	सावल	कुशी, लोहे का एक हथियार
शस्य	सस्स	सस्स, सस	१ क्षेत्रगत धान्य २ प्रशंसनीय
शाखा	सहा, साहा	साहा, साखा	टहनी
शाटक	साडग्र साडग	साड़ा	वस्त्र
शाटिका } शाटी }	साडिग्रा } साडी }	साड़ी	वस्त्र, कपड़ा
शाण	माण	मान	शाण पर चढ़ाना
शाण (शान)	साण	सान	शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यन्त्र

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
शाणक शाणि	साणअ साणय साणि	सानि, सानिया	शण का बना हुआ वस्त्र
शान्त	संत	संत	शम-युक्त
शालभञ्जिका	सालहंजिया सालहंजी	सालहंजी	कठपुतली
शाला	साला, साल	साल	घर, स्थान
शालि	सालि	सालि	धान, चावल
शालिक	सालिय	सालि, साली	जुलाहा
शालूर	सालूर	सालूर	मेंढक
शाव	साव, छाउ	साव, छोउ	बालक, बच्चा
शावक	छावग	छोक	बालक
शिक्षण	सिक्खण	सीखन	अभ्यास, पाठ
शिक्षा	सिक्खा	सीख	सीख, अभ्यास
शिखण्डिन्	सिहंडि	सिहंडी	मोर
शिखरिणी	सिहरिणी सिहरिल्ला	सिहरिनी	मार्जिता, खाद्य विशेष
शिखरिन्	सिहरि	सिहरी	पहाड़
शिखिन्	सिहि	सिही	आग, मोर
शिखर	सिहर	सिहर	शृंग, चोटी
शिग्रु	सिग्गु	सीगू	सहिंजने का पेड़
शिङ्घाण	सिंघाण	सिंघान	नासिका-मल
शिञ्जन	सिंजण	सिंजन	अस्पष्ट-शब्द भूषण की आवाज
शिञ्जिनी	सिंजिणी	सिंजिनी	धनुष की डोरी
शिथिर शिथिल	ढिल्ल	ढील	ढीला
शिबिका	सिविया	सिविया	सुखासन, पालकी-विशेष
शिम्बा	सिंबा	सेम	फली, सेम
शिरस्	सिंर	सिर	मस्तक
शिरा (सिरा)	सिरा, छिरा	सिरा	नस, नाड़ी
शिरीष	सिरिस	सिरिस, सिरस	सिरस का पेड़

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
शिला	सिला	सिला	सिल, चट्टान
शिलाकार	सिल्लार	सिल्लार	सिलावट, पत्थर घड़ने वाला, शिल्पी
शिल्पिक	सिप्पिअ	सिप्पी	शिल्पी
शीतल	सीअल	सियर, सीरा	ठंडा
शीर्ष	सीस	सीस	मस्तक
शुक	सुअ	सुआ	तोता
शुकी	सुई, सुगी	सुग्गी, सुई	शुक की मादा, मैना
शुक्ति	सिप्पि	सीपी	सीप, घोंघा
शुक्र	सुक्क	सूक	ग्रह-विशेष
ण्ठि	सुण्ठ	सोंठ, सूँठ	सोंठ
शुण्ड	सोण्ड	सुंड	संड
शुष्क	सुक्क,सुक्ख	सूखा	सूखा हुआ
शूक	सूअ	सूआ	धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र-भाग
शूकर	सुअर	सुअर	सूअर
शूद्र	सुद्द	सूद	नीच मनुष्य
शून	सूण	सुन	सूजा हुआ
शूनिक	सूणिय	सूणी	सूजन
शून्य	सुण्ण	सुन्न, सूना	निर्जन स्थान
शूर	सूर	सूर	वीर
शूल	सूल	सूल	लोहे का तीक्ष्ण कांटा, शूली
शूलिका	सूलिया	सूली	शूली जिस पर वध्य को चढ़ाया जाता है
शृगाल	सिआल	स्यार	पशु-विशेष
शृगाली	सिआली	स्यारी	मादा स्यार
शृङ्खल] शृङ्खला]	संकल] संकला]	सांकल, सांकला, सांकली]	सांकल
शृङ्ग	सिंग, संग	सींग	विषाण

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
शृङ्गाटक	सिंघाडग । सिंघाडय ।	सिंघाड़ा	सिंघाड़ा, पानी का फल
शृङ्गार	सिंगार	सिंगार	वेश, भूषण आदि की सजावट
शेखर	सेहर	सेहरा	सेहरा
शैवाल	सेवाड । सेवाल ।	सिवार	सेवार, सेवाल
शोभन	सोहण	सोहन	सुन्दर
शोभा	सोहा	सोहा	दीप्ति, चमक
शोभाञ्जन	सोहंजण	सिहंजना । सैंजना ।	सैंजना
शौण्डिक	सुंडिय । सुंडिअ ।	सूंडी । सूंडा ।	कलाल, दारू बेचने वाला
शौण्डिकी	सुंडिकिणी	सुंडिनी	कलाल की स्त्री
श्मशान	मसाण	मसान	मृतघाट, मरघट
श्यामल । श्यामलक	सामलय सामलय	सांवल । सांवला ।	सांवला
श्याल (क)	साल (अ)	साला	साला
श्याली	साली	साली	साली, पत्नी-भगिनी
श्रद्धा	सद्दहा । सड्ढा	सरधा, सद्धा	स्पृहा, वांछा
श्री	सिरी	सिरी, सरी	धन, सम्पत्ति
श्रेष्ठी	सेट्ठि	सेठ	धनवान व्यक्ति
श्रोणि	सोणि	सोनि, सोनी	कमर, कटि
श्रोत	सोत्त	सोत, सोता	प्रवाह
श्लाघा	साहा	साहा	प्रशंसा
श्लोक	सिलोअ । सिलोग ।	सिलोग । सिलोअ ।	श्लोक, कविता
श्वश्रू	सस्सू, सासू	सासु	सास
श्वसुर	ससुर, सासुर	ससुर	ससुर
श्वास	सास	सांस	सांस, प्रश्वास
श्वासिन्	सासि	सासी	श्वास रोग वाला

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
श्वेद	सेअ	सेअ, सेद	पसीना
षट्क	छक्क	छक्का	छः का समूह
षट्चत्वारिंश	छयालीसम छत्तालिसम	छयालीसवाँ	छियालीसवाँ
षट्पद	छप्पय	छपय	भ्रमर
षड्षष्ट	छासट्ठ	छियासठवां	छियासठवाँ
षड्षष्टि	छासट्ठि	छासठ छियासठ	छाछठ, छियासठ
षट्सप्तत	छहत्तर	छिहतरवाँ	छिहतरवाँ
षट्सप्तति	छावत्तरि छाहत्तरि	छिहत्तर	छियत्तर
षडशीति	छअसीइ	छियासी	छियासी
षण्ड	सण्ड	साँड	बैल
षष्	छ, छह (अप)	छः	संख्या-विशेष
षष्गुण	छग्गुण	छः गुना	छँ-गुना
षष्ठ	छट्ठ	छठा	छः
षष्ठी	छट्ठी	छठी	तिथि-विशेष
षड्विंशत्	छत्तीस	छतीस	संख्या–विशेष
षड्विंशतम	छत्तीसइम	छत्तीसवाँ	छत्तीसवाँ
षाण्मासिक	छमासिय छम्मासिय	छमासी	छः मास में होने वाला
षोडशन्	सोलह	सोलह	संख्या-विशेष
संयोग	संजोअ	संजोअ	सम्बन्ध, मेल
संयोजना	संजोअण	संजोयना	मिलान, मिश्रण
संशय	संसय	सँसै	शंका
संसिध्	संसिज्झ	संसिझा	अच्छी तरह सिद्ध होना
संस्मृत	संमारिअ	सँभारा	याद किया हुआ
संस्मारित	संमारिअ	सँभारा	याद कराया हुआ
संहरण	साहरण	साहरन	एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना
संहृत	साहरिअ	साहरा	एकत्र किया हुआ, संक्षिप्त

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
सकल	सगल सयल	सगरा सगला	सारा
सक्तु	सत्तु सत्तुअ	सत्तू सतुआ	सत्तू
सखी	सही	सही	सहेली
सकृत्	सयं, सइं	सयं	एक बार
सङ्कट	संकड	सँकड़ा, साँकडा	१ संकीर्ण २ विषम, गहन
सङ्कट	संकुड	साँकुड	सँकड़ा
सङ्कुटित	संकुडिअ	सँकुड़ी, साँकुड़ी	संकुचित
सङ्कोट	संकोड	संकोड	संकोड़, सकोड़न
सङ्कोटना	संकोडणा	संकोड़ना	संकोड़न
सङ्कोटित	संकोडिय	सँकोड़ा, सँकोड़ी	सँकोड़ा हुआ
सङ्गति	संगइ	संगइ	औचित्य
	संगरिगा (दे) संगलिया (दे)	साँगरी साँगली	फली-विशेष फली
सङ्घट	संघड	संघड	निरन्तर
सन्ध्या	संझा	साँझ	सायं
सटाल	सढाल	सढाल	सटावाला, सिंह
सट्टक	सट्टअ	सट्टा	सट्टेबाजी
सतर	सतर	सतर	दधि, दही
सती	सई	सई	पतिव्रता स्त्री
सत्कारण	सक्कारण	सकारन	सम्मान
सत्कारित	सक्कारिय	सकारा	सम्मानित
सत्त्व	सत्त	सत्त	जीव, चेतन
सदन	सयण	सयन	घर
सदृश	सदिस, सरिख सरिक्ख, सरिच्छ	सरिख सरिखा	समान, बराबर, तुल्य
सद्	सड	सड़	सड़ना
सन्ताप	संताव	सँताव	मन का खेद
सन्तापन	संतावण	सतावन	सताना
सन्न (शटित)	सडिअ	सड़ा	सड़ा हुआ
सन्न	सन्न	सन्न, साना	क्लान्त

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
सपत्निका	सवत्तिया सउतिया सउत्ती	सौत	पति की दूसरी स्त्री
सपत्न	सवत्त	सवत	शत्रु, रिपु
सपाद	सवाअ	सवा	सवा, संख्या-विशेष
सप्तदशन्	सत्तारह	सत्रह	संख्या-विशेष
सप्त	सत्त	सात	संख्या-विशेष
सप्ति	सत्ति	सत्ति	अश्व, घोड़ा
सफल	सहल	सहल	सार्थक
समग्र	समग्ग समग्गल (अप)	समंगल	सकल, समस्त
समम्	समं,सवं,सउं,सइं	सौं, सैं	साथ, सह
समिता	समिश्रा	समिया	गेहूं का आटा
समुद्र	समुद्द	समुद	सागर
संप्रति	संपइ	सांपै	इस समय, अब
संपुच्छनी	संपुच्छणी	संपुछनी, सौंहनी	झाड़ू
संपुट	संपुड	सांपुड़	जुड़े हुए दो समान अंशवाली वस्तुएं
संमल्	संमल	सँमल	१ सुनना २ सम्भालना
संभार	संभार	सँभार	समूह
संभालय्	संभाल	सँभाल	सँभालना
संभालित	संभालिय	सँभाला	सँभाला हुआ
सरघा	सरहा	सरहा	मधु-मक्षिका
सरस्वती	सरस्सई	सरसइ	१ वाणी, भारती २ वाणी की अधिष्ठात्री देवी
सरित्	सरि	सरि	नदी
सर्जिका	सज्जिआ	सज्जी	क्षार-विशेष,
सर्प	सप्प	सांप	सांप

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
सर्व	सव्व सव्य (अप)	सब	समस्त
सर्वाङ्ग	सव्वंग	सवंग, सरवंग	संपूर्ण
सर्षप	सरिसव सरिसउ	सरसों	सरसों
सलावण्य	सलोण	सलोन	लवण-सहित
सलावण्य	सलोण	सलोना	सुन्दर, मनोरम
सल्लकी	सल्लई	सालि	वृक्ष-विशेष
सह	सइँ,सउ,सउं (अप)	सहुं, सौं	साथ, संग
सहस्र	सहस्स, सहस	सहस, सहंस	संख्या विशेष, हजार
साक्षिन्	सक्खि	साखी	गवाह
साक्ष्य	सक्ख	साख	गवाही
सागर	सायर	सायर	समुद्र
साधुकार	साहुक्कार	साहूकार	प्रतिष्ठित व्यक्ति
सारणक	सालणय	सालन	कढ़ी के समान एक तरह का खाद्य
सारिका	सरिआ सरिइआ	सारी	मैना, पक्षी-विशेष
सार्थ	सत्थ	साथ	साथ
सार्थम्	सद्ध,सद्धि सहं, सहुं	सैं, सौं	सहित, साथ
साल (शाल)	साल	साल	पेड़-विशेष
सास्ना	सुण्हा	सुन्हा	गौ का गल-कम्बल
	साहुलिआ साहुली (दे)	साहुली	१ वस्त्र, कपड़ा २ भौं, भ्रू
	साही (दे)	साही	१ मुहल्ला २ राजमार्ग
सिक्त	छंटिअ!	छांटा	सींचा हुआ
सिच्	छंट	छींट	सींचना
	सिड्ढी (दे)	सीढ़ी	सीढ़ी
	सिडा (दे)	सिड़ा	नाक की आवाज

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
सित	सिअ	सीअ, सीत	शुक्ल-वर्ण
सिन्दूरित	सिंदूरिअ	सिंदूरिया	सिन्दूर-युक्त किया हुआ
	सिंदोल (दे)	सिंदोल	खजूर
	सिप्प (दे)	सिप्पा	पलाल, तृण-विशेष
सुख	सुह	सुह	आनन्द, चैन
सुखकेलि	सुहेल्लि	सुहेलि	सुख, आनन्द
सुखायन	सुहावण	सुहावन	सुख-जनक
सुभट	सुहड	सुहड़	योद्धा
सुमधुर	सुमहुर	सुमहुर	अति मधुर
सुमित्र	सुमित्त	सुमीत	अच्छा मित्र
सुमुखी	सुमुही	सुमुँही	सुन्दर मुख वाली स्त्री
सुरंगा	सुरंगा	सुरंग	जमीन के भीतर का मार्ग
सुरति	सुरइ	सुरइ	सुख, रमण
सुवर्ण	सुवण्ण	सोना	सोना
सुवर्णकार	सुण्णार सुण्णाआर सोणार	सुनार	सोने का काम करने वाला
सुवृत्त	सुवित्त	सुवीत, सुईत	१ अत्यन्त गोलाकार २ सदाचार
सूचिका सूची	सूइआ सूई	सुई	सुई
सूत्र	सुत्त	सूत	सूत, धागा
सूना	सूण, सूणा	सून, सूणा	वध-स्थान
सूप	सूअ	सूप	दाल
सूर्य	सुज्ज	सुज्ज, सुरज	सूरज
सेचन	सिंचण	सींचन	छिड़काव
सेचन	छंटण	छाटण	सिंचन

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
सेटिका	सेडिया	सेड़ी	सफेद मिट्टी, खड़ी
सेतिका	सेइआ सेइगा	सेई	परिमाण-विशेष दो प्रसृति का एक नाप
सेतु	सेउ	सेउ	बांध, पुल
सेय	सेअ	सेय	कादा, पंक
सौभाग्य	सोहग्ग	सुहाग	सुहाग
सौराष्ट्र	सोरट्ठ	सो ठ	देश-विशेष
सौराष्ट्रक	सोरट्ठअ	सोरठा	छन्द-विशेष
स्कन्धावार	खंधावार	खंधार	छाव ी
स्तन	थण	थन	थन
स्तनक	थणुल्लअ	थनुल्ला	छोटा स्तन
स्तनजीविन्	थणजीवि	थनजिय थनजिया	स्तनपान पर निर्भर करने वाला बालक
स्तनन	थणण	थनन	गर्जन
स्तनित	थणिय	थनी थनिया	१ मेघ की गर्जन २ आनन्द
स्तनवती	थणवई	थनवई	बड़े स्तन वाली
स्तवक	थवय	थविया	प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगा छोटा काष्ट-विशेष
स्तबकित	थवइअ थवइअ	थवइया थवई	स्तवक वाला गुच्छा-युक्त
स्तिबुक	थिवुग थिवुय	थिवुआ, थिवू	जल-बिन्दु
स्तीमित	तिम्मिअ	तीमा	गीला
स्तूप	थूम	थूहा	टीला
स्तूपिका	थूमिया थूमियागा	थुई, थूही	१ छोटा-स्तूप २ छोटा-मन्दिर

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
स्तेन	थूण	थून	चोर, तस्कर
स्तैन्य	तिण्ण	तेन	चोरी
स्तोत्र	थोत्त	थोत्त, तोत्त	स्तुति
स्त्री	इत्थि] इत्थी]	इत्थी	औरत
स्त्रीका	इत्थिआ	तिया, तिरिया	औरत
स्थगन	थगण] ठगण]	थगन] ठगन]	संवरण,] ठगना]
स्थल	थल	थल, थर	भूमि, जगह
स्थविर	थेर	थेर, ठेर	बूढ़ा, वृद्ध
स्थविरा	थेरिया] थेरी]	थेरी, ठेरी	वृद्धा, बुढ़िया
स्थाघ	थाह	थाह	तला गहराई
स्थाणु	थाणु	थान	१ देवता-पूज्य जगह २ ठूँठ
स्थान	थाण, ठाण	थान, ठान	जगह
स्थानेश्वर	थाणेसर	थानेसर	एक शहर
स्थापन	थप्पण	थापन	न्यास, न्यसन
स्थापनिका	थवणिया	थवनी, थावनी	न्यास, जमीन पर रखी हुई वस्तु
स्थापित	थप्पिअ	थापा	रक्खा हुआ
स्थामन्	थाम	थाम, ठाम	बल, वीर्य
स्थाल	थाल	थाल	बड़ी थाली
स्थालिका	थल्लिया	थलिया	छोटी थाली
स्थाली	थाली	थाली	पाक-पात्र
स्थित	थिअ	थिया, ठिया	रहा हुआ
स्थिर	थिर	थिर	निश्चल
स्थूणा	थूणा	थूना, थूनी	स्तम्भ, खूंटी
स्थूल	थुल्ल	थूल, थूर, थूरा	मोटा
स्नपित	ण्हाविय	न्हाया	स्नान किया हुआ
स्नान	ण्हाण, सणाण सिणाण	स्नान	नहान, न्हान

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
स्नानिका	ण्हाणिआ	नहानी	स्नान-क्रिया
स्नुषा	णोहा, ण्हुसा	नोहा, न्हुसा	पुत्र की भार्या
स्नेह	सणेह, णेह	नेह	प्रेम, प्रीति
स्नेहल	णेहल	नेहल	छन्द-विशेष
स्फटकारिका	फटकरिअ	फटकरी, फिटकरी	फिटकरी
स्फरक	फरअ	फरा	अस्त्र-विशेष
स्फार	फार	फार	प्रचुर, बहुत
स्फुट	फुट, फुट्ट	फूट	फूटना
स्फुटन	फुट्टण	फूटन	फूटना, टूटना
स्फुटित	फुट्ट	फूटा	फूटा हुआ
स्फुर	फुर	फुर	फड़कना
स्फुलिङ्ग	फुलिंग	फुलिंग, फूली	अग्नि-कण
स्फेटन	फेडण	फेड़न	विनाश
स्फोट	फोड	फोड़	फोड़ा
स्फोटक	फोडअ	फोड़अ	फोड़ा
स्फोटन	फोडण	फोड़न	विदारण
स्फोटिका	फुडिआ	फुडिया	छोटा फोड़ा, फुन्सी
स्मरण	समरण, सुमरण	सुमिरन	स्मृति, याद
स्मारण	सारण	सारन	याद करना
स्मारणा	सारणा	सारना	याद दिलाना
स्मृत	सुमरिअ	सुमिरा	याद किया हुआ
स्मृति	सुइ, सिमरति	सुइ, सिमरति	स्मरण
स्वर्ग	सग्ग, सुरग	सुरग, सरग	देव लोक
स्वक	सग	सगा	खुद का, अपना
स्वाद	साय, साव	साव	रस का अनुभव
स्रंसन	ल्हसण	ल्हसॅन	खिसकना
हंसक	हंसय	हंसल, हँसली	आभूषण-विशेष
हट्ट	हट्ट	हाट	बाजार
हट्टिका	हट्टिआ, हट्टी	हट्टी, हाटी	छोटी दुकान

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
हत	हय	हय	जो मारा गया है
	हत्थियार (दे)	हथियार	शस्त्र
	हथलेव (दे)	हथलेवा	हस्त-ग्रहण, पाणि-ग्रहण
हनुका	हणुया	हनू	ठुड्डी, ठोड़ी
हय	हय	हय	घोड़ा
हरतनु	हरतणु	हरतनु	खेत में बोये गेहूँ, जौ आदि के बालों पर शोभित जल-बिन्दु
	हरहरा (दे)	हरहरा	युक्त प्रसंग, योग्य अवसर
हरिणाङ्क	हरिणंक	हरिनंक	चन्द्र, चाँद
हरित	हरिअ	हरा	हरा रंग
हरिता] हरिताली]	हरिआ] हरिआली]	हरिया] हरियाली]	दूर्वा, दूब
हरिद्र (हारिद्र)] हरिद्रा]	हलिद्द] हलिद्दा]	हल्दी	हल्दी
हरीतकी	हरअई] हरडई]	हरड़ई, हरड़	फल-विशेष, हर
हरेणुका	हरेणुया	हरेणु	प्रियंगु, माल कांगनी
हर्ष	हरिस	हरिस	सुख
हर्षित	हरिसिअ	हरसा	प्रसन्न
हल	हल	हल, हर	हर, जिससे खेत जोता जाता है
हलकुद्दाल	हलकुड्डाल	हलकुदाल	हल के ऊपर का भाग
	हलबोल (दे)	हलबोल	शोर-गुल
हलवाहक	हलवाहग	हलवाहा	हल जोतने वाल
हसन	हसण	हँसन, हँसना	हास्य, हँसी
हसित	हसिअ	हँसा	१ जिसका उप-हास किया गया हो वह २ हंसी

प्रा०	हि०	अर्थ
हत्थ, हत्थड (अप)	हाथ	हाथ
हत्थि	हाथी	हाथी
हद्धि	हद्धी	खेद, अनुताप
हारिअ	हारा	हारा हुआ, पराजित
हालिअ	हाली, हली	कृषक
हाउ	हाव	मुख का विकार-विशेष
हस्स	हास	हँसी
हिक्का (दे)	हिक्का	रजकी, धोबिन
हिक्का	हिक्का, हिक्की	रोग-विशेष, हिचकी
हिंगु	हींग	हींग
हिंगुल	हींगलू	पार्थिव धातु-विशेष
हिंगोल (दे)	हिंगोल	मृतक-भोजन
हिंचिअ (दे)	हिंची	एक पैर से चलने की बाल-क्रीड़ा
हिंड	हींड	भ्रमण करना, घूमना
हिंडग	हिंडा	भ्रमण करने वाला, घूमने वाला
हिंडण	हींडन	परिभ्रमण, गमन
हिंडिअ	हिंडा	चला हुआ, चलित
हिंडोल	हिंडोल	हिंडोला
हिरजी (दे)	हिरड़ी	चील पक्षी की मादा
हिल्लरी (दे)	हिल्[illegible] लहर	मछली पकड़ने का जाल-विशेष
हिल्लूरी (दे)	हिलोर	लहरी, तरंग
हुंकार	हुँकार, हुँकारा	अनुमति प्रकाशक शब्द, हाँ
हुड्ड (दे)	होड़	होड़, बाजी
हुरुडी (दे)	हुरडी	रोग-विशेष

सं०	प्रा०	हि०	अर्थ
हूण	हूण	हूण, हून	एक अनार्य जाति
हृदय	हिअरा	हिया	मन, हृदय
हृष्ट	हट्ट	हट्टा	नीरोग, मोटा-ताजा
	हेआल (दे)	हियाल	हस्त-विशेष से निषेध, साँप के फण की तरह किए हुए हाथ से निवारण
	हेर (दे)	हेर (ना)	देखना
हेरिक	हेरिअ	हेरी	गुप्तचर, जासूस
हेलन	हीलण	हीलन	अवज्ञा, तिरस्कार
हेलय्	हील	हील	अवज्ञा करना
हेला	हीला	हीला	अवज्ञा
हेषा	हेसा	हींस	अश्व-शब्द
ह्रस्व	हस्स, रहस्स	रहस्स	छोटा, लघु
ह्रीक	हिरिआ	हिरिया, हिरी	लज्जा, शरम